ज्ञानतरङ्ग ॥

जिसको

शाहजहांपोरीय सरहीग्रामनिवासि कायस्थ वंशोद्भव बख्शीरामात्मज मंगलदास ने अत्युत्तम तीन खण्डों में निर्मित किया

जिसके

प्रथम खण्ड अर्थात् ज्ञानतरंगमें मन बुद्धि के सम्वाद द्वारा प्रश्नोत्तर की रीतिसे संसार और तज्जनित पदार्थ के अनित्यत्व का वर्णन—द्वितीय खण्ड अर्थात् मंगलविनोदमें सगुणपक्ष निर्गुण शिक्षाका सविस्तार वर्णन—तृतीयखण्ड अर्थात् सर्वसिद्धांत सप्तशतिकामें प्रकृति पुरुषका सम्यक् विचार वेदांत ज्ञान उत्तम २ छन्दों में वर्णित है

वही

आर्य्यजनपूजित वैदिकमततत्पर श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरने आर्य्यावर्त्तनिवासि ज्ञानाभिलाषियों के हितार्थ

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में मुद्रित करवाया

जून सन् १८८६ ई० ॥

दूसरीबार ३०००

इस मतबे में जितने प्रकार के वेदान्त भाषा की पुस्तकें छपीहैं उनमें से कुछ इसमें लिखीहैं ॥

—※—

योगवाशिष्ठभाषा

दोभागोंमें जिसमें वशिष्ठजीनेरामचन्द्रजीसे वैराग्य,मुमुक्षु,उत्पत्ति स्थिति, उपशम,निर्वाणादि छ:प्रकरणोंमें आत्मयोग ब्रह्मज्ञानलखाव सन्देह दूरकियाहै, औरयहपुस्तक आदिकवि वाल्मीकि जीकी बना॰ हुईहै कि उन्होंने भरद्वाजसे उपदेश कियाहै संस्कृतमें श्लोकबद्ध थं पर पहले जब यह भाषाग्रन्थ हमको मिलाथा भाप इसको ठीक न थं सोकारखाने की तरफ से पण्डित प्यारेलालजीसे इसकी बोलियां सुध रवाकर औरउनके पुनः अवलोकनसे छापागया जिससे यहग्रन्थ अत्यन्त सुगम होगया ॥

पारसभाग

जिसमें वेदान्तमतानुसार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोहाहंकार के नाशकाउपाय औरदान व्रत करनेकेलाभऔरप्रीति,दया,सत्यासत्य,चोरी ईर्षादि बहुतभेदेहसम्बन्धी कर्मोंका निर्णय, इतिहास, कथा औरदृष्टांत युक्तहैं जो छापेखानेको अयोध्यानिवासि युगलानन्यशरणवैकुण्ठवासी के पुस्तकालयसे उनके स्थानापन्न महात्मा जानकीवरशरणजीके द्वारा बड़े परिश्रमसे प्राप्त हुई अब हम थोड़ीसी बातें इसपुस्तकके अन्तर्गत विषयोंकी महात्माओंकी रुचिकेलिये लिखतेहैं साधनके कालकावर्णन, आत्मसत्ताके अभ्यसका वर्णन, जीवकीसिना, जीवकास्वभाव, जीवकी पराधीनताका वर्णन, भगवत्की पहिचान,भगवत्की निर्लेपताकाकथन, तत्व और नक्षत्रोंकाव्याख्यान, मायाकाविस्तार, छलऔरउसकाखण्डन, परलोककी पहिचान, मृत्युकाकथन, जीवकी अखण्डताका वर्णन, प्राण चेतना,चैतन्यकलाकी कथा, यममार्गकेकष्ट, नास्तिकोंके मतकाखण्डन, भगवत्की प्रतीति,आचारधर्म, ज्ञानदेने, दानव्रतकरने, पाठकरने,ध्यान लगाने,स्मरणकरने, साधुसङ्गति, एकान्तमें भजन करनेकावर्णन,कठोर वचनकेत्यागनेकाकथन, कामवासना औरइच्छाकेत्यागकरनेकेशुभफल अधिक बोलनेके विघ्न, क्रोध,ईर्षा,मायाकी प्रीति, तृष्णा, कृपणता



अथ ज्ञानतरंग ॥

—०—

सो० ॥ शीतनाथकीबाल तासुतनयशिरचन्द्रधर । बाँधवतारककाल तिहुँपुरपूज्यसुविघ्नहर ॥ बन्दत तवपदधूरि करौ कृपा वारणबदन । उपजैआनँदभूरि देहुसुगति हरिकुमतितन ॥ दो० ॥ हैअखण्ड अविनाशजो पुरुषपुरातनईश । वेददेव मानसउरग ध्यावत जाहिमुनीश ॥ चौ० ॥ वेदचारि जेसबजगजानै । ऋग यजु साम अथर्व बखानै ॥ जोऋगवेद सोऔरबतावै । यजुर्वेद कुछ औरसुनावै ॥ सामवेदकी अकथकहानी । समुझहिंचतुर न जाइ बखानी ॥ कहैअथर्वण आनप्रकारा । एकब्रह्मकृत चारिविचारा ॥ दो० ॥ चारौध्यावत एकही बरणतगुणगंभीर । उनहिमारग सचुपावजयहि गहेसुमारगधीर ॥ चौ० ॥ नहिंआश्चर्य बिबुधमनलावै । चारौमारग सत्यबतावै ॥ ऋषयतपेश्वरादि संन्यासी । वैष्णवमुण्डिया औरउदासी ॥ निजमति सरिसताहि सबगावै । कोऊतासु पार नहिपावै ॥ देवसुरेश आदि बुधिमाना । गावहिंजासु प्रताप प्रमाना ॥ शेषसहस्रमुख रसनाजाही । बरणतजाहि नअन्तकहाही ॥ व्यासआदि आनन्त तनुधारी । विविधभांति जिनकथा पसारी ॥ तिनहुँनभेदपाव व्यहिकेरा । तपकीन्होसहिदंडघनेरा ॥ कतनिशिचरआदि महाबलवाना । यवनादिक जे अधिक सुजाना ॥ जिनकी संज्ञा असुरन माहीं । वेदपन्थदोउतते नाहिं

भांति तिनखोजलगायो। जाकरकतहु खोजनहिं पायो॥ अपरौ चतुर जगत बहुतेरे। यतनकिये ज्यहिहेतु घनेरे॥ पाव न जासु खोज कहुंभांती। जासुनाम हरजप दिनराती॥ दो०॥ जोपरमातम एकरस व्यापक जलथल माहि। अजयअनीह अमानज्यहि द्वैतभाव कछुनाहिं॥ तासुचरण बन्दौंसमुद देहुसुमति करतार। नशैसकलअघ कालिमा बाढ़ैबुद्धिबिचार॥चौ०॥ पुनिवंदौंअजचरण गुणाकर। कुमतितिमिरकहँ ज्ञानदिवाकर॥ ज्यहिबहुभाति सृष्टिउपजाई। अतिश्रमकरि रचिरुचिर बनाई॥ सेवतजासु कमल पद वानी। करतजो अज्ञानी कहँज्ञानी॥ सचराचरसमस्ततनुधारी। रचेकमलभवसकल बिचारी॥ तासुपदारविंदशिर नाऊँ। हरैकुमति निर्मल बुधिपाऊँ॥ पुनिप्रणवौं गरुडारान स्वामी॥ कृपाउदधि उर अन्तर्यामी॥ सदादास निजरक्षा करई। सुखद सदैव दुःखबहु हरई॥ जबजब असुर अनीति प्रचारैं। धर्म क्रियाकर मूल उखारैं॥ निन्दैं वेद विप्र मखबाधा। दुष्ट अनेक लगावैं बाधा॥ तबतब मनुजरूप करि धारा। मारिखलन पुनि धर्म प्रचारा॥ लक्ष्मीजासु चरणनित सेवै। महा अनद चरिपद लेवै॥ थावर जंगम जीवघनेरे। रक्षकरमानाथ सबकेरे॥ दो०॥ ताकारणमायापते विष्णु पुरातनरूप। बन्दौं पादसरोज तुव दे बुधि तिहुंपुर भूप॥ चौ०॥ पुनिवन्दौं शंकर सुखकारी। चन्द्रभालजो उमाविहारी॥ भोलानाथ कृपाअबकीजै। हरिदुखकुमति सुःखबुधि दीजै॥ फिरिविनवौं शारदा भवानी। कुमतिनाश निर्मलकर वानी॥ जाहिप्रसन्न गिरातू होई। यश भाजन जगमें सोसोई॥ दो०॥ इष्टदेवमम कीशपति महाबीर सुखदाय। हरौ विघ्नदुख दासके सुमति देहु कपिराय॥ लहा विभीषण राजभल अरु सुग्रीव कपीश। तवदाया दयानिधे महावीर ममईश॥ चौ०॥ वन्दौं गुरू पिता अरु माता। ज्ञान सुमति अरु जन्मके दाता॥ मित्रआदिजेममहितकारी। प्रणवौंतिनकेचरणविचारी॥ कोविद भसर जेजगमाही। जिनकेबन्न मित्रकोउनाहीं॥ तिन

के चरणकमल धरि ध्याता। निर्णयकरौं मनोहर ज्ञाना ॥ दो० ॥ वर्त्तमान अरु भूतकवि होनहार जेकोय। प्रणवौंसबके पदपदुम कृपाकरौ अब सोय ॥ चौ० ॥ दुष्ट प्रकृति जिनकी जगमाहीं। परभल जेनहि देखि सकाहीं ॥ और के यशहि जे दोष लगावहि। धर्मकथा पहँ भूलि न जावहि ॥ जो चोरी अपकारीपावहिं। तौ निज देवहि अजा चढ़ावहिं ॥ यहि प्रकार औरौ खलकेते। बर्णन करौं कहां लगि तेते ॥ बन्दौं ते सब निज हित लागी। होहु प्रसन्न सकल छल त्यागी ॥ निज कर्त्तव ममहेतु बिसारी। देहु अशीष मनोरथकारी ॥ बिधि निर्माण सृष्टि जहँताई। प्रणवौं सबहि सुप्रेम बढ़ाई ॥ मोहिं प्रसन्न चराचर होहू। आशिष देहु सुखद करि छोहू ॥ दो० ॥ पुनि अब बन्दौं शारदा जो सुधि बुधिदातार। सदा सहायक होहु अब बरणौंग्रन्थ बिचार ॥ चौ० ॥ सम्वत विक्रम करौ बिचारा। हनुमत पिता शत्रु पतितारा ॥ निराकार गाभी महिधारी ॥ अब शाकः कहँ अग्रबिचारी। रावण रिपु अरुदति समेता। ऋरय धरायुत कवि गनिलेता ॥ माधव अक्षय तीज बखिवारा। तादिन ग्रन्थलीन अवतारा ॥ अबहौंनाम कहौं शुभ याको। कविजन अर्थ बिचारो ताको ॥ चाहत जाहि सुभग योगीजन। प्रथमहि ताहि लिखौ स्थिरमन ॥ तापाछेलै उदधि हिलोरा। सुन्दर सुखद नाम कविजोरा ॥ राज्य सुभग गौरव बिराजै। नीति सहित परजा सुखराजै ॥ दो० ॥ अबधरि ध्यान प्रवीणजन सुनो पुरातन ज्ञान। मनको बुद्धि प्रवोधजिमि मनमानो परमान ॥ एक समय मन बुद्धिदउ भयउ एकढिग आय। मन पूछै तब बुद्धिसों कहहु मोहिबुझाय ॥ (मनउवाच) चौ० ॥ कहुबुधि कबते ईश्वर भयऊ। कबते सकल सृष्टि निर्मयऊ ॥ ब्रह्मा बिष्णु सुशंकरजोई। की ईश्वर कहियतहैं सोई ॥ (बुद्धिरुवाच) सुनमन ईश्वरकीन प्रमाणा। आपहि आपभयो निर्माणा ॥ भेदकाहु पायोनहिं वाको। रूपरेखकहुगेह न ताको ॥ अजय निरंजन अगुण अपारा। अगजग दुहूवातते न्यारा ॥ नहि

मानस नहिं पशु नहिं देवा । नहीं भुजंग करिय ज्यहि सेवा ॥ व्यापक सकल सृष्टिमहँ ऐसे । शोणित सब शरीर महँ जैसे ॥ सबके गुण अवगुणसो देखै । पाप पुण्यकी त्यखनी लेखै॥ पापी नहिं धर्मात्म सोई । चाहत जौन तुरतसो होई ॥ जोतुम ब्रह्मा विष्णु बखाने । शंकर कहँ ईश्वर करिजाने ॥ तेपरमातम पद अधिकारी । सो निर्णय सबकहब अगारी ॥ अब सुन, ज्यहिविधि सों येभयऊ । जौनी बिधि ईश्वरपद लयऊ ॥ अरु ज्यहिभांति सृष्टिनिर्माणा । करिचौरासीयोनि प्रमाणा ॥ जबनधरा ब्रह्माण्ड पतारा । सत रज तम गुण कोउ न प्रचारा ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाहीं । गणपति फणपति कोउ न तहांही ॥ अग्नि वायु जलदेव न नागा । वेद ग्रंथ कोउ नहि अनुरागा ॥ नहिं मानस नहिंसर्प कराला । जीवजतु नहिंकाक मराला ॥ दो० ॥ विद्या चौदह तबनही नहिं हनुमत न सुरेश । नहिं नारद शारद चतुर नहींभये असुरेश ॥ चौ० ॥ वरुणकुबेर न तब यमराजा । जाति धर्म नहिं एकौसाजा ॥ तपीजपी नहि मुनि संन्यासी । उदय न चन्द्र सूर सुखरासी ॥ सकल पसार तिहूंपुर जोई । तब न कछू जानो मनसोई ॥ इन्द्रीआदि ज्ञान विज्ञाना । मोहक्रोध कछु नाहिं बखाना ॥ तब निज एक चराचर साई । निराकार महँ बैठगुसाईं ॥ स्वइ परब्रह्म वेद जो गावै । बार बार ज्यहि शम्भु मनावै ॥ इच्छा कुछ ताके जो आई । सोमायो यह जगत कहाई ॥ फिरिके सुखद शब्दयकबोला । ओंकार यहमन्त्रअमोला ॥ दो० ॥ ताते ब्रह्मा विष्णु अरु उपजे शुभत्रिपुरारि । निराकार महँ बासलिय तीनोंजन सुखकारि ॥ चौ० ॥ मायाबहु विचारिकरिहारी । ताबश भयो न एक मुरारी ॥ तब ओंकार वेदलै आई । तिन कहँ दै यहिविधि समुझाई ॥ कह्यो सृष्टिकी रचना करहू । आज्ञावेद शीशपर धरहू ॥ ब्रह्महि कीन्ह बनावनहारा । शंकर शिरहन्तक पदधारा ॥ विष्णु महा ज्ञानी गुणरासी । प्रतिपालक भो रमाविलासी ॥ पांच तत्त्वकरि सृष्टिउपाई ।

बिबिध भाति कीन्ही निपुणाई ॥ तब त्रैगुण दिय वेद बताई। ब्रह्मा रजगुण लीन्ह सिधाई ॥ तमगुण शिव किय अंगीकारा। सतगुण हरि तनु कीन्ह प्रचारा ॥ दो०॥ यहि बिधि तिहुगुण तिहु पुरुष एक एक महँ लीन। ब्रह्मपुरी महँ बैठि पुनि विश्व रचन चित दीन (मनउवाच) ॥ चौ०॥ जो तुम कही ब्रह्मपुर नामा। जहा विरचि कीन्ह निजधामा ॥ की सो पुरी रहै बिधि आगे। बैठि जहां निज कारज लागे (बुद्धिरुवाच) प्रथम ब्रह्मपुर लीन बताई। तापाछे पुनि सृष्टिउपाई ॥ वरुण कुबेर इन्द्र यमराजा। अग्नि वायु शशि सूर समाजा ॥ धरा पताल स्वर्ग इत्यादी। रचे देव अरु दैत्यविवादी ॥ मनुज उरगपशु खग सुभनाये। वेदधर्म कहि सकल बुझाये ॥ जाकहँ जौन ठाम बिधि दयऊ। तहाँ सुशोभित सो पुनि भयऊ ॥ यहि विधि सृष्टि सकल उपजाई। बहुत भांति करि विधि निपुणाई (मनउवाच) दो०। ॥ प्रथम कहा तुम कहौ पुनि विष्णु भयो जिमि ईश। सो अब मोहिं विचारि कहु नावों तव पद शीश (बुद्धिरुवाच) सामवेद यह कहत है तीनि बात को ज्ञात। तत्त्व मसीये तीनि पद जानत कोइ सुजान॥ चौ०॥ तत्पद ईश महा सुखकारी। जीव भयो त्वंपद अधिकारी॥ असिपद ब्रह्म जो प्रथम बखाना। निर्गुण निराकार भगवाना॥ जाहि जपहिं हरि हर विधि देवा। निशि दिन जासु करै अति सेवा॥ सबमें लिप्त सबनते दूरी। सब जीवनकर जीवनमूरी॥ दो०॥ ये तीनो पुनि एक हैं भेद नहीं है नेक। जिमि छाया द्रुम जगतमे कोकरि सकै विवेक॥ चौ०॥ भयो परन्तु भेद यहि तेरे। भापेक विन सो लखे बनेरे॥ हरिमाया ज्यहि जगत नचायो। काहू जीव जीति नहिं पायो॥ भे मायावश विषय बिलासी। तमगुण गहे भये दुखरासी॥ आपुहि भूलि मर्या लपिटाने। मोह आदि जिनदेह समाने॥ सुनु मनते सब जीव बखाने। कर्त्ता क्रिया कर्म नहिं जाने॥ ज्यहि मायानिज बशकरि लीन्हो। विविध भांति शिव जीवहि दीन्ही॥ तमरज त्यागि गहो गुण साँचा। बिषय राग

मन जासु न राँचो ॥ कामक्रोध मोहादिक बांधे। आपनपद निज करतल सांधे ॥ सो सच्चिदानन्द गुणरासी। तत्पद कहो सो रमा विलासी ॥ यहिविधि विष्णुईश पदपायो। ज्यहियश वेदपुराणन गायो ॥ स्वइ अवतार सृष्टिमहँ धरई। विविध भांति लीला सो करई ॥ जब बहुपाप धरा असिलेई। सकैन भार पाप सोखेई ॥ तब नारायण पास पुकारे। विविध भांति अस्तुति अनुसारे ॥ तासु टेरिसुनि रमाविहारी। धरैंमनुज तन जनदुख हारी ॥ ज्यहि बिपरीत वेदतेपावै। ताकहँ हति यमलोक पठावै ॥ देइँबताइ सुपंथ जीवकहँ। बहुज्ञानी गुणखानि जगतमहँ ॥ दो०॥ अब सुनु असिपद ब्रह्मको निर्णयमन चितलाय। जाहिसुने संदेहतुव बिविध भांतिबहिजाय ॥ असिपद पूरणब्रह्महै निराकार जुनिरेह। व्यापक सबजगमे रहै सत्यजानु मनयेह ॥ चौ०॥ जीवईश दूनों महँव्यापै। ज्यहि बहुभांति सुवेद प्रलापै ॥ ईशजीवजो समकहि दीजै। तौ बडदोष शीशपर लीजै ॥ तत्पदमनों सिन्धु परमाना। बिंदु समान जीव अनुमाना। असि पद मनो नीर बुधिमाना। दोनोंमांझ ममान समाना। अथवा तत्पदज्यों नरभूपा। त्वंपदहै किसानकेरूपा ॥ मानस असिपद कहतसुजाना। यहिविधि तीनोंपद परमाना ॥ निजआतम खोजैजो भाई। सो निरगुण पद महँठहराई ॥ श्रद्धा सहित विष्णु लवलावै। सोई सगुण पथ कहावै ॥ दो०॥ दूनोंपंथ पुनीतअति भक्तिमुक्ति दातार। अब जो मनसंदेह कछु कहुसो कहौविचार ॥ (मनउवाच) अधिक भयो संदेहमहिं अबसुनु बुधि मनलाय। करि विस्तारि बताइये सब शंका मिटिजाय ॥ भाषोसबमें एकरस पारब्रह्म भगवान। द्वैतभाव वाके नही सो मानों परमान ॥ अब कहु रूपस्थूलतें ईश धरेहैजोय। कैसेवाकी देहमे तिहुँपुर वर्तनहोय ॥ (बुद्धिरुवाच) सुनुतोसों अबकहौं बुझाई। जिमिसस्थूल रूपकृत साई ॥ शीश तासुआकाश विराजै। पवन श्वासमहँ शोभाराजै ॥ सूरज चंद्र नयन उजियारा। कालरूप भ्रुवंवक पसारा ॥ पलकचालिनिशि

घोस कहावै। अग्नि तासुमुख शोभापावै॥ मांसहिधरारुधिरजल धारा। पर्वत अस्थि वनस्पति वारा॥ चरण पताल हृदय करतारा। द्वैभुज हरिहररूप सम्हारा॥ सकललोकता उदरसमाने। माला मेघगुक्रता जाने॥ अलख अरूप अनादि कृपाला। धरे विराट रूपकृत ख्याला॥ दो०॥ होय विधाता आपुसइ रचै सृष्टि बहुभांति। थावर जंगमजीव जे बहु विधि नानाजाति॥ बहुरि आपुह्वै रमापति रक्षत सबको धाय। शंकरह्वै संहारकृत सो प्रभु त्रिभुवनराय॥ (मनउवाच) याविधि धरकेरूपको करतख्याल बहुआहि। यहमोको समुझायकहु कवस्यागतहैं ताहि॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ भलिपूछसितै वातविचारी। हौंयह बात कहौं निरधारी॥ थिरह्वैसुनुतजि दुविधाजीकै। जसजानौंतसकहौंभली कै॥ जाहि विरचि कहत कवि ज्ञानी। तासु आयुपर घटितकहानी॥ आयुदाय वर्ष शतकेरी। पाई विधि काली न घनेरी॥ सतयुग त्रेताद्वापर जानो। कलियुग राहित प्रमाण वखानो॥ सत्रह लख वसुविंश हजारा। कृतयुग की परमाण विचारा॥ जहँ चहुँ चरण धर्मके राजै। सुखद चारि अवतार विराजै॥ सहसछानवे द्वादश लाखा। त्रेतायुग परमाणसुभाखा॥ तीनिपादशुभधर्म समेता। त्रैअवतार धरे हरि त्रेता॥ चौंसठि सहस लक्षवसु जाहीं। द्वापरयुग येवर्ष सिराहीं॥ द्विपद धर्म तहँ वेदबताये। द्वै स्वरूपहरि धरे सुहाये॥ वत्तिस सहस लाखपुनि चारी। कलियुग की परमाण विचारी॥ धर्म चरणतहँ एक कहोई। एकवार अवतारसुहोई॥ जामहँ नरयुवतीहैं जोई। मारग वेद चलत कोइ कोई॥ रहे न लीक धर्मकी भाई। महादुखित नरनारि तहाई॥ निजनिज धर्म सबै परित्यागे। आय धर्मके मारग लागे॥ दो०॥ तेंतालिस लख सहस नवें वर्षे जवचलिजाय। एकचतुर्युग होत तब कहत सकल कविराय॥ चौ०॥ जाय हजार चतुर्युग वीती। होय ब्रह्मदिन तब कहनीती॥ कल्पकहत विधिके दिन काहीं। चौदह इंद्रमरें जयहिमाहीं॥ दिवस प्रमाण कहीहैं जेती। अरुण-

त विबुध निशा पुनितेती॥ दिनभरिजोविधि सृष्टिबनावै। निशा समय मायामहँ जावै॥ जाकहँ प्रलय कहत कविज्ञानी॥ सो ब्रह्माकी रैनि बखानी॥ जादिन जन्म विधाताले‌ई। आज्ञा वेद ताहि दिनदेई॥ वाही दिनते जगउपजावै। विविधप्रकार सजीव बनावै॥ पुनि जब अन्त होइ विधिकेरा। तवहीं महाप्रलयकी बेरा॥ तब न धरा इत्यादिक रहई। यहविधि सत्य सत्य श्रुति कहई॥ निशा दिवस ब्रह्माको जोई। वहे जात तामें सबकोई॥ दिवस जन्म निशि कालकलेवा। कयहिविधिपारजायभवखेवा॥ मानस कहौ करैकाभाई। आयुदीय नेकलीपाई॥ दो०॥ विधिके उपजतहीं प्रगत तनविराट भगवान। तासु मरतही तजत त्यहि तेनिज जिय अनुमान॥ (मनउवाच) उतपति स्थिति नाशजो जगको वर्णनकीन। सोसमुझो भलिभांतिहौं रही न शंकापीन॥ अबपरतु समुझाय कहु मानस तनुको भेव। कौन तत्त्व करि सो बनो यह मेटौ अहमेव॥ (बुद्धिरुवाच) व्योम वायु अरु अग्नि जल पृथ्वीयुत येपांच। इन तत्त्वनकरि तनु बन्यो बरणतबुधजन सांच॥ पांच तत्त्वये जोकहे पांचतत्त्व गुणऔर। शब्दस्परशरूप रस गन्धिकहत कविसौर॥ चौ०॥ नासानयन जीभ त्वकजानो॥ श्रुतिसह इन्द्रिय ज्ञान बखानो॥ गुदा लिंग कर पद मुखजोई। इंद्रिय पांच कर्मकी सोई॥ प्राणअपानरुव्यानसमाना। और उदान मनो बुधि साना॥ पांचतत्त्व सूक्ष्म तनुपाई। सत्रह थूल प्रकट ये भाई॥ इनकरि सब देहिनकी शोभा। इनहीते नरतनु सुखदोभा॥ इनकरिपाप सुकृतनरकरई। इनकरक्रिया कर्म अनुसरई॥ इनतेस्वर्गनरकपथ धावै। इनकरि हरिपुरशोभा पावै॥ इनहीते संसार पसारो। पांचतत्त्व ये प्रकट निहारो॥ (मनउवाच) दो०॥ पांचतत्त्वकरि जो भये सत्रह सूक्षमनाउ। कौनकहातेकासोगुणयहमोको समुझाउ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ वाणीकान व्योमते भाई। एक कहै दूजे सुनिपाई॥ त्वचा हस्त द्वै प्रकृति समीरा। दोउस्परशहिजानत धीरा॥ नयनचरणइन्द्री

है जोई। प्रकटीअग्नितत्त्वतेसोई ॥ नयनचहै ज्यहिरूपहिदेखा। पाततहा पहुँचाव विशेखा ॥ लिगजीभ जलते बुधभाषै । दोऊ रस विलास अभिलाषै ॥ गुदानाक पृथ्वी अनुमानै । गन्धि करै यक दूजी जानै ॥ प्राण अपान समान बखानो । ब्यान उदान पांचये जानो ॥ पाचठौर ते गुण पुनिपांचा । एकैपवन अंश यह सांचा ॥ दो० ॥ धरातोयवाताग्निमिलि व्योमतत्त्वयेपाच । पांचौ के शुभ अंशकरि मनबुधि उपजेसांच ॥ जेती इन्द्री देहकी भोग करैकहुँकोय । स्वादनजानै तासुको मनबुधि जानैसोय ॥ मनहूँते पुनि चतुर जन बुद्धि महासिरदार । होइ सुमति जादेहमें करै ताहि भवपार ॥ (मनउवाच) यह सूक्षम इन्द्रीनको है बखान किय जौन । थूलभई जाभांति सों वर्णनकीजै तौन (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ पाचतत्त्व ऊपर जे गाये । तिनहीं ते तन थूल बनाये ॥ एकएकके करिकरि पांचा । रचेपचीस भषतबुधसाचा ॥ सोयहपचीकरणकहावै । भगवतगीताभलिकरिगावै ॥ अस्थित्वचा रोमानसमाला । धरातत्त्वते करतप्रकाला॥स्वेदशोणपितलाररुरेता । तत्त्वोदकरुविपंचकहेता ॥ क्षुधातृषामुख कांतिकहावै । नींद और आलसबुध गावै ॥ इनकोउपपति लिखितेभाखी । विदित करीकुछ गुप्तनराखी ॥ धाइकूदिचलि कुरिकरियोई । और पसारनि पौनकहोई ॥ दो० ॥ शीश कठ हिय उदरकटि व्योम तत्त्व करि होइ । यह समुझो पचीकरण कही पचीसौ जोइ ॥ कही पचीसौ प्रकृति ये थूल जीव तन माहि । सुनुतिनको पुनि भेद कछु जो तू जानत नाहि ॥ चौ० ॥ यद्यपि पाच पांचकरि गाई । तदपि कहौ जो ज्यहि अपनाई ॥ अस्थि मुख्य पृथ्वीपल नीशा । अग्नि नाडिका त्वचा समीशा । रोम व्योम जल रेत विचारी । पित्त तेज अरु स्वेद वियारी ॥ रुधिर मही अरु लार अकाशा । क्षुधा तेज पुनि पौन पियासा॥ सुखमा जल अरु चालमधरनी । नीद अकाश अंशतेवरनी ॥ धावनिवायु पसारनिनाका । कूदनि लिखि गावत कविनाका ॥ इला सकोच चलनि जलजानो । शिर

नभ खखड वायुपहिंचानो॥ हियसिखि उदर नीदकटि धरनी ज्ञोज्यहि तत्त्व मिली सोगरनी॥दो०॥ अस्तिरेत अरु भूख पुनि धावनि शिरये पांच। इलानीर सिखि पवन नभ क्रमते खालिस साच । याविधि थूल शरीरधरि जीवकरत बहुभोग। दुखसुख नरकरुस्वर्गपुनि पावतरोग निरोग॥ इनहोंतेकरिसुकृतनरमैटि देततन पाप। पारब्रह्मईश्वर भजत देखत प्रकटप्रताप॥ सूक्षम थूलशरीरहो कहे तोहि समुझाय। अबजोपूँछै सोकहौं श्रीहरि पद शिर नाय॥ (मनउवाच) प्रथमकहे तुम तीनिगुण सत रज तमयेनाम। परख कहा जाविधिलहैं नरतनमे धिश्राम (बुद्धि रुवाच) चौ०॥ सकलवस्तुकरहोवैज्ञाना। अतिसुशीलबहुभाति सुजाना॥ निर्मल बुद्धि भजै भगवाना। मोहादिक जातननसमाना॥ मायाजाहि नसकै भ्रमाई। रवई सतोगुण जानिय भाई। ज्ञानहोइ निर्मलतन जासू। सबविधि विद्या विनयप्रकासू॥लोभसहित पुनिसब व्योहारा। सोरजगुण बुधकरतविचारा॥ आपुहिभूलि ईशबिसरायो। कामादिक मदते बौरायो॥ हृदयाचित्त महा कटुबानी। ज्ञानविवेक बातनहिजानी॥ मायामोहलोभकै बाधा। रामभजनलगि कांधनकाधा॥ अगरौदोष अधिक तनदेखो।ताहितमोगुण चितमहँ लेखो॥जो सतगुणको मारगगहई। अन्तसमय हरिपुरसोलहई॥रजगुणहूंकी यहगतिभाई। दृढ़मति रहै तौस्वर्गहिजाई॥तमतेकेवल नरकबसेरा। अपित वर्पलहुनहिं निरवेरा॥दो०॥निजआतम चीन्ह्योनहो रहोमोह आधीन। महा कृतघ्नी जानियम डारिनिरै मनदीन (मनउवाच) मोहिंभईशंका सुनत जीवनरकमें बास। प्रथमभन्यो तुमब्रह्मलव अवकतनरक निवास(बुद्धिरुवाच) चौ०॥आदिअन्त अबकहौं कहानी। करणी तुमलीजो पहिंचानी॥ मिलि त्रियपुरुप अमदहुकेरा। उपजत सुतसुखदाय घनेरा॥ त्रियशरीर महँ मलजो रहई। अतिअपविश्व त्रेव बुधकहई॥ पूरुषतन करकाम अघोरा। विधि सँयोग तियनर करजोरा॥ मिलि नरमल तियमल जमिगयऊ। हरि

इच्छा निर्मिततन भयऊ ॥ उदरहृदय भुजकंठ धनायो । मुख नासिका नयन भुजभायो ॥ शीश सुडौलरच्यो जगनाथा । गुदा लिंग इत्यादिक साथा ॥ कीन्ह सजीव प्रभा निजडारी । नाटक विद्याकरि असुरारी॥दो० ॥ बाधिअधोमुख दयोत्यहि नहिंपायो अवकास । निजसेवा यहखेलहित करिहरि चित्तहुलास॥ चौ०॥ अधमुख बँधे विकलभो जीवा । सबशरीर लिपटो मलपीवा । अतिदुर्गंधि अन्नपच केरी। विह्वल प्राणन सकति निवेरी ॥ भक्ष मातुकटु जादिन काहू । उठीउदर ज्वाला तनदाहू ॥ जठरानल अतिकठिन बखानी । जावश विकलहोत सबप्रानी ॥ परवश परो न मारगकोई । निजमन कृत विचारभो सोई ॥ विदित बात यहसबजग अहई । दंडपरे नरहरि हरि कहई ॥ नहिंरक्षक कउ गर्भबसेरे । सूझेपाप जन्म बहुकेरे ॥ कहै प्रथम जो पातक कीन्हा । ताकारण श्रीहरि दुखदीन्हा॥ दो०॥ अबनारायण कृपा करियहिदुखते निरवारु । त्यागि सर्व भवकामना करिके ज्ञान विचारु ॥ करिहौंसब जपयोग अरुभक्ति कृपानिधि तोरि । सत्य सत्य यहसत्य प्रभु कररक्षा अबमोरि ॥ सुनिनिबन्ध दायानिधे प्रभुमानी परमान। तारक्षाहित आपुहीआये श्रीभगवान ॥चौ०॥ शीत उष्ण माता जोखावै । प्रभु निजकरसों ताहि बरावै ॥ जो कछुकष्ट जीवकहँ होई । नाशैसकल कृपानिधि सोई ॥ रूपचतुर्भुज धरे खरारी । सन्मुख तासुरहैं सुखकारी ॥ जस जननी पाले निजबाला । तसजीवहि रक्षक गोपाला ॥ देखाचहै भजन यहु करिहै । भक्तिहेतु जगसुख परिहरिहै ॥ जबते ईश भयो रखवारा । तबते तन न कलेश प्रचारा ॥ गर्भदिवस यहिविधि चलिगयऊ । जन्मलेनकर अवसर भयऊ ॥ व्यथित शरीरगई सुधिभूली । पच्यमानतनभेजिमिशूली ॥ दो०॥ मुर्छितभो क्षणमात्रतब जन्मलेतकी बार । चेतसमय चहुंदिशनहीं देखा निज रखवार ॥ अतिअधीरह्वै जीवतब कीन्हो कठिन बिलाप । कहां कहां यहधन्दज्यों करैलाग निजजाप॥चौ०॥ धाइधाइ असनान

कराई । कीन्हो स्वच्छ शरीरहिजाई ॥ जबलगि नहिं कीन्होपय पाना । तबलगि नहिंभूलो भगवाना ॥ क्षीरपान कीन्ह्यो ज्यहि बेरा । सोहराज तनकीन्ह शरीरा ॥ बिसरि निबन्धरही सुधि नाही । माया जबहिंगही हितबाहीं ॥ तेल फुलेल शरीर लगावैं । जननी हलरावै दुलरावैं ॥ उबटितनहिं चौतनि घिरढारहिं । सुभग पलँगपर लै पौढ़ारहि ॥ आपु काजगृह लागैसोई । सोहत बालशुद्धि तनखोई ॥ स्वेदज जीवकीट इत्यादी । काटहिंतन दुखदाय बिषादी॥ दो० ॥ जब शरीर कीटनगह्यो रोयो बाल अधीर । बैनकहै समरथनहीं जोभाषै निजपीर॥चौ०॥ करै बिलाप सुनैतहिं कोई । दुखद कीटलागे तनसोई ॥ कतहुमातु सुनिपाव जोबाती । लियोउठायहरो दुखआनी॥ क्षुधावंत आकुल तनभयऊ । मातु सदनकारज चितदयऊ ॥ सूझत इतउत नयन पसारा । ह्वैअधीर तबरोयपुकारा ॥ सुनि सुतरुदनमातुचलिआई । सुखी कीन्हपयपान कराई ॥ कुछ दिनबादि चले निजपायन । मातुपिताकहँ अतिसुख दायन ॥ जहँतहँ खेलनमहँ चितदयऊ । तृषाक्षुधा भूलतहै भयऊ॥ नहिंआवत गृहखेल बिसारी। फिरैसंग बालक ह्वैचारी ॥दो०॥ मातुपिता दिनशोधिकै गुरुपहँ दीन्हपठाय । पढ़ैलाग विद्यातहां नैकनैक चितलाय ॥चौ०॥ जो उत्तमकुल भो अवतारा । तौ विद्यागुण कीन्ह बिचारा ॥ जोपै नीचगृह जन्मत भयऊ । तौ यहदशा खेलमहँ गयऊ ॥ यहिविधि बालापन गा बीती । नाकीन्ह्यसि जो प्रथम कहीती ॥ नर उपकार करत जोकोई । मानतसकल जन्मभरिसोई ॥ महाकष्टते ईशबचायो । ताकहँ कतहुँन शोधिनबायो ॥ तरुण अवस्था तनमहँआई ॥ मैन व्यथाते तनतपछाई ॥ ज्ञातबन्धु मिलिकीन्ह बिबाहा । मनप्रसन्न तनबड उत्साहा ॥ बहु आभरण सजेतनमाहीं । लखि निज रूपन अंगसमाहीं ॥ दो० ॥ मनफूले मारग चलत देखत अपनी छांहि । कहत महासुदरबने कोऊहमसम नाहिं ॥चौ०॥ जो कुछ ज्ञान-चित्तमहँआयो । तौ कारजमहँ जिय बहिलायो ॥ जोमूरख

विद्यादिक हीना। कामविवश तौ फिरै मलीना॥ ताके परतिय लाजविसारे। धर्मकथाते चलहि नियारे॥ कहैजो कोउ यहकाज ननीका। तौ सुनिवैन करैं मुख फीका॥ जो कदाचि सम्पति विधि दयऊ। तौ फिरिअधिक गर्वउर छयऊ॥ गालफुलाय चलैं मगमाही। जनुतिहुँ पुरीभूपये जाहीं॥ मित्रनहू सन मीठी बानी। संपति मदन कहैअज्ञानी॥ काहुइकहै न मधुरीवाता। अहंकारवश उरन समाता॥ दो०॥ साधुसंतकहँ देखिकर करैहँसी तेमूढ़। वादिमुडायो मूडतुमलहोनअर्थअगूढ़॥ चौ०॥ ज्यहिविधि जन्मदीन नरकेरा। त्यहिजग भोगरच्यो बहुतेरा॥ तजिपाखण्ड करौ जगभोगा। वे कारणयह सहौवियोगा॥ सुनतहि वचनसाधु मुसुकाही। जिनके क्रोधलोभ कछुनाहीं॥ जोविधि जन्मरकगृह दयऊ। तौचिन्तावहुविधि तनछयऊ॥ प्रमदातनय सुताहितलागी। फिरैजहां तहँ रंकअभागी॥ करैकृषी अथवा व्योपारा। पर सेवाकरि दिवस निवारा॥ अथवा भिक्षाटन नितकरही। जग छलिभूति उदरनिज भरहीं॥ त्रिय सुत फाँसि मोह गलडारी। भजैन हरिपद भयोदुखारी॥ दो०॥ गई भूलिसबचतुरई चिन्ता ग्रसितशरीर। मिलैनधन उरगातिनहिं जहँतहँ फिरैअधीर॥ पेट खलाये जगफिरै त्रियातनय के हेत। हरिमाया अतिप्रबलज्यहि करयो सचेत अचेत॥ प्रभुसों कियो निबंध जो भूलि गयो जड सोय। कहौजगतमहँ आइफिरि कसन दंडवुधहोय॥ चौ०॥ भटकतही बीती तरुणाई। जरादेह मधि तब नियराई॥ तृष्णाबढ़ी भ्रमलतन भयऊ। तबहूँनईश चरण मनदयऊ॥ अल्प दृष्टि पद धीरज हरहीं। बैठिउठहि तब अतिबलकरही॥ इन्द्रीसकल भई बलहीना। कामादिक तनते भो क्षीना॥ पौरुषबिन उद्यमनहि होई। प्रियबाउक पूंछत नहि कोई॥ क्रोधबढ़ो नहि बरणि सिराही। कहैनीति त्यहिअति अलसाहीं॥ बैठरहै जडरूप दुवारे। जातनिकट कोउनाहिं पुकारे॥ गयोबुढ़ाय शिथिल तन भयऊ। ईश्वरचरण चिंतनहिं ठ्यऊ॥ दो०॥ पद विकार जो देहमें बीती

तिनमहँपांच। छठी आइ नियराइ रहि तबहुँन हरिपद यांच॥ (मनउवाच) षट विकार कासो कहत कहौ मोहि समुझाय। जिन्हैंज्ञानिकै मानिभय हौंसुमिरौं सुरराय (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ जन्म होत यह प्रथम विकारा। दूसर तनकर बढ़त विचारा॥ तीसर बालअवस्था भाई। चौथीभणत विवुध तरुणाई॥ पंचम जरा अवस्था सोई। षष्ठम अन्तकाल जोहोई॥ षट विकार ये कहीबखानी। तेतुम सत्यलेहु मनमानी॥ इनमहँ पंचम बीते लागी। भयो न जीव ईश अनुरागी॥ बीती जरा अन्त नियराना। जगगति भई सो करौं बखाना॥ बाझो कफ लाग्यो गलसोई। अन्न पानि कहँ रुचि नहि होई॥ ऊरधश्वासचली तन माहीं। चन्द्रसूर सन्मुख कउनाहीं॥ जहँ तहँ कफ उगिलहिं उघकाहीं। पडेरहैं जल अन्न न खाहीं॥ प्रमदा पुत्र सकल अनखाहीं। कहैं ईश अबये मरिजाहीं॥ यह विनोनपन अबन सुहाई। हारिगये करिवैद्य उपाई॥ कठिनकराल दशायह भाई। धर्मन करो जो होइ सहाई॥ जस माखी मधु जोरि न खाई। छीनेकोल मनहि पछिताई॥ तिमिसंपदा जोरि गृहमाहीं। दई वराटिक हरिहित नाहीं॥ प्रथमजीव ऐसो अघखानी। तासु पाप किमि कहौं बखानी॥ जन्म समस्त वृथा जड खोयो। संपतिहित सुखनींद न सोयो॥ दो०॥ जोदश दोषनसों भरी देह जीव जयहिवासु। समनचार करिकोप त्यहि चहैंछुडावनआसु॥ मुदगर फाँसी हाथले आये यमके चार। तिनके देखतही विवुध रहीन नेकसम्हार॥ चौ०॥ ह्वैभयभीत तुरत मलमोचा। ताहूसमय न हरिहित शोचा॥ हनि मुदगरन डाल गल फाँसी। काढ्योजीव दशौदिशि गाँसी॥ प्रियातनय सेवक परिवारा। खडे सकलकृत शोच विचारा॥ नेकन वश काहूको चाला। यमदूतन कीन्हो बेहाला॥ मारिकूटि यमत्यहि लैगयऊ। संगी तासु कोउनहिं भयऊ॥ जिनहित सिगरो जन्मगँवाया। प्रियसुतकोउ कामनहिं आया॥ यमपुर भयो न्याय जबजाई। रक्षक धर्म न

ठहरो भाई ॥ नहिं हरिभजन न परउपकारा। तीरथ व्रत नहिं नेक अवारा ॥ दो० ॥ सतसंगति इत्यादिजे उत्तम जगमें काज। तेनेकहु पायेनही तवशोचे यमराज॥ चौ० ॥ महा अधम यह जीव चँडारा। हरिहित नेकन कीन्ह विचारा ॥ कहा दण्ड दीजे यहशोचै। ताअवगुणसुझि नैनजल मोचै ॥ फिरिहरि मायहि शीश नवायो। भीमरूप निजदूत बुलायो ॥ कहो डारु यहि कुम्भी-पाका। हनै चोच शिर खुलते काका ॥ धरि भुजदूत डार तहँ जाई। जामधिपरे जीवअकुलाई ॥ अमकरणी कीन्हीजगमाही। कहौजीव कसनरक न जाहीं॥ यहिविधिजीव नरकमहँ बासा। रक्षक तासु न कउ दशआसा ॥ ब्रह्मक्राति यहजीव वखानो। निजकरणीते नरकहि सानो ॥ दो० ॥ बरणि समस्तकही सुही जीवनरक उर्गोवास। अब जोपूछै सोकहीं छूटै भवभय त्रास ॥ (मनउवाच) कहे दोषदश प्रथमतुम सो म्वहिकहौ बुझाइ। संशय तनको जाइमिटि ज्ञान अधिक सरसाइ ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सुनुदश दोष सहित विस्तारा। योगीजन जो करत वि-चारा ॥ प्रथम शोचभापत बुधिवाना। द्वितियेतनहि अशुधता साना ॥ ततियेतन दुर्गन्धि कहावै। चौथे बहुत खण्ड बुधगावै ॥ पंचम रोगग्रसै तनयेहा। षष्ठमजरै काष्ठवत देहा ॥ सप्तम मरै देह सवजानै। अष्टम शिथिलहोय पहिचानै ॥ नवम बहुरिहोवै यहजाना। दशम स्थूलरूप अनुमाना ॥ अब जो अपर चहैसो गाऊं। निर्मलमति विज्ञान सुनाऊं ॥ येदशदोष बसे तनमाही। अन्तसमय समस्त मिटिजाही ॥ (मनउवाच) दो० ॥ क्यहि विधिछूटै नरकते कहुतू मोहि बुझाइ। कासाधे यहिदेहमें जासों हरिपुरजाइ ॥ (बुद्धिरुवाच) जो षटउर्मी जीतई मिटै सकल तनताप। होवै जीवनमुक्तनर देखै आपाआप ॥ (मनउवाच) सो० ॥ षट उर्मीका आहि यहमोको समुझाइ कहु। फिरिहौ जीतौ ताहि मेटौतनकी तापसब ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ प्रथमकाम अतिविबुध कराला। जावश सवजगजीव विहाला॥

द्वितिये क्रोध पापकरखानी । विकलहोत जावश सबप्रानी ॥ तृतिये लोभ महादुखरासी । सकल जगत गळडाल स्वफांसी ॥ मोह चतुर्थ वृजन गृहजानो । नरकजीव तावश अनुमानो ॥ पंचम भानवसै तनमाही । हरिचरित्र ज्यहि कुछ न सुहाही ॥ षष्ठमतन अपमान कहोई । ज्यहिते जीवहि अति दुखहोई ॥ ये पटउर्मीसंतबखानैं । समुझहि चतुर जेज्ञानहिजानै ॥ जीवन-मुक्तहोइ इनजीते । नरकजाइ इनके हितलीते॥ (मनउवाच) दोहा ॥ मोहादिक जे तुमकहे व्यापत सबकीदेह । का उतपति किमि जीतिये कहिये सहित सनेह ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ सुनुउतपति इनकीचितलाई । सर्वप्रसंग तुहिंकहौं बुझाई ॥ देश शरीर बसैमन भूपा । तासुत्रिया द्वैमहा स्वरूपा ॥ एकप्रवृत्ति दुर्भगा नारी । द्वितिय निवृत्ति महासुखकारी ॥ मोहलोभ अरुक्रोध कराला । काम कुभोग दुष्टसबकाला ॥ अहंकार मिथ्या द्विजदोषा ।हिंसा दम्भआदिसहरोषा ॥ पुनि अविवेककहो पाखण्डा । तृष्णा दुःशीलता प्रचण्डा ॥ मान अलज्जा आदिकजोई । भयेप्रवृत्ति जातसब सोई ॥ ज्ञान विवेकाचार विचारा । दान धर्म वैराग्य सम्हारा ॥ दो० ॥ शांति दया अरु शीलता सम्संतोष अलोभ । लज्जा क्षमासु चातुरी मनजानिये अक्षोभ ॥सो०॥प्रणय न्याय अरु योगसुख इत्यादिक बसैतन । निवृत्ति जातये लोग समुझतज्ञानी योगिजन ॥ (मनउवाच) दो० ॥ द्वै माता यक पितातें भयेप्रकटयेसर्व । वैरभयो कारणकहा मेटौ सब्रयखर्व ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ विदितबात यहसबजग अहई । वैर विमातनमे कुछरहई ॥ और अधिक याते यहकारण । चहै विवेक जीवकह तारण ॥ मोहचहै निजपितु सुखदीन्हा । तातें वैरभाव उनलीन्हा ॥ जो विवेककी पकरै शरणा । सोसेवै श्रीहरिके चरणा ॥ चलैमोह मारगजोभाई । धर्मरहित नरकहि चलिजाई ॥ जे पंडितजन जगतसयाने । ते विवेककेमारगसाने ॥ अंतसमय पावै सोई पद । जो ऋपिराज वेद आगम यद ॥ चलै मोहवश

मूरखजोई। अवशिहोहि नरकागमिलोई ॥ दो० ॥ थिरचितकरि सजि दुर्मतिहि सुनु विवेक की जीति। जेयहि विधि हार्यो मोह दल भागेहि भयभीति ॥ चौ० ॥ पूरब कहो बैरकर हेता। अरु उत्पत्ति सुप्रेम समेता ॥ अब सुनु कथा रसाल सोहावनि। बिज्ञानिन कहँ अति मनभावनि ॥ गहो जीव जब पंथ विवेका। हरिहि मिलन हित टेक्यसि टेका ॥ त्यागयसि सकलविषयपरिवारा। ज्ञान धर्मकर कीन्ह पसारा ॥ तबहीं शोच मोह मन ठयऊ। काम क्रोधकह बोलत भयऊ ॥ अरु पाखंड शोक सन्तापा। लोभादिकजिन अधिक प्रतापा ॥ सबसनमिलि यहसम्मत कीना। हतो विवेक दंडदै पीना ॥ तासु सकलदल बाँधिसुलेहू। अथवा देश निकारा देहू ॥ दो० ॥ नाइ वरण शिरमोहसों बोला सुभट पखंड। जीवकरौंहीं आपुवश जीतिविवेक प्रचंड ॥ सो० ॥ आपु धरी उरधीर कितीबात यह कृपानिधि। लै असत्यरणधीर जीतिसमर बाधौरिपुन ॥ चौ० ॥ असकहि चलो सुभटपाखंडा। निज स्वरुप तव रचो अखंडा ॥ झूँठा शिष्य संग त्यहि डोले। जो प्रतिक्षण असत्य बच बोले ॥ रचे विभूति सर्व तन माहीं। सुन्दर जटा सुशीश सुहाहीं ॥ माला गले परी द्वै चारी। कान शीश बहु माल सम्हारी ॥ मध्य दंड माला भुज छोरा। छाती कांध माल द्वै जोरा ॥ टोपा लाल शीशपर सोहै। सुभग कमंडल कर मधि जोहै ॥ आवत देखि जीव सतभावा। मध्यबाट मृगचर्म डसावा ॥ निज माया पाखंड पसारी। झूंठशिष्यसो बैठ अगारी ॥ जिमि बक रंगे चोंचिपद नैना। बने हस कछुकहै न बैना ॥ निर्णय नेल पथ जब परिजाई। तब सिगरे जग होइ हँसाई ॥ सतपाखंड कीन यह माया। लखि स्वरूप जीवहि भल भाया ॥ कीन्ह दंडवत पद शिरनाई। चहै कि चलि आसनढिग जाई ॥ दो० ॥ कही तबहि ता शिष्यने सुनुरे मूढ़ गवाँर। पाछू गुरु ढिग जायगी प्रथमहि चरणपखार ॥ नेकहु कीन्ह विचार नहिं निराचार तू आहि। पदवी शिष्टाचारकी सोतूं जानत नाहिं ॥

चौ० ॥ ब्रह्म सभा शुभ देव समाजा । शोभित जहां दयौ दिगराजा ॥ एक समय तेहि सभा गये गुर । देखतहीउठठाढ़भयेसुर॥ ब्रह्मा वहु विचार उरलावा । इनहि योगनहिं आसनपावा ॥ तव पद वंदि दीन कमलासन । दोकरजोरि मांगि अनुशासन॥ सो सुर पूज्यगुरू ममराजै । पुण्यस्वरूप महाछवि छाजै ॥ तिन ढिग चलपद विना पखारे । तैंमूरख अज्ञान महारे ॥ यह सुनि जीव सत्यकरि जाना । तासुवचनकी कीन्ह प्रमाना ॥ शोचकरै शिक्षा यहिलेऊं । अपरवात सिगरीतजि देऊं ॥ दो०॥जवजान्यो जीवहि भ्रमत तवपाल्यो सद्भाव । हारिविवेक विचारिउर समुझिआपनो दाव ॥ चौ० ॥ सुनुरेजीव भूलमति भाई । जनियाकी वातनपर जाई ॥ शिष्य झूठ अरु गुरु पाखण्डी। लोकलाज सिगरी यहि छण्डी ॥ जगतसकल छलिवेके काजा । कीन्हसम्हार देह करसाजा ॥ जोलखिभूलि जाहिजग लोगा । सहैमहा दुखदाय वियोगा ॥ यहसुनि दम्भ चापुइमिकहई । वडसद्भाव छलीतूअहई ॥ प्रकट कहानी यह जगमाही । आपनसम कोउ दूसरनाही॥सुनु तोकहँ भलिवात वताऊं । पुनिअपने मारगमहँ लाऊं ॥ प्रथमहिं तनकहँनीक सम्हारै । ता पाछे पुनि वेद पसारै॥ दो० ॥ अशुभ रूपजग जेधरे यद्यपिमहा प्रवीन । आदरतदपि न करतकउ करत सभाते भीन ॥ चौ० ॥ यातेभल शरीरका साजै । विविध भांति आनँदसो राजै ॥ दानदेइ जग लहै वड़ाई । परधन हरै हेत गुरुताई ॥ विनस्नान न जल मुखमेलै । करि पूजन पापन कहँ ठेलै ॥ यज्ञकरै जपभांति अनेका । नेमसहित छूटैनहिं टेका ॥ तू कुवेषअरु धर्मन जानै । कहुकहनी तोरीकोमानै ॥ धनाचार तव संग नशाई । विनअहार वसनन विनुभाई ॥ काहि स्वहाइ ऐस दुखसाथा । सुनते वचन पीटिये माथा ॥ तव सद्भाव नीति भय वानी । कही विवेक विरागइ सानी ॥ दो०॥ सुनु कहनी मम ध्यानधरि कहोंतोहि समुझाय । भूषणवसन अनेकविधि त्रियतन अधिक सोहाय ॥ चौ० ॥ तनशोभा अरुअधिक शृँगारा । कैसो-

भत नृपके धनवारा ॥ दीन चहै नृप समतन साजा। निज दिखि देखिलहै घडिलाजा ॥ कहांवसन भूपणवेपावै। जोशरीर नृपसम सजिलावै ॥ नृपसोवत भलिसेज बनाई। दीनधरा पर ष्यार ड-साई ॥ भूपति सुखित जन्म सबकाटै। दुखिया तन चिन्तानित चाटै ॥ रहैसदा स्वाधीन नरेशा। पराधीन परजासु कलेशा ॥ वर्तै मध्यभाग हरिदासा। नहिभूपेति नहिंदीन दुरासा ॥ जसमहिपरै सेज तससोवै। दुखसुख दुहूं वातको खोवै ॥ दो० ॥ कवहूं भो-जनभूपसम कवहुंक फल आहार। दुहूंवातते रहित कहु व्रतहरि हितअनुसार ॥ चौ० ॥ कहु शुभ वस्त्र नग्नकहुं रहई। वल्कल कतहुं पहिरि मुद लहई ॥ दुखकहु सुख पावै जगमाहीं। मान अमान विचारत नाहीं ॥ जवयह दशाजीव कहँ आवै। तव हरि मारगभललखिपावै ॥ जन्ममनुष्य भयोयहिहेता। भजैईश करि-कै चितचेता ॥ नहिंयहि हेतजो चहै वडाई। भूपण वसननस्वांग वनाई ॥ निजशरीर कर करत सन्हारा। ईशभजन सबभांति बि-सारा ॥ करिपाखण्ड जगत छलिपावै। सो प्रभुनहिँ ठगनी महँ आवै ॥ देखै तिहूलोक बिन अंजन। यहिकारण हरिनाम निरंज-न ॥ ईश्वरनहिरीझत लखिरूपा। मोहत लखिनिज दासकुरूपा ॥ रूपवंत धनवतनरेशा। होत न संत समान विदेशा ॥ जोपाखंड पथतव गहई। निश्चय अंतनरक सोलहई ॥ पुनिकरिकोप कहै यहदम्भा। वलिहरि हितकिय यज्ञारंभा ॥ दो० ॥ दान दियो वहुयज्ञकरि वलिहरिचन्द नरेश। दशाभईसो विदित जग सुनि पाइयतकलेश ॥ चौ० ॥ व्याध अधम सहजै गतिपाई। गृद्ध सेवरी हरिपुर धाई ॥ गणिका अजामील अवखानी। जिननं विवेक वात कडजानी ॥ कुंजर पशु इत्यादि अनेका। लही सुगति तजि पथ विवेका ॥ वेदशास्त्र सवकरै विवादा। समुझत जीवहि होत विषादा ॥ कोऊ ईश शंभु कहँ टेरै। कोऊ जगत मात दिशि हेरै ॥ विधिकोऊहरि गणपति भाखे। कोऊटेक सूरपे राखै ॥ वसत जीवदेहीमहँ जोई। कहत वेदान्त ईश है सोई ॥

झगरा यह न होय निरुवारा । ताते कुछ नहिं पंथ तुम्हारा ॥ दो० ॥ कहु पुनि गहि केहि पंथको लेवै ईश्वरिझाइ । तब सद्भाव अनंदयुत कही ताहि समुझाइ ॥ चौ० ॥ तजि इच्छा अरु मान गुमाना । गहै बुद्धिकर ज्ञान कृपाना ॥ काटि मोह फांसी निज हाथा । ज्ञानी पुरुषनको करि साथा ॥ भजे ईश दुखसुख दौ त्यागी । दया धर्म सौंहूं अनुरागी ॥ योग भाव आतम निज हेरै । श्रद्धा सहित ईशकहँ टेरै ॥ यहि विधि सो तजि राव पाखंडा । अन्त मुक्ति सोलहै अखंडा ॥ सुनिपाखंड मयनसद्भावा । लज्जायुत अघ शीश नवावा ॥ बहुविधि मन बिचारकर सोई । लूझिपरा नहिं उत्तर कोई ॥ अतिदुख सह मृगचर्म उठावा । अमित भांतिकृत मन पछितावा ॥ दो० ॥ हारिपरा खलचला गृह सिरयो मोहको जाय । समाचार सद्भावकर सर्व कहा समुझाय ॥ मोहराज अति दुखित ह्वै कामहिं कहा बुझाय । जाहु तात पौरुष करो जीव लेहु अपनाय ॥ जीवसंग सद्भावइत कह विवेक सो गाथ । हारि जानि पाखंड की हर्षितभो सब साथ ॥ सुनी वृत्तांत विवेकजू काम कीन्ह दल साज । तब विचारको प्रबल लखि पठवा जानि अकाज ॥ चौ० ॥ चला कामकरि आपु बनावा । सुमनबान निज धनुष चढ़ावा ॥ सँग ऋतुराज उर्वशी नारी । राग रागिनी ताल सम्हारी ॥ कोकिल पिक अरु तिहुँ गति घाता । मदन दाह उपजै लखि गाता ॥ देखि जीव भल ठाटबनावा । त्यहि अवसर विचार तहँ आवा ॥ लगि विचारि बोल्यो तब कामा । सुनरे जीव वचन सुखधामा ॥ सुना तु भो सद्भाव संगाती । तजि सुख संग बैठदुखपांती ॥ विधि तनदीन्ह भोग हित लागी । तू मतिमंद दीन्ह त्यहि त्यागी ॥ तातेअवशि त्यागि सद्भावा । त्यहिं बिपदेन हेतुहौं आवा ॥ दो० ॥ ब्रह्मा विष्णु हरादि सुर सर्व करत नियभोग । जाते अधिकन औरकछु सुखभाषत बुध लोग ॥ चौ० ॥ ॥ तब विचार कह सुनु रतिनायक । अति निलज्ज तव संग कुभायक ॥ जो बड़नीक भोगतुम

कहहू। जासु गर्व अति सूलत अहहू ॥ तासु वृतांत सुनौ चित लाई। पाछू जीवहि देहु भुमाई ॥ प्रियभग अवितरक्तमोरहई। अरु मल मूत्रभरी बुध कहई ॥ जासु दशासुनि मनघिन आवै ॥ परसतही नर नरक सिधावै ॥ ऋतु वसंत अरु तीनि बतासा। सुमन साथ लखि मोहिनत्रासा ॥ परतिय रमण करतजेप्रानी। दुहूं लोक कृत निज करहानी ॥ इत नृप सुनै तुरत धरि मारै। उत यमदूत नरक गहिडारै ॥ दो० ॥ हँसीहोयदुहुं लोकमें कहा भोग या माहिं। करै कही तुव जीवसौ हमनहोहिंग्यहिपाहिं ॥ यह सुनि खल निज हारि लखि गयो गेह अकुलाय। मोहराज सों हारि निज कही महा दुखपाय ॥ चौ० ॥ बोला नृपतिक्रोध अपुपासा। कहो मेटु अब मम परिहासा ॥ जीति चमू बांधिये विवेका। करिय जीव निज बशरहै टेका॥ छूटै पिताकरै बहुभो-गा। नतवियोग यहिमरिहैं लोगा ॥ चल्योक्रोध आज्ञातामानी। अदया हिंसादिक मन आनी ॥ समाचार यह पाव विवेका। बोलि क्षमा कहँ जोकर नेका ॥ क्षमा अहिंसा आदिक धाई। जहां जीव तहँ तुरतहि आई ॥ क्रोध क्षमालखि नवअसदःहई। मोदेखत तुवधर्म नरहई ॥ अर्जुनअसज्ञानी जगख्याता। निज कर थापन कुलहि निपाता ॥ दो०॥ परशुराम माताहनी ब्राह्म-ण मारो राम। शंकर सुत माथा हरो कीन्ह्यो बड़ो अकाम ॥ सो० ॥ यह पौरुष है मोर मोबिन जग जीवै न कउ। मारग चलै न तोर मो सन्मुख कोटिहु किये ॥ चौ० ॥ तपसी मुनिहीं घने बिडारे। ध्यान जीव जग कहा विचारे ॥ क्षणमहं क्षमा दयाधरि मारौं। बांधि विवेक बंदि गृहडारौं ॥ पलहित पशु पक्षीपरहेता। द्रव्य लागि मानस हनि लेता ॥ पौरुष कौन जीव अपनायो। मोर नाम कहँ सुनि उनपायो ॥ तबहि क्षमा क्रोधहि समुझायो। सत्य वचन तुममोहि सुनायो ॥ जहँ हम जाहि तहां तुम नाहीं। विदित अन्य सिगरे जगमाहीं ॥ हरिश्चन्द्र क्रोधहिनहिं लावा। चांडाल गृहआपु बेचावा ॥ मोर-

ध्वज निज शीघ्रचिरावा। धर्मशखि तन क्रोधदुरावा॥ जब कर आय मुष्टिकामारै। तासन लकुटी हनन प्रचारै॥ जो दुरिआय देयकरि क्रोधा। जायपास विनती करिबोधा॥ सबसन मधुरी भाषैवाता। शत्रुमित्र करलखैन नाता॥ परदुख देखि दुःख मन लावै। सेवाकरि ता दुखहि दुरावै॥ दो०॥ तपसीमुनि चण्डाल नर पशुपक्षी अरुकीट। येसमस्तहैं ब्रह्मलव हनैयोगसुनु ढीट॥ नैनलालउर कोपबढ हारिचला गृहसूत। ज्योंपौरुष लघुकहैवढि लज्जालहैं कपूत॥ चौ०॥ जाइक्रोध निजहाल सुनावा। मोह राजमनभा पछितावा॥ ताहीसमय लोभ हँकरावा। काम क्रोध वृत्तांत बतावा॥ सुनतलोभ तनभा अति कोपा। क्षण महँ करौं बिवेकहि लोपा॥ धाइचल्यो जीवहि अपनावै। अरु बिवेक दल समर हरावै॥ जब बिवेकने यहसुधिपाई। सपदि दीन्ह सन्तोष पठाई॥ लखि सन्तोष लाभयह भाखै। भो सन्मुख तोकहँ को राखै॥ ब्रह्मचर्य वैरागीमेंही। लोभलालसा लागि न केही॥ जब वराटिकाकी भैचाहा। ईश्वरकीन्ह सोपैसालाहा॥ तबमुद्रायाचैभ वप्रानी। मुद्रास्वर्ण पावसुख खानी॥ नहिसन्तोष सम्पदा चाहा। मिलै अधिक धनसो उरदाहा॥ यद्यपि क्षयपतिपद मिलिजाई। तदपिन उर सन्तोष दृढ़ाई॥ दुखियायह बिचार नितकरई। परो मिलै कीपरधन हरई॥ दो०॥ पशुपक्षी इत्यादिजे मोहितत्यागत प्रान। मोबिन सुखपावत नहीं तोहि तजतकहि स्यान॥ ताते जाहुपराय गृह हानि आपनी जानि। जीवलियो अपनाइ हम त्यागीतेरी कानि॥ चौ०॥ तब सन्तोषै कहैसुनु भाई। ऐसियहै तुम्हरी प्रभुताई॥ बलिराजा पहँ गयउन भूले। रह्योसिराय भये अनमूले॥ हरिश्चन्द्र करदुख नहिलागा। लोभनारि सुततन जिन त्यागा॥ परशुराम कहँ नहिअपनावा। यक बिंशतिधा धरा बहा- वा॥ स्वर्ण अतोल लद्दू रघुनाथा। दीन दान जग गावत गाथा॥ करणहि कन नहि आनि सिखावा। प्रात नित्य अर्जुनहिं लुटा- वा॥ मूरख अविवेकी अज्ञानी। तुव पथ चरण देतते प्रानी॥

सपति दुख सुख लिखा लिलारा। विधि-अक्षरको मेटनहारा॥ दो०॥ देवत ईश्वर लहतमो करत ईश्वरतो होत। यांचतवाप्रभु सोनवा सकल हमारो गोत॥ विपतिपरे सब धन नशै दुख उपजै भरपूरि। लोभ न लावै भजै प्रभु राम सजीवन मूरि॥ यह सुनि लोभ परायचल विजय लही संतोष। गहो जीव मारग सुभग जाते पावै मोष॥ चौ०॥ लोभ अजय सुनि मोह रिसाना। पठवी अहंकार बलवाना॥ इतहु बिनय आपनदलसाजा। विजय विवेक होत मन भाजा॥ को बहु बकै हार अहँकारा। त्राहि त्राहि ढिग मोह पुकारा॥ अकथ दुःख पायो तब मोहा। निजदल सकल अबलकरि जोहा॥ तबआपुहि उठिचला नृपाला। तासु चलत तन भूतल हाला॥ सुन्यो विवेक मोह चलि आवा। प्रथमहि धीरजआपु पठावा॥ तापश्चात् सोचकृतआपू। मोहराज कर अधिक प्रतापू॥ अस न होइ कहुं धीरज हारै। करि प्रपंच भूपति त्यहि टारै॥ दो०॥ उचित मोहि पाछे चलौं हनों सकल आराति। उत धीरज कहँ देखकर मोहराजमुसकाति॥सो०॥ सुन धीरज ममबैन कहौंजाय निजनाथसों। उचित बात यह हैन धा०यो पिता अनीति करि॥ चौ०॥ अस भणि मोह कोह उरलायो। करिबल अमित जीव अपनायो॥ अरु धीरज प्रतिकहँ असि बानी। जाहु तात नतपैहौ हानी॥ जो तुम्हार पयसग्रह करई। प्रिय तनय निज धन परिहरई॥ वाहन वसन विविध भंडारा। राज्य द्रव्य भूषण परिवारा॥ सोदर अति प्रियसदन समाजा। मित्र पिता माता सुखसाजा॥ तुरी भूमिगजअश्वसमेता। दासीदास जेनितसुखदेता॥ गोधन आदि विभूति अनेका। इनतजिलै काकरिय विवेका॥ हिलिमिलि सबमन कीजियनेहा। कबजानिय छूटै यहदेहा॥ दो०॥ सब कर करि प्रतिपाल नित धनपरिवार बढ़ाय। निजधन सो अपनाइये औरको लेइपचाय॥ सो०॥ मोहवचनसुन जीव तामारगसेवन चहत। त्यागन सुखकी सीव तब धीरज असकहतभो॥

चौ० ॥ सुन हमार मत मोहलयाने । ममदेखत तुमआशुपराने॥ शूरन संग सदा हम डोलैं। मोहलीन जे बचन न बोलैं॥ काको त्रियकाको सुतगेहा । समरभूमि त्यागत निजदेहा ॥ कायरकूर तुम्हारसँगाती । जेहमरी पावत नहिंभांती ॥ सतीशरीर हमारअवासा । भस्मकरत तनतजि सबआसा ॥ संपतिघटै बढ़ैचहुंभाई । मनहमार नहि कछुअकुलाई ॥ यहिविधि धीरमोह बतलाता । एक एक की सुनतन बाता ॥ त्यहि अवसर विवेकतहँ आयो। विविध भांति जीवहि समुआयो ॥ दो० ॥ जन्महोत तननग्नही अंतहु चलतउघार । ध्यानधरौ ममवचनपर नशैमोहव्योहार ॥ चौ० ॥ जवरण प्रजनसो कठिनाई । त्रियातनय सब छूटतभाई ॥ धीरजही तब आवतकामा । सपति भवनरहै सबदामा ॥ अंतसमय जब यमचर आवैं। मात पिता दासीन बचावैं ॥ वाहन तुरीगयन सबछूटैं। पटभूषण आपुहिते टूटैं ॥ यमचर बांधि दशौदिशि घेरी । दुर्गतिकरै जीव सुनतेरी ॥ जिन्हेमोह आपनो बतावै। तेसिगरे यहने छुटिजावैं ॥ आपनि नारि बतावत जाही। पुत्रकहत माता निजवाही ॥ तासोदर निज भगिनि बतावै । तासुपिता कन्याकरि गावै ॥ ऐस्यइ पितुमाता सुतलाला । कस तुम्हार साझिनकर जाला ॥ सदन आपनो जाकहँ भाषौ । कीटालय ताकहँ अभिलाषो ॥ पशुजानत निजगृह करि ताही । पक्षीश्वान मूषबंध जाही । मंजारी आदिकजे देही । निजघर समते सकल सनेही ॥ दो० ॥ कहो तुम्हारा कैस गृह ये समस्त सझियार । त्यागि मोह तात्ते चतुर करु हरिमिलन बिचार ॥ मोहपराजयप्राप्तभो भैविवेककीजीत । जीवगहो तबसत्य पथ हरिसों बाढ़ी प्रीत (मनउवाच) ॥चौ०॥ गहोजीवजबमारग साँचा । पुनिकसकीन्ह कहौ मतराँचा ॥ (बुद्धिरुवाच)जब विवेक जीवहि अपनायो। तब ताकहँ निजपन्थ बतायो॥ कहिनि साधनाचारि विचारी । योगी जन जेकरत नियारी ॥ प्रथम विराग रूपसिखरावा । ता पाछे निज अंग बतावा ॥ शम दम कहि

मुमुक्षु पदद्वयऊ । जीव कृतारथ असकरि भयऊ॥ पुनिमनप्रश्न कीन्ह गिरनाई । सकल वृत्तांतकहौ समुझाई ॥ का विराग का अहै विवेका । का शमदम मुमुक्षु का टेका ॥ करै साधना ये नर जोई । परखकहा लक्षणकहु सोई ॥ दो० ॥ सुनो तात दृष्टान्त शुभ परख साधनाचारि । अस्तव्यस्त निर्णयनकछु कहौ सकल निरधारि ॥चौ० ॥ ब्रह्मादेव राज अहिराजा । यक्षप वरुण सूर यम भ्राजा ॥ भूपति रंकधनी सुखखानी । कामी कुटिल गुणी अज्ञानी ॥ तिहुँपुर देहधारि जे प्रानी । जो कृतभोग अधिक सुख मानी ॥ सो समस्त दुखदा अनुरागी । काकविष्ट सम लखै विरागी ॥ असिमति जासु देखियेभाई । सो वैराग्य योग स्यवकाई ॥ देहअनित्य सदा छलकारी । आतम नित्य स्वछंद बिहारी ॥ सारासार शुभाशुभ जानै । सो विवेक मारग पहिचानै ॥ सकल वासना तजिससारी । शम दम दान दया अधिकारी ॥ दो० ॥ विषयदोष निरखैनहीं दुखसुख लखैसमान । आज्ञा गुरु श्रुति शीशधरि विचरै जगत सुजान ॥ अति श्रद्धा यक चित्तह्वै ध्यान समाधि लगाय । ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय॥ चौ०॥आवागमन त्यागहितभाई। बहुविधि करैयोग चितलाई ॥ वासररैनि ईशपद ध्यावै। सोमुमुक्षु पदधारि कहावै ॥ यहि विधि सकल साधनासाधै।भजैआपु आतमनिरुपाधै ॥ पूंछि बहुरि मन यहबुधिपाहीं । चित्तअहमन बुधितन माहीं॥ वसतसकल गावत कविराजा ।निर्णयकरि बरणौतिनसाजा॥ सुनोतात तिहुँपुरकर ज्ञाना । बसतचित्त बुधकरत बखाना ॥ प्रथमहिं जो विचार कछु आवा । चित्तवहै ज्यहिजीव चितावा ॥ करिलेहौं देहौं मैंयेही । शोचत यहै अहंकहु तेही ॥ दो० ॥ बहुविधिकरै विचारजो काज सिद्धिकेहेत । सोहै मनमन जानिये बरणत बुद्धिनिकेत ॥ सब को थिरकरिदेइजो सुन्दरसिखदैतात । सोबुधि जाउपदेशते काज सिद्धिह्वै जात ॥ येई अतःकरणमन भापत बुधजनचारि । अन्य भावना होयजो सोबरणौं निरधारि (मनउवाच) लोगकहत सं-

सारके करणयोग तिथिवार। ऋक्षसहित पंचांगशुभ करतसुसिद्धि विचार॥ चौ०॥ जबपंचांग अशुभ यहहोई। सिद्धिकाज तबहोय न कोई॥ तहां कौनविधि कारज करई। होइ न हानि लाभ संचरई॥ सोविचार म्वहिंकहो कृपाकरि। ह्वै प्रसन्न उरअधिक दयाधरि॥ दिशाशूल योगिनी बतावै। चन्द्र राहु शुभ अशुभलखावै॥ करै न गौन हानि अनुमानी। जबये अशुभलखै जगप्रानी॥ विष्टमुहूर्त्त विचारत पंडित। कारज कृतलहि सगुन अखंडित॥ योगीजनन विचारत सोई। गौनसिद्धि कारज सिधि होई॥ यहसिद्धांतकहो समुझाई। ममदुविधा सबजाइ नशाई॥ दो०॥ गेहीजन रोगहिलहत औषधि करत अनेक। रुष्टपुष्टयोगी रहत विनऔषधि गहिटेक॥ मज्जन भोजन चैन लघुशका शंका जौन। इनहीके विपरीतता होत रोग गृह तौन॥ इन सबको सिद्धान्त जो मोम्वहिंकहो बुझाय। पांचतत्त्वको रमणतन ताहि देह समुझाय (बुद्धिरुवाच) चौ० पूंछसि भलविचार सुखखानी। कहिहो सकल सुमिरि पदवानी॥ यहपंचांग सत्यकरि जानों। शुभअरु अशुभहिये अनुमानों॥ ज्योतिषमत न योगमतभाई। सबविधि सिद्धिसिद्धि मनपाई॥ तिथि अरुवार योगशुभहोई। सकल सिद्धिदा अशुभ न कोई॥ सबहि उचित सबकरैं विचारा। याहीकर विशेष निरधारा॥ ज्यहि मतयेन शुभाशुभ भाषै। सब विधि मंगलसिद्धि प्रकाशै॥ सो सुरज्ञान सुखद सबभांती। धरिय ध्यान तापर दिनराती॥ बरणौं सुरज्ञानहि विस्तारी। निज मतिसम लखि ग्रंथ पछारी॥ दो०॥ यह समुद्रवत ज्ञानहै वीच श्वासको गौन। निर्णय कारज जगतको जलजीवन समतौन॥ तत्त्वनको निरधारजो सो अगाधता जानु। बहु प्रकारके भेदते मिलत सरितवत मानु॥ तासमुद्रके पारको जानचहै नरकोय। बोहित विन आरूढभे पारजाय किमिसोय॥ चौ०॥ एकपरतु मोहिं बलुभाई। करैस्वामि गुरुमोरि सहाई॥ आशिष तरणि आपुके बारा। बनैतो वेगिहि होइ उतारा॥ करिहै सो सहाइ

जनजानी। म्वहिंभरोस यहमनक्रम वानी॥ ताते बन्दिजलज पद गुरुकै। निर्णयकरौं ज्ञान सुरफुरकै॥ सुनो गरोदय ज्ञान रसाला। कहो उमापति शंभु कृपाला॥ नाडी थित बहुविधि तनमाहीं। जानतबुध मूरख जननाही॥ नाभि अधोखग अंड समाना। सबनाडिनकर स्वइ अस्थाना॥ अध ऊरध तिर्छी बहु धाई। सहस बहत्तरि नाडि सिधाई॥ दो०॥ तिनमहँ दशअति श्रेष्ठहैं प्राणस्थित सोजानु। दशमहँ त्रैसुखदा इडा पिंगल सुखमनमानु॥ चौ०॥ चौथी गंधारी अनुमानो। हस्त जिह्वा पुनि पूषाजानो॥ यशस्वनी सातवीं बखानो। अलंबुषा अरु कूहू मानो॥ और शखिनी कहत सुज्ञाना। येदशनाडी सहित प्रमाना॥ अब इनकर विश्राम बताऊ। जगत काजहित ज्ञानलखाऊ॥ इडानाम नासा पुटमाही। बसत पिंगला दक्षिणताही॥ दोंसुर पूरणकरै प्रवाहा। सो सुखमनी कहत कविनाहा॥ गंधारी वामाक्षि निवासी। हस्त जिह्वा दक्षिण दृगवासी॥ पूषा दक्षिण श्रुत विश्रामी। वामेकरण यशस्वनि धामी॥ दो०॥ अलंबुषा मुख वासिनी कूहूलिंग विराम। शखिनि मूल स्थानबस दश नाडी दशग्राम॥ त्रैनाडी अतिश्रेष्ठजे प्रथमहि कही बखानि। तिनहीको सबख्यालहै शुभविचार अनुमानि॥ चौ०॥ गायत्री अजपा सुखदाई। सोहहंसः दुविध बताई॥ नित प्रतिगौन श्वास सगहोई। यकइस सहस छसौ कहु सोई॥ निरगम श्वासहँकार बिचारे। सहितबिन्दु कोजैनिरधारै॥ थिसरगसहितसकारप्रवेशा। शुभगमन्त्रयहअहै गवेशा॥ यहिसम मन्त्र जपनहि ज्ञाना। तपन कर्मविधानहिं ध्याना॥ सकल भरमना जेजगमाही। जपत मन्त्र ते सर्व बिलाहीं॥ सो मतात कहिहौं कछुआगे। सुनोतातज्यहि हित अनुरागे॥ इडा पिंगला सुखमन जोई। सकल सिद्धि दायक है सोई॥ दो०॥ इडावाम पिंगलदहिन नासारंध्रनिवास। दोनो सुरपूरण चलै तब सुखमना प्रकास॥ चौ०॥ इडा चन्द्र थिर कारज दायक। पिंगल रविचर कारज लायक॥ सुखमन

सकल काजकी भंगिनि। केवल ईश भजन की संगिनि ॥ जब सुखमना श्वासमग होई। तब न काजकीजो जगकोई॥सुखमन ध्यानअग्नि थितरहई। कारज थिर चरसब सो दहई ॥ इडाचंद्र समरूप वखानो। पिंगल भानु विषम पहिचानो ॥ इडा नारि पिंगला पुमाना। सितश्रसित रूपसो भाना ॥ अवसुनुइडा काज चितलाई। थिरकारज कीजिय सुखपाई ॥ आभूषण गढ़ गढ़ी बनावै। यात्रादान विवाह करावै॥ दो० ॥ अलंकार मणि वस्त्रको वनवाउब तनधार। दानदेव प्रेतिककरम काष्ठकर्मनिरधार ॥ चौ० ॥ स्वामिदरश कीजिये मिताई। वणिज वित्त गृह प्रविशिय भाई ॥ सेवा कर्म कृषी आरंभा। बीज ववन मखकर प्रारंभा ॥ दिक्षादेइ मंत्रकहुँ जपई। विद्यारंभ गेहनिज थपई ॥ दरश वन्धुअरु वारि बँधाउव। रस साधन शुभ वाग लगाइव ॥ वापीकूपसमहल तड़ागा। करु पथिचार सहित अनुरागा ॥ गीत वाद्य नृत्यादिक कीजे। निधिमहि थापि सकल सुख लीजे ॥ भूमिलेव अरु नगर बसाउव। वहु प्रकार जग धर्म चलाउव ॥ अपरौकाज लखौथिर जोई। चन्द्रप्रवाह कीजिये सोई ॥ दो० ॥ इडाकाज वर्णनकिये सुनुपिंगलके काम। दूरि होय भ्रम जगत हिय होवैज्ञान विराम ॥ चौ० ॥ शास्त्रारथपुनिकरिय विवादा। चोरीअरु अखेट परसादा॥गजबाजी रथवाहनलीजे। दक्षिणचार प्रयोगहि कीजे ॥ पाट पटाम्बर शस्त्र मँगावैं। भेषज करि विष भूतहटावैं ॥ युद्धगमन दक्षिण सुरकरई। निश्चय जीति शत्रुपद हरई ॥ त्रिय प्रसंग करु भानु प्रवाहा। सोवन भोजनादि सुख लाहा ॥ क्रयविक्रय सुपुण्य असनाना। भयमारग व्योहार सुजाना॥मोहन उच्चाटन वशकर्मा। अस्तंभन मारणजे धर्मा॥खर उष्ट्रादि महिष असवारी। गज अश्वारोहण सुखकारी ॥ दो० ॥ तीरथव्रत इत्यादिजे चरकारज जगमाहि। रविनाडी महँ सिद्धि ते होवत संशयनाहिं ॥ सो० ॥ जवसुखमना प्रवाह होवै दोनों सुरनमहँ। तबनकाज कहजाह अर्थहानि जिय हानिलखि ॥

चौ० ॥ शुभअरु अशुभ चरस्थिरकाजा। सुखद दुखद दुहुँ भांति समाजा ॥ काजन प्रश्न न गौनियभाईं। जब सुखमना बाह दरशाई ॥ कहुँदक्षिण सुर बायों कबहीं। लखु सुखमना रूपयह तबहीं ॥ केवलकीजिय आतम ध्याना। उठि न थान ते करिय पयाना ॥ दूरिपन्थ स्वारथ अनुरागे। चन्द्रचारलखिचलौ सभागे॥ होयसिद्धि सब विघ्नभावे। अर्थ सहित निज गृह फिरि आवै॥ वामकि दक्षिण जोसुर चलई। ताहि बिचारि विबुध मन गुणई॥ वाम वामपद दक्षिण दाहिनि। देइप्रथम सब दिशि दुखनाहिन॥ दो० ॥ ॥ वामचार समपदधरे जैसेहि अरु चारि। भानु विषम जिमि तीनिशर यात्रासिद्धि बिचारि ॥ वामकि दक्षिण जौन सुर पूरण होवै तात। तौनी दिशि पूंछैचतुर काजसिद्धिह्वै जात॥ चौ० वामअग्र ऊरध दिशिहोई। बहैचन्द्र सुरपूछे कोई ॥ कारजसकल सिद्धि पहिंचानै । शुभकारी इमि ताहि बखानै ॥ पृष्ठ और दक्षिण अध आशा। प्रश्न करै सुर भानु प्रकाशा ॥ सिद्धि सर्व ताकहँ कहिदीजे। मंगल समुझि सुरोदय लीजे। चहुंदिशि गौनकरिय क्रमयेही। योगिराज बरणत हैं तेही ॥ पूरब, उत्तर रविकीनाडी। गमनकरै तोहोय सुखारी ॥ पश्चिम दक्षिण शशि परवाहा। जाय पुरुष उपजै सुखलाहा ॥ यहि विपरीत गमन जोकरई। प्राणजायकै संकट परई ॥ दो० ॥ शशिमें सम अक्षर कहै जिमि दश द्वादशबीय। वाही दिशिह्वै प्रश्नकृत होय काज कहईय ॥ विषमवरण बोलैचतुर ज्यों नव ग्यारह सात। भानु उदय दक्षिणदिशा सकल सिद्धिकहु तात ॥ उदय सुखमनाहोय जब तबपूछै जोकोय। अफलहोयँ कारजसवै कहकवि ग्रन्थनि टोय ॥ चौ० ॥ अब तिथिआदि लग्न अरुबारा। चन्द्र सूरसँग करौं बिचारा ॥ शुक्लपक्ष प्रतिपदा जोपावै। तादिनते शशिउदय बतावै ॥ तीनिदिवस शशिउदय प्रधाना। पुनि रवि बहुरि चंद्र फिरिभाना ॥ यहिविधि कृष्णपक्ष दिनतीनी। परिवाते रवितिथि गनिदीनी ॥ फिरि चन्दा पुनि भानु प्रकासा। समुझत यो-

गिराज सुखबासा ॥ परिवा शुक्लपक्ष शशिराजा । वहै चंद्र उपजै सुखसाजा ॥ कृष्णपक्ष परिवा रवि वहई । सकलानंद दायक कवि कहई ॥ शशितिथि रबि रबि तिथि शशिचारा । अतिकलेश तवचतुर विचारा ॥ दो० ॥ वहै क्षपाकर द्वैजतिथि शुक्लपक्षभरि पूरि। मंगलमत गुरज्ञानके सुख उपजै तनभूरि ॥ चौ० ॥ प्रात समय शशिनाडि प्रकाशा । अरु मध्याह्नहु चन्द्र विलाशा ॥ संध्याकाल दिवाकर चारा । सवविधि सुखद मिटै दुखभारा ॥ रहै दिवस भरि शशि सुरमाही । अन्यभाव डोलै जब नाही ॥ निशिभरि उदय भानुकर होई । अल्पकाल नायक है सोई ॥ यह संयोग जानि परिहरई । सहि दुख अल्पकाल नर मरई ॥ पूरुबवत शशि सूर चलावै । पूरण आयुहोय सुखपावै ॥ पांच तत्त्व पूरव जेगाये । जिनकरि सब जीवन तनपाये ॥ क्रम क्रम वहत श्वासमहँ सोई । महिजल पवन शिखी नभजोई ॥दो० ॥ अहनिशि द्वादश बारतन सक्रम होवत भाय । जगत काजहित हेत सबकहौं सर्व समुझाय ॥ चौ० ॥ द्वादश राशि जगत सब जानै । उदितहोत रवि चतुर बखानै ॥ वृष अरु कर्क कन्यका जोई । वृश्चिक मकर मीनयुतसोई ॥ इनषट लग्ननमहँ शशि बासा । करिय काजलखि लग्न प्रकासा ॥ मेष मिथुन हरितुला बखानौ । धन घटराज्ञ भानु जियआनौ ॥ जो निर्णय आछी विधि करई । तौ येराशि त्रिधा उच्चरई । मेषरु कर्क तुला खग जानौ । इनमहँ रबिकर योग्य बखानौ ॥ वृष केशरी कुम्भअलि जोई । योग निशाकर शुभदा सोई ॥ मीन मिथुन कन्या धन राशी । द्विःस्वभाव सुखमना निवासी ॥ दो० ॥ चन्द्रयोग थिर काजकरु भानुयोग चरसाधु । सुखमनमें सब त्यागिकै निजआ-

भृगु शशिदिन सितपाखा। चन्द्रउदय उपजै सुखलाखा ॥ असित पक्ष रवि शनिमहि बालक। डोलै भानु मनौ दुखघालक ॥ यहि विधि लग्नवार तिथि जानी। रवि शशियोग सोकहौं बखानी ॥ काज शुभाशुभ जगके जेते। पूरवयोग जानि करुतेते॥ होइ न हानि काजकहु भांती। श्वास निरत जोरहै दिनराती ॥ मूरख नरहि न यहमतदीजै ।प्राणहानि धनहानि सहीजै ॥ दो० ॥ लघुशंका बामेसुरहि शंका दहिने माहिं। भोजन सुरपिंगल विषे कीजिये सशय नाहि ॥ बामे करवट शयननित कीजै चतुर विचार। यहिविपरीत किये विबुध होय रोग अधिकार ॥ दश दिनके विपरीतते अधिक रोग तनहोय। सो विचार उरराखिये हानि लहै नहिं कोय ॥ जौनराशिके होहिं रवि तासु उदय पहिचानि। लग्न बिचारै सहजमत मंगलदास बखानि ॥ चौ० ॥ अबसुनु तत्त्व बिचार रसाला। कहोजौन विधि शंभुकृपाला ॥ पांचौतत्त्व श्वासमग बहई। सुखद दुखद दोनों विधिअहई ॥ परखब कठिनयोग विनुजाने। सरल परख जो कहत सयाने ॥ सोही बदत सुनो चितलाई। तजि दुबिधा देखो सुर भाई ॥ द्वादश अंगुल जबसुरडोलै। तबमहितत्त्व भलीविधि बोलै ॥ षोड़शअंगुल होय प्रवाहा। श्वास तत्त्व जल कह कविनाहा ॥ अंगुलाष्ट मारुत निरधारा ॥ चतुरांगुल सुरअग्नि बिचारा ॥ पूरण ह्वैसुर बाहिरनाहीं। गगनतत्त्व कवि भणत तहांहीं ॥ दो० ॥ अपरौपरख जो योगमत ताहिसुनो चितलाय। तत्त्वपरखि पुनि काजकुरु हानिनहोवै भाय॥ चौ० ॥ मध्यमगौन भूमिसुरमाहीं अधोगौन सुरनीर लखाहीं ॥ ऊरध गौन श्वास शिखि बासा। त्रिजगवायु अरु शून्यअकाशा ॥ महिजल तत्त्व दुवौ शुभ भाई। मध्यमफल शिखिचार बताई ॥ गगनमरुत अतिअशुभ बखानै। हानि मृत्युदायक पहिचानै ॥ मध्य अचल सुखदा सुरजानौ। अध आनन्द रूप अनुमानौ ॥ ऊरधश्वास निधनकी दाता। तिर्यगमे उच्चाट कहाता ॥ गगन सदा सब काज नशावत। कौनौ

सिद्धि न जगकउ पावत॥ यहिविधि जानितत्त्व कृतकाजा। लहै हानि कोउरंकरु राजा॥ दो०॥ शीशवास नभकंधशिखि वायु नाभिमहँ वास। जानुदेश महँभूमिजल पाददेशसविलास॥सो०॥ गगनतत्त्व जबजानुसकलकाज तब त्यागिबुध। मनथिरकरिधरि ध्यानु भजुपरमात्म परमनिधि॥दो०॥ मगल शिखिमय रवि धरा शनिजलमय जलराह। दक्षिणनाडी योगशुभ भणतसर्वकवि नाह॥ सोमनीर मयइलाबुध गुरुमय पवनसुजान। शुक्र अग्नि मयकहत बुध वामनाटिका जान॥ चौ०॥ तत्त्वपरख अवरौसुनु भाई। कहौंबहुत विधि त्वहिं समुझाई॥ चतुष्कोण डोलैरँगपीता। मधुरस्वाद भोगदा अभीता॥ यहगति धरातत्त्वकी होई। कहो उमा प्रति शंकरसोई॥ रक्तरंग कटुस्वाद वखानो। ऊरध गौन अग्नि पहिचानो॥ श्वेतवरण अरु स्वाद सुखारा। वर्तुल गौन जानुजलधारा॥ रंगसितासित अमिल सुस्वादा। तिर्यगगौन पौन सुरनादा॥ जलकस स्वाद रंगतस जाको। सर्वगौन सुर नभकहुवाको। यहिप्रकार लखि तत्त्वन भाई। सर्व काज तजु गगनहि पाई॥ दो०॥ महिगुरु गुरु जलेशनिभृगौ शिखि गुरुरविमहितात। पवनकोगुरुबुध गगनकेशनिअरु राहुकहात॥ पूरुव ते जानतचतुर समुझौयाहि बहोरि। पुनिकारज कछुकीजियेमिटै विघ्न शतकोरि॥सो०॥ आगमकहत विचारि योगीजनजे योग वित। कहौंसकल निरधारि सुनो चतुर जनग्रन्थ लखि॥ चौ०॥ चैतशुक्ल परिवाजब आवै॥ प्रातसमय निजसुरचितलावै॥ लगै मेप संक्रांतो जबहीं। बेलाप्रात विचारै तबही॥ संवत भूरिके कर्मबतावै। विनायोग लखि कोउ न पावै॥ यहिप्रकार योगीजन जानत। ते निजश्वास निरतसुख मानत॥ पृथ्वीतत्त्व जो बहै प्रभाता। तौ यहि भांति चतुर कहु बाता॥ जग सुभिक्षवृद्धि नृपहोई। अधिक वृष्टि सुख पूरण सोई॥ उपजै अधिक अन्न जग माहीं। सकल उपद्रव रहित तहाहीं॥ वामेसुर विशेषफल दायक। दक्षिणचार समा सम लायक॥ श्वासा मग जलतत्त्व

बिलोकै। समयसुखद सुख उपजै लोकै ॥ होयवृष्टि बहु बिधि जगमाई। अरु सुभिक्ष निरोगहि पाई ॥ गृहगृह मंगल चार बतावै। जब जल तत्त्व चन्द मग पावै ॥ मध्यम फल सुर भानु प्रवाहा। भाषत सकल विबुध कविनाहा ॥ दो० ॥ डोलै श्वास जो अग्नि भय राजभंग तबजानु। कालपरै भयभीत जग रोग अनित अनुमानु ॥ अल्पवृष्टि अन्नादिहू उपजै अल्पजहान। समय निषिद्ध विचारिये गावतयोगि सुजान ॥ चौ० ॥ होयप्रात: सुर पवन प्रचारा। ईति भीति जलअल्प बिचारा ॥ अति उत्पात जगतमहँ होई। समय दुखद कहुँ सुखद न सोई ॥ बहैमेष संक्रांति प्रकाशा। शून्य फलहु अन्नादिक नाशा ॥ अतिहि कराल समय तब जानिय। दुखद समस्त भांति अनुमानिय ॥ नीरमही सुखदायक होई। अन्य तत्त्व नहिं सुखकर कोई ॥ यहमत कठिन न सबसन होई। चतुरसुजान लखत कोइकोई ॥ अब आगे पुनिआन बिचारा। करिहौ निजमति सरिस पुकारा ॥ जाकेमन आवै सो कीजो। योग कर्म करिताहि लखीजो ॥ दो० ॥ श्वास निरतअहि निशिदिन समुझै सो सुरज्ञान। साधन बिन गुहवित्त चतुर खोजौं सकलजहान ॥ मंगलजानत योगनहि लोग कहत खइबात। मोसनमें विश्वासनहि औरनके मततात ॥ चौ० ॥ सुनो जगतके काज अनेका। चितथिर करिपुनि सहित विवेका॥ जल महि तत्त्व बामसुरपाई। थिरकारज कृतसब सुखदाई ॥ पावकपवन गगनविनाशी। चरकारज करिहोइ सुखारी ॥ तत्त्व बार तिथि राशि गनाई। सुरअरु पक्ष होइ यकठाई ॥ चन्द्रयोग अथवा रवियोगा। थिरचरकाज करैंजग लोगा ॥ सिद्धि समस्त सर्व सुखहोई। हानिकाहु विधि लहैन कोई ॥ जापर कृपा करैं जगपालक। यहिबिधि लखै युवाअरु बालक ॥ तजि मान्यता बड़ाई दोई। कहौ न जानि सुरोदय कोई ॥ दो० ॥ जब आछी विधि योगमत जानिलेहुयहिभाय। तबचहुकाहूचतुरको बुधजन देहुबताय ॥ सकल सिद्धिकी सिद्धिहै सबयोगनको योग। मूर-

ख स्यहिं जानतनहीं लखत सुलक्षणलोग॥ चौ० ॥ मरुत तत्त्व महँगर्भजो रहई। दुखी विदेशी उपजै कहई॥ वह्नितत्त्व के भोगहिपाई। अवगर्भ सुतजियैन भाई॥ धरातत्त्व मधिगर्भ प्रवेशा। उपजै बालक सुखदधनेशा॥ भोगवन्त सुन्दर तन होई। प्रीति करै वासँग सब कोई॥ नीर मध्य भोगी धनवाना। होवै बालक चतुर सुजाना॥ प्रगट विनाशक व्योमे वखानो। सुखमनके संसर्गहि जानो॥ आदित राशिसुवन कर योगा। खगपति राजसुता कथ लोगा॥ सुखमन मध्य नपुंसक भाषत। जे जन योगधर्म अभिलाषत॥ दो० ॥ यहि विधि भोगिय नारि निज तनया सुत हित लागि। तत्त्व विशेषि विचारिये देखियहिय निजजागि॥ प्रश्नगर्भकी करैकउ प्रथम श्वास निजदेखु। तापाछे उत्तरकहिय सरमधिज्ञान विशेखु॥ चौ० ॥ पृथ्वीजल सुत योग प्रकाशे। मरुत सुता शिखि गर्भ विनाशे॥ जीव गगन अथवा सुकुमारी। अब निर्णय सुनुचतुरअगारी॥ निजदक्षिण सरप्रच्छक दाहिन। नृप समसुत उपजै भ्रम नाहिन॥ प्रच्छकचंद स्वचंद प्रवीना। कन्याविदित करौ बुधिवाना॥ निजसर शूर निशाकर वाको। होयकुमार सदृढ़कहु ताको॥ वाकरभानु क्षपाकर आपू। पतन जन्म ते शोक सँतापू॥ निजवाको एकैसुर होई। सखद विचार भनौंबुध सोई॥ गुरुबिन कठिन जातनहिं जानो। गुरु गमलकल परत पहिचानो॥ दो० ॥ ऊरघसमदरशी भयत धातु जीव हियहेर। अधोमूल इस्थिरमनी चतुरखानित्त टेर॥ धरा मूल मधि उदक हरि जीवरूप पहिचानु। तजेधातु नभ चतुष्पद जानि स्वतत्त्व बखानु॥ चौ० ॥ पूरण सुर पूछै नर कोई। शून्य ओर नहिंकारज होई॥ शून्यसमय पूछै हितकारी। पुनि पूरण सुर सुखद विचारी॥ कहै विदेश गयो ममनेही। बहुत दिवससंधि लहीन तेही॥ दिशावार तिथि अक्षर जानो। सुर सयोगहि पायवखानो॥ सुभगयोग सब सुखद बताइय। यहि विपरीत अयोग लखाइय॥ राकलयोग सूरजकर होई। प्राचीदिशि उत्तर

शुभसोई॥ प्रविचन दक्षिणअथि संयोगा। आइहि सहितसमाज सभोगा॥ यहिविपरीत दुखद बुधभाषत। जोनिजसुर निजवश करि राखत॥ दो०॥ धरातत्त्व अस्थिरसुजल आवन थोरे काल। पवनप्रयान कृतेअिखी गगननाथ तनवाल॥ चौ०॥ गमनहेतपूछै कोउ भाई। तिथि दिन सुरविचार चितलाई॥ दक्षिण पश्चिमअथि जलभूमे। फलदसुखदकोउ दुखद न दूमे॥ भानुयोग पूरबउत्तर दिशि। देहुबताइ बिचारि दिवानिशि॥ अबआगे रणभूमिविचारा। कहिहौं हौंनिजमति अनुसारा॥ चन्द्रयोग सब विधि शुभहोई। वरण वार तिथि पक्षौ सोई॥ ऐसे भानु योग जबपाइय। जीति युद्ध महि सकल बताइय॥ दोनों दिशिके पूरुष आई। करैप्रश्न कछ युद्ध जताई॥ पूरण सुर ज्यहि दिशि निज होई। प्रथम प्रश्न तिहि विधिकृत जोई॥ दो०॥ समर भूमि सो जीति है यामें संशय नाहि। शून्य स्थलके ओरही पूछत दुहुंजन जाहि॥ जो पाछेते पूछिहै विजय तासुकी होइ। यामें संशय नाहिनें कह हर निज मुख सोइ॥ चौ०॥ वामेसम अक्षर जयकारक। दक्षिण विषम वरण अरि जारक॥ सुखमन अमितकष्ट रणदायक। काहूविधि नहिं सो रण लायक॥ दक्षिण वाम जो पूरण होई। त्यहिदिशि चूकैजीतै सोई॥ जो आपुहि रणकाज प्रधारै। तौ दक्षिणसुर विजय विचारै॥ अग्नि सुरवाह प्रथम गहखेता। विजय लहै निज भूमि समेता॥ अग्नि तत्त्व दिन तिथि रवि केरा। पाइ युद्ध गमनै कविदेरा॥ दैवयोग अस योगहि पावै। सत्रु जीति सहजै घरआवै॥ वाम दहिन ज्यहि दिशि कहकोई। बहै न निज सुरतिहि दिशिसोई॥ दो०॥ मही तत्त्व जो होइ तहँ उदर घात तब भाषु। घात चरणजल अग्नि उर त्योंसमीर अभिलाषु॥ सो०॥ गगन मांझ शिर घात होवैकुछ संदेह नहिं। पांच तत्त्वकी घात सुर बिचारि रणभूमि कहु॥ चौ०॥ बहैजौन सुर त्यहि दिशि आई। पूछै समर धीर सुखपाई॥ तब निजसुर महँ तत्त्व बिचारी। कहु सिद्धांत योग सुखकारी॥ समता धरा

रसुज्ञान प्रकट महदेखौ। सुरसे परेन जगकुछ लेखौ॥ दो०॥
उदय होय विपरीत सुर एकपक्ष, लगुतात। रोगप्रसैतव आप
तन सुरमत भाषत बात॥ चौ०॥ एकमास इमि जव सुरडोलै।
सुहृद बंधुको बिपति अतोलै॥ पक्षतीति में तन नशिजाई।
प्रकट परत विपरीत लखाई॥ कैचन्दा कैसूरजकोई॥ बहै रैनि
दिन पूरण जोई॥ तीनवर्षलग कालनआवै। प्राकूअंत होयबुध
गावै॥ बहै पिंगला द्वै दिन राती। युगुल वर्ष पीछे मरिजाती॥
तीनि दिवस निशिको सुर बहई। वर्ष प्रयंत आप तन रहई॥
षोडश अहि तिथि सूरप्रवाहा। मास एकलखि जीवन लाहा॥
मासेप्रयंत चलै सुरभाना। दिवस होइभरि जीवन जाना॥ सु-
खमन उदय होय घटि पांचा। छुटैशरीर जानियेसांचा॥ चन्द्र
सूर सुखमना नधाई। आनन पवन बाहदरशाई॥ चारिदण्डल-
गिकाशा रहई। प्राकू प्राण गमन तरगहई॥ तत्वप्रकाश निशा
दिनतीनी। मीचुवर्षपीछे कहिदीनी॥ दो०॥ दिनसूरजनिशि
चन्द्रमा एक मासकुल गौन। जीवरहै षटमास लगि सत्यसत्य
लखुतौन॥ जानिकाल योगीचतुर प्रथम शून्य महजाय। काल
जाइ फिरिजाइ तव लेइ समाधि जगाय॥ सो०॥ कहों सुरो-
दय ज्ञान, जसकुछमें समुझोहिये। अवलनु सहित प्रमान अज-
पाको व्योहार कछु॥ चौ०॥ प्रथम मन्त्र अजपा जोभापो। वहै
मंत्र दृढ़ जिय अभिलाषो॥ आनिन बहुत योग मतगाये। ते
सवौंकरि ध्यान लगाये॥ तिनमहँ पद्म सिद्ध है जोई। एकलगा-
यमंत्र जप सोई॥ पद्मासन विशेष फलदाता। शुचिह्वै मन्त्रजपै
उठि प्राता॥ मौन जपै उयहि सुनैन कोई। अतिफलप्रदजानि-
यबुधसोई॥ दृष्टि नासिका अग्र लगावै। सुमन जपैमन आनन
आवै॥ चहुंजसमीत क्रिया बिनहोई। तद्रपि न तासन भाषिय
सोई॥ जन्मांतर लगिजो यहसाधै। जन्म मरण की मेटैबाधै॥
दो०॥ तीनिकाल तिहुंलोकमे विदित मंत्रयह आहि। साधक
याको कौन अस सुगति मिली नहिंजाहि॥ चौ०॥ शंकर त्रिपि

अवतार मुरारी । यहै मंत्रजपिभये सुखारी । अरु हनुमान परमपदगामी । जपियह मंत्रभये अधिनामी ॥ ध्रुवप्रह्लाद जप्योचितलाई । शुभगति लहीपुरानन गाई ॥ नारद सनकादिक विज्ञानी । भये स्वेच्छाचार प्रमानी ॥ ज्ञानी गुणी मुनी संन्यासी । जपतमंत्र यह परम उदासी ॥ कलिमहँ बहुतजीव जपियेही । पायसुगति भे परम सनेही ॥ रामानन्द कबीर गोसांई । सूरसधन पीपा गतिपाई ॥ और अनेक जपीअहिकेरे । ऐसेपुरुष ते हरिकेनेरे ॥ दो० ॥ ताकारण अहनिशि चतुर एकवारनित साधु । सुमनध्यान धरितुचिततजि निजआत्मआराधु ॥ रोजलुखमना कोलहै निशानाथ रविनाहिं । कंजासन आरूढ़ है तेवशिशेष जपुयाहिं ॥ मोक्षद्वारो जीवकहँ सुखवदसुखमनी जानु । अपरनाडिका मोक्षदा मंगलहृदयन आनु ॥ (मन उवाच) आतमबासे शरीरमहँ सोकैसोहै भाखु । दास आपनो जानिके जनिदुराव कछुराखु ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ आतम करशरीर महँवासा । लिप्तोलिप्त दुहू विधि भासा ॥ जिमि नत जलघट अगणितभरई । सन्मुख दिनकर केसो धरई ॥ पुनिसब घटनि विलोकेजाई । रविवतरूप सबन महँमाई ॥ रवि समान सो रवितेन्यारा । इमि शरीर आतम बिस्तारा ॥ अथवा जिमि दर्पण मुखदेखे । दुविधा भाव बदन नहि लेखे ॥ ऐसेइ आतम बसत शरीरा । लखत सुबुधी परम गँभीरा ॥ इन्द्रीसकल सोइ धोरावे । सुथिर आपु कहुँजाइन आवे ॥ नैनाद्दश्य श्रवण जिन सुनई । रसना रसन चाखिसुख गुनई ॥ दो० ॥ ज्ञानेंद्रिय जे पाँचहैं कर्मेन्द्रिय जेप्राण । तिनकरि सोनहिं ज्ञानियत सुनुमत्त सहितप्रमाण ॥ (मनउवाच) ज्ञानेंद्रिय कर्मेन्द्रिजे तिनकरिलखो न जाय । फिरिकैसोहै सो कहो भ्रमधासकल नशाय ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सुनुप्रमाण तोहिंकहौं बुझाई । लखिआतमगति रहुअरगाई ॥ रूपाक्षैनिरखै रविकासा । ताबित निशि बुध करत प्रकासा ॥ नूबैकुध्यनहिं नैनपसारे । सबकरलखै सूरबिनकारे ॥

रविदेखनहित रविनहिं चाहिय। इमिआतम स्वभाव तन आहिय॥ औरवस्तुखोजै लगिभाई। दीप प्रकाश कीजियत धाई॥ प्रज्वलितदीप खोजियेकाजहि। कोप्रकाश दायक सुखभाजहिं॥ वस्तुसमस्त नैन सो देखै। नैनलखन हितका हि अवरेखै॥ है प्रकाश निधिआतम ऐसो। दीपक अक्ष भानुभन जैसो॥ दो०॥ रविरविदीपक दीपसों नैन नैनसो देखु। और वस्तु नहि चाहिये इमिआतम निजलेखु॥ चौ०॥ मैंतूचित अहँकार कहावे। चारों एक रूपहै जावे॥ यकमति यकगति ह्वै जबहूढ़े। तब निरुपाधि लखैंगतिगूढ़े॥ इन्द्रीसर्व सोमन आधीना। मनसो बुद्धि अधीन प्रवीना॥ जीवाधीन बुद्धिबुध कहई। विन सूक्ष्मधी अलख न गहई॥ तजिभ्रमणा दुधिथा संसारी। मारगज्ञान लखै सुखकारी॥ उदयज्ञान होतैतनसाहीं। दुखदासकल च्यकार नशाहीं॥ याव भ्रमणा नसै न भाई। तावद्मोह अणी न नसाई॥ मोह तजे बिनसुबुधि न होई। बुधिबिन आतम लखैन कोई॥ दो०॥ आतम निजचीन्हे बिना जरामरण न नशाय। जन्ममृत्यु के त्रास बिनु लहै न ईश्वरसाय॥ (मनउवाच) सो०॥ ब्रह्मलोकैसे आहि यहमोको समुझायकहु। निर्गुणगुण अवगाहि तूसमर्थ सब भाति बुधि॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ कहौं कौन विधि ब्रह्मस्वरूपहि। कहतबनत नहिरंकन भूपहि॥ प्रजाकहौंतो भूपति कोहै। भूप कहतपुनि प्रजानसोहै॥ अलखकहौं तौ लखकोउ औरै। लख किमिकहों अलख बिरमौरै॥ जोअरूप भाषौं भगवाने। रूपवान कोउदूसर जानै॥ गुणनिधि कहों अगुणकहि कहऊ। अगुणकहत फिरिगुणनहि लहऊ॥ करणिकहौं कर्त्ताहैसोई। तोपुनि अहै अकर्त्ताकोई॥ अनुभावभनत भेदसंभवमें। संभववर्णत गुणअनुभव में॥ निराकारजो वाकोभाषौं। तौअकार यहकहिअभिलाषौं॥ दो०॥ कहौंबसतबैकुंठमें अथवा श्वेतद्वीप। तौनहिज्ञानी मानिहै धरेहृदयबुधिदीप॥ चौ०॥ नारिकहौंतौ त्रयेप्रमहाना। पुरुष कहौंतौ दुबिधा ताना॥ कहौंनपुंसक लिंगगवेषा। तौ फिरिज्ञानी

करिहि अँदेशा ॥ सांख्यशास्त्र जोकर्मबतावै । प्रथमचतुर तिनमहँ मन लावै ॥ योगशास्त्र पुनि खोजै कोई । समुझै हृदय रूप हरि सोई ॥ कबि कोविद कउ अस न जहाना ॥ परमात्माकर करै बखाना ॥ वेदशास्त्र कहि नेति पुकारै । और कहा जग जन अब भारै ॥ ईश्वर सब जीवन तनवासी । बिमल बुद्धि यह भनत उदासी ॥ आपनपौ चीन्हे जो चातुर । समुझै ईशरूप वह सातुर ॥ दो० ॥ आतमही परमातमा याको जानैकोय । मिलै ईश ह्वै ईशमें जलनिधि जलसम जोय ॥ ज्ञान बिना तिहुँलोक में ताहि न जानै कोय । जोकउ ज्ञानी हियलखै कहिनसकैगो सोय ॥ द्वैत भावते रहितहै उपमा दीजिय कौन । उपमा बिन संसारमें समुझिसकै बुधतौन ॥ चौ० ॥ जबहउ सूक्षम थूल शरीरा । ह्वै चैतन्यगहै सुखपीरा ॥ अरुजब स्वप्नमांझ धसिजाई । मन भ्रमाय निज भ्रमणा पाई ॥ पुनि सुखोप्ति जबहोय जीव कह । तीनि बहिक्रमकरि बिचार गह ॥ इन तीनोंमहँ आपुहि माहो । लिप्तरहै सब भ्रम मिटिजाहीं ॥ तबवैहोय तुरिय हरि लीना । जहाहोय मन सुख दुखहीना ॥ प्रथमावस्था तीनि बताई । हरिपद प्रीति रहै लवलाई ॥ जपैमन्त्र पूरुष जो भाषो । सदृढ़ बुद्धि आतम अभिलाषो ॥ तब मिटिजाय अवस्था भूरी । तुरियः पदहिरहै गति पूरी ॥ दो० ॥ कठिनज्ञान मारगरहै बिरलो कोउ ठहराय । जोसमर्थ पूरबतपी गहै सोय चितलाय ॥ जानत्र श्रीजगदीश को खोउब्र मनों अपान । को ऐसो समरथ जगत फिरिकैकरै बखान ॥ चौ० ॥ जिमिपुतरी लौनकीभाई ॥ नीर सिंधुमहँ जाय मिलाई ॥ सो ह्वै जाय मिलितकीलाला । कहौ बहुरिको कहैहिवाला ॥ जो कोउकहै कि मै त्यहि देखा । सो मिथ्या पुतरी दधिलेखा ॥ दूरि दरश करि बहुरि जोआवै । करि अनुमान सोरूप बतावै ॥ कहिनहिसकहिरूप सबताको । दशदिशि भेद लहो नहिं जाको ॥ जोयेपंथ जगत महँ नाना । तिन सबकर मन सुनु आख्याना ॥ जसबहु अंधगहैं गजधाई

भिन्न भिन्न तनकी हरषाई ॥ कउ कटि गहे कांध कउ लागो । उ-
दरतले कोउ पद छवि भागो ॥ दो० ॥ कोऊ गये सुपुच्छ त्यहि कोऊ
पांजर लागे । हाथी छूटे करणते लगे चित्त अनुरागे ॥ चौ० ॥ य-
कठाभये वाद प्रतिवादा । लगो होय तिनमहँ संवादा ॥ जो करि
लगो सो करि सम कहई । कांध गहो सो कांध सम लहई ॥ उ-
दर गहो सो कहे छति ऐसे । वरषा सरिस थस्तंभ सु जैसे ॥ पूंछ गहे
सो सर्पसम बादे । पांजर परश्च सो भीति विवादे ॥ काहू लखो
न सो सब नागा । झूँठ कहैं न सत्य अनुरागा ॥ माने कोउ न
कहे काहूके । द्रष्टा कहे देखि ताहूके ॥ कैसे फिरि समुझैंगे अंधे ।
लगे न देह मथनके धंधे ॥ निज निज सांचु वाद सो भावें । रूप
समस्त सो यों अभिलावें ॥ दो० ॥ तजि विवाद गजराजको
बहुरि जाय लपिटाय । भिन्न भिन्न तन गहतही मन भ्रम उपजै
भाय ॥ सो० ॥ तब सो पोचै होय पूंछ गही तब पदहि अब ।
करि क्रूर गह निज जीय उदर दुहूंकर छुवतहीं ॥ चौ० ॥ इमि
विपरीत ठामकेपरसे । भ्रमभय कारि उठे निज घरसे ॥ तब अस
मत सब करें विशाला । द्रष्टासों पूंछे गजहाला ॥ जानि भ्रमित
द्रष्टा समुझावे । सहित सुने मनभ्रम बहिरावें ॥ भ्रम बहिरात
होय समधीते । लहैं भले शुभ मारग हीते ॥ पुनि बहोरि भ्रमणा
तिनपाहीं । चतुर सुजान जातु लखु नाहीं ॥ समधी होत ज्ञान
भलपावें । सांख्यशास्त्र तव दृढ़ करि भावें ॥ सांख्ययोग इकमत
ह्वै अहई । साधक दुवो मुक्त पद लहई ॥ अब द्रष्टाके लक्षण कह-
ऊ । भ्रमणा सकल तर्ककी देहऊ ॥ दो० ॥ ज्यहि सब विधि गज-
राजको परखो होवे तात । आगे पाछे दर्शौ दिशि द्रष्टा ताहि कहात ॥
चौ० ॥ अंध प्रबोध होय मन बूझे । ज्ञान नैन सो दगन न सूझे ॥
ऐस्यइ चतुर साधुजन जानौ । द्रष्टा वेद गुरू कह मानौ ॥ पारब्रह्म
परखब कठिनाई । परखतहीं गूंगा ह्वै जाई ॥ बधिर होय ध्वनि
सुनत अनाहत । समुझि समुझि निजमन अवगाहत ॥ नहिं स-
मर्थ जो घरषि वताचे । यहि कारण गूंगा सम भावे ॥ मूकहि माहुर-

देहिं मिठाई। किमि कहिसकै मृदुता कटुताई। जो माया कृत होयन तिहुँपुर। उपमा योग देयकी सोफुर॥ माया कृत तिहुँ लोक बतावत। वेदशास्त्र सब मत समुझावत॥ दो०॥ माया पतिके रूपको कहिनलकत यहिहेत॥ चतुरविबुध कवि कुशल जग अलखताहि कहिदेत॥ होत अनाहत ध्वनि चतुर यकसुर रागछतीस। सातोसुर ग्रामैंउठत किमिकहिसकतगवीस॥ राग द्वेषके सुनतको बधिरभी होतसुजान। निर्णयलख अरुअलखको अनुमन सहित प्रमान॥ चौ०॥ पांच ज्ञान इन्द्रिय जो गाई। निर्णय करिकै प्रथम बताई॥ बाणीकरि जो शब्द उचारा। सुनतश्रवण सो वैनपुकारा॥ नैन ज्योति सों लखत जो भाई। घ्राणेन्द्रिय सों गन्धिलखाई॥ त्वचसों परश ज्ञान जो होता। रो सबलख मायाकर घोता॥ अपरयक वृत्तांत महावर। कहतसंत अरुवेद जानिफुर॥ मनकरि जो समुझत बुधिसेती। मायाधर्म कहोलखि नेती॥ जो समस्त तिहुँपुरकर ज्ञाना। सो लखरूप धरे भगवाना॥ लखविस्तारसो अपरअपारा। धरेविराटरूपकरतारा॥ दो०॥ कहौंअलख अबशोचित्रहु ग्रन्थसांख्य अरुयोग। रामझोचतुर न प्रथमही अबपुनि समुझै लोग॥ चौ०॥ माया यहअपार कृतजाकी। समुझत हिय मेरी मति थाकी॥ फिरि किमिकही अलखलख नाहीं। लखमें अलख लखालखमाहीं॥ भूतसमस्त आदिहै माया। उपहिनिज बलसबनग उपजाया॥ याके आदि रूपहैजोई। वहै अलखलखि परतनसोई॥ जोकोउ लखैसुदृष्टी ढूढ़े। तौसमुझै शुभअलख अगूढ़े॥ ज्ञानकर्म इन्द्रिय सोंजोई। परखि सकत असभयो न कोई॥ ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय जोसो। परखि परैसो अलख नहींसो॥ अलखै लखत अलखयक आपू। जिमिजानत नभनिज परतापू॥ दो०॥ यहि तेसोहै लखालख परमातम यकभांति। सगुणअगुण लखअलख है भ्रमबिन हृदयसमाति॥ कह्यो योग सिद्धांत यह निजमनि सरस बिचारि। अबजो पूछैसोबहुरि कहौंसहित बिस्तारि (म-

नउवाच) कहौबरणि नवभक्तिजे सतसंगादिक तात। अरु नव बिधिको भजनजो सोकहिये विख्यात (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ सुनुनव भक्तिकहौं मनतोहीं। पूछ्योभल प्रियलाग्यो मोहीं॥ जबसिद्धांतयोगनिपुणाई। होयनप्रथमकरैयहभाई॥ नवधाभक्तिफलप्रद जोई। तिनकेकरत अचलमनहोई॥ सतसंगतिकृत प्रथमसयाने। भलीभक्तिनिज जियअनुमाने॥ द्वितियेहरि की चर्चाकरहीं। स्वपनों आनधर्मनहिंधरहीं॥ तृतियेगुरुचरणन सों प्रीती। नेमसहित पूजत श्रुतिरीती॥ हरिगुणगानअछलनिर्मोहा। भक्तिचतुर्थसुगतपरद्रोहा॥ वेदपाठहरिमंत्रसुजापा। पंचमभजनभक्तिहरतापा॥ सज्जनधर्म निरंतरधारे। शीलवतषष्टम हरि प्यारे॥ भूतसमस्त ब्रह्ममयदेखै। सप्तमसंत ईशसमलेखै॥ लाभालाभसोसमसंतोषी। अष्टमहोयनबुधपरदोषी॥ तजिप्रपचश्री हरिशरणाई। नवमगहै दुबिधाइबहाई॥ दो०॥ यहिविधि करिनवभक्तिबुध लहैज्ञानसिद्धांत। लहैज्ञानसिद्धांतकेपावैमोक्ष नितांत॥ मोक्षपरेनहिआनसुख जानत हैं बुधराज। सांख्यधर्म धरयोगरत चहतमोक्षकोसाज॥ चौ०॥ अबसुनुभजन भावनवजोई। करिविस्तार कहौंमैंसोई॥ सुमिरणकृत हरियशहित सेती। प्रथम भजन यह भणत सनेती॥ पूजन क्रम वाणी मन जोई। भाव द्वितीय लहै अघ खोई॥ करैं वंदना प्रभु पदकेरी। तीजो भजन भणत बुधटेरी॥ प्रीतम निज हरि कहँ जे जानै। भावचतुर्थ हृदय अनुमानैं॥ श्रवणकरैहरि यशछलहीना। पंचमभजन धर्म मतचीना॥ जो दासत्व भाव हिय धरई। षष्टम भजन भाव भवतरई॥ निशिदिन हरि चरणन अनुरागी। सप्तमहरिहित होयविरागी॥ दो०॥ कीरंतनहरियशकरैदुबिधाभावहित्यागि। अष्टम भजन प्रसिद्ध यह कहत बिबुध श्रुति पागि॥ चौ०॥ आतम ध्यानकरै श्रुतिरीती। नवम भजन यह सदृढ़सप्रीती॥ यहिकृत जरामरण की फासी। मुक्तहोय यह भणत उदासी॥ भक्ति भजन द्वौ भावबतायें। करि विवेकहौं तोहिं

लखाये ॥ दोनोंपद निर्वाणहिं दायक । दोनोंचहु आश्रमकेलायक ॥ प्रथमहिं ब्रह्माचार बखानो । द्वितियाश्रम सुगृहस्थीजानो ॥ तृतिये वानप्रस्थ बुधगावै । चौथेसंन्यासहि समुझावैं ॥ अबचारोके कर्म बताऊं । सुनुसचेत तोहिं सुमति लखाऊं ॥ जब किशोर वयहोवै भाई । ब्रह्माचार तबहिं मनलाई ॥दो०॥ समुझैलव शुभ अशुभजे धर्मपाप जगमाहि । त्यागासस भवमेंहुलै तज निज धर्महिं नाहि ॥ चौ० ॥ ब्रह्मविचार हृदय निजगुणई । आनधर्म सबहितसो सुनई ॥ जब दुविधा भ्रमणामिटि जाई । रहै आपुमें आपु लमाई ॥ पूरण प्रथमाश्रम इमिहोई । द्वितियाश्रमहि गहै बुधसोई ॥ कहे पुराण वेदइतिहासा । करै गृहस्थी धर्मप्रकासा ॥ पुत्रत्रियापरिवारहि मिलिकै । प्रीति रीति सहरहिये हिलिकै ॥ एकपरन्तुकरै चतुराई । त्रिय सुत लहि न जाइबौराई ॥ प्रथम विचार रैन दिनराखै । गेहाश्रम अहनिशि अभिलाखै ॥ वानप्रस्थ फिरि होइ सयानो । त्रिय सँग रहै न त्रिय रत सानो ॥ दो० ॥ बहुरि धरै सन्यास को त्यागि सकल परिवार । ब्रह्मभजन में रतरहै कृत आतमा विचार ॥ चौ० ॥ कतहुक अतकाल ह्वै जाई । यमनचार सक निकट न आई ॥ स्वर्ग नर्क दोनों ते छूटै । वह समर्थ हरि मिलि सुखलूटै ॥ जुपै गृहस्थी में सनिजाई । तो वह ब्रह्मविचार नशाई ॥ ब्रह्मविचार नशत सुनु ताता । इन्द्रभवन यमसदन सो जाता ॥ जो दृढ़ धर्म गृहस्थीरहयऊ । अन्तकाल सो सुरपुर गयऊ ॥ दृढ़ता रहित गेह आसक्ता । वानप्रस्थ ह्वै भौन विरक्ता ॥ रविसुत दूतवाचित्यहि भाई । नर्कद्वार दीन्हीं ठढ़िआई ॥ ब्रह्माचार प्रथम जो कीन्हा । ताते नर्कवास नहिं दीन्हा ॥ दो० ॥ बहुरि मनुष्यहि योनिमें जन्मत भो सहताप । आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मविचार प्रताप ॥ स्वर्गहु ते तपक्षीण भे पुनर्जन्म जगहोइ । उत्तम कुल आनन्दमय ब्रह्मचार रतसोइ ॥ तब पुनि द्वितिये जन्म में भजन आतमा ठानि । लहै मोक्ष हरिमें मिलै पुनि नहिं जन्मै

कर्म निरधार १३ सचित पातक नशत सब उपजत अनुभवज्ञान॥ क्रीयमान निःकाम सब होत कहत गुणवान १४ पाप पुण्य आशा रहित योगी कर्म कमात॥ स्वर्ग नरक मग परिहरत अत सुब्रह्म समात १५ फलित कर्म प्रारब्धिवत याभव दुखसुखरूप॥ समजातन सन्तोष मति ध्यावत पुरुष अनूप १६ कोटि भार हाटक दयो मोक्ष होन हितलाह॥ अंत वासना पाप की लैगइ नरकनिमाह १७ कियेजन्म भरि कर्मखल निंदनीय संसार॥ काल समय ध्यायोप्रभुहि पायो स्वर्गविहार १८ स्वर्गवसै निज सुकृत सम जन्म होइ परिणाम॥ जरा मरण नाश्यो नहीं यहिते स्वर्ग निकाम १९ निरैवास पापी लहत पाप तुल्य सुनुमीत॥ नीच योनि महँ जन्म पुनि वदत वेद यहगीत २० स्वर्ग नरकइउ समभये जन्म मरणके माहिं॥ गर्भ क्लेशनाश्यो नही मृत्यु होत जन्माहिं २१ अध ऊरध जे योनिमें जन्मतजीव अपार॥ शोक भोग समता विषय कीयटिवढ़ि संसार २२ जाके ध्याये क्षणक यक कलिमल सचित जात॥ देहनगर मन भूप तहँपावनसुखहि दृढ़ात २३ मनइन्द्रिनको भूपहै त्वचा करण चषघाक॥ घ्राणादिकजानत नकछु विषयमांस मन काक २४ प्रथम जाहि निज वश करै परमातमआराधि॥ मिटैसकलचिंता तिमिर ज्ञानसूरनिरुपाधि २५ योगविना अजपा जपे मनवशआवत नाहिं॥ रागद्वेष त्यागे विना मन न वसैमनमाहि २६ दृढ़ वुधिज्ञानपसारिके मनशिक्षा देत्यागि॥ गुह्यस्थल अनुभवउदय जायभ्रांतिरसपागि २७ अंधकूप पर अंध जिमि कहू दिखायोदीप॥ पंथ न हेरो मूढ़मति जवलगि गो न समीप २८ जिमि पिपील मिष्टान में लपटी आशापास॥ मुक्तन हि अतिवल करत तथा विषय दृढ़वास २९ अन्नाशापक्षी यथा परयो वधिकके जाल॥ तिमि प्राणी भोगाश करि मोयावश त्रैकाल ३० निद्रा क्षुधा तृषादि जे मैथुनादिकृतवान॥ नर पक्षी पशु कीटहूजानतसो मतिमान ३१ जडतावश वृक्षादि जे रहेथिर रवाहिपाय॥ मनुजकाय चैतन्यता तापदवीलौजाय ३२ सिद्धांतन

को अन्तमें प्रापकलोक्रियकार॥ निजवश जीवन मरणहै जन्मत किमि संसार ३३ मानामान निरादरौ आदर समता भाव॥ शुचि बासनआसक्त कुरुचिसुरुचिसौ एकस्वभाव ३४ ईर्षा जगकीतीन तजि पटकर्मी अपनाय॥ दोष शोकभय सब तजे अंतब्रह्मपद पाय ३५ जन्म मरण निर्द्वंदतजि जीवईश ह्वै जाय॥ कर्माकर्म दुवौनबै आपुहि आपु नशाय ३६ अहभावना परिहरै युक्तबन्ध कउनाहि॥ अकल अमेय अनीहअल निज उरध्यावै ताहि ३७ अकअंक संघातकरि सिद्धि प्रथम हरुअंक॥ शेषवस्तु अनसिद्धि जो सोईरहत निशंक ३८ ऐसो पुरुष असिद्धि जो ताजातन के हेत॥ सतमारग ध्यावत नहीं साधत कर्म सुखेत ३९ मेघसुधा बरषै विबुध कदलीफल न चुवाय॥ तथा मोक्षपद पायकिमि कर्म न भव संसार ४० अकर कृत्यो संसार यह रचि त्रैचरभव जीव॥ क्षीण वृद्धि प्रापकनही भयो धर्मकी सीव ४१ सिन्धुप्रसादहि पायजिमि होत मेघपय खानि॥ तथा ब्रह्मते जीवसब को पूरणता हानि ४२ अरु जिमि सरिता जगतकी मिलि न बढ़त जलराशि॥ तिमि देहीमिलि ब्रह्मनहिं बढ़त परत बुध भाति ४३ जाने बिन तारूपके रूप, न पावत ज्ञानि॥ बूझतही निरवाणपद होतगुणनकी खानि ४४ को निरगुण सरगुण कहा दुविधा भ्रमणा भूल॥ निगुण आप मायासगुण, यहै ज्ञानको मूल ४५ आवत जानत लखिपरत जीव अकर्त्ताकार॥ अलख यहै नहि दूसरा लखुकरि ज्ञानविचार ४६ ज्ञानमूल सतसगहै समुझिपरत करतार॥ अव्यय अज्ञ अविनाश प्रभु जासु अंश अवतार ४७ ज्ञानी जो कर्मनिकरै तजै सो फलको काम॥ अज्ञानी फल आश करि लहत अन्त फलनाम ४८ ज्ञानवानको कर्म कछु सिद्धक बाधक नाहि॥ जगत धर्म दृढ़ता लहै करत हेत यहि आहि ४९ कर्म सकल धार्मिकनके करै जगतहित लागि॥ मो ज्ञानी संसारमें रहे अमीरस पागि ५० यजत देवकरि लालसा देवतफल फलदेत॥ याही जगमें दुःखसुख पुनिप्राणीगहि

लेत ५१ आपनपो भूलेफिरत तिमिर अज्ञउरछाय॥ ज्ञानदीप उदयत नहीं तजत न दुविधा भाय ५२ जित जित जीवाणी विवश जन्मत श्रेचर माहिं॥ कर्मलिंग तन संग रहत यामहँ संशय नाहिं ५३ तृष्णा कृष्णा रातिसम ज्ञानप्रकाश विहीन॥ सत्य वस्तु बुधि चपनसों लखि किमि सकत प्रवीन ५४ चतुर्वरण पूरणहिये बाहिर मूढ़समान॥ डोलत मोहअनी रहत सबको लखत प्रमान ५५ ऊपरसे कछु काजनहिं अंतर प्रेमप्रकाश॥ इंद्रिय निग्रह शुद्धमति करत अविद्यानाश ५६ संसारी प्यारीदशा सबहिनको जोसार॥ सोजानब अतिकठिन बुध जानत वृद्ध सिंगार ५७ आतम भेव भुलायके भये योगमें लीन॥ सो पूरण पावत नहीं अंतस्थान मलीन ५८ गुरुवाक्य पूरणविद्या ओंकारि अनमोल॥ खोजत तापद को न दृढ़ को ब्राह्मण को कोल५९ ब्राह्मणकी पदवी अधिक चतुराश्रमके माहिं॥ बिनाधर्म ब्राह्मण्यके ब्राह्मण पदवीनाहिं ६० हंसवर्ण ब्राह्मण्यको वेदवाक्य परमान॥ ज्ञानमुकुट बाँधेविना सो नहि होत सुजान ६१ राग रहित छवि शोभिजे दृष्टिप्रेम पदलीन॥ हंस वरण नर नारिकृत सुष्टुकर्म छलक्षीन ६२ तत्त्व दरश पावत मिटत मोह क्रोध मद काम॥ आतमहा होवत नहीं साधक बुद्धि ललाम ६३ भावशुद्ध प्रथमैं करै चिदानंद सिद्धांत॥ साधारण दुर्बुद्धि बिनु सेवत श्रेपुर कांत ६४ आतममें जेलिसहैं अंतर एकहिं भाव॥ तेपूरुष जीवत सुने धारे सत्य स्वभाव ६५ जानत आतम भावको पहिचानत निरवानि॥ तापदके संयोगते रहत न जीव प्रमान ६६ चन्नभस्त्योहि कोटिमन काहू मंदिर वीच॥ एकं निष्कं लखि परेखिगो अस नहिरहा नगीच ६७ ब्रह्मक्रांति यह आतमा वदत वेद वेदान्त॥ चीन्हे निज आतम चतुर लहे ब्रह्म सिद्धान्त६८ साभरिहोन सुढेरुहै अद्रिमान धीमान॥ निज स्वारथसों आइहै बुधव्यजनपरमान ६९ शालग्राम शिलोलिये प्राण प्रतिष्ठा कीन्ह॥ विष्णव सोनिभावसों तापूजन भजनदीन्ह७० सो पभाण सबींगहै निटाशुद्ध

प्रताप ॥ स्वर्गवास दायक भयो श्रेत विवर्जित ताप ७१ सुख-
दाता निर्जीवभो जीव मुक्तिको दाति ॥ जनक कहो शुकदेवसों
यहबुध धर्म बखानि ७२ श्रीराधापति अर्जुनै कीन्हज्ञान उपदेश॥
आतम पूजा कर्म बहु जो निःकाम निदेश ७३ तत्त्ववस्तु आतम
कहो क्षर अक्षर विस्तारि ॥ लिंग थूल वसु तत्त्व मिति बुधजन
लेहि विचारि ७४ चतुर्बाहु श्रीचव चतुर वदन न मायाईश ॥ ये
पुरुष आयुपलहे तजत नपुष बिसबीस ७५ जन्मभयो श्रोंकार
ते बदत वायु पौरान ॥ जन्मजासुको मृत्युत्यहि यहबुध विदित
प्रमान ७६ पुनि वशिष्ठ पूछाजबै धकरसो यहभेव ॥ भाषो तूहो
देवबतहों नहि पूरणदेव ७७ ब्रह्म अन्यहीं आनहीं देखु सामश्रु-
तिजाय । तत्त्वं श्रसि वर्णन कस्यो त्रिविधि जीव दुबिधाय ७८
अकल निरीह निबंध विनु निर्मलब्रह्म सुभाति ॥ जाइच्छाते देव
नर त्रिपुर विभूति दिखाति ७९ चिदानंद पूजो चितहि बुद्धि आ-
सुरी त्यागि ॥ शुद्धभाव ध्यावो विबुध निज आतम मतिपागि ८०
पावनपद पावत चतुर आतम ज्ञान प्रताप ॥ आनभांति युगचारि
लगि नशत न जन्म सँताप ८१ योग मार्ग अष्टांगहै साधक तीनि
प्रकार ॥ काव्यभाव खोजत फिरत कर्मन रहित पसार ८२ यक-
टक निरखै नासिका नासा ध्यान लगाय ॥ अन्त प्रात परमाणुबुध
रहै अमीरस पाय ८३ नित्यक्रिया साधन करै देह अनित्य विचा-
रि ॥ आतम घातीहोइ नहि स्वयंब्रह्म उरधारि ८४ ब्रह्माविष्णु
महेशजो कर्त्ता पालकहारि ॥ तेसमाधिकरि ब्रह्मको ध्यावतकोनर
नारि ८५ युगानंत जा क्षणकनहिं जासु न आयु प्रमान ॥ ज्योति
निरंजन ब्रह्महै सब स्वतंत्र सुजान ८६ भयो स्वतंत्र न श्रुदिस-
कत वेद भेदको तात ॥ अलख अगोचर ब्रह्म बुध भ्रम विनुबुद्धि
समात ८७ माया जासु अपारहै पार लहत नहि कोइ ॥ प्रथमै
माया भेद लखु पाके आतम सोइ ८८ व्रत तीरथ अर्चादि जे
ते न मुक्तिपद दाति ॥ स्वर्गादिक दायक अहैं दृढ़ता मूलबखानि
८९ ज्ञानदीप उर गृहधरै मोह तिमिर बहिजाय ॥ सार वस्तु

निज खोजिले क्यों फिरि आवै जाय ९० निरगुण मत सरगुण सुमत आतम ज्ञान प्रधान॥ आतम बिनु जाने बिबुध मोक्ष न तीनि समान ९१ सांख्य यज्ञत योगहि करत मोक्ष हेतु सज्ञान॥ मोक्षपरे सुख अपर नहिं भोग योग कल्यान ९२ मनुज योनि सब योनिमें उत्तम मोक्ष सुपान॥ याहित्यागि पुनि कोटि विधि लहै न पद निरबान ९३ आपु आपुको भूलियो पदवी पूरणरूप॥ क्यों चीन्है माया बिवश प्रकट न ज्ञान अनूप ९४ समता छपि सुचेत बुधि मन वेगता मिटाय॥ पद आपन तापन विना कस न चीन्हु सुदपाय ९५ शील क्षमा दाया धरै परउपकार सुकाज॥ उचित गृहस्थी धर्म यह अतिथि तोष शुभ साज ९६ ब्रह्माचार विचार युत निराचार निर्द्वन्द्व॥ ध्यावत धर्म निरंतरै पुरुष पुराण स्वछन्द ९७ मन भिक्षा मम मांत्ति नित तीरथ उरमें न्हाय॥ सत्यहि ज्ञान प्रतापते आशुमुक्तह्वै जाय ९८ जो न त्यागिहै व्यंगता तौ न पाइहै मोष॥ मोक्षबिना उतपति मरण लगारहहि नहिं तोष ९९ मंगल मनको बोध कृत महामोद उर आनि॥ शिक्षा पद निर्बाणकी प्रथमहिं स्वर्गबखानि १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायासर्वांगनुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायां निर्वाणपदवर्णनानामप्रथमशतक १ ॥

दो० ॥ परिपूरण धर्मज्ञता परिपूरण विज्ञान ॥ परिपूरण कल्याणमय पारब्रह्म शुभ ध्यान १ ब्राह्मण होवै ब्रह्मविद समदर्शी शुचि साधु॥ तजि त्रिदोष निज आतमा निज जोवै आराधु २ एक लोकह्वै भूपहैं सगुणसार निष्काम॥ समता दोनों क्यों लहै लाभ हानिदा बाम ३ अखिल लोक आशा विध्यो सुनिले उत्तम ज्ञान॥ याहि निवारै शुद्ध मति शांति सरूप सुजान ४ उत्तम मति देखतफिरैं कर्म विकर्म समाज॥ निज मन करतल निज किये यथा रंक तिमिराज ५ तीनि तीनिमें तीनिधरि कला अथ को आहि॥ पूरण पुरुष अनादिको आदि अंत बुध नाहि ६ काम

वासनो वामे संग जीव चलत अनचेत ॥ नरकवासना जीवको अंतकचर दुख देत ७ क्रोध संग अदया रहत हिंसकतासों नेह ॥ हिंसादायक अधोगति मूढ़धर्म न सँदेह ८ मदमदता संग्रहकिये नीचऊंच नहिंजान ॥ अहंभावबानिरयपद वदत गूढ़विज्ञान ९ लोभसंग बसलालसा होतसो पूरणनाहि ॥ जीवनव्यावत आतमा अन्तबसत अधमाहिं १० मोहमहा वर्जितकरत सतमारगते वीर ॥ तावश नित्यानन्द जो जीवसो होतअधीर, ११ येपांचो बटपारहें सतमारगके तात ॥ तूप्रथमै इनतेवचै कहुभूपति सों बात १२ रक्षकयाको आपतट सुन्दररूप विराग ॥ भट विवेक सन्तोषअरु क्षमादया अनुराग १३ जोगशरीरधारी त्रिपुर सो श-रीर बिनुहोइ ॥ संशययामें बुधकहा व्याउब्रह्म पदसोइ १४ जो नभयो उत्पन्नहै अरुनमरैगोअन्त॥ वाकीसुधिको कोकहै अहेनि-रादि निरन्त १५ निकस्योनि चहुंखानिमे आपहिरहा समथि ॥ कोटितीय ज्ञानीवदत पैनाहीं दरशाथे १६ पूषणकर सयोगघन विन्दुधनुष बहुरंग ॥ उपजततिमि मायीश्रसों भयेजीव चहुँसं-ग १७ धनुनरंग होझूठहैं घनमाया नशिजात ॥ भानुउदयपूरण सदा लखान है अपपात १८ कालपाश नाशतनहीं जन्मतहू न स्वतंत्र ॥ क्योंजाने निजछन्दको बाधेमायायंत्र १९ इच्छाजाके तनकी ब्रह्मसौख्य पदमाहि ॥ सोचीन्हे, निज आतमा तासुअध सोआहि २० कमलवसत जलमध्य जिमिपातमिलित पयहोत ॥ भेदत कैसहु ताहि नहि भीतर बाहिरपोत २१ चञ्चरीक योजन बहुत आवत काज सुगन्धि ॥ प्रीति सत्य त्यागतनहीं जातरैलि तहँबन्धि २२ जलचर जीव अपार जल बरात मीन अहि भेक ॥ भेद न जानत गन्धिको क्यों कर करै विवेक २३ लोकरीति ज्ञानी करते धर्मरहे जगछाय ॥ तिनहि न बांधत कर्मते जेनिःकर्म स-दाय २४ ज्योतिनिरीह अमानहै देखिपरत, परिपूर ॥ ज्ञानीचारों दिशिलखत देखि सकत नहिंकूर २५ को स्वारथहै, दीपको धारें कज्जल योग ॥ त्योंकरही जाहेतुहित तैसेकर्मअकर्मयोग २६ मारगमें

रज्ज रजत जिमि रहत निरादरनित्त ॥ सतसंगतिपवमानकी ऊ-
ची चढ़ै अमित्त २७ कौ कविता जानत सुजन जो सविता न
प्रकाश ॥ निरालंब निरधार मग चलतसदा दशआश २८ दुविधा
दोहाअर्थकी ज्ञानविना न नशाय ॥ सज्ञानी दुविधा रहित कहत
ज्ञानगुण हाय २९ महापुरुप सोआपहै महत्तेजबहुभान॥ महा-
शक्ति इच्छा कहत शब्दओ परमान ३० तजै शुभाशुभ बासना
रहै एककेपास ॥ द्वैतभाव विनु जानिहै शुद्ध चितानँद भास ३१
कर्मप्रधानी जगत यह कर्म न त्यागै बुद्ध ॥ जासु कर्मलखि म-
नुज जग गहै सकल मगशुद्ध ३२ अखिल धर्मखोजै प्रथम तजि
हठमत मतिमान ॥ सत्यगहै तजिमूल भव ताहि कहत विज्ञान
३३ निज धर्मन त्यागै नही जोश्रुतिवत कृतकर्म ॥ आनमनुज
ज्ञातिज सकल गहैं सत्य निज धर्म ३४ षडेकर्म कर्ताभयेनामी
कामीनाहि ॥ फलकी तृष्णा चित्त नहिं ते ज्ञानी भवमाहिं ३५
सतमारग वेदांतको ताहि निबाहै कोइ ॥ बंधनतेि संसारतेमो-
चिजाय नर सोइ ३६ जीवन मूलै स्वश्वासहै वृथा नहीं है तौ-
न ॥ को जानै सिद्धांत नित बदत सत्यहै जौन ३७ गमनहोत
अक्षर सुभग प्रविशै पूरब वानि ॥ यहजानै जोजीव तौ पहिचानै
अनुमानि ३८ जन्मसकल अर्चाकरी मूरतिमयी सुदेव॥ स्वर्ग
भोग फल तासु भो रहा मुक्तिको भेव ३९ तीरथ न्याये आयु-
भरि अन्तबसे सुरलोक ॥ मोक्ष पदारथ हाथ नहिं० आसो भेन
विशोक ४० विष्णु प्रभुहित व्रतकिये रचिमत साधि अपार॥
दृढ़ताबशफललोकदा मोक्षन भो करतार ४१ काव्य बनाये ज-
न्मभरि देव पक्षबहुभांति ॥ देवलोकभो अंतमे मोक्षनही दरशां-
ति ४२ अतिथितोष नितप्रतिकरै दयायुक्तनिरदोष ॥ आराधै
निज आतमा अंत सुपावै मोष ४३ प्रीतिसत्यप्रतिपालिये निर-
गुणमत उरधारि ॥ वेद वाक्यसत्यात सो जाय जन्म निरवारि
४४ चौरासी लख योनिमहँ चारिखानिके जीव ॥ तू भरमै लिय
मैलदो कहां मुक्तिकी सींव ४५ उद्भव भोनिज कर्मवश बदतवेद

विज्ञान ॥ स्वर्ग नरक कर्तव्यवत होत मोक्षधीमान ४६ ज्ञानवि-
ना सूझत नही पूरण पदको भाव ॥ बूझेविनु सूझत नही मोक्ष
हीनको दांव ४७ जगत प्रीतिमहँ बँधिगयो जीव ब्रह्मकोअंश ॥
कठिनमुक्ति सतसग बिनु पढ़त नहीं हरिवंश ४८ नित प्रतिक-
रत पुकार यह हौं परमातम आपु ॥ मानत नहि शिक्षा बिना
कुन बिपरीत अलापु ४६ राम राम ध्यावत सदा मर्म नामको
आन ॥ सोजाने बिनु स्वर्गमग जात कहत बुधिमान ५० नाम
भेद उर आनिके जपै सदा चितलाय ॥ पूरण ज्ञान प्रताप सों
आप मोक्ष ह्वै जाय ५१ जीव खोज मिटिजाय जब होइ ब्रह्म-
पद लीन ॥ जन्म मरणके दण्डते मोचि जायसुप्रवीन ५२ कहै
भेद नहि काहु प्रति लीनरहै सबमाहिं ॥ आतमही को ध्यान
उर मुक्तहोइ भ्रम नाहिं ५३ निष्प्रेही जगतण लखत सर्वासार
प्रभुतर ॥ लीनरहत निज आतमा प्रकटत अमी मृदुत्व ५४ जि-
मि विरक्त वामन लखत दाताधनन म्वहात ॥ तिमिज्ञानीत्रैलो-
कनको लखिनिज माहिं समात ५५ कर्म शुभाशुभबंधहै जबल-
गिफलमें हेत ॥ निरफल कीन्हे कर्म सब अतमुक्ति लहि लेत
५६ संभव काको नामहै अनुभवकोसंसार ॥ जन्म मोक्षह्वोजा-
तिके यहसबैग विचार ५७ यमआसन औनियम कृतप्राणायाम
प्रवीन ॥ प्रत्याहार सुधारणा ध्यानसमाधि चक्षीन ५८ यहअ-
ष्टांगयोगहठ सिद्धियोग विज्ञान ॥ जाकेउपजत चित्तमें जात अ-
विद्यामान ५६ मायासांपिनि सर्वदा डसेजीव सबधाय ॥ जिन
गारुरि विज्ञानगुरु कोजगसकत जिवाय ६० मालबिना मिलि
जातहै वस्तुअमोल पुरान ॥ यादेहीके भेदमें कृत निर्दैत मज्ञा-
न ६१ परमहंसपद पायमन बस्योहृदय महँआय ॥ अतिअच-
रजको अश्चयहै दुविधाकथीन जाय ६२ संन्यासी मतिमानजे
त्यागेभवकी भूल ॥ लिप्तजगत नहिहोतते गहेज्ञानतरुमूल ६३
मारगपंथो भ्रमिगयो निजमति भ्रमसे तात ॥ जबलगि मगद-
र्शनमिले तबलगि मनभरमात ६४ सत्यसिंधु सर्वज्ञशुचि पार-

ब्रह्म सदभाव ॥ दोषशोकते रहितहै पूरित त्रिपुर प्रभाव ६५ ज्ञानिनके तनप्राणको भेदतकाम प्रसून ॥ वैनधाव घातकलगत जिमिनव कीन्हेहून ६६ लोभक्रोध आवतहृदय करत निरादर तास ॥ सद्भावी संसारमें मनदृढ़कृत निजरास ६७ समदर्शी विज्ञानमय परमहंस सुखरूप ॥ कीदब्रह्म समकरि लखत ध्यावततत्त्व अनूप ६८ कियेतीनगुणमयत्रिपुर तीनदेवपरधान ॥ अहंकार मे अतते नाशमिलत विज्ञान ६९ पंचतत्त्वमय जीव सब देहधरेतिहुँधाम ॥ नाशवान ये सकलहैं तूभजु आतम राम ७० कल्याणीतिहुँकालमेंसंतप्रतिपादानि ॥ सगुणअगुण सभेंग मत करतसत अनुमानि ७१ तपसाबुतपट जन्ममलि पाप मैल हरिलेत ॥ धोयशांति जलस्वच्छपुनि सकल भांति करिदेत ७२ संतमडली बोधदा सतमारग सोपान ॥ सेइयज्ञानी कपटतजि पाइयपद निर्वान ७३ इन्द्रीबिनु जीतेकबौं द्रवत न अनुभव वस्त ॥ ब्रह्माकारण भावशुभ जायकज्ञान समस्त ७४ जीतिय इन्द्री आपनी निजवश मनचललाय ॥ परमातम निज आतमा भजिये चित्तलगाय ७५ अजिती ब्रह्मज्ञानरत पावतकष्टअलेख ॥ तत्त्वलहत नहिकोटि विधि कृतबहु कर्मविशेख ७६ कर्मसाधना करिगह्यो ब्रह्मज्ञानसुपन्थ ॥ मनवश भोनेन्द्रिय सकल आमिक नानाग्रन्थ ७७ एकपरन्तु विशेषता ब्रह्मज्ञानकी आहि ॥ अन्त नरकनिवसतनही अजिती स्वर्गबसाहि ७८ पुण्यवान धनवान शुचि सुकुलसुबुधि सुविचार ॥ ब्रह्मज्ञानी अष्टतप जरथतप अवतार ७९ ब्रह्मज्ञान समानतप जपविद्या कउनाहिं ॥ मोक्षदात घननीरसम व्यापक सबघरमाहिं ८० विष्णुभक्तिसांचीकरै पूरुष वैष्णवकोइ ॥ तीनजन्म के योगलों मुक्ति लहैगासोइ ८१ निन्दादूसरि धर्मकी करतवैष्णव जौन ॥ सोतो कोटिहु जन्मलगि मोक्षै होत कवौन ८२ भक्तिभ्रष्ट नरकैलहै स्वर्गवासदृढभक्ति ॥ सकलवैष्णव धर्मको सारभाव शुभभक्ति ८३ विश्व विष्णुमय जानिकै भक्तिसदृढ़ता साथ ॥ करतवैष्णव रैनिदिन तेबुध होत

सनाथ ८४ गैवीहूयाविधि करे यक्ति उपासक जौन॥ सूत्यभौव भवतेतरे जन्मएरु है तौन ८५ ब्रह्मज्ञान सुअग्नि है जराजन्म तृणरूप॥ भस्मतनिकटहि जातही यह सिद्धांत अनूप ८६ कोटिएक महँमनुज कउ उरधारत विज्ञान॥ अनुभव दर्शन ब्रह्म लव आतम तत्त्वसुजान ८७ धिषणादृढ़ करिआपनी कमठ तुल्यगोखींचि॥ निजआतमको उद्धरै लखैन गति कविनीचि ८८ पन्नगविसँ पातपरि आपहि चढ़तअकाश॥ ब्रह्मज्ञान महँ जीव परि ऊरधकरतप्रकाश ८९ आश्रमरोसविहाय जग ब्रह्मज्ञानविचारु॥ उदासीन पंथसेइके निज जन्मांतनिवारु ९० घटघटब्रह्म अव्यक्तहै अव्ययप्रकट लखात॥ ब्रह्मज्ञानसुदृष्टिमग दुष्ट प्रकृति नहितात ९१ जाकेइच्छा मोक्षकी सोयहकरै उपाय॥ गृहकाननसमताधरै मानसनेह विहाय ९२ कोटि जन्मयत्न यतिमहै अजिती श्रद्धाहीन॥ आवागमन नपरिहरै यह सिद्धांत अक्षीन ९३ बालकबामा बंधुयुत बसैभवन मतिधीर॥ उदासीन अन्तरभजै आतम मुक्तिलधीर ९४ जाकीमाया अति प्रबल विरचै चौदह धाम॥ सो आतम तन ब्रह्मविद योगगम्य परिणाम ९५ समुझत बनतअनेकविधि कहतबनतनहिंसोइ॥ ब्रह्मज्ञान परसावते गुरुमुखबूझै कोइ ९६ यथा भामिनी भोग सुख कैसे सकै बताय॥ करवाये बिनु कर्म सो यों समुझै चितचाय ९७ सोवतमें जोहै दशा ताहि बतावन काज॥ कोसहाय करि सकत बुध सोयो बुद्धिसमाज ९८ मोक्षदशाकोसौख्ययह जानियप्रकटन तात॥ वहिकारण कउ कोटि महँ यामगमहँ ठहरात ९९ मंगल सांचाआतमा जग असत्य साभांति॥ सतसंगति जोनित करत सेइयताकीपाति १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्नायां सर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायांनिर्वाणपदवर्णनो नामद्वितीयप्रशतकः २॥

दो० ॥ जोपै ब्रह्मज्ञानमें बुधि न लगैभरि पूरि॥ तौ पुनि

भक्ति सुमल्य करि गहै ज्ञानकी मूरि १ सत्य सनेह लगाइकरि ध्यावै श्रीभगवान॥ आदिअंत यकरसरहे लहै परम विज्ञान २ भक्तहोइ सद्भाविका छलहठ त्यागी सत्य ॥ अत विष्णुपुरबास लहि मेटै भव आपत्य ३ आन और हेरै नहीं प्रीतम सांचात्यागि ॥ पूरणभये निबाहके रहे तासुतट लागि ४ वाणी परिहरि कपटकी दंभ भावना हीन ॥ आराधै सारगधर होइ नियमदुख हीन ५ किंकर लौंजोभावहै सोमन राखैनित्त ॥ अहंकार ममता तजै सबदिन वित्ताचित्त । ६ मित्रमानि सबनेह तजि वाही सों करु नेह ॥ अंतप्रीति बश बासना लैलैहै वा गेह ७ जाकोरूपअदृश्यहै दृश्यमान किमि होइ ॥ सत्य प्रीतिकी रीति यह अपनावै त्वहि सोइ ८ प्रीति प्रतीति स्वचित्त धरि ध्यावै शार्ङ्गपानि ॥ मुक्तिपदारथ करलगै बोकवि कहत बखानि ९ करै प्रीति हठभावसों तजै न कोटि कलेश ॥ नारायणकी कृपाते बसैसो वाहीदेश १० विघ्न भय रु देखिमग तजै न कर असि प्रीति ॥ मारिचलै निज प्रेमपथ यहै मित्रकी रीति ११ ऊपर ते हितकी बदत अंतर आन विचार ॥ सत्य प्रीति भागीन उर कौननिबाहन हार १२ मंगले प्रियतम सत्य जो गहै टेक लतभाय ॥ आदिअंत यकभावसों ताहि मित्र दरशाय १३ मंगल कदलीवृक्ष ज्यों हठ तजि फलन दुबार ॥ सत्यव्रतीत्यो साधुजन नाहिंधरत अवतार १४ सहन कोटिभय पंथमें मृगवन सुन्यो अलापु ॥ प्रीति विवश आवत भयो प्रण बश नहि संतापु १५ अहि सुनि वाणी वेणुकी निकस्यो भवन बिहाय ॥ यदपि गह्यो अहिधिक त्वहि दशै दण्ड समुदाय १६ दशन भंजिकियं बंध त्यहि बहुरि बजायो बेनु ॥ सुनैलग्योसानन्दही प्रीतम वाणि सुखेनु १७ कालकाल का करि सकत पूरण पुरुष अनूप ॥ तासु प्रीतिते अभय मन पावैगो निजरूप १८ तन ते पूजत देवता मनते विषयी ध्यान ॥ प्रीतिसत्य लावन नहीं क्योंहोवै कल्यान १९ एकादशी ब्रतेरहे नारायण ब्रतजानि ॥ उरआशा भव भोगकी कयो

होवै फल दानि २० जगन्नाथको जातभे मन त्रिय तनयसनेह॥ मन बिराग आयो नही क्यों बसिहे सुरगेह २१ कंकर सेजव-नाइ नित सोवत दुखित शरीर॥ लाभ लालसा उरबसै क्यों मिटिहै भव भीर २२ अग्निचारि दिशि ज्वलित मधि बैठितप-तनित दग्ध॥ भक्तिभावमन शुद्धनहिं क्योंसुखहोइ अखण्ड२३ बिनुन्हाये जल पाननहिं बिनुमिल भोगन भोग॥ तृपा क्षुधातुर शालिनी कहामुक्ति सयोग २४ कोमलबचन मयूरवत निर्णय ज्ञात अनेक॥ काम लोभ अंतर बसै कस यह भक्ति विवेक२५ शीशकेश अज जोरिकै भूतिमर्दि निज अंग॥ मौन गहे मृगघा-तिनित निदहि तीरथ गंग २६ आप बड़ाई नित चहत निदत आन सुजान॥ आशा बासी अजित मन कहांमोह कल्यान २७ बहुत अहारी भक्तनहिं निराहार नहि संत॥ सत्य प्रेमको मग गहे सुख समाज त्यहिअंत २८ जानत आनन आपसम युचिके मारगमाहिं॥ अहंभाव दुख दानि भव अंतहु सपर्क नाहि २९ प्रीतिरज्जु महँ बांधि मन संतमग देहचलाय॥ ज्यों नटबाधा-खामृगहि जहां चले लैजाय ३० कामी सेवत नारि ज्यो आन प्रीतिकोत्यागि॥ तूंमगलमन तौनविधि रहुप्रीतम रसपागि ३१ दीनवस्तु बिनखिगिरमहँ ज्योदिनकरहि निहार॥ त्योंमगलमन तूकरे पुरणप्रीति बिचार ३२ मनते तनते बचनते क्रियाकर्मधर्म धाम॥ सबविधितेवै प्रीतपग जगसुख पुनिहरिधाम ३३ कोपं-डित कविकोनहै कोज्ञानी गुणरूप॥ प्रीतिबिना निजनाथकी पतिबिन नारिअनूप ३४ भूपप्रतापी प्रीतिमव चाहत सबजग लोग॥ छिन्नबिभव पुनिताहिसब कहत महीपश्रयोग ३५ सकल जगत स्वारथमयी अनस्वारथ हितुहोइ॥ मगलमन संसारमहँ ने-हनियहत सोइ ३६ मृगबनि बधिकस्नेहतुगिर मृतक चलो घ-रिताल॥ मूरख बनबासी कहे मनुजशीश मृगजात ३७ को कराल को सुगम को शुद्धि समारक कौन॥ सत्यनेह शारंगधरे उरसोवैबुधतौन ३८ जो साचामारग बदत ताहि कहतहैं दंभ॥

पूजत छलमय देवता कीन्हो कपटारंभ ३९ जवलगि आशाभोगकी तवलगि भीक्षन होत ॥ आशमिटे भवकाम की अनुभव करत उदोत ४० मातपिता तियसुत सखा तजिकैवनेभिखारि॥ गृहगृहेमान गमाइयो क्योंनोचैं अविचारि ४१ कर्माक्षरलोपत नहीं कोटिउपाय प्रवीन॥ आतमएक विचारविन जन्म जन्म दुखपीन ४२ ज्योंस्वपनें महँदीननर नरपति पदवीपाय ॥ जागेरंचक सुखविवुध तथाजगतको भाय ४३ चारिप्राँच गुणवीचमें विविधजन्म तूलेइ ॥ विषयवासना प्रवलमन अमितदंड त्वहिं देइ ४४ मायाब्रह्म अपारहो आतपपूर्णदेव ॥ आतप मित्र विहीननहिं यहेद्विपदकोभेव ४५ दानदिये धनलोभहै तृष्णावृद्धक तात॥ ज्ञानदीप प्रवरितनहीं ब्योपारीकी बात ४६ वेशभेदको जानिमन वणिकभार भरिवस्त ॥ बेच्यो दूनें दामलगि तैसेदाम समस्त ४७ नरमेआवी कर्मकृत लाभहानि तजिदोइ ॥ पापपुण्यघातजे लहत मुक्तिपदसोइ ४८ गुरुसों पूछ्यो सत्यव्रत कहइन्द्री निजसाधु ॥ पूजनसाचे देवको आतमहीं आराधु ४९ मूरखजडलौं ह्वैरहे जानतज्ञानन भक्ति॥ नाममनुष्य निवासि है अंतनरकविनुभक्ति ५० ज्योंसूत्रक निजउदरते ततुसमूहघनाय॥ अमकरघ आधारलों जीतअत पुनिखाय ५१ ऐसे निजवंश राखिकै गैलमस्त मतयुक्त ॥ वाहरभीतर कर्मकृत जीवत सोनरमुक्त ५२ कमठआपे इन्द्रीसकल स्ववशपसारत वीर ॥ पुनिकर्षत निजअगमें तथाथाति मतिवीर ५३ खोजाचाँहै ब्रह्मपद अनुभवकोशुभदेश॥ तौसतमारग चितधरु सुनिसतगुरु उपदेश ५४ चित्तसिद्धांतक कर्मकें सेयेविनुगुणपाय ॥ मुक्तहोइ मंगल नहीं जन्मअनंत असाय ५५ जानत आतम अगमअति जानेआप नशायहा॥ यथादुग्ध घटविंदुजल मिलतनरगलखाय ५६ तीनलोक व्यापकविरुज देखतसबकेकाज ॥ गुप्तप्रकट सवठाम प्रभु भजुकितमन निर्व्याज ५७ नारिपुरुष कहिसकत को अलख अहृय अकाय॥ ज्ञानदृष्टिबूझत यद्पिको बुधसंकत बताय ५८ उपमा

ताकी कौनहै जोन बिलोकोदेव ॥ सकल अभेद अद्वैतको क्यों करिभाषे भेव ५८ ज्ञानसूर उदयत हृदय बुद्धिनयन सों देखु ॥ परम ज्योति अविनाश सो पूरण शब्द अलेखु ६० शब्द अनाहत नित करत सोवत जागतएक ॥ सुनत होइ मतवार बुधजनुमधु पिये अनेक ६१ जोजो देखु संसारके सोसब तामेंजानु ॥ मंगल मन चित द्वैत नहिं यहधौं कौन प्रमानु ६२ सात स्वर्ग बसि जन्मलहि पावै कर्म बिभाग ॥ सुख दुख मान अमानभव विधु आतम अनुराग ६३ कोटि भार हाटक धस्यो रत्तीएकपरखाय ॥ जानों सबको मोल तिमि ब्रह्मजीवके भाय ६४ अक्षर एके रूप है मात्रारूप अनेक ॥ सोमाया गुण तत्त्व बुध अक्षर ब्रह्म विवेक ६५ धीरव्रती रणचढ़ि लरत पद पाछे नहिदेत ॥ तथा प्रज्ञसंवेग मत दृढ़ता करि गहिलेत ६६ निज पति मरण बिलोकि तिय मोह बिवश सतिनेह ॥ समुझायो मानत नहीं जारत पति सँग देह ६७ ज्ञानिवान गहि सत्य मत तैसे त्यागत नाहि ॥ दृढ़ करि ध्यावत आतमहिं पूरण ब्रह्म समाहि ६८ मेरे मत निरगुण सगुण दोनों आतम ध्यान ॥ गुणन होत सो निगुण को बूझौ पूरणज्ञान ६९ अज्ञानीको ज्ञानविद बिन आतम सुविचार ॥ अनुभवे सिद्धि सभावहै कर्त्ता कर्म विहार ७० ज्ञानिआतमा बोधवा बहुरि भुलानेअज्ञ ॥ ताहिप्रबोध्यो ज्ञानमत हौ अज्ञान अरुप्रज्ञ ७१ वृक्ष बद्दरिफल कीरगहि काननगयो उड़ाय ॥ बीजगिरे ज्ञामतभयो सूर भूमिजलपाय ७२ जोपै अंग न बीज में परमातमको तातें ॥ तौकस बाढ़्यो फलफत्यो यों सबजग दरशात ७३ मीनउदकते रहित फिरि जियत न कोटि उपाय ॥ मंगल नर जडता विवश हितत जि अहित भुलाय ७४ चुम्बक देखे लोहके करत चेष्टाभाव ॥ मंगलमन लहिज्ञान हितु तज्यो न नीच सभाव ७५ लडतेऊ प्रीतम गुणन सुनत न देखतदेह ॥ शुचि इन्द्रीपाये मनुज बसत बप्रकेगेह ७६ काम क्रोध लोभादिको आनत सुखदा मिश्र ॥ क्यों समुझाऊँ जीव कहँय [illegible]

रीत चरित्र। ७७ मोह पिंजरा दुःख सुख है कपाट भ्रमयंत्र ॥ जीव तिंहतें बंध परयो तोरत होइ स्वतंत्र ७८ स्वाद विषयको विष सरिस खात मीठ गुणकाल ॥ जानि चखत सुजीव कों ध्याउ देव त्रैपाल ७९ विषयस्वाद भावत हृदय जबलगि जीवहिं माहि ॥ ब्रह्मसुखहि निरखत चतुर तबलगि केसेहु नाहिं ८० कोटि बानवे श्वासकी नर आयुष परमान ॥ अधिक एक श्वासा मनुज जीवित नाहिं सुजान ८१ षट श्वासाको एकपल गुणो दिवस निशिश्वास ॥ षटशत सहस इकीसमें शत श्वासा विश्वास ८२ अंत आदि या विधिवहे जीवतजें जो देह ॥ जीवें यकशत बीसही वर्ष चतुर न सँदेह ८३ मनमधि व्यंग विचारकृत दूषत धार्म निदेश ॥ मुक्ति चहत कर्तव्य विनु तन बिभूति धरि केश ८४ पापीपाप न परिहरे धर्म लिंगको हेरि ॥ तदपि दुचितई चितरहे चितत पापहि फेरि ८५ श्रद्धाबिन पूजन नहीं जप न विना अनुराग ॥ मोक्ष न अतिमध्यान विनु माया इय विभाग ८६ औरनको शिक्षा करत निजकरणी परित्यागि ॥ भिक्षक पंथ विहीन ज्यों बाट बतावत जागि ॥ ८७ लघुता गुरुता कारणहु एक शब्द की रीति ॥ शब्द विचारे ज्ञानमर्म पूरणब्रह्म प्रतीति ८८ शब्द तुल्य नहिं मंत्र शुभ गायत्री दृढ़ नाहिं ॥ धर्म बुद्धिमय शब्दसों अर्थज्ञान के माहिं ८९ कलिमल तूल समान है शब्द धनंजय सिद्धि ॥ ज्ञान मानमता शब्दमें लवलाये हितवृद्धि ९० लोपि जन्म भरि कुमगमें विचरयो नर वपु पाये ॥ ...

सम्यक विधि निज आतमा करत अरथमग नित्त ९६ जो योगी निज अंगकी परखि एंगाति लेइ ॥ भवावर्त महँ चतुरगुण जो न सत्यप्रम देइ ९७ ब्राह्मण क्षत्री वैश्यपुनि शूद्रवरण ये चारि ॥ इकी द्विविधा जानसंत पंडित लेहि विचारि ९८ विष्णुसपी जग जानिके गहै वैष्णव पात ॥ सत्य शब्द धावन करै अंत स्वपद कोभाव ९९ सोंनिद्वांतहि जानिके मंगलमत भजु राम ॥ इत उतदोनों ओरसुख परिपूरण विश्राम १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअघनिहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्र्यांमंगलविनोदकायांमंगलदासविरचितायांभक्तिमार्गनिवार्थपदवर्णनोनामतृतीयशतकः ॥ ३ ॥

दो० ॥ कोटि जन्म तीरथ फलै लाख जन्म मिउ ध्यान ॥ मंगल नहि विश्वास दृढ़ कहाँ लहै कल्यान १ बिन संतिभाव न सिद्धि कोउ पूजन जप जगहोत ॥ सत्यभाव मंगल सदा मंगल करत उदोत २ काष्ठ मृत्तिका उपलकी मूरति महँ नहिं देव ॥ शुद्धभाव विश्वास दृढ़ फलदा सद्गुरुसेव ३ दर्पण पूरण दिपि लखत उगिलत ज्वाल समूह ॥ तिमि मन आतम ओर लखि त्यागि न विषयक जूह ४ विषय बासना चंचला यथा स्वैरिणी बाम ॥ कोटि पतिव्रत धर्म सुनि, परपति निरखित का-म ५ छल प्रपञ्चकृत गुप्तही प्रकटत काळहि पाय ॥ प्रीति भंग तब होतिहै विष्णु पौंड्रकभाय ६ काकवेष करणी सुकुल पावन यथा मराल ॥ परमातम पर हंसकुल पावन वायस बाल ७ जिमि किसान निजखेतमें जो बोवत सो होत ॥ ऐसे काया खेत में करणी करत उदोत ८ मित्रद्रोह परत्रिय रमण मिथ्या साखि अकाज ॥ ज्ञानपाप सब ढिकरत ऊपर भक्तिसमाज ९ उरभुजादि मालाधरे गलमिल शालिग्राम ॥ मिथ्याछल निवसत हृदय धारिगये यकनाम १० अंतर बाहिर एकरस सतभावी शुचि साध ॥ पर उपकारी ज्ञानमय तापद मन आराध ११ ज्यों ज्वारी निज दारको करत चित्तमय सत्त ॥ औरनसों स्वारथ नहीं तस

बुध आतम नित्य १२ घटकेअंतर बाहिरे देखिय प्रकटप्रकाश ॥ घटफूटे घटहीनभे नाहीं गगन विनाश १३ तथा जीव अरु देह यह ज्ञानपंथ गहिदेखु ॥ अविनाशी अजअगुणहै निज आपापद लेखु १४ जाग्रतमें ज्यों व्याइये त्यों स्वप्ना करुनेह ॥ कहिय सुषुप्तिहुमें वहै जो कर्तव निजदेह १५ बंधन काको जगतमें मोक्ष कौनको तात ॥ अविनाशी अद्वैतको यह अचरजकी बात १६ जरैअग्निसों यहनहीं जीवधर्म अविनास ॥ शस्त्रयस्त्रकरिकटत नहि सबदिन पूरणभास १७ गहाजात प्रतिबिंबनहिं जिमिकर सों गुणकोटि ॥ त्योंहीं यहशुचि आतमा क्योंकोउसकत अगोटि १८ मरयौ न मरिहै अमरअज भयो न होवन हार ॥ आपुहि आपु प्रकाश कृत हरिमतयहै विचार १९ जाकेरूप न रेखहै आवत जात न दीख ॥ ताहि स्वर्ग अरु नर्कपथ यह कैसी मन सीख २० कवि पंडित कोउ सत्यमग पगधारै शुचि काम ॥ तब सर्वांग सत्यमत गहिपावै विश्राम २१ श्रीहरि अर्जुन को कियो कर्मयोगउपदेश ॥ सिद्धांतिनआतमबद्यो तबत्याग्यो भ्रमदेश२२ जो आतम नहिं उद्धरत पाप पुण्यकी आस ॥ तेपुरुष निज आवेश करत हिपदमेंवास २३ जीवकर्मवश विषयरत आसपास करकाल ॥ भरमाका सब योनिमें जे कलेशके जाल २४ सार वस्तु सो खोजिये तजि असार निःकाज ॥ मोल अधिक स्वादौ अधिक शुचि सुगंधि शुचिसाज २५ मूढ़ कांचकरमें गहत तजि पारस पाषाण ॥ तैसे तू विषयी गहत त्यागत पद निर्वाण २६ व्याल चालि विकराळ जग भवन सरल गतिलेत ॥ त्यों मंगल तू विषयरत हरिमगु चलुकरि चेत २७ सबयोगनको योगहै सकल मंत्रमय मूरि ॥ अचल प्रीति भगवानकी जो दायक सुख भूरि २८ करमाला जापक लिये मन विषयनके ध्यान ॥ मोक्ष लालसा वृथाकृत अंत विषय सन्मान २९ यथा गंगजळ घट भरयो पावन पाप विनास ॥ सुराविंदु कृत अशुचि तिमि जीव विषय संगभास ३० मायाको परपंच है नीच ऊंच कुलवान ॥

ज्यों भोजन गोमांसते विप्रगवाय समान ३१ सुरुचि कुरुचिकोऊ करै आतम तत्त्व विचार॥ मंगलमत सिद्धांतके लहै मोक्ष कर्तार ३२ अमजबलगि करिसकत नर तबलगि हित्तसबकेर॥ शिथिलभये त्यागत सकल तूतजु तिनहिं सबेर ३३ जाकीबुद्धि प्रबोध मय ब्रह्माचार सुलोक॥ तेबहुमोल अबंधभव प्रसंज्ञानके थोक ३४ जो मारग भयकार मन सिंह ऋक्ष अजगत्र॥ जानि जात किन अपर पथ भूलिजात कसतत्र ३५ मैं स्वपनेमहँदीख पह जन्मामो गृहसून॥ मोहि लाउसानंदमें जागिलखा सोकहून ३६ यहैमोहको नींदहै ज्ञान दिवाकर नित्य॥ प्रकटतप्राची बुद्धिमय जागत पुरुष सत्य ३७ दुग्धदिधि प्रकट प्रकाश है देखि लेहु किन मीत॥ अछत नयन कस अंध बन तूतो परम पुनीत ३८ पाप पुण्य सुख दुखतुही छद्म अछद्म समान॥ जो है सो तौ आप तू क्यों मग भूल भुलान ३६ यथा रुधिर सर्वांग में व्यापत तथा सुमुक्ति॥ मनुज देह के संग सँग डालतहै बिनुयुक्ति ४० विषय ध्यान नाथतसुमति थावत कुमति शरीर॥ जासुप्रबलतावश बसत अधो योनि सहपीर ४१ कर्म तीनिविध जानिये घत रज तमके भाय॥ होयतजे एकैगहे रहै मोक्षकोपाय ४२ जिमिअफाशमें नीलता दृष्टि सीवको लेखु॥ त्योंअसत्य संसारके सकलपदारथ देखु ४३ भानमान अनुमान करि ववतसकलवुधिवंत॥ जानतपूरण ज्योतिमय ब्राह्मणसेवत्त संत ४४ बीज न होत गुलाबमें जामत अंग प्रताप॥ जानु चतुर योंआतमा अंगअंगकेथाप ४५ अकरकहत्त दुविधालगत है असत्य लगरूप॥ याहिबनायो जासुने सोप्रभु सत्यअनूप४६ तीनिकाल समदिनरहे तिमिभवको भ्रमभूल॥ द्वैपद तीसर जीवभ्रम जो दायकदुखशूल ४७ बालकरचिके ख्यालसब अंतमिटावतसर्व॥ तिमिपरमातम चारिविध समयसमय निमिपर्व ४८ सूरज्योति जहँ थिवितनहिं नखतमयूपन भास॥ तत्त्ववस्तु गुणकालनहिं जहंवांब्रह्म बिलास ४६ लोकालोक न कहिसकत रूप अरूप न

कोइ ॥ द्वैत नतहां प्रकाशकृत जातएकही होइ ५० यथा अग्नि
तृणकाष्ठसबं जारिकरत निजअंग ॥ तिमि परमातम जीव कहँ
निजमय करत अभंग ५१ ज्ञानवान्को जगतमहँ कोमूरख मति
हीन ॥ विषयभोगमहँ समदुखो भाषत निकर प्रवीन ५२ जाकी
बुद्धिसतोगुणी सोज्ञानी मतिधीर ॥ याजगचाहो जसरहो अंत न
पमकीपीर ५३ सकलवस्तुको ज्ञातइर शीलवान शुचिकाम ॥
माया जानत झूंठ जो सुगति लहत परिणाम ५४ लोभ सहित
व्योहारसब मानबड़ाई चाह ॥ ताकीबुद्धि रजोगुणी बरतअवि-
लकबिनाह ५५ आपनपद चीन्हतनहीं जड़लों रहत सदाहि ॥
मूढ़भावतम गुणविवश नहींमुक्तिकी चाहि ५६ बुध सएहलीन
जातखल विचरत सदाकुसंग ॥ तेप्राणीबहु जन्मलगि लखत न
आपनरंग ५७ यतनकरत सुरलोकको विषय वासनालीन ॥ को
पावतपद अमरबुध दुविधालगी मलीन ५८ जादिन जन्मेजीव
सब तादिनते न मिलान ॥ भयोपितासंग यतनकरि अबकरुमन
पहिचान ५९ वारिधियथा न बढ़त अरु घटत न काहूरीति ॥ तिमि
परमातम अकलअज बदनवाक्य श्रुतिनीति ६० इन्द्रवरुणयम
धनपृथिवि आदिकसब नशिजात ॥ इनके सेवनते चतुर कहां
मोक्षकीबात ६१ क्यों पावत नरके चतुर जोपसीर तजिदेइ ॥
बहुरिजन्म भवसंगहै लेतिन्न आतम सेइ ६२ प्राणीपरिहरि मोह
की रहुआतममें लीन ॥ ब्रह्मज्ञान प्रतापते पावैमुक्ति अखीन ६३
मायामहा अपारहै क्षरवत्सोइ प्रमान ॥ अक्षरपूरण ब्रह्महै यह
सिद्धांत महान ६४ ओंकार सोहं वदत प्रणव अजप द्वैभाव ॥
मंगलमनके बोधते सम्यकएक प्रभाव ६५ अकलकला बिनुक्यों
कहत करतलोक कर्त्तार ॥ लिप्तहोतनहिं जलजजल लखुकरि
ज्ञातविचार ६६ मांगिखात सहिसेजकृत नग्नरहत तजिलाज ॥
मुक्ति होत मंगल नहीं बिनध्याये तनराज ६७ प्रीति प्रतीति
सनेस नित प्रीतमको मनआन ॥ सोबिनाय वाको मिलै तब
पावैकरयान ६८ काशी मगमें भ्रम ब्रह्मो मुक्तभेतदेहोस ॥ सोजाने

बिनु आतमा जानत साधू सोय ६९ जानत आतम भावजे परमा-
तमके भाय ॥ तेपावत निर्वाणपद दुविधा देतबहाय ७० बिना
कर्मनहिं सिद्धभव कर्मफलित दुहुँ ओर ॥ परमहंस कर्मन करत
जानत विषयकठोर ७१ जोधनिआवे सहजही सो कर्तव नित
साधु ॥ सत्यभाव श्रीरामपद जलजसदा आराधु ७२ स्वर्ग रहै
निजपुण्यसम अमरपदारथ भोग ॥ दुविधा मिटी न जन्मकी क्यों
करिभयो वियोग ७३ उड़तपक्षि आकाशकहँ निजबल बुधिअनु-
सार॥ पावत अंतन कोटिकृत माया तथा अपार ७४ जोजीते माया
विबुध होइ ब्रह्मसो आप॥ स्वर्गनरक व्यापै नहीं दुविधा जन्मसंताप
७५ मोहनिशा जो जगिउठ्यो लहिरविब्रह्मप्रकाश॥ चीन्हीं आपनि
वस्तुसब निकट दूरिचहुँ आश ७६ जैसेमिहँदी पानमें लाली लखी
न जाय ॥ योग भये सतसंगके परत प्रसिद्ध लखाय ७७ अथवा
तिलमें तेल ज्यों निवसत गंधि प्रसून ॥ तथा निरंजन ब्रह्म प्रभु
तन प्रति बोध विहून ७८ याशरीर के मथन ते प्रकटत तासु प्र-
ताप ॥ आतम ज्ञानी योग रत मेटत भवसंताप ७९ ब्रह्मरंगेत-
न भूति रँगि दुविधा बासशरीर ॥ तत्पर ध्यान न आतमा क्यों
करि होइ सधीर ८० पांच प्राण वासी वपुष पांच तत्त्व निरमा-
ण ॥ एक मारगमहँ सब चलैं तौ पावै निरवाण ८१ कमलापति
की चाहनहिं कमलाकी अति चाह ॥ मूरख समुझत अमर पद
काल करै क्षणमाह ८२ तीनि पांच पटलौ तजै भजै निरंजनदे-
व ॥ समजानै लघु ऊंच कहँ लहै मुक्तिको भेव ८३ पांचबीसको
एक करि मनको देइ भुलाइ ॥ समुझे आतमतत्त्व को आशुमुक्त
ह्वै जाय ८४ गुरुवाणी प्राणी सुनै करै तासु अनुसार ॥ धर्म स-
फल जगहेतु हित करै सब ब्रह्म विचार ८५ अपनी बुधिनिर्मलकरै
बैरागी मन होइ ॥ घरवन एकै रस रहै ज्ञानी कहिये सोइ ८६
जो कुकर्म को चाहमन तौ पर्यो जपयाग ॥ सिद्धि लहत नहिं को-
टि विधि बरणत नीति विभाग ८७ शास्त्र उपनिषद वेदलौं बर-
णत पूरण ज्ञान॥ सो मानत नहिं दंभिजन कल्पत आनपुरान ८८

दश ब्राह्मण के नाम हैं षट्क्षत्री के नाम ॥ द्विविधि वैश्य यक शूद्रहै एके पुनि परिणाम ८९ जिमि कंकण किंकिणि अपर नूपुर तनकयेनाम ॥ मिलत नाम अर्जुन भये समुझत बुध गुणग्राम ९० घाट एकही भूमिहै खान पानसो एक ॥ द्विविधा पितुमें कुछ नहीं कहपे वरण विवेक ९१ ब्रह्मा ते उपजे सकल ब्राह्मण वरणी सर्व ॥ करणी उत्तम अधम लघु वरणोत्तम कृतगर्व ९२ नीच आतमा उद्धरे ब्राह्मण पदमें जाय ॥ ब्राह्मण षट कर्मन रहित अमित नर्क भरमाय ९३ युद्ध नाम सुनि तन कँप्यो प्रजावृन्द डाखूप ॥ क्यों क्षत्री वासों कहत तिन मन नीच स्वरूप ९४ तजि स्वधर्म रत अपरमत जिमि पतिव्रत रत आन ॥ मंगल तू सर्वांग तजि करु जनि आन बखान ९५ सम्पूरण सर्वांगमत या में नहिं सन्देह ॥ श्री शुक व्यास वशिष्ठ भृगु मुनि सह गहे विदेह ९६ मान बडाई हेतु क्यों कर्म करत जगभूरि ॥ आयुष लौं लगी नहीं लजिदे दुखकी मूरि ९७ सातपांचके योगते निर्णय निपट जहान ॥ मूल गहै शाखा तजै सो साधू परमान ९८ मंगल मंगल चारि दिषि परमातम परसाद ॥ क्षणक ध्यानते कृपा निधि मेटत विविध विषाद ९९ मंगल मनहिं प्रबोधनहिं कोटि उपायन होइ ॥ बिनु बिराग मारग गहे करणी पूरणलोइ ॥ १०० ॥

इति श्रीमत्सकलअज्ञानहतयांसंगागसुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायांमंगलदासविरचितायांनिर्वाणज्ञानवर्णनोनामचतुर्थशतकः ॥ ४ ॥

दो० ॥ कर्म पात्र घटि बढ़ि नहीं कर्म प्रधान सदाहि ॥ शुभ कांजी उरध पसत अशुभ अधोगति जाहि १ लोभ विवश मित्रनि झखत करि प्रपंच बहु भांति ॥ अन्त समय पातक समहि अध गति बसि पुछिताति २ कामवश्य परतिय रमण वेश्यारतनर जोइ ॥ दण्ड पाइहैं भ्रमत पुर नरकनिबसिहैं सोइ ३ शाक बणिक पै रत्न जिमि जानत गुण नहिं तासु ॥ पारख कर परि रत्न ह्वइ निजगुण करत प्रकासु ४ तथा जीव मायाविवश जानत

सो न स्वतंत्र ॥ पारख अनुभव छुवतही प्रकट्यो पूरणमंत्र ५ बिनु खायेइन्द्री शिथिल यथा विदित बुधिवन्त ॥ तिमिज्ञानी सतसगबिनु पावत क्लेश अनन्त ६ कहाचहत निरगुण पदहि सरगुण जानत कोइ ॥ मंगल ज्ञानीमौनभल ज्ञानवदै भ्रमसोइ ७ पण्डितपाठ पुराणकिय मूरख मण्डलजाय ॥ कोहेतक चेतक भनै कहैं बडो बकवाय ८ कुजन मण्डली सुजन बसि पंथन पावतमीत ॥ दुखित रहत सो निकरगति यहै बात विपरीत९ चारिखानि भवभूतसव ब्रह्मश्रंथ निरमाण ॥ अज हरिहर तत्पद बदै असिपदसोबिनुमाण१०जावद्भ्रमउरमेंबसै मोहलालसासाथ॥तबलगि मोक्ष न जीव कहँ जन्मै मरै अनाथ११ जानोंचाहत ब्रह्मगति अजअनवद अनकाय ॥ चीन्हत नाहींआपुको कहाज्ञानकोभाय १२ वेद नेति भाषत सदा हरिहर सकत न जानि ॥ लघु धी नर ता खोजमेंसहत अनेक गलानि १३ बालभाव धारै सदा छल प्रपंच तजिदेइ ॥ लिप्त रहै आतम विषे अमी पदारथ लेइ १४ योग भोगमें कठिन पद पूरणताको तात ॥ लघु मति कटु गुण कर्म बिनु दुहूं ओर भ्रम खात १५ धृक वैपानस विषय रत धृक तपसी अविचार ॥ बिनु परमातम भजनबुध धृक नरकाय अगार १६ गर्भबासकी सुधिनहीं निज निबन्धगे भूलि ॥ अबको रक्षक होइगो का बिहसत मन फूलि १७ समन चारके दरश ते मल तजिहौ अकुलाय ॥ वैतरणी महँ बिबिध बिधि मन हिलोर तुखाय १८ सीरल सुधासम सुनतनहिं गुणत नसति उपदेश ॥ सुधि आवैगी मन तबहिं जब यम देहै क्लेश १९ मित्र पुत्र रक्तीभये जग अनित्यमहँआय ॥ ऊंचे मन्दिरकाय नर चढ़ि पुनि गिर झहराय२० जाकी बुधि प्रज्ञा गही विषय धरत नहिंताहि॥ ज्यों महीप के मीतको प्रजा न सकत सताहि २१ कोल भील काननवसत कवि गुण जानन योग ॥ विद्यमान ज्ञानीनको कथ अपनावत भोग२२ यथाअगरवनमहँजरत गंधिन जानतकोल ॥ तथा ज्ञान निरधाण मत मूरख मनको झोल २३ जे शैवी मति

धीर हैं शुद्ध चित्त विज्ञानि ॥ ते उत्तम भ्रमहीन जग इमि शिव लिंग बखानि २४ व्यासदेव सब वेदमत जानि सिखायो शुक॥ सिद्धान्तन मत तिन गह्यो मतिमहँ परी न चूक २५ जनकराज गृहवासि भे विदितविदेह जहान ॥ यज्ञ अमित अलि भूपकिय भो नहिं मनअनुमान २६ नारद घूमत तीनि पुर करतपिशुनता काज ॥ दोपनलागत ब्रह्मपद लीलाकृत सुखसाज २७ वामन तनहरि धरिछल्यो वलि नरपतिकोजाय ॥ दोप प्रपंचनकछुभयो रहे सदा यकभाय २८ परम सनेही रामके लक्ष्मण वन सँग कीन्ह ॥ काल पाय पद प्रीतिको तुरत शमतजिदीन्ह २९ कुष्ठी चपबिन कर बिना आनौ इन्द्री हीन ॥ आतम ध्यायो मोक्ष को पावै बदत प्रवीन ३० धायकिये व्रत आसुरी पूजे तिनके पीर॥ क्रोध सह्यो निज अंगअति व्यथा न मिटी शरीर ३१ जो न वेद पौराणमें काव्यबतावै नाहिं ॥ तहां वैष्णव शैव क्यों शाक्तब्रह्मविद जाहिं ३२ पूजिय वेष प्रताप सों धूर्त प्रपंचठलोग ॥ प्रकटे छल परिणाममें सब विधि होत अयोग ३३ तन धन अर्पै मित्रहित जीव लोभ तजिदेइ । सोप्रीतम संसारमें विपति सहायकरेइ ३४ जग नर प्रीति प्रतीति अरि प्रभु पद प्रीतिअलेख ॥ जोपुरवै नर नारिसो मेटै कलुप विशेख ३५ जन्मभयो सामान्य पद करणी कर्मद्वितीय ॥ सेवत पतिव्रत कंथभइ बिन सेवा कुधितीय ३६ करप कलुप कल्पित रहत ज्ञानी कर्मज माहिं ॥ बुधि बिनु नर रत विषय महँ पुनि पुनि आवहिं जाहिं ३७ कूकुर ज्यों भूकत वृथा दर्पण बिम्ब स्वहेरि ॥ त्यों मति बिनु विषयक मनुज दुख पावत चहुं फेरि ३८ सिंह निरखि प्रतिबिम्ब निज मस्यो कूप परिमूढ़ ॥ तथाजीवमाया विवश लखत न तत्त्वअगूढ़ ३९ काक अस्थि लै भगि चल्यो देखिपक्षि पछितात ॥ तैसेलखि हरि भक्त को विषयक नरपछितात ४० छर्दिरोग बशभोजनै वमन करत नर नारि ॥ श्वान स्वादसों भषतहै निजमन महासुखारि ४१ तिमि संसारी संतजन परिहरि हरिरस लीन ॥ मूरख भोगत

स्वाद सों पापमूल को लीन ४२ ब्यास धंग शुकदेव ज्यों दैत्य धंश प्रह्लाद ॥ पूजनीय पावन भये सुनुमन भजन प्रसाद ४३ क्षुद्रनदी पावससमय चली कु मगहितुराय ॥ तिमि मूरखलहि सम्पदा हितु अरि लखत सदाय ४४ कोहौं अरु आयो कहां अंत कहा विश्राम ॥ निज पद खोजै बुद्धि शुचि तासु विचारी नाम ४५ लघु दीरघ एकै लखै निज आतम में लीन ॥ ताहि कहत ससुभाव बुध करै न कर्म मलीन ४६ दान दया उर घास मत निग्रह इन्द्रिन युक्त ॥ दम साधनको सिद्धि मत को न होत जग मुक्त ४७ सो विकार व्यापै न उर जो त्रलोकदा लोक ॥ चीन्हैं पूरण ज्योतिकर विम्बजीव बिनुशोक ४८ प्रकल कलासो जगरच्यो महाकला अवतार ॥ निगम संत पण्डित बवत सो प्रभु महा अपार ४९ नारायण जन्म्यो जबै ब्रह्म वास्य ते तात ॥ चतुरानन तानाभि ते ताते सब जग जात ५० माया ब्रह्म अपार द्वै काया कर्म विहीन ॥ माया चीन्हे ब्रह्मको जानै मर्म प्रवीन ५१ मर्म बूझतहि जीव नशि ब्रह्म लीन ह्वै जाय ॥ को वरणै अद्वैतको भेद बुद्धि भ्रम खाय ५२ जाके जानतही मिटत जीव भाव भव भेद ॥ विन जाने भ्रमवश फिरै यह मत अगम अवेद ५३ यथा कठके अंतरहि निवसत सिखिनप्रकाश॥ संघट ते प्रकटत तुरत तिमि तन ब्रह्म विलाश ५४ इन्द्र जाल वश पंखते होत परेवा रूप ॥ यदपि असत्य न लखि सकत तथा जगत भ्रम कूप ५५ नट साचा झूठी कला समुझत भूमन नशात ॥ तिमि माया परमात्मा पै नहिं बुद्धि समात ५६ दीप प्रकाशित गहिगयो खोजत लोचनहीन ॥ तिमि अज्ञानी ब्रह्म को क्यों लखिपरै अक्षीन ५७ अपनी करणीते भयो चौर, बन्दि महताते ॥ दोष लगावति विधि लिखनि यह सुनि मन पछितात ५८ सातदिवस जाने किये सतस्वर्ग फलवान ॥ एक रहै मर्य्याद जग सब जगयहै प्रमान ५९ आखर विरचे गुणिन जेतिनमें शब्द प्रमान ॥ तासों भव सब जीव मन पावत मोक्ष

महान ६० ओंकार पद लौ चढ़ि अक्षर मारग लेइ ॥ आगम मरण नशाय पुनि जानै आपन भेइ ६१ भेद लखेबिनु आपनो लहै न ब्रह्मज्ञान ॥ ताबिन मोक्ष न जीवको भाषत वेद प्रमान ६२ वारम्बार न मनुज वपु पावत जीव सुजान ॥ अब कीचूके युगनि लगि भ्रमैयोनि सर्बान ६३ दुविधा दोष मिटाय के सत्य प्रीति करु तात ॥ मगल नेहप्रताप ते मित्र धाम लगि जात ६४ मित्र मिले आनन्द को तू प्रापति मनहोइ ॥ सम्यक मनकी कामना कहुप्रीतम सों सोइ ६५ कपट कतरनी कांखमें काटत प्रीति पटान ॥ अंत खुले मित्रत्वनश कहा मित्र सन्मान ६६ बहुयोजन पक्षीउडत संध्या आवत धाम ॥ त्यों सबदेही ब्रह्ममें लिप्त होत परिणाम ६७ बिन करणी धरणी भये मित्र द्वार त्रिनछद्म ॥ प्रीतिमानि आपन करत बासदेत निजसद्म६८ धर्म कर्मकी सिद्धि है श्रद्धाही के साथ ॥ श्रद्धा सात्विक बिन चतुर धर्म सैन बिन नाथ ६६ विद्यापढ़ि पंडितभये सब कोउ कृत सन्मान ॥ ईशभजन बिन सर्वथा दुखरूपी अज्ञान ७० पढ़ि दिंगल मंगलरचे छन्द कवित्त अनेक ॥ मनबश आव न विषय रत भूकतस्वान कितेक ७१ तूमंगलमन अंतरहि पूरणराखु प्रतीति ॥ बाहिरसों कछुकाज नहि यहै ज्ञानकीरीति ७२ न्हायेधोये वपुप के जावै होतयउ मुक्त ॥ तौ पाठीन स्वजन्म भरि जल मधि रहत प्रयुक्त ७३ जोमाला बांधेतरत जन्ममरण शरि कोइ ॥ वसत कीटतौ काष्ठनित परमहंसहै सोइ ७४ पूजेमूरति मुक्तिको पावतकोउ संसार ॥ तौबहुनरनगबासिनी करतअमित व्यवहार ७५ सत्यप्रीति बिनु मूढ़मन मुक्त न होवैजीव ॥ दंभ कपट भव कोटिकर भरमिहि द्विपुर सदीव ७६ अच्छत अक्षरो सुतनके जवलगि बिपन दिखात ॥ दूधपियावत परि हरत उपजत दुखकी बात ७७ जानिकरत दुकामको मानिन मानत ज्ञान ॥ मंगल तूसबोग ते पावैशुभ निजथान७८ निंदा औरनकी करत आपु अशुचि वपुधारि ॥ घिवि बोली भोजन उरग बिपय

ते बुधनर नारि ७९ जटा लटा तन पलित अति मौन साधना कौन ॥ को उपदेश न करि सकत शिष्य समाज प्रवीन ८० भीखकाज उरमाल शिर भूति जटारचि कोपि ॥ ठगत अबूझन बूझमति संतकहावत सोपि ८१ अहकार वशमिश्रसन भुजगहि छल रसकीन ॥ को ज्ञानी कर्त्ता करम यमचर त्यहि दुख दीन ८२ पापी सातों स्वर्ग वसि अधोगिरत बिन चूक ॥ पाप वासना उरवसी ज्यों चातककीकूक ८३ तजत न कपटी कपट को सतसंगतिहू पाय ॥ यथा नीम तरु मलयसँग कटुता नाहिंनशाय ८४ लोष्टसँग हाटक यथा खोयेनिजपदमोल ॥ नीचसंग त्यों सुजन परि ब्राह्मण मतलहकोल ८५ आतम आपु अदृश्यहै दृश्यमान प्रतिबिंब ॥ यह सुजानजाने लहत शुचिमारग न बिलंब ८६ लोकलोक मर्य्यादहै वेदवचनकी तात ॥मूरख सो मानत नहीं कहांमोक्ष दरशात ८७ कलिकठोर घाणीसुनै नीचनको कुलवान ॥ तिमिज्ञानी पापंडमत मन मनकृत अनुमान ८८ जिमिलोहेका ताउहै तिमिजीवन तूज्ञानु ॥ परिहरि आन भरोसभजु प्रभुस्वरूप विज्ञानु ८९ नभशिर हरिशशि चप उभम भुजहरिहर घनबीजु ॥ उरविधि उदर सुलोकयह देहविराट कहीजु९० विश्वरूप आपुनबन्यो विश्वभर पुनिआपु॥मंगल दूसर कौनहै जासुजपत तूजापु ९१ ज्ञानिनसोंही प्रश्नकियएक दोइकीतीनि ॥ कहामिलै पटएकरस दूसर परत न चीनि ९२ तवमंगलयों फिरिकहा नामभया रसकौन ॥ कहानाम सर्वांग को बरणै मूरखतौन ९३ याजगमें विनुनामके वस्तु न जानी जात ॥ यातेसबते अधिकम्वहिं नामप्रताप दिखात ९४ कमठ पीठि जामेंकवौं केश न भ्रममनहोइ ॥ मुक्तिपदारथ भजनबिनु पावै अचरज सोइ ९५ कोपसमय बुधिथिरनही रहत सत्ययह बात ॥ जैसेनिंदक वादते ब्राह्मण आपुपलात ९६ मतिदृढ़ आपनि कीजिये परमारथकोसेइ ॥ शुद्धमनीपी अंतमें शुभगति जीवहिदेइ ९७ अमितपाप कारक सदा मंगल मतचांडाल ॥

किमिलागै सतपंथमें विकल रहत त्रैकाल ९८ बीस विसेगति शुभलहै आतम ध्याविकोइ ॥ पूरणकला प्रकाशमय क्योंनलीन मनहोइ ९९ मगलवोर अपारत्वहि समुझायो मननीच ॥ तदपि न मान्यो दुष्टतू फिरिगा विषय नगीच १००॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायासर्वागमुबुद्धिकर्तायामगलविनोदकायां ॥ मगलदासविरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनाम पचमश्शतकः ५ ॥

दो० ॥ चारिओर अध ऊर्धलौ नामप्रकाश दिखात ॥ सोजाने बिनु मूढ़मन क्योंदुभाव नघात १ नामभेद जानतनहीं काम कल्पनाकोटि ॥ तिन प्राणिनकी जगतमे मेशउत्तमखोटि २ बिनु जाने हरिनामके कियेबिना गुणगान । सतमारग सूझत नहीं जीव भ्रमतहैथान ३ जबलगि नामप्रतापउर प्रकटत आइनतात॥ तबलगि मग विवरणकरब महाकठिन दुखगात ४, कालकराल सचेतको निजबश करत अचेत ॥ भवसागर मे जीवकहँ विविध हिलोरैं देत ५ जानत नाम न जासुको वपुनिरख्यो भरिनैन ॥ जगतसांझ फिरिआनसों बरणत चतुरबनैन ६ नासअधारीकपट गत ममता रहित सधर्म ॥ विचरत या संसारमें वधतन कर्मा-कर्म ७ जपोनाम अजपा सदृढ़ ध्रुवलह अतुलस्थान ॥ श्रीप्रह्लाद सुनामबल कियोविष्णु सन्मान ८ टेकनत्यागे ब्रह्मव्रत नाम जपै चितलाय ॥ पूरणप्रीति प्रतीतिसों हरिपुरसो चलिजाय ९ जहांगये बहुरैनहीं पुण्यक्षीण नहिहोइ ॥ शुभकारी सर्वागमति पावतहै पुरसोइ १० रामनामको बलबडो विदितवेद विज्ञान॥ ज्ञानदीप उरज्वलितकरि कीजिय ताकोध्यान ११ रामनाम प्रहलादध्रुव जप्योसधीर सज्ञान॥ भक्तशिरोमणि होतभे क्यों गुणकरिय वखान १२ महाबली गुणवानकवि सतमारगकेदास॥ योगक्रियाकरि नामको सबदिन उरदियवास १३ वाल्मीकि गति नामकी जानी ज्ञानप्रयुक्त ॥ तीनिकाल दर्पणभये आगम कीन्होउक्त १४ रामकाम तरुवारिदिमि रमण सकल तनकीन्ह॥

पाप पुण्यकै तुल्यही सबजीवन फलदीन्ह १५ रमत कीटते ईशलगि रामपरम शुचिवस्त॥ भाववश्य सवठामहै देतमुक्ति जनहस्त १६ रामनामविन कोटिबिधि बुधनगहे विज्ञान॥ बि-दितज्ञानबिनमोक्षपद मिलत न कोटिउड़ान १७ रामकर्मकी दाम है रामसुध्यान समाधि॥ निश्चयबश मुक्तिहिगहै बुधदे-खैआराधि १८ नाममात्र जे तीनिपुर लखिवपु जानेजात॥ जानत कौन अनामको यद्यपिहृदय समात १९ अलख कहाजो लख नहीं अमल कहा मल राखि॥ सुमति कहा विन कुमतियों देत चतुर कवि साखि २० रूप कौन अनरूपको जो नहिं जानन हार॥ अकल विचारित कला सों जिनके विमल विचार २१ राम नाम उर धारिये मगल सरलस्वभाय॥ द्विविधादोष बिहायनित परम तत्त्व ले ध्याय २२ जासुनाम अज हर रटत योगसमाधि लगाय॥ ताहि ध्याउ तजि दुष्टमति अंत मोक्ष ह्वैजाय २३ काल कलाविनु लखि परत नारायणकोभाव॥ कुत्सित दृष्टि नदीसही धरत अपथ शुचि ठाव २४ ऊपर रटना नामकी अतर समता सोह॥ विचरै निज इच्छा सरस नाहिंन व्यापत मोह २५ आन नीच अरु ऊचकी निन्दा तजै सुजान॥ जब नींदै तवआपकोसो नर ज्ञान निधान २६ आपनि करणी शुद्धनहि कहादैवको दोष॥ खीझत भाँति अनेक नर क्यों पावै संतोष २७ कोउ कहत सुर पुर सुलभ कोउकहत सुरधाम॥ मंगलमत लिरबुद्धिकेनरकसुल-भ परिणाम २८ देव यजे भक्तिहि करै व्रत तीरथ करिजाय॥ स्वर्ग लोकको बुधमरत नरक विनाश्रम भाय २९ इड ज्ञानि भोगी तजततरकपथकी बाट॥ करतक्रिया सोहेतु ज्यहि बिल-सै सुरपुर हाट३० सन्यासी स्वर्गहि डरत पुनर्जन्म अनुमानि॥ आतमध्यावत कर्मबिनु फलआशाकृतजानि ३१ जासु पुण्यपूरण उदय भव में परत लखाय॥ जीवत ताको स्वर्गफल मगल मंत दरशाय ३२ पापी जनकोजीवतहि नरकजगत मृहँ होइ॥ ज्ञान वान तू देखिले पुनि लखिके तजु सोइ ३३ एक दोउ पुरकी

क्रिया निजकर लेत सम्हारि ॥ जीवत भोगत विविध सुख जात अंत पुर चारि ३४ एक इहां अति दुखलहत तपसाकर मनमाहिं ॥ लीन होत पद आपने दुखसुख व्यापतनाहिं ३५ एक प्रथम संचित विवश भव भोगत कृतपाप ॥ अंत नरक वासे लहत अति कलेश संताप ३६ एकन सचित कर्मकरि भोग लहत यहि लोक ॥ अरुन सत्य मारग चलत अंतनरकलहि शोक ३७ चारि भांति नरनारि जग मंगलमनको ख्याल ॥ आन मरत अहिके डसे मोरहि बधतन व्याल ३८जो परिणाम नफल मिलत करणी सम हरिद्वार ॥ तौयोगी भोगी अधम क्यों जगकरैविचार३९ बिषय पाय तन हठि तजै अमीपान मृतुहानि ॥ ऐसे कर्माकर्म को फल लीजै अनुमानि ४० कनक रूप हरि भजनहै चूकेउ घटि नबिकाय ॥ पाप कांच फूटे चतुर कोउ गाहक ठहराय ४१ क्यों सांचेको त्यागि मन मग असत्यमें जाय ॥ आपनपौ पहिंचान किन आपामध्य समाय ४२ निर्गुण सगुण सुलभहौ दंभिनके मुखमाहि ॥ मंगलके मत कठिनअति दोनोंपंथ सदाहि४३ प्रथमै साधै जगतमत पुनि करिसवीचार ॥ सगुणरूप ध्यावैप्रभुहि नानाग्रंथ बिचार ४४ श्रीराधा पति चरणरति गीताग्रंथ विचारि ॥ गहै बाट बिज्ञानकी भवभ्रम देइ निवारि ४५ पुनि बिवेक शम दमकरै योगअंग हठरूप ॥ सिद्धियोग पुनिसाधिकै पावैवस्तु अनूप ४६ शनै शनै मारगचलै पहुचै मित्रस्थान ॥ कूदे एकहि बारमें क्यों करिजाय सुजान ४७ शनै रचत कंथा शनै पंथ तरवजऊपार ॥ शनैचित्त बिद्यालहत त्यों बिज्ञानविचार ४८ जे भूले हठपंथमें तेनलहैंगे मोष ॥ त्यागिभूल सत्यहिगहैं तो पावैं संतोष ४९ सतसंगति पारसमनुजहै कुधातलहि संग ॥ रूप लहत गगिथवत अंत मोष गतिभंग ५० पारस सतसंगति भई हरिगुण खानिप्रताप ॥ ताते सेइय खानिज्यहि पारसहोइअताप ५१ वैद्य बुलावत रोगहर करणीफल बिसराय ॥ बिनुभोगे निजकर्मफल मंगल रोगनजाय ५२ मिथ्या साखीदेतहैं परतिय

रमत नप्रेम॥ आनकार्न निंदककरत ते नर घनें सनेम। ५३ वेश्यागामी जीवहा सखाद्रोह छल कारि ॥ अपकाजीते भक्त भय गलमाला है चारि ५४ काहिज्ञान मंगलकहत कोअज्ञान प्रमाण॥ ज्ञानबभूलेंव है कहत नाचारय निर्वाण ५५ नदीपंथमहँ देखिकै भूपरचायो सेत॥ त्यों ज्ञानीपथ धर्ममें अपेलेतबचहेत ५६ चलाजाय लघुअधुल फ्रेउ तामारग भ्रम हेन ॥ पहुचै इच्छा धाम मधि अवधरिगें कि सकेन ५७ बिपति देखि अकुलायनहि सपतिमें नभुलाय ॥ कर्म बश्यजानै लखै आतमरहै समाय ५८ जीव वृत्तिदाता अहै निठुर फ्रेकलहार ॥ क्यों मगल मनतूभ्रमत देइ तोहि सुविचार ५९ नृपति प्रजाकिय आपुही सबमें रह्यो सुपूरि ॥ क्यों डरमानत आनको अजुकिन जीवनमूरि ६० सब के शिरपर आपुही सदाबिराजत आहि ॥ सो तेरी प्रतिपालना करिहि भजलि किन ताहि ६१ बीतिगई तासों कहा आवन सो का काम ॥ जोहै सोई धन्यहै अजुहरितजि सब्राम ६२ बालअवस्था मोह मय खेलतगई सिराय ॥ कामकला कामिनि विवश ईश्वर भज्योनभाय ६३ जरठभये तृष्णाबढ़ी दृष्टिंधकी बलथोर॥ गावतनहिं प्रस्तातमै कहत अखिल जग मोर ६४ बाणी बुद्धि नहिं सकतहैं पहिचानतनमखान ॥ तदपि न आवतब्रह्मको आइ कालनियरान ६५ किये जन्मभर पापही धर्मरहित सबभांति॥ यमन चार हनि मुदगरन जीवहि बाँधेजाति ६६ कीवाँधायहु पासमें साजायो कोभूल॥ जानिबूझि मगल अतुर गहत भूल तरुमूल ६७ इच्छाचारी जीवको यमचर कर्मप्रताप ॥ बुढ देत हैं अंतमें बहु अनरल संताप ६८ या जगमें दुखहै अधो चिंताको मन भीत ॥ जाकेनर दुविधा रहत सोतन विपति अतीत ६९ ताकी माया गति लखी यहिकिमि जानै कोइ ॥ आपन गति जानतनहीं क्यों सुखपूरण होइ ७० खोजत जगकी बस्तु को जन्म सिरानो सर्व ॥ भज्यो न श्रीभगवानको अंतजीवकोपर्व ७१ जाकी बुधिनिर्मलसदा ताकी मुक्तिसदाहिं ॥ साधाबंध काशी

रहत भ्रम परित्यागत नाहिं ७२ अंधकारमें अंधको एक दशाह काल ॥ दृष्टाको भ्रम अंध सम तिमि मूरख गुणपाल ७३ सात स्वर्ग सुखकोलहे क्षण संतसंगप्रसाद ॥ यथा त्रिवेणी न्हाइनरमेटत पापबिषाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै निज प्रीतम को नाम ॥ सिंधुगंग जलसों बिबुध तासुनहीकछुकाम ७५ पापदृष्टि सों देखिहै क्योंतू पूरणरूप ॥ पापपुण्यको भावनहिं सोप्रभु अकल अनूप ७६ पुण्य पापतनके लखत अंतर बाहरसोइ ॥ कोटि छिपावे कपटकरि आपुबिदित जगहोइ ७७ जोकरणी गीकरैनी पावै सुरधाम ॥ मंगल जगकरणी बँधो आदिमध्य परिणाम ७८ कर्मवान क्यों भूलिहै निजकरणीको काज ॥ ज्ञानवानज्यों ज्ञान को खोजत तीनि समाज ७९ मातपितात्रिय बंधुसुत स्वारथरत कथ जानु ॥ बिनुस्वारथ परमातमा तासु भजनमनआनु ८० बितालेप भुषगनी नरतनबिलमेबास ॥ अमृत बिवर्द्धकचारि बिधि क्यों लखुब्रह्म प्रकास ८१ शांतिबिना श्रद्धानहीं बिनश्रद्धा नहिं मुक्ति ॥ शुभकारी आतम क्रिया यहै ज्ञानकी युक्ति ८२ समुझायो समुझैनहीं कामी रक्तितवाम ॥ ज्ञानिगली बिचरत न खलै क्यों आनँद परिणाम ८३ सांचेजोया जगतमें ते प्रबीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निशिदिन त्यहि आसक्त ८४ भक्ति बिना विज्ञानकी भक्तिसिद्धि नहिंतात ॥ भक्तिबिना आतम सुखहि निरखतनहिं बिख्यात ८५ कूकुरकी ज्योंदशाहे त्रियप्रसंगत काल ॥ सोइदशा यहिजीवकी सँग आशा चांडाल ८६ ज्ञान कतरनी मोहपट काटत बिबिधप्रकार ॥ आतम शोधत तीनि बिधि तजि दुबिधा व्यवहार ८७ यथा अम्ब कि बिटपहैं तिमि हरिजन संसार ॥ फले पराये हेतहैं सबकेसहत प्रहार ८८ जानि बतावे भेदनहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिषा पाप द्वै सेवैपद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहि क्यों तू भाखु ॥ तजि हलुकाई जीवकी गुरुतासों हितुराखु ९० वाको मायाको करै जाकेपुण्य न पाप ॥ स्वर्गनरकचाहतनहीं शुद्धचित्तगत

तापद९१ जावन्मोह बिलास कृत तावद्रोग कि चाह ॥ याहित्याग्रि फिरि जीवयह प्रकरत आपनि राह ९२ प्रणगहित जैनकोटिकृत को कुलीन शुचिसन्त॥ ज्यों चकोर पावकभषत कौनस्वाद बुधिवंत ९३ ज्ञानत अर्जुनको दियो श्रीयदुनाथ दयाल ॥ ताहिनिबाहे जगत कउ मोक्ष लहै यथकाल ९४ बालक तोतरबातको बूझत चतुर समाज ॥ त्योंमगलकी वारता साधनके शुभसाज ९५ जाबिन रहत न क्षणकयक तासुग दोपनलेत ॥ यथामीन जलको चतुर तजि फिरि प्राणहिदेत ९६ जोप्राणी लहसुन भषत आवत गन्धि न ताहि ॥ त्योंअपकारी अप्रयशी मगल कहालखाहि ९७ वाकी ससताकोकरै जो नहिमानतवेद ॥ बुद्धि आसुरी यवनज्यों क्यों जाने हरिभेद ९८ घीजवोइयो आलिको उपजत भो गोधूम ॥ याहि विचारत बुद्धिकिमि अचरज भूलनहूम ९९ मगलहरिके नामबल सोवततोंद अघाय॥ स्वर्गनरक हरिजोचहैं करैको अब पछिताय १०० ॥

इति श्रीमत्सकलअज्ञानहत यासर्व गमबुद्धिकृत यांमगलविनोदकाव्य मगलदत्तविरचितायज्ञानोपदेशनिर्वाणपटवर्णनोनाम सप्तमप्रशतकः ६॥

दो० ॥ सीठीवाणी मित्रकी दुखदायक सबभांति ॥ जिमि सीठा विषकालकर ज्ञाननैन दरशाति १ मित्रहेतु श्रीरामजी वालिबध्यो निःपाप ॥ मंगल तू निज मित्रहित क्स न हरत सन्ताप २ परमप्रीतिकी भावना व्यापत मित्रहिपाहि ॥ ज्ञानत पूरणधर्मसो श्रुतिवत कर्म कमाहि ३ बियाजाकी सत्यहै सोवैरी भलहोइ ॥ मूरख मीत कलेशकर ज्ञानमान लखुगोइ ४ भक्ति बिनाधन हुष्टबहु कामादिक निजसंग ॥ ज्योंजल क्षीरहिमिल कउ करति भिन्न हितुभग ५ जोनहिं जानत सत्यपद मोहमानमें लीन ॥ चीन्हत नहिं थिरतज निज यद्यपि जगत प्रवीन ६ कोटि चतुरता जगतकी भजन बिना निःकाम ॥ जिमिबिनु अन्नअनेक धनक्षुधा सकत नहिं थाम ७ रूपमारते विपुलविधि सुन्दरआभर

रहत भ्रम परित्यागत नाहि ७२ अंधकारमें अंधको एक दशहि काल ॥ दृष्टाको भ्रम अध सम तिमि मूरख गुणपाल ७३ रात स्वर्ग सुखकोलहे क्षण संतसंगप्रसाद ॥ यथा त्रिवेणी न्हाइनरमेटत पापविषाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै निज प्रीतम को नाम ॥ सिंधुगंग जलसो बिबुध तासुनही कछुकाम ७५ पापदृष्टि सों देखिहै क्योंतू पूरणरूप ॥ पापपुण्यको भावनहिं सोप्रभु अकल अनूप ७६ पुण्य पापसबके लखत अंतर बाहरसोइ ॥ कोटि छिपावे कपटकरि आपुबिदित जगहोइ ७७ जोकरणी गीकरैसो पावे सुरधाम ॥ मंगल जगकरणी बँध्यो आदिमध्य परिणाम ७८ कर्मवान ज्यों भूलिहै निजकरणीको काज ॥ ज्ञानवानज्यों ज्ञानको खोजत तीनि समाज ७९ मातपिताप्रिय बंधुसुत स्वारथरत कब जानु ॥ बिनुस्वारथ परमातमा तासु भजनमनआनु ८० चिंतारूप भुयंगली नरतनबिलमेंबास ॥ अमृतबिवर्द्धकचारि बिधि क्यों लखुब्रह्म प्रकास ८१ भ्रांतिबिना श्रद्धानहीं बिनश्रद्धा नहिं मुक्ति ॥ शुभकारी आतम क्रिया यहै ज्ञानको युक्ति ८२ समुझायो समुझैनहीं कामी रक्तिवाम ॥ ज्ञानशली बिचरत न खल क्यों आनँद परिणाम ८३ सांचेजोया जगतमें ते प्रबीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निशिदिन त्यहि आसक्त ८४ शक्ति बिना बिज्ञानको भक्तिसिद्धि नहितात ॥ भक्तिबिना आतम सुखहि निरखतनहि बिख्यात ८५ कूकुरकी ज्योंदशाहै त्रियप्रसंगत काल ॥ सोइदशा यहिजीवकी संग आयो चांडाल ८६ ज्ञानि कतरनी मोहपट काटत बिबिधप्रकार ॥ आतम शोधत तीनि बिधि तजि दुबिधा व्यवहार ८७ यथा आम्र के बिटपहैं तिमि हरिजन संसार ॥ फलेपरारे हेतहैं सबकेसहत प्रहार ८८ जानि बतावै भेदनहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिषा शाप ह्वो सेवैपद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहिं क्यों तू भाखु ॥ तजि हलुकाई जीवकी गुरुतासोंहितुराखु ९० वाको मायाका करै जाकेपुण्य न पाप॥स्वर्गनरकचाहतनहींशुद्धचित्तगत

ताप८१ जावमोह विलास कृत तावद्रोग कि चाह ॥ साहित्यमि फिरिजीवयह प्रकरत आपनि राह८२ प्रणगहितजैनकोटिकृत को कुलीन शुचिसन्त॥जो चकोरपावकभखत कौनस्वाद बुधिवत८३ जेमत अर्जुनकोटियो श्रीयदुनाथ दयाल ॥ ताहिनिवाहे जगत कउ मोक्षलहे षटकाल ८४ बालक तोतरबातको बूझत चतुर समाज॥ त्योंमंगलकी वारता साधनके शुभसाज ८५ जाबिन रहत न क्षणकयक तागुण दोषनलेत॥ यथामीन जलको चतुर तजि फिरिप्राणहिदेत ८६ जोप्राणी लहसुन भखत आवत गन्धि न ताहि ॥ त्योंअपकारी अपयशी मंगल कहालखाहि ८७ वाकी ससतकोकरै जो नहिमानतवेद॥ बुद्धि आसुरी यवनज्यों क्यों जाने हरिभेद ८८ बीजबोइयो शालिको उपजत भो गोधूम॥ साहि निवारत बुद्धिकिमि अचरज भूलनझूम ८९ मंगलहरिके जामबढ़ सोवततोद अघाय॥ स्वर्गनरक हरिजोचहैं करैको अब पछिताय १९०॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहृतयासर्व,गमुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपटवर्णनोनाम, पञ्चमश्शतकः ६ ॥

दो० ॥ मीठीवाणी,शत्रुकी दुखदायक सबभांति ॥ जिमि मीठा विषकालकर ज्ञाननैन दरशाति १ मित्रहेतु श्रीरामजी बालिवध्यो निःपाप॥ मंगल तू निज मित्रहित कस न हरत सन्ताप २ परमप्रीतिकी भावना व्यापतमित्रहिपाहि ॥ ज्ञानत पूरणमर्मसो श्रुतिवतकर्म कमाहि ३ विद्याजाकी सत्यहै सोवैरी भलहोइ ॥ मूरुख मीत,कलेशकर ज्ञानमान लखुमोइ ४ भक्ति बिनाधन दुष्टमहु कामादिक निजसंग॥ ज्योंजल क्षीरहिमिल कउ करति भिन्न हितुभंग ५ जोनहिं जानत सत्यपद मोहमानमें लीन॥चीन्हत नहि गिरताजनिज यद्यपिजगत प्रवीन ६ कोटि चतुरता जगतकी,भजनबिना निःकाम॥ जिमिबिनु यन्त्र अनेक धनक्षुधा सकत नहिथाम७ रूपमारते विपुलविधि सुन्दरआनन

चन्द ॥ भजन बिना टेसू यथा बिन सुगन्धि द्युतिमन्द ८ अमर पदारथ कौनभय समर कहा यहिलोक ॥ भजनभाव शुभ अशुभ ही दायक सुख अरु शोक ६ ज्ञाता को दाता कहा को विद्याधर तात॥ निजु जाने दाया हृदय ईश गुणन की बात १० ठगन ठगत जाने नरहि भ्रम सानत पहिचानि॥ तिमिमीया हरिदास की मंगल मन अनुमानि ११ करणहीन बैनन सुनत नयनहीन नहि दीख॥ योंमंगल अज्ञान तू गहत न मेरी सीख १२ कामी कामी याम चहु धामी सामी नाहिं॥ हियअनुरागन मुक्तिको मंगल सन्तन सदाहिं १३ ज्यों निज गृहको नेहहै त्यों हरिपद किन लाउ॥ मंगल भव पद प्रीतिबश अन्तमुक्ति पद पाउ १४ होनहार सो होहिगी मिटै न कोटि उपाय॥ मंगल मन क्यों शोचकृत भजु आतम चितलाय १५ ज्योंकरीप पटमें धरे बचन कलङ्क बिहीन॥ त्योंकुसंग में नीचमति होत कहत परबीन १६ वारवार सिखवंत अहीं मन त्वहिं उत्तमज्ञान ॥ तू न तजत प्रारब्धवश यद्यपि महासुजान १७ लोभ पास उरमें करत अपकीरति चहुंपास॥ मंगल देख्यो नयन यह तदपि न तज बिनयास १८ ज्ञाननयन देखे मनुज चारिओर प्रभु रूप ॥ अज्ञानी मंगल सरस परे विषय के कूप १९ सातस्वर्ग अपवर्ग को सुख न मोक्ष सम आहिं ॥ मनुज ब्रह्मविद सो लहत यामें हैं संशय नाहिं २० यातनमें अति घोर हैं पापिन को मनमूढ़॥ चुपकी चत किन तिनहिं तू देुनन ज्ञाम अगूढ़ २१ अघुमित्र हो अंगमें मंगल करत बिलास॥ जानि हितू सतसंग करु करहि न अहित प्रकास २२ बैरीके सतसंगमें कोपावत सुख देखु॥ तातें मंगल धारि न दिशि नेक दृष्टिजनि लेखु २३ पावत तावत सातहै सातधाम के बासि॥ ज्ञानवंत जानत अहैं तू दुबिधा बनासि २४ कालग्रासमें जगत्यों आवत जात अथोर॥ काहिज्ञान मंगल धरत सब संसार सपोर २५ ज्ञान सुनै चितलायके यान न्यायुक्त कोइ॥ बिनु भ्रम मंगल अन्त में पावत मुक्तिहि सोइ २६ त्रियमैल नरमल मिलिजन्यो माया कृत भेदेह ॥ ब्रह्मअंश करयो विषय निवसत भोग न सदेह २७

जठरानलकी ज्वालसों विकल होत जब प्राण ॥ गर्भसूत्र मलगधि सों तब व्यथित भगवान २७ जोपैतिया श्रद्दते आपुरक्षनेग-दीश ॥ जन्मपाय तुर्य भजनतजि करौंनकछु विसवीश २८ हरि रक्षा सेवाधिकरी सुनि निबंध लतिभाय ॥ जन्मकाल लगि मोमहर जन्मतदयो भुलाय ३० उपजत अटके पेटमें दुविधा मोह प्रताप ॥ कीटादिक कबहू डसत तबबहु करत विलाप ३१ बालदशामेंइ खेलसँग आई तन तरुणाय ॥ काम कलामद घेर वस्योनहिं हरिभजन सहाय ३२ आभूषण पट चाहिये भोगहेत भलनारि ॥ निजकर मंगल अधमनर देवत धर्महिं टारि ३३ जरा व्यवस्थामें भयो मोहवास उरआइ ॥ जावश नारायण भजन मंगलवृथा नशाइ ३४ कोटिभाँति गुरुशिष्यहैं ज्ञानिन कहा बुझाय ॥ तदपिन त्यागी दुष्टता गई आयु निगराय ३५ शमन चारकर पाथले आयेताकेपास ॥ देखिभयानकवेपकोमल तजिजीव सत्रास ३६ मारिमुद्गरन बाँधिपन दक्षिणचले घसी-टि ॥ व्याकुल कीन्हे विविधविधि लोह मोंगरन पीटि ३७ लै डास्यो कुम्भी नरक भयो पीवत नीर ॥ कीटकाग अधऊर्ध्व में गहत लहत बडिपीर ३८ शूकर कूकुर योनिमें नरकभोग अव-तार ॥ जानिन ध्यावत आतमा होय जन्म निरधार ३९ ब्रह्मचारजो नरकसे तजिदुविधाको खेल ॥ सोप्राणी उत्तम महा करत मुक्ति पदमेल ४० जो गृहस्थ हरिभजन में निरत रहे दिनराति ॥ दया धर्म युत हरिभजे आशु मुक्तिह्वै जाति ४१ वानप्रस्थ करैव कठिन साधिजो पावै कोइ ॥ नारायणकी कृपाते पावै मुक्तिहि सोइ ४२ संन्यासीको मति सुगति जीवन मुक्तिसदाहि ॥ को मानैता जीवको जन्म मरणहै नाहिं ४३ चारों आश्रम सूचित अतिसाधै कोउसाध ॥ पावैमोक्ष प्रकास बिनु शुद्धचित्त बनवाध ४४ या भवमें भयजालहै भागुमीत तू बेगि ॥ मातरु पावै दंड अति और अदल्य अनेगि ४५ पापाग्नी भाजन यथा टूटत मृत्ति-का तूल ॥ बुद्धि आसुरी में चतुर तैसे परत समूल ४६ बालकलों

हीखाय ८४ भैपै गर्व बियाधि रस। ब्रह्मालीभ ज्ञी मुः॥ धर्मकर्म खोवतसकल देतनरकमेंबासु ८५ निरत दिवस निधिविषयहित हरिहित घरीनपक्ष॥ कर्योंसुख मंगलपाइहैं गहेविषयकीदेक ८६ बालदशामें शुद्धिकरि मनहि भजनमेंलाउ॥ निबहे तीनोंकाल के पद निर्वाणहिं पाउ ८७ जेभूले निजआतमा औरधर्मकोभाव॥ तेनहि जन्मसहस्रलगि मुक्तहोत नृप राव ८८ आत्मातम विद्या गुणै साधारणसत साधि॥ जगमें केरोहुविधि है ताहि न भ्रमकी व्याधि ८९ मंगलअनतन कर्मशुभ तृष्णाके बशकोय॥ समुझावै गुरु कोटि बिधि तदपिन मानैसोय ९० पीछेदिन खोयेधसे आगे द्वैहै खोय॥ मंगलमनकी आलिकरि मनमें द्रौनहोरोय ९१ कोटि भांतिषिक्षादई मनप्राणीको सांचु॥ तदपि दुष्ट भ्रम लालसा नाचत विषयीनाचु ९२ ज्योंनहिं भेदत कंजदल कोनोविधिकीला-ख॥ त्यों विषमेरी दुष्टमन तूंनगहीः किहुंकाल ९३ अवते मेरी कहीसुनि तजि बिषयनकोपाय॥ गाउ सुकीरति श्यामकी धरि सुंदरपाद ९४ जासुनामके भेवते नर तरिजात अभेद॥ मंगल मन निजथानधरु तजिदे सवजगखेद ९५ सतमारग सतसंग करु आतमको अपनाय॥ क्यों सोवत मनमूढ तू आयुभुक्ति जाय ९६ मंगलमन नहिंसानिहै बिनुबांधेरजज्ञान॥ सहजप्रेम प्रमाणिका सोकिनकरे सुजान ९७ दशद्वारेजो अरुद है तिनहिं बंदुकरिदेह॥ मनमारग प्रावैनहीं तब सतकरै सनेह ९८ इडा पिंगला सुषमना याभरीम कुतवारु॥ सब हित्यागि करु प्रीतिदृढ़ तिनसों ज्ञान बिचार ९९ मोक्ष दुवारो जीव को सुषमन उदय प्रधान॥ मंगलके मतपावमाहि भजिले श्रीभगवान १००॥

इति श्रीमत्सकलआनन्दकर्तायां सर्वागसुबुद्धिकर्तायां मंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायां ज्ञानोपदेशनिर्णयापदवर्णनोनाम सप्तमप्रकाशः॥ ७॥

दो०॥ गगन अनिलजल अनलमहि पंचतत्वकृतलोक॥ तो व्यापतयह श्वासमहँ जानतहोय बिशोक १ जानेते दृढ़ता लहत सुनेबोधन हिज्ञान॥ भोजनबिन खायेमिटत क्षुधा नकोटिसयान २

श्रोताको सबख्यालहै तीनिलोक तिहुकाल ॥ ताहिलखै बुध दृष्टिसो लहैमोक्ष नरबाल ३ गुरुकर्ता सतसगते मोक्षलहत बिन भेद ॥ यथाआप उष्णतावश तनते चलतप्रसेद ४ कर्मकिये ते कामनाकोनकरै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोलहै परिपूरण कल्यान ५ आसन अमित कहेअहैं अकरमारगयोग ॥ पद्मसिद्धि उत्तमदुवो करत शरीरनिरोग ६ प्रणवमंत्रको जानिकर प्राणायाम सदाहि ॥ आयुबढ़ै अघगणनशै अंतबसै पदमाहि ७ आधारावै मोक्षको विषय बासनात्यागि ॥ सुखमनमारग हरिभजै रहैमोक्ष तटलागि ८ आवनतनु नभक्योछुवै अंधलखै सुखरूप ॥ दूनोंआतम ध्यानबश यह सिद्धांत अनूप ९ पगुचढ़यो आकाशलौं अति अचरजकीबात ॥ जानेते कछुभूमनहीं मूरख मनपछितात १० बातनसे मुनिसमबने दभगलित मतजान ॥ तेपाखण्डीकोनविधि पावैगे कल्यान ११ दीनबसन बिनशिशिरमें ज्योंनिरखत दिन नाथ ॥ त्योंआशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोयँ सनाथ १२ तृषावन्त जस विकलमन खोजतकूप तड़ाग ॥ त्योंमंगल खोजहि हरिहि उदयहोय तबभाग १३ समरभूमि जिमिनृपतिमन निजजयकी अभिलाष ॥ तैसेमंगल मनवसै हरिपद प्रीतिअमाप १४ वोहित बूडतजीवज्यों भवावर्त बिनजान ॥ मंगल अवतौ कठिन अति राखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत अमित भखनकृपणतावश्य ॥ कोलछीनि लियदुखभयो तसधन लोभियवश्य १६ यह सम्पति तुवसंगनहिं जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ अंतसंगिनी होति नहि कतदुख करत अगूढ़ १७ परवश धन्दी भवननर अर्थारहत सकलेश ॥ तिमिइंद्री वशजीवयह भरमत देशबिदेश १८ ज्यों कुलाल भाजनरचै ऊँच न नीच बिचारि ॥ संगतिवश शुभअशुभ भोतयाजीवनिरधारि १९ साधुसंग साधैमनहिं नीचसंगभूमखाय ॥ शुभकारी कोउजन्मनहि संगति मूलवताय २० संगपाय चेततनहीं ऐसयउमहा अचेत ॥ अहिमलयज बालीकहा अमृत बुद्धितजिदेत २१ सरितासर बापीकहीं कूपादिक जलधारि ॥ कास

हीखाक ,८४ बैरी गर्व विद्यायल ,उरन्नासीश्रा जीमुत। धर्मका खोवतमन कलि देतनरकमेंवासु ८५ निरतद्विजन निबिविपयहित हरिहित पुदीनफके॥ कयोंसुख मंगलपाइहैं गहेक्रियकोदेक ८६ बालदशामें शुद्धिकरि मनहि अञ्जनमेंलाइ ॥ निबहे तीनोंकाल के पदनिर्वाणहिंपाउ ८७ जेभूले निजआतमा,औरधर्मकोभाव॥ तेनहि जन्मसहस्रलगि सुखहोते नु विभाव ८८ अभ्यातम विद्या गुणे साधारयासत सामि ॥ जगमें कैलेहु विधिरहै तामि न भ्रमकी व्याधि ८९ मंगलधनतन कर्मशुभ तृष्णाके वशकोय ॥ समुझावे गुरु कोटिविधि तदपिन मानैसोय ९० पीछेद्विज खोयेघके आगे देहैखोय ॥ मंगलमनकी मालिखिय मनसें दीन्होसोय ९१ कोटि भंतिविक्षादई मनप्रानीको सांचु॥ तदपि दुष्ट नम लालसा नाचत विषयीनाचु ९२ ज्योंनहिं भेदत कजदल कौनोविधिकीलाल॥ त्यों बिषमेरी दुष्टमन तूनगही किहुंकाल ९३ अबतेमेरी कहीसुनि तजि विप्रमनकोवाद॥ गाउ सुकीरति श्यामकीउरधरि सुंदरपाद ९४ जासु नामके भेदते नर तरिजात अभेद॥ मंगल मन निजध्यानधरु तजिदे सबजगखेद ९५ संतमारग संतसंग करु आतमको अपनाय ॥ कयोंखोवत मनमूढतू आयुसुकहि जाय ९६ मंगलमन नहिंसानिहै बिनुबाधेरजज्ञान॥ सहज पदेश प्रमाणिका लोकिनकरै सुजान ९७ दुपद्वारेजो प्रकट हैं तिनहिं बंदकरिदेह ॥ मनमारग पावैनहीं तब संतकरै सनेह ९८ इडा पिंगला सुषमना मायरीश कुतवार ॥ सबहित्यागि करु प्रीति दृढ़ तिनसों ज्ञानविचार ९९ मोक्ष दुवारो जीव को सुषमन उदयप्रधानु ॥ मंगलके मतपालसहिभजिलेश्रीभगवान १००॥

इतिश्रीमःसकलअज्ञानहर्तायां सर्वागसुबुद्धिकर्तायां मंगलविनोदकायां मंगल दासविरचितायां ज्ञानोपदेशनिर्बाणपदवर्णनोनामप्रथमःशतकः १॥

दो० ॥ गगन अनिल जल अनलमहि पंचतत्त्वकृतलोक ॥ सो व्यापतयह श्वासमहँ जानतहोय बिशोक १ जानेते दृढता लहत सुनेबोधत हिंजानं॥ भोजनबिन खायेमिटत क्षुधातकोदिसपान २

श्वासाको सबख्यालहै तीनिलोक तिहुंकाल ॥ ताहिलखै बुध दृष्टिसो लहैमोक्ष नरवाल ३ गुरुकर्ता सतसगते मोक्षलहतविन भेद ॥ यथाआप उष्णतावश तनते चलतप्रसेद ४ कर्मकिये ते कामनाकोनकरै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोलहै परिपूरण कल्यान ५ आसन अमित कहेअहैं अकरमारगयोग ॥ पद्मसिद्धि उत्तमदुवो करत शरीरनिरोग ६ प्रणवमन्त्रको जानिकर प्राणायाम सदाहि ॥ आयुबढ़ै अघगणनशै शतवसै पदमाहि ७ आशारखै मोक्षकी विषय वासनात्यागि ॥ सुखमनमारग हरिभजै रहैमोक्ष तटलागि ८ बावनतनु नभक्योंछुवै अंधलखै सुखरूप ॥ तैसेआतम ध्यानवश यह सिद्धात अनूप ९ पगुचढ़यो आकाशलौं अति अचरजकीवात ॥ जानेते कछुभूमनही मूरख मनपछितात १० बातनसे मुनिसमबने दंभगलित मनजान ॥ तेपाखण्डीकौनविधि पावैगे कल्यान ११ दीनवसन विनधिशिरमें ज्योंनिरखत दिन नाथ ॥ त्योआशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोयँ सनाथ १२ तृपावन्त जस विकलमन खोजतकूप तडाग ॥ त्योंमंगल खोजहि हरिहि उदयहोय तवभाग १३ समरभूमि जिमिनृपतिमन निजजयकी अभिलाष ॥ तैसेमंगल मनवसै हरिपद प्रीतिअमाप १४ बोहित बूडतजीवज्यों भवावर्त विनजान ॥ मगल अवतौ कठिन अति राखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत अमित भखनकृपणतावश्य॥ कोलछीनि लियदुखभयो ततधन लोभियवश्य १६ यह सम्पति तुवसगनहि जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ अंतसंगिनी होत नहिं कतदुख करत अगूढ़ १७ परवश बन्दी भवनतर अर्थारहत सकलेश ॥ तिमिइद्री वशजीवयह भरमत देशविदेश १८ ज्यो कुलालभाजनरचै ऊच न नीच विचारि॥ संगतिवश शुभअशुभ भौतयाजीवनिरधारि १९ साधुसंग साधेमनहि नीचसंगभूमखान ॥ शुभकारी कोउजन्मनहि संगति मूलवतान २० सगपाय चेततनहीं ऐसपशुमहा अचेत ॥ अहिमलयज वासीकहा अमृत बुद्धितजिदेत २१ सरितासर बापीकहौं कूपादिक जलधारि॥कार्स

आपतो चतुरजन सबते लेत निकारि २२ कहाकरैले सम्पदा जो नहिंजीवनआप॥मरणसमयरावणकुरुपधनहितकीन्हविलाप२३ जिमिनिषंगमें शरभरे यकयक करिघटिजात॥ तथाश्वास निज जातहै चेतुआयु नियरात २४ कामीक्योंकरचेतिहैं चढ़ेन्रुदुप निर्बुद्धि॥ चन्द्रइंद्र दुखअतिलह्यो कामविवश नहिशुद्धि २५ कहानवश्रमें आपने विनपरमातमएक॥ जन्ममरण निजब्रम सदा करुनिजचित्तविवेक २६ पापराशि यमराजपुर कोटि भांति पछितायन॥धर्मात्मा सुप्रयास विन हरिपुरकोचलिजाय २७ क्षर अक्षरको एकसम ज्ञानीकरैंविचार॥ नित्यअनित्य विवेकउर सब मंगकरैंविचार २८ गंगाजल पावनपरम बदत वेदपौरान॥ पैनहिं मानत निकटबसि जाहिकहत अज्ञान २९ अक्षत चखनमेंअंधवत निकट वस्तु नहिसूझ॥ नानामतखोजतफिरैसतमारग नहिबूझ ३० जाशोभा शोभित त्रिपुरजा आभाभवभूत॥ मंगल मनबूझत नहींजगहिछलतजिमिधूत ३१ आशापूरण होइसबवासआपनेधाम॥परमातमा विज्ञानमय जन्ममरण निःकाम ३२ जिमिव्रज बाधकलाइगृह ताहि चरावतघास॥कालन जानतमुग्धमति तिमि नरतणपास ३३ पढ़ैवेद वेदांतको विषयलीननरकोय॥ ताहि महावातुल कहिय दादुर वक्ता सोइ ३४ खगनिज मुखवाणी बदत नित्य प्रातहरि नाम॥ नरमलीन भिनसारसे विषय भजत मति वाम ३५ मेरी बुधि अति बोविनीसुन चंचल चंडाल॥ तासु मरण हितयतनबहु कह्योन नाश्योकाल ३६ मन जोमानै मत सुमति तौ मन चीता होय॥ सत्य प्रीतिवश ईश्वभव बदत सयाने लोय ३७ सांत सात को घासकरि गुणसोदीजियबांटि॥ शेषवस्तुकोसो- जिलेमन मलीनको डांटि ३८ जिमि अकारविन व्यंजनहि बोलि सकतनहिं कोय॥ तिमि हरितजि प्राणीनकी मुक्तिन कैस्युहोय ३९ नारि आपने पतिहिजिमि सेवतिनेहसमेति॥ अंत भस्मता प्रीतिवश होति परमगतिलेति ४० ऐसीसांची प्रीतिसँग प्रीतम के निरबाह॥ करै सोधु सो ह्वैरहती मिलि प्रीतम सुखलाह ४१

मोह लालसा त्यागिमति ध्याउ प्रेमदृढ़लाय॥ हर्ता कर्ता आपही
त्यों मतरहा समाय ४२ मांगत लागत लाजनहिं औरनसों मन
तोहि॥ मांचत सांचे मित्रसों क्यों लजात कहुमोहिं ४३ जन्म
नभो प्रथमै रच्यो माता कुचपयजानु॥ मंगल पालिक सत्यहरि
सर्वविधि अनुमानु ४४ खीझत तेली तेलको क्षुधावन्त चह
पीन॥ कोकाकी बाणी सुनै निजस्वारथ लवलीन ४५ यथा
अन्ध द्वैचारि मिलिगज चीन्हने मनकीन्ह॥ करपैद पूछरु उदर
छुताहीसम कहिदीन्ह ४६ तथा ग्रंथसंसार के नयनहीन अनु
मान॥ द्रष्टामत सर्वांगहै सो हाथी पहिचान ४७ ज्यो कबीर
निजग्रन्थमें वरण्यो पूरण ज्ञान॥ नानकगोरख भरथरीसर्वांगी
जगज्ञान ४८ वरण्यो पूरण तीनिविधि अपर धारियह ज्ञान॥
यथा गोसाईं जी भये हरिप्रताप जगजात ४९ माणिकको जु
प्रकाश है त्यहि न डुलावत बात॥ तथा वचन सर्वांगको डुलिन
सकत विख्यात ५० मंगल श्रुतिमत तीनिपुर है परमातमवास॥
चन्द्रसूर आदिक उडुपतासु तेज परकास ५१ लिप्त होतनहिं
गगनजिमि मिला सबतमे देखु॥ ऐसेतनतनब्रह्म बुधज्ञानचक्षु
उरलेखु ५२ शाखा दलफल फूल अरु मूल विदिततरुनाम॥
तिमिजल थलजनचर अखिल कहिय ब्रह्म परिणाम ५३ कौन
विचारत ब्रह्मपद पै नहिं पावतजानि॥ जिमि पक्षी नभ अन्त
हित चढ़त सबल अनुमानि ५४ सिन्धु पिपीलन गाहिया कौनो
काल सुजान॥ तिमिनब्रह्म के भेदकी जानत जीव प्रमान ५५
वाकी उपमा कौन जग जो अद्वैत अरूप॥ उपमा बिन बूझब
कठिन कहत कविनकेभूप ५६ कविपुंगव व्यासादि जे आगम
भाखी ज्ञान॥ सोपि ब्रह्मके भावको भेद न करयो बखान ५७
पांचतत्त्वकरि सूक्ष्मन यह शरीर रचिदीन॥ तामें आपनु चित्र
को प्रासकृपानिधिकीन ५८ तू उपज्यो सर्वांगसन पंचतत्त्वके
जानु॥ आनपंच अरु धीसगति सोपिकरी निरमानु ५९ अस्थि
मांसत्वक रोमअरुनाड़ी प्रकृति येपांच॥ धरा तत्त्वके योग ते

गुणी मुनि सुजान कृतएह ॥ जीवत पावत मोदभल हरिपुर त्यागतदेह ९९ अनहदध्वनि बाजावजत गगन गुफामें हेरु ॥ मंगलजाके सुनतही मिटैजन्मकोफेरु १००॥
इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायसर्वांगसुबुद्धिकर्तायां मंगलविनोदकायामंगलदासविरचितायाज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनामअष्टमश्शतकः ८ ॥
दो०-जोपैमंगल विमलमति तौ जनुज्ञानप्रकाश ॥ अनुभवबुधियिरसों उदितप्रभु सूझैचहुंआश १ जो सेवन निर्वाणपदवनि नपरै मनमोर ॥ तौतूभजु यदुनाथ पद होइ परम गति तोर२ कश्यप अदिति सुप्रथमही तप कीन्ह्यो प्रभु लागि ॥ वरमांग्यों तपसिद्धिभे होहुपुत्र मम आनि ३ निजनिबंधके हेत अरुमुनि सुर विनय कृपाल॥जन्म्यो मथुरामें स्ववश भजुतापदत्रैकाल४ जासुकृपावंधनमुच्योसवपहरे गेसोय॥ तूमंगलताकमलपदभजु सब दुविधाखोय५यमुनाबाहपयात्रभो हूंकसुनततत्काल॥गयेपार वसुदेवलैनंदाउयउत्ताल ६ जानभेदनरनारिनहि प्रभुमाया अघ तात॥ मंगलविनध्यायेहरि हियमपुर जडपछितात७जन्मकालते अल्पदिनवीतपूतनानाशि॥ ज्ञानिभूसतमंगलकहा तायश रहाप्रकाशि८शकटासुर काशासुरहि बध्योजातिखलआप ॥मंगलभजि श्रीकृष्णपदमेटुतीनिविधितापद दधिमाखन भक्षणकियेकौतुक निधि परधाम॥ तासुचरण ध्यावतमिटत जराजन्मपरिणाम१० यमलार्जुनमोचनकियो नारदशापबिचारि॥ मंगल ध्यावततासु पद जातयमपुरहिहारि ११ नदग्राम बसिअघासुर बध्योबकादि कराल॥ निजदासन हितविदितभवमंगल भजुनंदलाल १२गोवरधन पूजनकियो सुरपति मान निहात॥ कौतुकनिधि राधारमण अति उत्तमताध्यान१३कालीमद मर्दनकरयो रमणकद्वीप पठाव॥ मंगलकहु ताचरणभजि क्यहिन ऊंच पदपाव १४ रास कियो नारिनसहित अकथ कृपानिधि श्याम॥ रसिकनाथके भजनते मुक्तिलहै परिणाम १५ केशीव्योमादिकबधे निजजनके दुखदानि ॥ लाभमहाहरिपदभजे मंगलभूलेहानि १६—मथुराग

अक्रूरसँगरजक दुष्टवधकीन्हे ॥ मंगल हरिअतिसरलगतिनीचहि
निजपददीन्ह १७ लूली कुबरी नेहकरि चंदन अरप्यो आनि॥
कीन्ह्योशुद्ध स्वरूपप्रभु प्रीतिनेमपहिचानि १८ धनुभंज्यो गज
बलमथ्यो मार्यो प्रबलचणूर॥ परमातम श्रीश्यामजू जासुअथ
शशिशूर १९ कंसदुष्ट दुखदानिजग मारयो स्विकर कृपाल॥मंगल
मोहनदासहित परिपूरणत्रैकाल २० सत्रहवार जरासिंधहि की-
न्ह पराजमश्यामि॥ भारउतार्यो भूमिको यश्रपूर्यो त्रैधाम २१
कालयवनको मारियो सोवत भूपजगाय॥ मुक्तिदई मुचुकुंदको
भजतिनत्यहिचितलाय २२ मथुरातजि द्वारावती बसतिकीन्हे
बहुख्याल॥ सोवरणत पोथीबढ़े अजुमन मदन गुपाल॥ २३
जिमिविधवा करि कुकृतपुनि गर्भरहे पछिताय॥ तिमिमंगल तू
विषयरत अंततोहिं दुखदाय २४ बाम प्रकृतितजि श्यामभजु
कामकला बिनुसत्य॥ मुक्तिहोइ संशयनहीं नाशैजगतविपत्य २५
राधावरको मनुजसम जानत नरचंडाल॥ तेपछितैहैं शमनपुर
यथा नीचशिशुपाल २६ निष्ठाशुद्ध लगायकरि मनविशिष्ट करि
ध्याउ॥ मंगल हरिपद प्रीतिसो अतमुक्ति पदपाउ २७ श्याम
श्याम हरिरामकहु भाय कुभाय विहाय॥ कोटियज्ञ फलकोलहे
मगल कहत बुझाय २८ श्रीहरिनाम प्रतापते मिटत पापकीखा-
नि॥ यथाकाष्ठ-तृणव्यूहको रंचकसिखिकृतहानि २९ आनआश
तजि मीतमन आतम श्यामहिध्याउ॥ क्योंयहिझूठे स्वांगमेआ-
यु अमोल गमाउ ३० कोटिजन्म जपतपकियेछलप्रपंचयुतदंभ॥
सिद्धिलहैन्नहिंमोक्षकी बारुभीति कृतथंभ ३१ मानि प्रतीतिस-
प्रीतिमन वासुदेव गुणगाउ॥ प्रीति विवश हरि सर्वदा भणतविबु-
ध कविराउ ३२ दुखसुख काल अकालमे नेहएकरससाखु॥भक्ति
विवश श्रीश्यामजू तादाश भवनाखु ३३ कपटकुरीकर्मेलिये
छेदत अजविज्ञान॥ मंगलऊपर साधुवत क्योंपावै कल्यान ३४
प्रातसमय निर्दयजिमन ध्याउरमाकोकंत॥ जीवत सुखसंपति
अमित लहैमोक्ष पदअंत ३५ अनखे आलसहु खोजियरु श्रीछिभजे

घनश्याम ॥ मंगल आपक मुक्तिको ज्ञापक संयुतनाम ३६ आनओरहैरैनहीं तजिनिज मीत सुजान ॥ जिमिचकोर ग्रथिको लखत सोपावनगुणवान ३७ रटैनिरंतर श्यामपद ध्यानलनेमुराखि ॥ भुक्तिमुक्ति दोनोंलहै देतउपनिपदसाखि ३८ कालसुचक्र कुलालको घटसम जीवअपार ॥ भरमावत विधिकोटिपुनिउपजावतसंसार ३९ ज्ञानरकी सेवाकरतबेतनसोदैदेत ॥ नारायणपदध्यानसो कोय अखिलकितलेत ४० जिमि पखाणकी ग्रातअढ़ि पार सरितकोजाय ॥ तिमि नरकीसेवा निफल मंगलकहत बुझाय ४१ जोन समहारत आपकहँ भारसोथांभकिआन ॥ मंगलकरणीनरक की तूकत ग्रानहिंज्ञात ४२ प्रथम आपको सिद्धकरु तब औरन तिखदेह ॥ जगतबड़ाई मुक्तिदा नहिं हरिपदभजि लेह ४३ कालकूट करणीअमृत क्यो करिहै अज्ञान ॥ तिमिपापी किमि सुकृत को निजउर लावैध्यान ४४ तेलसनेही तिलनको तेलीपेरि तिकार ॥ देखुमित्रता कठिनप्रण जीवत संगनहार ४५ लाली नेही मिहदिदल काहुइपरी नदेखि ॥ बांटिनिकारी कोटिविधि तदपि परी नहिपेखि ४६ मित्रमृतकके संगही नरतनुलीन्ही लेखि ॥ मित्रद्रोह उरधारि त्यहि तनुमें गई प्रवेसि ४७ प्रीति प्रथा ग्रथि संधुकी पूरणलखि उमडात ॥ मंगल ऐसीप्रीतिदृढ़ करुक्यो मन पछितात ४८ जानि श्यामपदनहिंभजत वृथा दादुरीबाद ॥ मंगलयमपुर विविध विधि जीवहिहोय बिषाद ४९ कहा सुदामाने कियोपायो हाटकधाम ॥ प्रीतिप्रतापहिविदितभव हरिभजु मन बसुयाम ५० अर्जुनको स्वारथकियो कास्वारथ यदुनाथ ॥ प्रीति वश्य त्रैकालप्रभु यहै ज्ञानकी गाथ ५१ द्रुपदीको कर्तनकरयोबाढ़योबसन अनंत ॥ मंगल महिमा प्रीतिकी जानतकोबिदसंत ५२ कोग्रोरुप कियभारही गिरयोघंट हहरात ॥ बचे तनयवल भमिंतते नत्यप्रीतिके भाय ५३ दंभीपापी अपकृती अज्ञानी चंडाल ॥ नामलेत बिन भावदृढ़ नहिरीझत गोपाल ५४ को पांडवके बल रहे लक्षनिकेत कुठाम ॥ प्रीतिबिवश उबरेसकल गिरिव भगिगे

घनश्याम ५५ विकल रुक्मिणी ब्याहदिन लैआये नगज्ञान ॥ प्रीतिसत्य चनुमानिहरि खलदल वधि मनमान ५६ बाणासुर कौमानमथि लीन्ह्यो अनिरुध ब्याहि ॥ मानहरत्त संसारको तू मन मानहिंचाहि ५७ दुर्योधन आज्ञातजी दीन्ह्यो बंधनथाय ॥ मूरुख हरिआयसु तजत पूजत प्रेतनजाय ५८श्याम श्याम पुनि श्यामकहु राम राम कहुराम ॥ भटकत क्यों भवमें फिरत बिन माग लहुदाम ५६ पेटखलाये जगफिरत मतिहीनो नहिंबूझ ॥ राधावल्लभ भजनसों मिटैबिपति भवहिसूझ ६० काल कर्मको नाशकर दाता जन आनंद ॥ कोदूसर सतधर्मके त्यागिनखत यदु चंद ६१ कोटिआपदा नामसुनि मगल जातपराय ॥ यथाकेहरी नामसुनि वनखरव्यूहलुकाय ६२ सहस्रभांतिके विघ्न त्रय हरियश सुनि नशिजात॥ जिमिदिनमणिके उदयते नभद्युतिमान छिपात ६३ श्यामशब्द सुनिकँपिउठै मृत्युकालयमदूत ॥ पुंडरीकसुनि करिबिपुल जिमिशंकत विपुपूत ६४ श्रीराधावर नामको जपत जो हितचितलाय ॥ शिव आदिक सुर जयवदत तानरकी मुद पाय ६५ अमर सराहत मनुजवपु श्यामभक्ति दृढ़ज्ञान ॥ मंगल तू नरतन लही भजुहरि धरिशुभध्यान ६६ उडतश्याम कहत हिचमित दोषकुकर्म सशंक॥ शब्दभुशुंडी सुनियथा भाजतकाक भशंक ६७ गेहतजत पाखंडभ्रम श्यामशब्द सुनितात॥ चंडपवन तरा उडतजिमि निजथल पुनि नै लखात ६८ वारबार भिक्षा करत ज्ञानीध्यानी साधु॥ अपरमूलतजि सर्वथा श्रीहरिपदआराधु ६६ बढ़त सकल आनंदसुख भजतश्याम भवमाहि ॥ जिमि राका शशि सिंधुलखि कृतप्रवाह भ्रमनाहिं ७० संपति तरुजल भक्तिजग नारायणकी मीत ॥ शाखाबाढ़त नितनित भजुहरिसदा [illegible]त ७१ सकल सिद्धिता ढिगबसै जोध्यावै नँदलाल ॥ जिमि सेउ पावसकालको मिलत सिंधुकीलाल ७२ आदरबड़पदमानता ताचेरीह्वै जात ॥ कूकुर ज्यों निज स्वामि सँग जोध्यावै यदु जात ७३ सबके उरमें प्रीति तेहि बसत जो ध्यावत श्याम ॥

पूषण जैसे शरद ऋतु संत्र चाहत निजधाम ७४ बालक की बाणी यथा मीठी कटुवति लागि ॥ श्यामभक्तकी वारता सुनत बिबुध अनुरागि ७५ जापै मानैतौ कहौ जो भंजक तुवमान ॥ जानिदुष्ट पुनि मीत मम जाहन तेहि अस्थान ७६ मेरी भाई होत नहि नत त्यागतमननमोह ॥ श्यामश्याम श्यामा कहत त्यागि अखिल छलछोह ७७ को तजि श्यामा श्यामपद पूजै भूतनजाय॥ नरकबासको भ्रमहृदय अंतकुपुर पछिताय ७८ मेरेमत श्रीश्याम पद पारसके पितुआहि ॥ अंत आपु समहीकरत बदतबेद भ्रम नाहि ७९ हांक सुनत हनुमानकी कम्पत ज्यों खलजाल ॥ राधा मोहन नामसुनि तिमिकँप पापकराल ८० बामाबाम बिचारिये धामाधाम सराहि ॥ नामानाम प्रवीणको यहशोचिय जियमाहि ८१ पाठक मूरुख मौनको दंष्टानंदप्रमान ॥ काष्ठवृक्षको भेद है जानत पर सुजान ८२ ज्ञाताज्ञाता जानिये दातादातासोइ ॥ भ्रामिकमत क्यों बूझिये परिपूरणहरि होइ ८३ प्रभुआज्ञा शिर मानिकै अर्जुनमंड्यो युद्ध ॥ जयपाई आनँदभयो सुन्यो सुमारग शुद्ध ८४ आनऔरत्ते भूलतजि शत्रुसंगदे त्यागि ॥ मित्र आतमा आपनी ताहीसों रहुलागि ८५ बिष्णुलोकमें श्वंतभो जन्मत श्री यदुराय ॥ परिपूरण अवतारशुचि बद्यो व्यासमुनिराय ८६ सगुणरूप सुंदरबपुष सुखदायक तिहुंकाल ॥ श्याम कृपानिधि दास हित नायक जगजजाल ८७ मारुमारु लावतभगत दलबिबेक बिनुज्ञान ॥ बर्मश्यामको नामकरु कामप्रबलता भान ८८ गज वाहन रथ द्रव्यगृह संपतिलखि मनभूल ॥ ध्यावतनहि यदुनाथ पद अंतशमनकर शूल ८९ मातपिता त्रियबंधुसुत सखासुसेवक कोटि ॥ अन्तसगनहि देहहू समुझतनहिं बुधिछोटि ९० नीचन त्यागत नीचता कोटिभांति सिखदीन्ह ॥ यथानकटुता नीमतजि चंदनको संगकीन्ह ९१ जाकीप्रकृति प्रदोषमय सो नचहत हरि ज्ञान ॥ जिमि उलूक भागत बिकल उदयहोतही भान ९२ मन प्रबोध आवतनहीं बिनुजाने गुणश्याम ॥ मंगल सांची मनकही

ध्याउश्याम पुनि राम ९३ कौडीके दानीनहीं निंदत वलिकर-णाहि ॥ मंगलतू सुनि सीखममे भजुहरि निज चित चाहि ९४ जयजय ध्वनि चहुओरहै सतमारगकी मीत ॥ ताहित्यागि क्यों दुष्मन तूभरमत विपरीत ९५ पारावारन चारिदिशि आतम अकल प्रकाश ॥ प्रफुलित मनभा ताहिलखि पायो शुद्धविलाश ९६ दिवसनिशा कछुहैनहीं महि अकाश के बीच ॥ आदिअंत यकराशिमय को भ्रमरहा नगीच ९७ अवतौ पूरण मतिभई पूरणपदको जानि ॥ क्योंभूले मंगलचतुर करणी तरणीमानि ९८ कोटिजन्मको फलमिल्यो राधावल्लभनेह ॥ अवनचाहकोउ मन रही मुक्तिलही तजिदेह ९९ मुक्तिपदारथ करलगै युक्तिध्यान निर्व्वीज ॥ मंगलकी शिक्षासुधा मुनिभजु मनव्रजराज १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायासर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायां मंगलविनोदकायांमंगलदासविरचितायांसगुणपचनिर्गुणवर्णनोनामनवमशतकः ॥ ९ ॥

दो० ॥ सर्वसिद्धिमय सिद्धियह मंगलदीख विचारि ॥ भगवद्भजन विहूनमन अमितजन्मकी हारि १ सबधर्मनको धर्मयह अखिलतत्त्वको सार ॥ आराधन भगवद्भजन दया सहितव्योहार २ मदिरापान अजानज्यों त्यों कुलीन धनवान ॥ महामूढ़ चेततनहीं करतन भगवतध्यान ३ ओंकारक्षररूपहै विरचेत्रिपुर सअंग ॥ कोकुलीन कुलहीन कहि यकरस वदत अभंग ४ जो विभूति चौदहभुवन सवते परक्षररूप ॥ जापक नीचसो ब्रह्मघर ब्राह्मण भयेस्वरूप ५ प्रणवमन्त्रको पाठकृत नासामग सविवेक ॥ पूरण प्राणायामकृत जनु कृतयज्ञ अनेक ६ ध्यावत जाके मन्त्र तजत चंचलता सबभांति ॥ सोपद प्रणवभयेजगतवेदमात दिखराति ७ अजपाको कारणकठिन गेहिनको दुखनित्त ॥ पाठकजापक प्रणवकेपावतसदा सुवित्त ८ जासुअर्थते जानिहै परमतत्त्वको भेद ॥ आपुवूझिहैं आपुमे वदतवेद विदवेद ९ चारिऔरहै सिद्धि मन जबलगि रामदयाल ॥ विघ्नविदि दिगशूलवग दहिनहै।

तत्काल १० मूलवहै शाखासकल बीजईशसंसार ॥ उपजावक नाशकवहै एक आपुकरतार ११ तूही मंगल भीरुभट समरकाल विकराल ॥ ज्ञानमान अज्ञान तू दूसर नहिं त्रैकाल १२ दया आपुहिंसा तुहीनिराचार आचार ॥ ज्ञान अवण सुनि वाक्यमम लखु आपन व्यवहार १३ धर्माधर्म तुही चतुर मूरुख पण्डित मूढ़ ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तू शूद्रतरुण सुतवूढ़ १४ गजवाहन को भेदहै जन्मशरीरप्रसाद ॥ तूही पूरण एकहै नहिं द्वितीयम- र्याद १५ जीवईशतूहीअहै मायाछाया तूल ॥ अपनावतभागी फिरत ज्यों सरिताके कूल १६ मायाब्रह्म अदृश्यद्वौ एकत्त आन प्रकार ॥ जलवीची छाया विटप भूषणस्वर्ण विचार १७ माया शक्ति सुहावनी कीन्हे जीववनाय ॥ बहुरिआपनेपंथकरि ब्रह्महि दियो लखाय १८ माया के नाशेचतुर कथा कथीनहिंजाय ॥ छायाजस मध्याह्नकी इतउतनेहिं दरशाय १९ जब मायाको अन्तहै तब दुविधाकोज्ञान ॥ छाया नाशत वृक्षकी कोधौं चतुर प्रमान २० ब्रह्मज्ञान गुडजानिये सेवक गुंगसमान ॥ कहिनस- कततास्वादको त्योंवर्णन निर्वान २१ ज्योंरहटामें शब्दहै पैनाहीं लखिजात ॥ जीवभाव शासत हृदय कहत बनतनहिं बात २२ कारण सूक्ष्मस्थूल त्रै वपुधारीप्रभुसोइ ॥ जानत अध्यातमचतुर त्रैपर्दलेत विलोइ २३ तीनिवपुष ज्योंईशके सोहतहै विज्ञान ॥ तिमित्रैतन गाजीवके सततमभेद सुजान २४ ईशसतोगुणपूरहै जीवतमोगुणलीन ॥ उत्पतिकाया कर्ममें समतायहै प्रवीन २५ ब्रह्मजीवएके दुवौनयन दृष्टिनहि दोय॥दृष्टिहोतहै नेत्रते ताबिन लखतन कोय२६ सूरदेवप्रापितजगत अन्धनिरन्ध प्रमान॥व्याप- कगव्यय अजप्रभूईशजीव है थान २७ जीवअहैपरमातमा जा- नत वेद विचार ॥ बुन्द सिन्धुमें भ्रम कहा जलएकै निरधार २८ खोजत भूली वस्तुको दीपक तमहि प्रकाशि ॥ जोपै दृष्टिहिहोइ नहिं को रथ दीपकराशि २९ माया वश भरमत फिरत उरध अधबिनज्ञान ॥ जोपैचीन्है आपुपद फिरिन भ्रमै बुधिवान ३०

प्रीति एकरस, श्वासमधि राखैज्ञानीकोय ॥ तत्त्वदरश पावैसही ब्रह्मलीन पुनिहोइ ३१ भेदन जानो आपनो मूरुखकर्त्तवलाख ॥ जाना चाहत ईश्वरहि अन्धदृष्टि अभिलाख ३२ पूजतआपन देवता सुधि आई जगकाज ॥ विकल शीघ्रपूजनकरत कवरीझैं सुरराज ३३ जब लगि पूजनकरिचुकैं तबलगि पाननीर ॥ तृपा लालसा उरलगी पूजन वृथा अधीर ३४ तुलसी तरुमाला गले बांधे शालग्राम ॥ कपटहृदय, परतिय रमत भक्त कहावत नाम ३५ नीचपाथकलिआपुको कहतकुलीनसनेन ॥ मंगलतू चुप साधु किन करिघर हरिपदनेम ३६ जिनहि नहीं अधिकार है यज्ञसूत्रधर कन्ध ॥ मगल अब मर्य्यादको अन्यायीकुप्रबंध ३७ चंदन तिलकदिये फिरत कोलभीलकलवार ॥ तेलीधोबी मीनहा पच्छितैहैं यमद्वार ३८ गेहधर्महकीजियेत्यागिधर्मछल त्यागि ॥ कुलकरणी छोडत चतुर चलत भलाई भागि ३९ बूझि जाइजो आतमा तौ ब्राह्मण ह्वै जाय ॥ पुनिनहिं पूछैज्ञातिको संत समाज सुहाय ४० ब्रह्म ज्ञानको प्राप्तभे नीचन ऊच लखाय ॥ समताको उरवास शुचि मन भावितभप खाइ ४१ दंभकपटयुत गेह रत तबलगिकर कुलकानि ॥ जब विवेक समता मिलै तब न वर्ण कुलवानि ४२ व्यास वेदयहि हेतही कीन्हे बरणविभाग सतवरण दूसर रहा परमहस अनुराग ४३ विद्या चौदहजानि के रतभो विपय विलास ॥ ताते मूरुखही भलो जोन धर्ममग पाग ४४ जानि जौहरी परिहरै हीरा काननबीच ॥ ताहिकहिय तृणको वणिक परखनतासु नगीच ४५ जेसपूत मांचे जगतगहे वेद मर्याद ॥ ते आदर कृतगुणिनके मूरुखसग विपाद ४६ काग श्वानको पालियो सुंदरभोज्य भ्पाय ॥ तदपिलालसा मांसकी तिमि नरनीच सदाय ४७ शिक्षाकीन्ही ज्ञानकी दिक्षाप्रणवसुध्यान ॥ तदपि नीच निजवरणसग भोन ऊचपदमान ४८ अहंकारधोरेकरत मगलनरकुलहीन ॥ प्राप्टके नारेयथा बाटनदेतप्रवीन ४९ ज्ञानध्यान लहिब्रह्मत आपुहिदेत दुराय ॥ चलतचालि

पूरुषसरस ज्यों समुद्रके भाय ५० आनन आपन मगवदत शिष्य समाज अपार॥ तेचाहत निज मान्यता सोनहिं हरिदरबार ५१ ब्रह्मधामको ऊंचलख भजनाभजन प्रधान॥ करणीहीं कुलवान है करणीवत अस्थान ५२ यापुरमें ब्राह्मणवने क्षत्री पायेराज॥ भजेउन पूरण ब्रह्मपद वापुर नीचसमाज ५३ पढ़िविद्या पंडित भये लिखिपोथी वहुजोरि॥ रामभजनविनु नीचमन कहां मुक्ति हैतोरि ५४ अबते मेरी मानिशिष लखुतू नैनपसारि॥ पूरण ज्योतिप्रकाशहै अध ऊरध दिशिचारि ५५ जानिन मानत नीचमन विषयवासना ध्यान॥ आतमको नित ध्याउजपि सोहंहंसःप्रान ५६ ज्योंअहिजामत चरण निज लखतन कोऊ नैन॥ त्योंजानत यहआतमा आतमभाव सचैन ५७ विपुलविहंग वनमेंबसत डरत श्येनको देखि॥ तिमिलखि ब्रह्मज्ञान को इन्द्रीव्यूह विशेखि ५८ ब्रह्मवेत्ता चतुरसो जोरत ब्रह्मज्ञान॥ कोजानत ताबिन हरिहि जिमि रविविन नविहान ५९ काल व्यालके सुख परयो जीव भेकके तूल॥ विषयभोग साखीचहत यह याकी वडिभूल ६० वृश्चिकसुत ज्यों मातनिज भक्षिउदर वहिराति॥ तथा जीववधि वासना ब्रह्मलीन ह्वैजाति ६१ करीयथा लखि सिंह को तजत जीवकी आश॥ तिमि देखतही ज्ञानके मोहहृदय महंत्राश ६२ तीनि भांतिकी कासना सबदेहिनके गात॥ दुविधत्यागि यक पंथलगु यहै ज्ञानकी बात ६३ गायत्री ज्यों छंदमें सुरमधि यथा महेश॥ सर्वज्ञानमें आतमा शोधवतथा विशेष ६४ ज्यों भारत पौराणमें गंग नदिनके माहिं॥ ब्रह्मज्ञान सबपंथ में त्योशिरताज सदाहिं ६५ पातपात सींचत फिरत मूलन डारतनीर॥ डार पात यकवारही प्रफुलित होहि शरीर ६६ सुकृत पाप दोनोंतजे सो ज्ञानी परमान॥ विननाशे सुरपुर नरक लहैन पदनिर्वान ६७ अपनीप्रीति प्रतीतिकरु साथमित्रके सांचु॥ ध्याउ शुद्धमति आतमहि आनरंग जनिरांचु ६८ ऐसीप्रीति सराहिये ज्यों पय पानीकेरि॥ मिलत एकही होतदो दुवरण परतन हेरि ६९ शब्द

त आकाशमें ब्रह्मवाक्य शुभकारि॥ ज्ञानअश्व मंगलसुनत
तदोष सबहारि ७० जेतेवाजा जगतके बजतएक सुरसंग ॥
नत बनत बरणत नहीं अद्भुत सुभग प्रसंग ७१ हदहोत सब
स्तुकी अनहद सोन नशात ॥ मंगल यहजानेबिना यमपुर नर
छितात ७२ मारगके सरिता सरन नृपकृतसेत सुकाम ॥ तिमि
ानीशिक्षावदत अपरहेत निजठाम ७३ उदय अस्त नहिँ ज्यो-
तकी आदिमध्य अवसान ॥ देखत ज्ञानी नैनबुधि दधदिषि
क समान ७४ मंगल अबकी कपट तजि करुहरि ध्यान सचे
॥ मुक्तिलहै नत जन्मबहु उपजिहिकायाखेत ७५ क्षेत्रदेह
ह जानिये आतमतो क्षेत्रज्ञ ॥ द्वितिय नबूझत मूढ़मति
ेअबूझको प्रज्ञ ७६ हरिमाया में जीवको नाधिकार कछु आ-
है ॥ जिमिन भूपके काम में कछु अधिकार प्रजाहि ७७ बल
बिन उद्यम होतनहिँ पूछत कोउनबात ॥ वृद्धापनकी यह
दशा मंगलमन पछितात ७८ सत्यसिंधु अव्यक्त अज अव्यय
अकलअमान ॥ ज्योतिनिरीह निरंजनहिं करान करत मनध्यान
७९ समुद बढ़त राकातिथिहिसोन घढ़त क्यहुंकाल ॥ घटतन
कौनौभातिप्रभु दाससुखदगोपाल ८० अबकी निबहै एकरस
ममप्रणकीजिय सोइ ॥ बारबार न भव भवँर ममभरमब प्रभु
होइ ८१ परमहंस मंडल जुरेबहुज्ञानी बहुखानि॥ पैमंगलपूछ-
तभयो पूरणपद अनुमानि ८२ सगुझायोनब भजनबदि नवम
गह्यो मनमोर॥ अबतो आशा सबतजी हैभरोस प्रभुतोर ८३
जिमिचढ़ियानपपीलको सूझतआननथान ॥ तिमितुवशरणागत
पर्‍यो मंगल जय भगवान ८४ सोहत कुलटा कर्म नहिँ पति-
ब्रताको जैस ॥ जगमंगलको श्यामतजि सबकोउ दीसततैस ८५
जय मायापति श्यामकी जयजय पालन हार ॥ दुखहरियेजन
जानि प्रभु जयजयजग कर्त्तार ८६ जय सतवादी पापहा जय
सुखदायक दास ॥ जयअनीह अजकाल बिनु देखहिँ निजथल
वास ८७ जयनिरगुण जयसगुणकी जयअजहर हरिरूप ॥ जय

विश्वंभर विश्व वपु जय जनपाल अनूप ८८ जय अरूप जय रूपधर। जय अनेक जय एक ॥ जय नरतिय जय पशु विहँग जय जय प्रभु सविवेक ८९ जय अनाथपति नाथ प्रभु जय प्रवीण त्रैकाल ॥ जय गायत्रीमंत्रशुचि जय वैश्यक जय वाल ९० जय अहि महि जय पवनशिखि नभ जय जय अहँकार ॥ मंगलके दुखशोक सब हरौ सकरकरतार ९१ जय अदेव जय देवव्रत जय सर्वांग विराज॥ थावर चर प्रभु एकतू जय जय जय व्रजराज ९२ गुरुप्रताप निर्वाणपद वर्ण्यो मंगलमूढ़ ॥ यथाबुद्धि विनु वकत कोउ तिमि यह वक्र अगूढ़ ९३ धीरज धरि मनमेंसदा जो ध्यावै सर्वांग ॥ ताके कुशलहि क्षेम नित होइ न प्रणको भंग ९४ साधारण कविता करी मतिविवरन निर्वान ॥ कवि पंडित हरिजन क्षम्यो खोरि जानि अज्ञान ९५ दासनकोहौं दास हौं अतिपापी छलकारि ॥ मंगल मनको मूढ़ अति कहो सत्य निरधारि ९६ संत जानि निजसेवक दीजो आशिर्वाद ॥ जीवत पावौं सौख्यरस अंतमुक्ति मरयाद ९७ मांगत मंगल जोरिकर नारायण सो दान ॥ भक्तिमुक्ति आनन्द पद परिपूरण विज्ञान ९८ दासजानि राधारमण हरो विपतिको जाल ॥ मंगल को निज भक्ति दै कृपासिंधु गोपाल ९९ उनइस सौ तेइस गये संवत पौष सुमार ॥ कृष्ण चतुर्दशि भनोकिय पूरण पुस्तक भार १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायांसगुणपद्यनिर्वाणशिक्षामार्गवर्णनोनाम दशमश्शतक ॥ १० ॥

दोहा ॥

पाठक श्रोता ग्रंथ के गुण विज्ञान सुजान ॥
दोनो दिशि आनँद लहैं मिटै भूल परिमान १
रामराम पुनि रामकहि रामराम कहि राम ॥
मंगल तीनोकालयह राखु ध्यान सुख धाम १

इति

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

सदर्नसिद्धांतसप्तशतिका ॥

॥ षटपद ॥ एक दसन वरवसन विघ्न नाशन लम्बोदर । मदन कदन सुतवदन, नाग सेनापति सोदर ॥ चन्द्रभाल गुण-पाल यूथनायक शुभकारी । सिद्धिधाम शुभग्राम महामंगल अधिकारी ॥भणि द्वै मातुर हेरम्ब पुनिवन्दि विनायक कंजचरण । मंगल-समोद तनमन वचन ज्ञान कथा चाहत करण १ आसन कुवलय लसत भारती सुमति प्रचारिनि । हंसवाहिनी सुभग शारदा-कुमति-निवारिनि ॥ वाग्देवतासोय विधातावाम विलासिनि । सरस्वती शुचिशक्ति वाणि-कवि वाणि प्रकाशिनि ॥पुनि वन्दिवाक् शुचिवाक वुध्याय गिराअघहरचरण । मंगल समोद तनमनवचन ज्ञानकथा चाहत करण २ ॥ कवित्त ॥ गातकी त्रिलोकि महि ज्ञात नाक आसकीन्ह वालरविलीलिकेमिटायो अभिमानहै । सिन्दुर लुकाव नारि भाल तियत्याग जानिविद्रुम समुद्र मांझ अधिक लज्जानहै ॥ आकर छुपान लालजाकरप्रकाश देखिहूजिय दयालु तु प्रसिद्ध खलभानहै । मंगल शरीर कपिराज होके हरिपग गावत सहायकर एक हनुमानहै ३ ॥ सवैया ॥ आदि अनादिकहै श्रुति सज्जन पूरणरूप अरूप अयामा । धाम अधाम विराजत आपु स्वतंत्र अकथ्य अनीह अनामा ॥ चौदह लोक प्रकाशितु जो बहुभांति गुणी अगुणी अभिरामा । मंगल दीनदयाल वहै करजोरि करौ पदकंजप्रणामा ४ दीन दयानिधितू परमातम वेद पुराण वदैसतिसाखी । पालत दास दशौ दिशिमें अति कोपनते शरणागतराखी ॥ व्यापत ताहि न मोह उपाधि जो तू पदपंकजको अभिलाखी । मंगलहूपर होहु कृपालुमनोरथ पासदै सदचाखी ५ लोग भनें अपठानि कृपानिधि है द्विजदास

नोरथदानी। वेद पुराण कथीश महामुनितेऊ बदैं यहउत्तम
ज्ञानी॥ सोचविचारि प्रतीतिभई उरमोरि सुनौ दुकशारँगपानी।
मंगलकी मनकामना पूरिय हौ सब लायक मोमनमानी ६
देहु मनोरथ बेगि कृपानिधि सत्यमनोरथ दानि कहावौ। काहु
के काजको बार न लावत क्यों ममहेतु अबार लगावौ॥ हौदिन
राति रटौं तुव नामहिं जानतहौ पुनिकाहे भुलावौ। मंगलदीन
पुकारत आरत आशु मनोरथ मोर करावौ ७ जानतहौं नहिं स
गुण निर्गुणनाम प्रताप लखौं ढिमिचारी। ता हित नाम बखान
करौं नितजापकरौं शुचिनाम बिहारी॥ ध्यानकरौं भलनामहिं
को अरु ज्ञान गुनौं तुवनाम बिचारी। मंगलनाम गहौतुव मोहिन
देहु मनोरथ श्यामं मुरारी ८ जौन मनोरथ लागि जबै जबतौन
लवैतुवनामते पायो। कौनहु काल निराश रहौ नहिं सत्यकहौं
नहिं जात छपायो॥ कीट मनोरथ दारुशरीर लग्यो पुनिआइ
घनोभ्रमछायो। मंगल सो पुरवै करुणाकर त्यागिसबै शरणागत
आयो ६ को असभूति बिभूति तिहू पुर जो न मिलै तुम्हरोयश
गाये। तीनिहुँलोक बनावत पालत नाशतहौ अपनो मतपाये॥

कारण सूक्षम थूलहु नामते तीनिप्रकार कहायो१३ ताचुवखा-नत निन्दकवाजत झूठबखान कियोनहिं जाई । तत्त्वमसीश्रुतिसामवतावतको तत्त्व असितीनिखभाई ॥ सन्तमहन्त कबीशहु कोविद त्वंपद औतत ईश लखाई । मगलब्रह्मवदै असितो पुनिद्वैतरहा न अद्वैत गनाई १४ सांख्यविचार कह्यो मुनिआदि पचीसप्रकार विधानहिगायो ।कर्मप्रधानप्रमाणवद्यो भवजीवअपार अनादि जनायो ॥ईश्वरमय जगभासिरहा विनुईश चराचर नाहिलखायो । मगलयोगसमाधि विहाय कहांलखि कारणतारणपायो१५आदिनहीं भवकी अरु अंत न नाहिं बनावनहारवताइय ।पूरुष औ प्रकृतीहिसँयोगते होतसमस्त निरस्थिरगाइय॥ भूतलनाक पतालनिवासहि देतनहीं यककर्मप्रभाइय । मंगल कर्मअकारण होत न कारणतेकिसि मुक्तिदृढ़ाइय१६ पूजतदेवन कारणपाइकै ध्यावत देवन कारणलागो । तीरथ औव्रत कारण होत न पन्थ अपन्थ जुतापतआगी॥ देहरँगै नरकारणलागि चढ़ावतनीर सुकारणपागी । मगलसश्रितकारण देखत मोक्षन कारण को अनुरागी १७कोउबनो सुखियाइत डोलत कोउमहाविपदा अधिकारी । भूपतिकोउ प्रधान चमूपति एक अनाथबनोपरचारी॥ पण्डित कोउ विमूढ़कुलीन मलीन कहाव प्रवीनअनारी । मंगल मोहग्रस्यो निज आतम जानतनाहि महा अविचारी १८ आतप को तपआपत काहुको शीत सतावतहै दुखभारी । शीतपावससे विनुकारण आश्रमुनावत लोग पुकारी ॥ आनँदसों नित काल बितावत एककहावत दीनभिखारी । मंगल मोहग्रस्यो निजआतम जानत नाहिं महाअविचारी १९ बाह्मनके यकसूत बनावत एकमुये तन देतजिवाई । एक करामत आप दिखावत भूत पुजावत देवविहाई ॥एक प्रबोध करावत ब्रह्मको आपनहीं मतिकोदुचिताई । मगल संत समर्थसदा जोकरैसो सहीमनको भ्रमखाई२०यहतु अनादि सबैजन खोजत चित्तन सूझत आपअनाशी । शुद्धस्वरूप अनूप अकाय सो तो यक

भूलमिटाय गहैगरपायसों देय लखाय नहोहि विषादी। मंगल द्वैतबिहायन ईसर आपतहै मुनिहू सनकादी२१ तीरथके बशमूरतिकेबशहै ब्रतकेबशमें अतिभूखे। पूजनकेबश पाठन्हकेबश जापनकेवश बोलतरूखे॥ ज्ञानहिकेबश ध्यानहिकेबश स्थानहिके बश बेदहिदूखे। मंगल सम्पतिकेवशमें नित आतमकेधनतेअति खूखे २२ ऊरधबाहु करेतपएक खड़ेपदएकरहे दिनराती। एक अधोमुख झूलत झूलत क्षीरपिये तजिअन्नअराती॥ कऊरहेजरहे नितएक जुकाटतआयु विहीवत पाती। मंगलआतमज्ञान बिना अपनेमनते यह स्वांगदिखाती२३चासकुरंग विछायरहे यकझारि सही पगदेत सदाहे। प्रातउठै निजदेवलिजाय चढावतचावल ज्ञानकहाहे॥ मौनरहे यकसैनिबुझावत औघडवास सुराहि यदा है। मंगलजानतआतमा जो नहितोयहु साचहुस्वांगवदाहे २४ जागतमेंजस चेतन चेतन सोवतमें तसजागिरहाहै। इन्द्रिनके व्यवहार अनेकनसो नलखै शुचिरूप महाहै॥ आपहिजानत आपवखानत दूसरकौन विवेकलहाहै। मंगल जाने बिना भ्रम लागत जानतज्ञानअज्ञान कहाहे २५ जीवहिछूतिनपाकहुलागत पूरणब्रह्म प्रभाप्रसरीहे। नीचकुलीन नहीं यह जीव कहावतमें अहि ज्यों रसरीहै॥ भूल बडी तनमान अमान कि छोडत सो नन पोढसरी है। मंगळ संतसमाजविना कपकोटिसके न गळे फसरीहे २६ शक्ति पिपीलके अंगवहे गजते तनमें भरिपूरिरही है। देव अदेवनमें पुनिसोय मनुष्य पतंगकी शक्तिवहीहै॥नाग वनस्पतिमें फिरि देखियपे दुबिधायके चित्त सहीहै। मंगलडावरताल नदीयके नीर न रूपहे भेदयहीं है २७ या तनमें इक नित्य निरंजन सत्यअहै मुनिसंत वखानै। बोलत डोलत सोवत रोवत जेवतहू निजध्यान प्रमानै॥ बुद्धिनहीं जुवडो गुणखानि नहीं मन चंचलकी गतिसानैं। मंगल आपुहि आपुविराजत तू दशहू दिशिमें भ्रमठानैं २८ कौन बतावत काहि बतावत कान लगाय सुनै पुनि कोरे। काहि चितावत कौन अमावत ज्ञानि न

यंवत ज्ञानवटोरे ॥ जोप्रभु आपुप्रकाशिरहा न द्वितीय कहाविकि
केसन तोरे। मंगल मौन गही अपने घर जो अपने सबके घरसोरे
२६ कामवशीभव भूतकिते अरुकेतन के मनक्रोध प्रजारे। लोभ
लियेमन काहुको डोलत मोहकि रज्जु बँधो न सम्हारे॥ मान
प्रमान हियेवशी काहुको कोउ महामिदको मतवारे। मंगल क्यों
निबहै यह बुद्धिविवेक विना नितही दुखभारे२७मंत्रनकेवशतात्रेन
केवशयन्त्रनके वशमे यकफूले। भूतनकेवशि मूढ़पिशाचनको वश
मेंभ्रम पेलन झूले॥ वोरूपकेवश लोलनको वश लालनके वशवैठ
अलूले। मंगल भांडसो स्वांगनकेवश थातम आपन आपुहि भूले
२८ ग्रंथनके वश पन्थनके वश संथनकेवश पाठकदूले। जोगन
केवश भोगनकेवश रोगनके वशमेंसह शूले॥ बोधनकेवश शोध-
नकेवश बोधनकेवश ज्ञान अमूले। मंगल पण्डित बेदनके वश
आतम आपन आपुहिभूले२९ बाहिरमें मनसंतसों लागत अन्तर
आनविचार विचारे। ज्ञानकथै निशिवासर तू खलाकाम कला
छुपिके अनुसारे॥ बात विवेक कि गवितहै नितमोहमयी मदिरा
वितधारे। मंगल स्वांगनसौं न सरैहरिकर्म कुकर्म समस्त निहारे
३३ क्योंनभजे हरित्यागि विषयरस नीरसलौकिन तूंवतिजावै।
जन्मअमोल गवांवत क्यों समुझायकहे समुझो न अघावै॥ ज्ञा-
नतहै पुनिमानतनाहि महाखलधौं अपनी लतिभावै। मंगल
ध्याउ मनोहर मूरतिअन्तरबाहिरजोश्रुतिगावै ३४ कानअघात
नहीं सुनिनादते नैनजुडात न रूप विलोकी। ज्योंरसना न थकै
शुचिस्वादते नाकसुवासते नाहि सशोकी॥ औ न त्वचा परसेलन
धाकत अद्भुतशक्ति सुधावहुगोकी ५। मंगल पांचथके मनथाकत
नातरु कौनसके मनरोकी ३५ कोअसभूतभयो जगमें जेहिके
मनमें न लगी विषयाशा। कामकि लोभकि क्रोधकि मोहकि
द्रोहकि छोहकिमोद विलाशा॥ खानकि पानकि आवन जानकि
स्वर्ग अवर्गकि मुक्तिप्रकाशा। मगल इन्द्रिय स्योमन जोलखुसो
विषयी भटक्यो भ्रमपाशा ३६ ॥ दंडक ॥ अलखकि बातसमु-

झोंचे न गुनावे, भ्रम वृथ हि लखावेजाहिं लखतन कोईहै। भ्रम बतावे जो चलायमान, बुद्धि वदै दुविधा, दुराशावश सुमति बिगोईहै। अगुणा सुनावे जोगुणानिकरि भांतिभांति, दंभकृतवात कैसे सुधि बुधि होईहै। मंगल जो अकर बताय कहै कीन्हे लोक तौ तौ द्वैत भाववश आपुरहा सोईहै ३७॥ झूलना॥ माला गलेडारे फिरैं रंग भालतनछालेपरे बैठेतहां ब्रानी रहैं ० ,

कोऊ आचारके वादी बडे, प्रतिद्वारकाथनको खडे लै भागवत पोथीअडे भाषैं सोहाविन बातको॥ एकादशम अर्थवहीं बिज्ञान योग लखावहीं औरोंकोसो समुझावही झूठेपिता हितु तातको। मंगल भुलाने लोभमें माया महामद क्षोभमें आकाश साधे थोभमें कहु मुक्तिको दरशातको ३८ उठिप्रात झाडैंगेहको पुनिधोय बैठें देहको पूजैं बिधोता नेहको दुविधाको हीमेंवासहै। पावै मनोरथ नाहिने धावैजो बायें दाहिने तीरथ शिवालय माहिने परब्रह्मको न प्रकास है॥ विद्या विधान बखानहीं बिज्ञान मारग जानहीं दृढ़ता नहीं उर आनहीं पंडितकहा चनशालहै। मंगल विचारैं योगको आशा लगीउर भोगको चाहैं नहीं भवरोगको बंधन महा भ्रमपास है ३९ गुणज्ञात को उरलेषना बिज्ञानको उपदेशना बैरागको तनभेसना धारण किये संन्यास हैं। जानैंननेती धोतिको अष्टांग साधनहोतिको भाषैं निरञ्जन ज्योतिको कारणलिये अभ्यास हैं॥ श्वासानरोकी एकहै योगीजनो अविवेकहै शब्दै अनाहद टेकहै वचनहिये जपन्यासहै। मंगल न धावे रामको पावै न सोमनकामको ठगताफिरै नरग्रामको परिणाम यमकीत्रासहै ४० जबतरवकोउपचारना तिहुंलोकको बिस्तारना करणी करमकरतारना संभिलान तीरान्नाथहो। अहंकार पुरुषप्रकृतिना शितकंठपूरण शक्तिना कछुयोगभगता भगतिना आनन्द दुखलहि साथहो॥ मनबुद्धिको निरधारना अविशातमा वियवहारना वैकुंठनर्क विचारना पूरणकलाशुभ गाथहो। मंगल कहां तवतू रहै अब सत्य क्यों नाहीं कहै सत्वै

कन मेरोदहे भूपति किनावत मायहो ४१ ॥सवैया॥जो वश्रनन्त
चेतिहुंलोकमे एकसो दूसरनाहिंवनोहे ॥ एकसिबुद्धि न वाकलि
बुद्धिनएकसो ज्ञाननचित्तलनोहे ॥ एकसोशब्दन एकसो तेजन
कलिथक्तिन भुक्तिमनोहे ॥ मंगल धन्यवनावनहार जहांतहएक
हरूपगभो हे ४२ एकस्वरूपतिहूं पुरडोलत रूपअनेक धरेबहुं
वानी ॥ ज्योंवहुरूपिय रूपवनावत आनहि आन प्रकारप्रमानी॥
आपनमेकछुभेदनलागत स्वांगदिखाय प्रसन्नतप्रानी । मंगलत्यों
प्रभुरूपकिये यहु एकप्रभा सवअंगसमानी ४३ ऊपरकोसिथ स्वांग
बिलोकत अंतरकोन कथाअनुमाने । साधुनहीं वकरूप प्रपं
चित भूति निचोलरंगेतन आनें ॥ एकनछाप विभूति विमर्दित
जानत पैमनमें शुचिज्ञानें मंगल अत द्विभांति वतावत साधन
की गतिकों पहिचानें ४४ शीशजटा तनक्षार विमर्दित हस्तकमं-
डलु सेजकुठामा । भालत्रिपुंड गलेवहुमाल भुजानदियेभलछाप
सुधामा ॥चर्म कुरंग विछायरहे नितज्ञान कथे सुकथाअभिरामा ।
मंगल जोनिजभाव नहीं दृढ़तो यह साधु किधौं छलसामा ४५
ज्ञान जडाउ विराजतशीशहिं भालविचारकी सोहतरोरी तोप
निचोलरंगेदृढ़ता निशि धीरजकेसँग प्रीतिन थोरी ॥ दीठिविवेक
विलोकतमारग राग विहून कि घूमतिखोरी । मंगल आतमबोध
गुरूअतसाधु महीतल मुक्तिकीधोरी ४६ पेंठहुमेंन खरीदततूमन
कौनु अनेठकी वातचलावे । दामलिये फेर कामनआवत वातन
के मनमोद करावे ॥ जानिलियो पहिचानि भलीविधि क्यों अब
झूँठ हमें भटकावे । मंगल ज्ञान विवेक विचारसों आपुहिंको स
आप बतावे ४७ ॥कवित्त॥ काहूथलपंडित्त स्वरूपधारिवेदपढ़े काहू
थलकवितनकृत कवितांईहे । काहूथलसाधुतनें साधनाअनेक
कृत काहूथलमौनीवनि बैठोमौनलाईहे ॥काहूथलचातुरी सिखावे
कहूंसीखेआप काहूथलविपुलकरत निपुणाईहे । काहूथलमंग-
लंदुचितो कहूंएकचित ऐसोप्रभु अलख अलख प्रभुताईहे ४८
सवैया ॥जोदुख औसुख येभवजीवहिं एकअदिष्टहिसोकहिदीं-

जिय। ताबिन आनन होत महीतल जो निर्वाणको मारगली जिय॥
तो दुखको सुख एकसमान हिं मानिस आतमके रसभी जिय।
मंगल ज्ञान गलीसकरी प्रबिशै मतिथूल न कोटिककीजिय ४९
ऊसरमें न उगै तृणकै सहु बारिद ओघरपैसुरपाना। धूहरवृक्षनपात
बिलोकिय कोटिउपायनसों गुणवाना॥ ब्रह्मबिचार निरूपणज्ञान
को त्यों कृत जो निजसत्यसमाना। मंगलजन्म जरापुनि ताहित
आसत है वदसाधुसुज्ञाना ५० जो यह जीव निराकृतताहिन है
तन लिगहिको अधिकारी। क्रांतिनहीं शुचिआतमदेवकी है
प्रगटो कछु पिंड बिकारी॥ तौहूं बिचारत आतमज्ञान सम्हारत
आतमध्यान अकारी। मंगल नर्कन स्वर्गहि आवत जाइ निवासत
धाममुरारी ५१ सूरजते प्रगटै जिमि आतप आय प्रदीपमिलै
रबिजाई। कोटि उपाय विधानकरै बिनुभानु न आतप देत दि-
खाई॥ त्यों सचराचर प्राण बिलोकिय ज्योति अपूरब ब्रह्म
लखाई। मंगल अंतमिलै निज नाथहि कौन अघोरथकी गति
पाई ५२ तो तिहुंकाल पुरान सुचारिहु वेद पुराणकथा सरसाई।
जेतिक जाहि समर्थ कथै त तद्देव अनेकनकी प्रभुताई॥ धर्मअधर्म
क्रिया पुनि कर्म भने सब भांति अनेक दुराई। मंगल संतमहातम
भाषत बैठि रहे सब लाजि चुपाई ५३ संतकहे हरि मानुष औ
अरु संतकहे लछमीद सुखानो। संतकहे पदमूलभयो अरु संत
कहे नभगोअ सकानो॥ संतकहे यशि क्षीण प्रभो पुनि संतकहे
बिधिपूजत हासो। मंगल संतकहे जाके हरि साहन ते प्रगटो
जगजानो ५४ ज्यों रबिपाय छिवात न देखत दोष प्रभाकरको
कि बिहायस। न्हातहि गंगपने मल छूटत होत न उज्वल धोवत
वायस॥ शुद्ध मनोगति होत नहीं तिमि धर्म सुतेरत इन्द्रिय
आयस। मंगल को उपदेश मनोहर मूढ़न लेवत कोटि उपायस
५५ ब्रह्म सनातन बेद बखानत कोबिद औ कबिता सब गावैं।
आदि अनादि अकारण कारण सत्य असत्य न सोउ लखावैं॥
बुद्धि समान प्रमान बिधान करै निरधारि निगूढ़ सुनावैं। मंगल

तू धिरया बिनुक्यों कहहै जु लँविग्ध नहीं बिधिभावें ५६ जोपै सुपूर्व स्वरूप कृपानिधि तौसुर तेरहर्मातिनचीन्हे। जोप्रभुमानुष आकृति गाइय तौ फिरि कोमत धारिया कीन्हे॥ क्यों पशुकीट कहीं मतमूरुख है खगमीन अकाशहि लीन्हे। मंगल सूतपिशाच वन आलर दृष्टिपरै नहि दृष्टिहिदीन्हे ५७ तत्त्वकहे मृतिकाजल पावक वायु सनातनहै प्रभुसोई। जो गुणतौ सतराजस तामस पूरुष औ प्रकृती नहि होई॥ त्रैसुरतौ बिधिबिष्णु सहेशनआयु बितीतत कालक होई। मंगलशक्ति अशक्तिन भास्वर दृष्टिविषे नहि सूझि परोई ५८ वृक्ष खजूरि लगेफल दूरिकिये वलभूरित्त पाथरजाई मूलबिनाकिमिधायचढ़ैमहिटूटिपरैनहि देतदिखाई॥ तातरु पात समीर कि सधिमें घूमतहे नहिँ होत गहाई। मंगल सोजड चेतनहै फल सतलहैं बिन पक्ष उड़ाई ५९ साधु कहा मन हाथ न जाकरध्यानकहा चितचेत नहीनो। ज्ञानकहा मति गोथिर नाहिंन भक्तकहा शुचि त्यागनलीनो॥ कौन बिवेक जो इन्द्रियकेबश क्षेमकहावशमोह न कीनो। मंगल ब्रह्म बिचारकहा जोपै आतम आपुन आपुहि चीनो ६० स्वर्ग निवास कहा मन तोषित नर्ककहा बहुआधि सताये। भोगकहा सुखमानके सँग सुन्दरबुद्धि समाधिलगाये॥ नर्ककलेश महा कृमिचाटत आमिक लौ बहुपथनधाये। मंगल भूल दुवौदिवि नर्क जोआतम ध्यान गहे सुखपाये ६१ आतम ब्रह्म निरंजन भाषत आतम देव अवेव भुलानो। आतम लोक अलोक अधीरज जंगम थावर रूप समानो॥ तत्त्व अहंकृत है गुण आतम बुद्धि बिधान समान बखानो। मंगल ध्यानसदा कृत आतम संतसमागम सोपहिंचानो ६२ बिष्णुभजे नरजन्म दुतीनिकु मुक्तिलहै जब सोहन जागै। शक्ति अनादि निरूपण जोकृतसोउनजन्म अदृष्टहित्यागै॥ शंकर ध्यायलहै शिवलोकहि अंतहु जन्म पदारथलागै। मंगल ब्रह्मबिचारि कहै उरआवत मोक्षहि सो अनुरागै ६३ एक भवैफल वृक्ष न जानत कौनदिशा कपहि देशहिलागो। एकलिये फल

खोजत पादप खातनहीं गुण औगुण पागो॥ एकते जानत पेड़ भलीविधि खात महाफलजी अनुरागो। मंगल एकन खातन जानत कोतरु कोफलमूलको सागो। ६४ बालक रूप महाशुचि सुन्दर देखनहारके चित्तहि भावत॥ अंधप्रशंसित रूपन देखत टोवनको निजहाथबढ़ावत॥ सूक्ष्म स्थूलन लंबन बाकलऊँच नीच जो हाथहि आवत। मंगल क्यो समुझै पुनिमूरुख पाखँड के कर ज्ञान गहावत ६५ दृष्टि न आवत रूप मनोहर शब्द अनूपनदेतसुनाई। भापि न आवत अद्भुत मंथहै शुद्ध सुगंधिन वासहुआई॥ सुष्टुपदारथहैं मनभावन कोटिहु भांति न होतगी हाई। मंगलहै नटवाकसमोहर देखेबनै नहिँजातचलाई ६६ मेघचले शशिमूढ़ बखानत नावचले तरुजातलखाई। बालक ज्यो बहुबारन घूमत वैठिलखैनिजदृष्टि उठाई॥ देशभ्रमैगृह बाहर भीतर भूनभघूमत देखतभाई। मंगलत्यो मनकोभ्रमणा विपरीत लखे भ्रमजातनथाई ६७ बालकता तरुणाईगई बिर धापनकेबहु श्वेतबिराजै॥ आनन दन्तबिहीन सुनैनहिँ दृष्टिपरै जगधुंधसमाजै॥ कम्पतहैं करइंद्रिय आनहु कोटिकिये नहि आवत काजै। मंगल मृत्युसमीपडरैनहिं रामकहै नकुकर्महिं लाजै ६८ क्योमन ढूंढ़तहै दिशिचारिहु स्वर्गचढ़ै अपवर्गहिधावै। तीरथमूरति जाप न पाठ न पूजनभोजनमे दुचितावै॥ संतनपूछिमूढ़तनबूझि सबैउपदेश मुनीश्वरगावै। मंगल सत्यगुरू निजआतमआपनभेद्रजो आपुवतावै ६९ पाठहुयाम प्रसिद्धपुकारत शब्दमनोहर हंसकि वानी। मूरुखलौं दशहूदिशि भ्रामिक अक्षरखोजत आखर वानी॥ चेति अलौं अपने घरवैठिय भूलिगयेधन मूलकिहानी। मंगल जोतिहुंलोकमेंपाइय सोअपनेघरहैम भुलानी ७० पांचहि तत्त्वनतेपुरतीनहु हैंविरचे करतारसुजाना। आपनअंश प्रवेशितकै सचराचरजीव कियेबिबिनाना॥ तोरशरीरसोपंचप्रभूततेहैं लघु दीरघकेरि प्रमाना। जोगुणसिंधुमें सोगुणबिंदुमे मंगलभावद्विती-

अरूपरूपवाल फिरिकौनहै अगुणबखान कृतगुणहीकोलोपहोत अजरबताये जराग्रसितनतौनहै ॥ कहतअनादि आदिद्वितियबिचारहोत भणतअखण्डखण्डदूसरनजौनहै । पुरुषपुराणसबठामनेमेंएकभाव मंगलनजानिपरै द्वितियकोगौनहै ७२ पुरुषबखान कृतनारिकोबिभेद होत अबलाबतायेनररूपी कोऊआनहै। क्लीवतनगाये बुधकबिसाधुमाने नाहि प्रतितेनबासभाषे मायाकोमिलानहै ॥ ऊरधनिवासकहीं प्रभुअधराजैकोनु श्वेतदीपसोहै आन द्वीपकोकौथानहै । मंगलअपार किमि वरणिबतावै ताहि अधिक नहीनहरि सदहिसमानहै७३ कीट औ पतंग पशु खगनर नाग मुनि देवता अदेव जेते त्रिपुरविचारिये । सबमें बिराजै एकभाव सबठामप्रभु सबनते न्यारोकरि ज्ञाननिरधारिये ॥ जैसेघटमठ धामसघनमेनाकमिलो बुद्धिचपदेखेन्यारो चतुरसम्हारिये। बुद्धि मेंनआवै नबिबेकज्ञानगावै कैसे मगलबतावै तातेचुप्पचित्तधारिये ७४ सवैया ॥ ज्ञानगलीचलि सूझिपरै कछु सोऊ बनेकहतेन अनूपा । बुद्धिअचंभित मोहितह्वै मन शुद्धिअशुद्धि परैभ्रमकूपा। लोकमेंनाहिं अलोकमेंनाहिन थोकमेंनाहिन रैयतभूपा । मगल है तुवरूपवहै बिनज्ञानगुरूलखि जातनगूपा ७५ दास अदासन दासकुदास बिचारतहैंप्रभु ब्रह्मसनातन । पालतएकहिभावचराचरमोहनरूप बसै सबगातन ॥ नीचकुलीन गुणीअगुणीमहिदेव गवाशको भेदनजातन । मंगलतासुप्रभालखि नैनन त्यागत संत बिरयत्रिपपातन ७६ आपनको सबज्ञानियजानत आपनकोसब ध्यानियलेखे । आपनकोसब भक्तप्रमाणत आपनकोशुचिहीअवरेखै ॥ आपनकोसबसंतबखानत आपनको तपसीतसपेखे । मंगलमानयहैकहिये भवआपनिमूरति आपुनदेखै ७७ जोविधिहैकरताभवकी यतनेरचतीतत कालनआवै । शंकरदेवसुरेशहुको मृतु नाशकरैयहवेदबतावै ॥स्वर्गनिवास सुपर्वतजै तनकालविलोकि नधीरजआवै। मंगलभूल महाजगजालमें क्योंनकृपानिधिकेपद ध्यावै ७८ कश्यपगे कहि धामअरे मन तेरहनारिनते जगपूरो।

यो मनुराज कहां भवतात रचेबहुअन्थ प्रबंध प्रभूरो ॥ मच्छकहां पुनि कच्छकहांमुनि दक्षकहां कियचाम समूरो। मगलतू मन मे नहि सोचत मृत्यु प्रताप सुने मुख भूरो ७६ स्यागत देह यथी सुकृती सब ओसर पायभयो मृतुहाको। जानि न जातकहां चलि जात न घूमिकहै सुबुधी निजयाको ॥ कौनदिशा क्यहि देशवसे तुर कौनके रूपअरूप प्रभाको। मगल मानिलयो मनतेनत का- कहुँ मोक्ष अधोगति काको ८० केतिककाल व्यतीतभये मनजौतु गयो रथलौटिनहाको । आनि बखान कर्‌यो न दयानिज नर्क गिर्‌यो किधौं स्वर्गहिताको ॥ भोगकर्‌यो किं मर्‌योनिज भूवहि रोगग्रस्यो कि अरोगहिछाको। मगल लोगकहैं सो सही क्यहि मोक्षकहैं यो अधोगतिकाको ८१ आवकहातेंन आपुहि जानत लोगनकेसुखसों सुनिमानी। ब्रह्मतेकर्मतेखानि निरोधतेआदम के तनरूह समानी ॥ पुत्रपिताते पवित्र सुजीवहै पूरुष औ प्र- कृतीहि प्रमानी। मंगलपै न पताकछुलागत खोजत आंधरवस्तु हिरानी ८२ ॥ यथाकबित्त ॥ कोरीकोजमाई एकमूढ़ चल्यो सासुघर चीन्हत न सासु न ससुर निजसारेको। गांवके निकट जात नामहूंको भूलिगयो चकित भ्रमात पुर सकल दुवारेको ॥ कोऊ याहि जानैनाहिं यहै पहिंचानै नाहिं बिकल महान मन कीधौं मतवारेको। मगल सकोचिमन लोगनसोंपूछैलाग जानत सजान कोऊ ससुरहमारेको ८३ ॥ सवैया ॥ मातुकहै सुतमोर अहै अरु तातकहै सुतसों निजपूता। नारि वदै पति पुत्र पिता प्रपिता कहि नाति मचाव अकूता ॥ मित्रकहै हितुशत्रुकहै अरि शिष्यकहै गुरु आदिप्रभूता। मगलपैन पिछानतहै कोउ साहिब होइ कि किङ्कर दूता ८४ जीवचराचर जे पुरतीनि प्रकाशित है सबमें पुनि आपू। ज्यों सब वस्तु प्रकाशक भानुहि ज्ञान बिना भ्रमपूजन जापू ॥ शुद्धसतोगुण पूरिरह्यो निजअज्ञतमोगुण रजता- दापू। मंगल मोहन मूरतिध्यावत लागतहै बरदान न आपू ८५ ज्ञानबिना तिगसेभ्रमहै नहिबूझत मूरखसार असारा। हूरिवदे

भरिपूरि रहा अतिपास भने प्रभुसत्य अकारा॥ अन्तर बाहिर आवत जावत आपनभेदसो आपु पुकारा। मंगलपै नहिं मानत तू गुणलयागत औगुणहोत पसारा ८६ कश्यपकी दयतो तिन्हिसा तिनके सुत तीनिहुं लोकभरेहैं। स्वेदज अण्डज योनिज उद्भिज्ज आदिहु खानिनमें पसरेहैं॥ एकतेरूपअनेकभये बिनु कश्यपक्यों कहिये बगरेहैं। मंगल कश्यपको जोपै ढूढ़िय तौ नहिं काहूके धामपरेहैं ८७ जाग्रतमें दुखही दुख देखियहै स्वपने महँ तच्छ कराला। इन्द्रिय थूलसो जाग्रतमें अरु सूक्षम सो स्वपने कृत आला॥ कारणरूप सुषुप्तिहुमें चकिचौंकि उठै अहिरे भ्रमभाला। मंगल क्यों निरधारलहै दुविधा तनतीनिहुं में बिकराला ८८ कारण देहमिटे सुनुरेमनका कहिये बुधिमें न समाई। वृक्षकहां फलफूल सुगन्धिजो बीजहि हानिपरै असताई॥ पांचहि तत्त्वन ते तिहुलोक जो तत्त्व बिनाश तौ लोकनभाई। मंगलकारण आदि बखानिय बादि समस्त अहै निपुणाई ८६ श्रीपरमातम पूरण रूपजो अंतर बाहिर आपुबिराजै। ज्ञान अज्ञानप्रवीण सं मूढ़न पावत जाकरशुद्ध समाजै॥ सो जगदीश बतावत पासहि सन्त महन्त कवीश अकाजै। मंगल अन्ध अज्ञान बिना गुरुपंथ न हेरत आवतलाजै ९० बालक तामहँ मोहनहीं बड़िभूलक्रि शुलगो मनमेंहै। प्रौढ़भये कछुमोहसकाम इतैउतहेरत भूवनमेंहै॥ वृद्ध तुरायमहँमोहबढ़ो उर ज्ञानकहा प्रभुताधनमेंहै। मंगल अंतक अंतमरयो सब छोड़िगयो अबही क्षणमेंहै ९१ तीरथको मगदेतमिटै अवधौं कविपण्डित लोगबखानै। स्वर्ग बसै व्रतको फलपाय बिलासकरै मखसों सुरथानै॥ जो अघभोग दुवौप्रसि त्यागत सोक्त तीरथ औ व्रतठानै। मंगलमोद समेत भजैहरि मुक्ति पदारथ करतल आनै ९२ काम सतावत क्रोध जरावत लोभ भ्रमावतहै चहुधाई। गर्व गिरावत दम्भ रिझावत संतन भावत है जड़ताई॥ मोहनसावत ज्ञाननआवत चित्तचितावत आन उपाई। मंगल भक्त कहावत ऐसेहु एकहु भावनभक्तिलखा-

है ६३ सत्य न जानत झूठ बखानत मानहि मानतहै रुचि ताई। मूरति पूजत भोजन भूजत हैं बहु कूजत खाई अघाई॥ धर्म दुरावत कर्म करावत चित्त न भावत आन बडाई। मंगल भक्त कहावत ऐसहु एकहु अंक न भक्तिलखाई ६४ जानत आपनको शुचि आतम आननको अपवित्र विचारै। आपनधर्ममनोहरहै यहिनाहिभलो दृढज्ञानप्रचारै॥काठगढाय गलेगहिबांधिके मूरतिपूजि गुमानहिधारै। मंगल नेकुदयाउरमें नहिंभक्तकहावत ज्ञानबिसारै ६५ आतमवास शरीरबतावत लोगनको मन भक्ति तेटारै। देवननीदिकरैबकथादु न स्वादुलगैमुखलीभपचारै॥बात्त नमानत संतनकी नक्रोधकिवागि हियेकछुधारै। मगलजोहैठि आतमपूछिय तौफिर बत्तिसदांतनिकारै ६६ ब्रह्मनिरंजनज्योति बतावत कोऊकहै निरवाणविलासी। श्वेतसुदीरघ बखानतकौनहु ग्रेपकेशीश कहैमनभासी॥ कोउबदै हरिधामसुआनहि जानतहै मुनिज्ञानप्रकासी। मगलकेउरमेंदुविधा फिरिहै समठामहिंकौनु बिलासी ६७ ब्रह्मजोहै नरकाय विराजत तौपशुकीट विहायसकोहै। देवनमेंनित संतनमें प्रभुबास करै गुणपंडितसोहै॥ दैत्य असंतनमेंपुनिकौनु बिराजिरहा गुणऔगुणजोहै। मंगल भूलकि कतकहोन द्वितीयकहींइकआपुहिदोहै ६८ एकबखानतहैद्विविधाक्यहिभांतिकहैवक्तापुनिकोरे। वाहिपुमानभने यहिनारिन नारिपुमान गुमानकेभोरे॥ एकअपार द्वितीय अनादि बखानत केतिकहैंमतिथोरे। मंगल सूरजधूप द्विभांतिन ज्ञानबिना सबके करजोरे ६९ कवित्त॥ ब्रह्महीतेमाया ताते तीनिगुण पांचतत्त्व सूक्ष्मसथूलकवि दुनियलखावैहै।तत्त्वनतेसातनाकदेववासदेखियत सकलपत्ताउत्पत्ति तत्त्वकरिगावैहै॥ वादिऔअनादिजगद्विविधिवखानैलोग मंगलकेचित्तएवसांचीबातआवैहै। मेरीजानै बिश्वनाथ बालकस्वभाव जैसे रचिकैघरौदा पुनि आपुहिमिटावैहै १०० क्षमामिटिगंधिहोत गंधिनीरयोगलेत आपरसरूपपाय रहतनलेयहै। पुनिरस पावकमेंरीरमिलि जातपुनि पावकहुरूप

होतकहतसुदेशहै ॥ रूपपवमानहोत कहतसमीर पुनिपरसमें लीनसोतो नभहिप्रवेशहै। नाकमुनिशब्दसोतोहोत अहंकारपुनि प्रकृतिपुरुष हरि मंगल हमेशहै १०१ सवैया॥ केतिकपण्डितऔ कविचातुर देवअदेवमुनीशसुजाना। गावतजाकरि कीरतिरैमन पावतपारनवेदवखाना॥ तासुकथा किमि जोनिलके वकवादु करै किचुपायअमाना। मंगलगूढ़ कहाकहिये करिये मनहीमनताकर ध्याना १०२ ज्योंवमहेश विरचिसुरेशहु जाहिभजैकछुभेदनपावैं देवअदेव, कवीशमुनीश क्षमाधरकोविदआनन गावैं ॥ जाकरभेदन भाषतसंतन पीरगुरु कथिअंतवतावैं मंगलसो परमातमअव्यय धूर्तप्रत्यक्षवदैं औलखावै १०३ काकरध्यान कहैवुधितू अबहीं तुवरूपहिसोमनमाना। रूपनरेख अनीह अनाकृति श्वेतनपीतन श्यामप्रमाना॥ आदिन मध्यनअंतनतत्त्वन मातपितागुरुबधुन गानो। मंगलआपुहिआपु बिचारत जानतआपुन जानतआना १०४ एकहिपाट बिछायमहीरचि ब्राह्मणशूद्र कुलीनरुनीचा। तापर बैठियेनावत जेंवत खोवतज्ञान बिनीतनगीचा॥ जोसमुझैमनमें गुणचारि सोदूसरमानतहीं मनहीचा। मगलतूमन शूकरलौंजल पान करै प्रथसै करिकीचा १०५ एकाऋचानि सुनी कवहूं कहैं वेदनकीहमजानतवानी। आगमकोनहि अक्षरजानत नीदत हैं अवरूपअज्ञानी ॥ पाठकस्यो न श्लोककवी कहैं भाषि पुराणन तुच्छकहानी। मंगलक्यों समुझैजडमूरख आपनहीं मतमानत मानी १०६ सूर कही सन श्यामकथा तुलसी रघुनायक गाथवखानी। दासकबीर वंचो संतिरामहिं नानकनाम भयो रुचिमानी॥ दादूमलूक धना सदना अरु गोरख वाणि भली पहिचानी। मगलमूढ़कहैं इनते हमहैं अधिकै जो भणे निजबानी १०७ जेखल खोजतहै धनको तनको रँगिके करबेत लगाये। लोगन सो जगनाथ पुरीकर पंथबताइ चहैं भटकाये ॥ ज्ञानकथै बदिवादबडो सुनिसाधुलखे जनुआनँदपाये। मंगलतै ठगिजात सही न कही न कहीअपनी अनखाये १०८ वामनसों नितप्रेम

श्रद्धावतना मनसोंश्रनखाय न वामी। दामगुलाम जो सेवकपेटके मांगतद्वारनवामनधामी॥ रामरहीम करीमजु केशव बाद बिवाद करें मतिखामी। मंगल तू चुप क्यों न गहे अनसंगकिये जगसे बदनामी १०९ शब्द अनाहद होतमही जब मूंदि सुनै दशहू तनद्वारा। वायुनिरोधत शब्दउठै यह ज्ञान अखंड प्रवीण विचारा॥ जोतमुझौ मनजानि परे तसझालरि शंखमृदंग उचारा। मंगलप्राण अपानकिये अलपायुनशै सुखसोंकरतारा ११० शून्य समाधि लगाय बिलोकत धूमिल धूसर रंगपसारा। जो त्रिकुटीतटलौं चढ़िजाय लखै सुत्रिवेणि कि पावन धारा॥ भ्रम षट्कछु होत प्रकाशहै भासत योग प्रचारन हारा। मंगलखोजत ब्रह्मतहां नहिंआनस्वरूप जो आनप्रकारा १११ ढूंढ़िफिर्यों बहु तीरथमूरति बूझिफिर्यों बहुपंथअथाई। खोजिफिर्यों बहुभेष मशायख शोधिफिर्यो कितनीगुरुवाई॥ बादबिवाद अनेककिये कहुला जिगयो कहु आनलजाई। मंगल सांचु कहावतहै यहछूंछपछोरत जातउडाई ११२ काहुकह्योउठिप्रातहिंन्हाइयपूजिय देव सुध्यानलगाई। काहुकह्यो कलिमाबिन मोक्षन काहुकह्यो निरबाणगुसांई॥ काहुभन्यो गुरुबिप्रप्रतारत काहुबखान स्वग्रंथ कथाई। मंगलकोनहिं शोधभयो जसछूंछपछोरत जातउडाई ११३ योगवशिष्ठ पढ्योकछुसादर दासकबीरके ग्रंथ मंगाई। जीवनके कछुपंचकभाषि सुनीकछु सुन्दरकी कबिताई॥ बादकरैं कविपण्डितसों अरु नोंदतहैं मुनिदेव कथाई। मंगलसांचुकहावतहै कुम्हड़ा मुखमें न अजाकेसमाई ११४ देवनकोनित हैपरि देवन सेवनकी किमिबात चलाई। आतमभूत कुलालसमानहै पालकबिष्णु नठीकलगाई॥ शंकरकोपिसँहारतहैं यकब्रह्मनहीं बहुठाम दिखाई। मंगल सांचु कहावतहै कुम्हडामुखमें न अजाकेसमाई ११५ आपुन कर्म कियेनकवौं कहैं कर्मकिये कछुहोत न भाई। दास कबीर मलूक धना तुलसी गुरुनानक भाषि सुनाई॥ यों शुकदेव भन्यो गुरुगोरख कर्मबमीजत मुक्तिनपाई।

मंगल पुष्ट पठान विजय वेहनो निज मगन फूलिलमाईं ११६
श्रीगुरुनानक दासकबीरके आनहुं पंथमें लीन्ह मुडाई। मानत
हैं फिरि वेद पुराणनि तीरथ औ व्रत देत उडाई॥ वाद विवाद
विषेद करैं अरु भाषि कहैं गुरुग्रंथ गुढ़ाई। मंगल पै निज भेद
न जानत खांड बँधावत ऊख पराई ११७ वेदको अक्षर कान
सुन्यो नहिं बादि कहै श्रुतिसार असारा। आगमको कहुं रूप
न देख भनैं झगडा वड शास्त्र विचारा॥ बादि कहैं हम ब्रह्म
बखानत देत लखाय अखंड अपारा। मंगल आपन भेद न जा-
नत भीति उठावत ईट न गारा ११८ ज्यों पवमान प्रसूनके
संगते आवत शुद्धसुगन्धि लखाई। सोई समीर कुगन्धि निकेत
ते बाहिर होत कुबास बसाई॥ धौरकुजाइ सुगन्धि कुगन्धिनि
शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई। मंगल त्यों यह जीव अबोधित
पापरु पुण्य असो नहि जोई ११९ लोचन हीन न अंध बखा-
निय नैनसमेत न देखनहारा। पंगु नहीं पगहीन चलै नितपंगु
चहै पग नाहि बिकारा॥ मुक्त रहै रसना शुचि सो हरि बोलत है
नहिं जीभ सहारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहिको करि
देखु बिचारा १२० दपडचहूं दिशिते नहि रोवत रोवतहैं सुखके
अधिकारा। सोवतहू महँ जागत देखिय जागत सोवत के अनु-
सारा॥ गावतहै न बिवाहमें गीत अँस्वारथ ताल मृदंग पसारा।
मंगलहै यह अद्भुत कारण जीवहिको करिदेखु बिचारा१२१ मूढ़-
नके सतसंग बिहारत साधन संगतिते कहुन्यारा। ज्ञानिन सें
नित रासकरै कहु ध्यान लगावत पार अपारा॥ न्हात जन्हात
खवावत खातन पाठक पाठित शुद्धप्रचारा। मंगल है यह अद्भुत
कारण जीवहि को करि देखु बिचारा १२२ चेतन वस्तु सही
तनुमें बिन चेतन चेतन दृष्टि न आवै। अंधहि दीप दिखावित
सूझनं खोजन को निज हाथ बढ़ावें॥ लोग सबै हठिवाद बदैं
परमातमहै तनुमें न लखावे। मंगल भूलकि बातयहै ज्यहिरूप
नहीं त्यहि देखनधावै १२३ चौपड मन्त्रलिये यक डोलतअ-

मिष भोजि सुराकृतपाना । बातन मानत आननकी यकधाम कि सेवतही वधठाना ॥ एक तजे मदिरा अरु आमिष दक्षिण भागलिये अभिमाना । मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपैकरै परमातम ध्याना १२४ काकर पापधसै कयहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकासै । काकर पाप निवासत नरकन काकर पाप जो स्वर्गबिलासै ॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पापसुमुक्तिप्रभासै । मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अनयासै १२५ यातनुमें यक चेतनहै ज्यहिशक्ति सबै तनु इन्द्रिय डोलै । चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्षम थूल न कारण खोलै ॥ सोवत जागत जागत सोवत आपवखानकरै अनमोलै । मगल भक्ति अनंतवहै बिन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं दुख औ सुख व्यापत नेह न नात न पास न दूरी । जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीयरहै यक भावन अल्पनभूरी ॥ जीवतहै न मरै मृतु अंतक रूप अरूप रहातनुपूरी । मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवनमूरी १२७ छूति औ पाक कछूनहिं मानतनीच कुलीनदुवो यकसारा । खात अघाइ ठठावत पेटहि रामभजै नहितत्त्व बिचारा ॥ ऊपर हंसस्वरूप बनेसति भीतर बायस रूप अपारा । मंगल नावत चेपहिमाथ भलो रजतेकरि सांप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी निज भावत बापकिगावत दाढ़े कि लावत । पंथकि आवत ग्रंथसुनावत ज्ञानि कहावत बेद मिटावत ॥ कर्मनभावत धर्म भ्रमावत आन बतावत आन करावत । मंगल जो अपनी कछु पूछिय तौ जमुहात वृथा मुख वावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीडत पांववँधेनर झूलझुलावै । भूतिवने अवधूति बने बिन जूतिचलै पग कंटकधावै ॥ भूमि गडे तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै । मंगल कर्म अस्वारथहै नहिँ खोजनहारके हाथन आवै १३० ब्रह्मकि बाणि भरी सब बेद कलामखुदाजो कुरान कहावै । आगम बाणि मुनीश्वनकी जुहदीस रसूलकि बाणिबतावै ॥ बाणि पुराणमहा

मुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान लखावै। पुस्तक जैनसो पारसबाणि चहू दिशि मंगलबाणि जनावै १३१ जेतिक पंथ महीतलहैं सबमें यकबाणि नवीन भरीहै। एकबिलोकिद्वितीय बनावत सो उपमा ममचित्त अरीहै॥ ज्यों यकराग अलापकियों सुनि आनहुं तासुकि कूक करीहै। मंगल बाणि विवाद चहूं दिशि ब्रह्मबखानत बाणिढरीहै १३२बाणिकहै यक सगुणनिर्गुण बाणिकहै यकब्रह्म अमाया। बाणिवदे सबठाम कृपानिधि बाणिभनै प्रभुहैयहि काया॥ बाणिकथै यकसिर्जनहारहै बाणि कहै यक पालकपाया। मंगल बाणिगुणे यकहंतक आदिअनादि बतावत माया १३३ एक कि बाणि द्वितीय न जानत एककि बाणि अनेक लरैजू। कूकुर भूँकि उठोभ्रम खाय सुनेत्यहि आनहु भूँकिपरैजू॥ बाजिमि बोलिशृगालउठो सुनतेबहुतासँगही फिकरैजू। मंगल बाणि अजीत महाकछु नीककहो तो बिमूढ़ जरैजू १३४ सूरज अस्त समय दिनहै किधौं रातिकहो कवि पण्डित ज्ञानी। छांह औधूपके मध्यकहा किधौं धूपकि छांहवदौ गुणखानी॥ पूछत मंगलसों बहुलोग पतावन में अतिहोतगलानी। ईश्वरजीवके मध्यतथा बढिसंधिपढी नहिं जातबखानी १३५ चिन्तत चित्तगहै अहँकारगुणानिकरै मनबुद्धिदृढ़ावै। पाप अपापअसैयहिजीवहिं कैयोंदुविधा अपनेमनआवै॥ मोहनखाय अघायसुभोजन सुंदरआपनपेटठठावै। मंगलभूलि बडीभवमेंतजि साहिबसेवकराजबतावै १३६ चित्तकहाभवआशकहो अहँकारकहा दुबिधा तनुतापै। कौनअहै मनहैभ्रमखाबुधिरूपकहा थिरतातनु आपै॥ चित्तनहीं अहँकारनहीं मनबुद्धिनहीं यदिज्ञानप्रलापै। मंगलहै यकतू विधिचारि विचारिहिये किनदोपनढापै १३७ कारणदेह रहै जबतोगिनहीं तबज्ञान अज्ञानबखाना। इंद्रियज्ञानन कर्मरहै मनबुद्धिनहीं शुचिब्रह्मसयाना॥ सूक्ष्मतत्त्व नदेखिपरै नहिमातु पितागुरु नामहिज्ञाना। मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव कहैंबुधिमाना १३८ लिंगशरीर लियेनवतत्त्व कहौंकिमिसत्रहथूल

मिष भोजि सुराकृतपाना। बीतन मानत आननकी यकबाम कि सेवतही वधठाना॥ एक तजे मदिरा अरु आमिष दक्षिण भागलिये अभिमाना। मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपैकरै परमातम ध्याना १२४ काकर पापथसै कयहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकासै। काकर पाप निवासत नरकन काकर पाप जो स्वर्गविलासै॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पापसु-मुक्तिप्रभासै। मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरजनमे अनयासै १२५ यातनुमें यक चेतनहै ज्यहि शक्ति सबै तनु इन्द्रिय डोलै। चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्षम थूल न कारण खोलै॥ सोवत जागत जागत सोवत आपवखानकरै अनमोलै। मंगल शक्ति अनंतवहै विन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं दुख औ सुख व्यापत नेह न नात न पास न दूरी। जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीयरहै यक भावन अल्पनभूरी॥ जीवतहै न मरै मृत्यु अंतक रूप अरूप रहातनुपूरी। मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवनमूरी १२७ छूति औ पाक कछूनहि मानतनीच कुलीनदुवौ यकसारा। खात अघाइ ठठावत पेटहि शंमभजै नहिंतत्त्व बिचारा॥ ऊपर हंसस्वरूप बनेसति भीतर वायस रूप अपारा। मंगल तावत वेषहिमाथ भलो रजतेकरि सांप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी निज भावत बापकिगावत दाढ़े कि लावत। पंथकि आवत ग्रंथसुनावत ज्ञानि कहावत वेद मिटावत॥ कर्मनभावत धर्म भ्रमावत आन बतावत आन करावत। मंगल जो अपनी कछु पूछिय तौ जमुहात वृथा मुख वावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीडत पांववँधेनर झूलझुलावै। भूतिबने अवधूति बने बिन जूतिचलै पग कंटकधावै॥ भूमि गड़े तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै। मंगल कर्म अस्वारथहै नहिं खोननहारके हाथन आवै १३० ब्रह्मकि साखि भरी सब वेद कलाम खुदाजो कुरान कहावै। आगम साखि मुनीअनकी जुहदीस रसूलकि साखिबतावै॥ साखि पुराणमहा

मुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान लखावै। पुस्तक जैनसो पारसवाणि चहूँदिशि मंगलवाणि जनावैं १३१ जेतिक पंथ महीतलहैं सबमें यकवाणि नवीन भरीहै। एकविलोकिद्वितीय बनावत सो उपमा ममचित्तधरीहै॥ ज्यों यकराग अलापकियों सुनि आनहु तासुकि कूक करीहै। मंगल वाणि विवाद चहूँ दिशि ब्रह्मबखानत वाणिढरीहै १३२वाणिकहै यक सगुणनिर्गुण वाणिकहै यकब्रह्म अमाया। वाणि वदै सवठाम कृपानिधि वाणिभनै प्रभुहैयहि काया॥ वाणिकथै यकसिर्जनहारहै वाणि कहै यक पालकपाया। मंगल वाणिगुणे यकहंतक आदिअनादि बतावत सार्या १३३ एक कि वाणि द्वितीय न जानत एककि वाणि अनेक लरैजू। कूकुर भूँकि उठोभ्रम खाय सुनेत्यहि आनहु भूँकिपरैजू॥वाजिमि बोलिश्रृगालउठो सुनतेवहुतासँगही फिररैजू। मंगल वाणि अजीत महाकछु नीककहो तौ विमूढ़ जरैजू १३४ सूरज अस्त समय दिनहैं किधौं रातिकहो कवि पण्डित ज्ञानी। छाँह औधूपके मध्यकहा किधौं धूपकि छाँहवदो गुणखानी॥ पूछत मंगलसों बहुलोग बतावन में अतिहोतगलानी। ईश्वरजीवके मध्यतथा बडिसंधिपरी नहि जातबखानी १३५ चिन्तत चित्तगहै अहँकारगुणानिकरै मनवुद्धिदृढ़ावै। पाप अपापथसैयहिजीवहि क्योंदुविधा अपनेमनआवै॥मोहनखाय अपायसुभोजन मंदिरआपनपेटठठावै। मगलभूलि वडीभवमेंतजि साहिवसेवकराजबतावै१३६चित्तकहाभवआधकहो अहँकारकहा दुविधा तनुतापै। कौनअहै मनहैभ्रमखावुधिरूपकहा थिरतातनु व्यापै॥ चित्तनहीं अहँकारनहीं मनवुद्धिनहींयदिज्ञानप्रलापै। मंगलहै यकतूविधिचारि विचारिहिये किनदोषनढापै१३७कारणदेह रहै जवतोरिनहीं तबज्ञान अज्ञानबखाना। इंद्रिय ज्ञानन कर्मरहै मनवुद्धिनहीं शुचिब्रह्ममयाना॥ सूक्ष्मतत्त्व नदेखिपरे नहिमातु पितागुरु नामहिजाना। मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव कहैवुधिमाना१३८लिंगशरीर लियेनवतत्त्व कहौंकिमिसप्तहृष्ट

प्रमाना ॥ इन्द्रियकर्मनज्ञानअहै दशबुद्धिहियमेमनपंचकप्राना ॥
कर्मप्रताप विलासभयो लहि थूलशरीरभयो अभिमाना । मंगल
कौनकहै मनकीगति सत्यअसत्य विवेकअयाना १३९ थूलशरी-
रको जाग्रतहै जयहिके कृतमानतदेव अदेवा । लिंगविभेदजोस्वप्न
कथाजहँ सत्यअसत्य लखेबहुभेवा ॥ कारणरूपसुषुप्ति विचारिय
सत्यअसत्य दुवौत्रिटितेवा । मंगलकारणके परकीगति लोइतुरी-
य विलक्षण एवा १४० बालकतामें सतोगुणव्यापत शुद्ध अशुद्ध
कछून हिंजामैं । प्रौढ़भये तरुणाईगहे उरव्यापतमोगुण क्रोधसकामैं ॥
वृद्धवेही क्रमहोतरजोगुण ज्ञानअज्ञान दुवौभ्रमतामैं । मंगल
अंतत्रिदोषमिले यहजीव प्रबुद्धलहै परधामैं १४१ जोअजन्मा क्षि-
तिजन्मधरै अरुजोअनूयोनि सोयोनिनधावै । जोविभुसो क्षिति
होतसेजा अरुजोनु अनीहसोदेहनआवै ॥ अद्भुतशक्ति अशेषविप-
रीत ताकेरकीरतिकशोकरिगावै । मंगलयोनिरहौ मनहौमन
नासप्रभासनति वाणिजतावै १४२ कवित्त ॥ आशावश तीरथफिरत
दिशिविदिशिहु में आशावशकरतसुव्रतमनमूढ़है । आशावशकीरप्रात
आशावश कीरन्हान आशावश देतदानद्रढ़तअद्रढ़है ॥ आशावश
ठाढ़रहै आशावश बेहदहै आशावश बालकविलोकै ज्वानबूढ़है ।
आशावशमंगलकवित्तछन्ददोहाकहै आशापरे जीवपावै वडोज्ञान
गूढ़है १४३ आशावश पाठजाप आशावश ज्ञानध्यान आशावश वि-
पुल करतरागधावैहै । आशावशमोहद्रोह आशावशकामकोह आशा
वशरामराम रटतस्वभावैहै ॥ आशावशनातगोत आशावशधामहोत
आशावशदेवजन कीरतिसुगावैहै । आशावशमंगलदुचितोनित
भूमितल आशापरे जीववडो गूढ़ज्ञानपावैहै १४४ आशावश विक-
लनरकवास पावैआप आशावशसुरपुरलहत निवासहै । आशावश
उपजि मरत बारबारदेखु आशावश मोक्षिजात प्रभुपदपासहै ॥
आशावश पापलागै आशावशपुण्यजागै आशावशसम्पदाको अधि-
कविलासहै । आशावशमंगलमुजानता दिखावैनिज आशापरेगूढ़
गतिज्ञानको विभासहै १४५ आशावश भूतनकोदेत बलिभागदेखु

आशावशदेवलमें देवपूजैधाइहै। आशावशक विगुण आदरविचारै वित्त आशावश कुवचवदन भ्रमपाइहै॥ आशावश यागदान होम संयमादिकृत आशावश ऊर्ध्वपवन ठहराइहै। मंगलनिराशहोत पूजै मनकामनान भेटकृति आशावश दुविथाकोभाइहै १४६ अटवीनिवर्जिजोत्रिलोकैराम सत्यभाव तौतौकेतेबनवासि बनहीमें बासैहैं जोपैजलशायीभगवान भेटैसत्यतांततौतौ जलमानुषको जलमें बिलासैहैं॥ जोपै निरवासना मिलतप्रभु धायधाय तौतौ बालकोदिनमगनअनत्रासैहैं। मंगल विवेकीसाधु सुनिर्जनज्ञानवान तिन्हैंन सहाइदम्भप्रकट निरासैहैं १४७ सवैया॥ चन्दनभाल बिये यकमुन्दन एकत्रिपुंड्र चढ़ावत माटी। कण्ठवँधी बहुमाल सुकाठकि गोलरची तुलसी तरुकाटी॥ रुगिभुजाउरहारिसुलोचनकोउरहैलपसी मुखचाटी। मंगलज्ञान उदोत भये यह दम्भ लखात महा खटपाटी १४८ पावक पूजत ईश्वर जानि कोई कृतसागर पूजनधाई। पूजत भूमि समीर महीधर सूरज चांदशिलानि भलाई॥ सूरति साहबसाहिब मानत पूजन में रुचि होत सदाई। मंगल ज्ञान उदोतभये उर भ्रामिकहै यह दम्भ लखाई १४९ जानि सकै हरिकी गतितौ भ्रमजाने बिना ते महाभ्रमलागे। गाय कहै जु अकत्थ बड़ो भ्रमगाये बिनाउर प्रेम नजागे॥ चखोति निरञ्जन नैन लखैभ्रम देखे बिनाकस तारत पागे। मंगल तू इतही उतही भ्रमहै इतही उतहीकिन खागै १५० देखत नैनन आपुन रूप अनेक द्वितीय स्वरूपनिहारै। कान सुनैनिज नावनहीं जगबाद सुनैउर प्रेम प्रचारै॥ घ्राणनि गंधि न सूंघत घ्राण अनेकन गंधिकुगंधि विचारै। मंगल ज्योंतु विलोकित नीरचहै घृत आपुनआपु उचारै १५१ आदि कहौतो अनादि कहा अरु मध्यकहा पुनिअन्त कहाहै। जोपै अनादि कहो परमातम तौ फिर कौन प्रकाशि रहाहै॥ जोअनुमान कहौ तो बड़ाभ्रम ध्यान प्रत्यक्षन रूप सहाहै। मंगल क्यों निरधार लहै भ्रमज्ञान गुरु मुखज्ञान लहाहै १५२ वेदवदै इन

वेद बदें सब आगम और पुराण बतावें। सन्तवदें जुमहंत
मुनिराज वदें कविपण्डित गावें॥ धूत बदें अवधूत वदें बुध
वदें अनुमान लखावें। मंगल क्रूरबदें विपरीतहि पूरपरे नम
पछितावे १५३ ॥ कवित्त ॥ कहत जुबूरहे किताबभगवान
किलाइकेदाऊद सबलोगन सुनाईहे। अपर भणत तौरेत भ
वान भापी सोई लाइ मूसा केतीकीन्ही चतुराईहै ॥ ईसा
इंजीलसुनी कहत महम्मद कि बडी फुरकान जो खुदाई
बनाईहै। मंगल किताबचारि एकही कोहालकहैं एकमतनाहि
बातेबडी भ्रमताई है १५४ ज्ञानसमुझावे कोई बेदन किंगा
भापि आगम पुराण आदिसकल ढढाइके। चातुरी बतावे विप
यानकी अनेक भांति आतुरी लखावे रणकाज भलिभाइके
राजकाजै बातनमें भेदभाव भाषिकहै यवनादि विद्यता सुना
मोद पाइके। मंगल सुजान होत बुद्धिया लखात चित्त सुमति
विहीन मूढ़रहत चुपाइके १५५ कोऊ कहे मक्के औ मदीने
निजात होत कोऊकहे काशी किधौं गयामें निजातहे। कोऊक
रोजेऔ नमाज़ बिन पारकहां कोऊकहे पूजापाठ सुमति ढढ़ा
तहे ॥ कोऊकहे दाढ़ी मेरी नूरहे खुदाई यार कोऊ कहे शिखा
कीधौं धरम विभातहै। मंगल कहत कोऊ सुन्नति ईमानदार
कहत जनेऊ कोऊ भ्रमही कि बातहे १५६ कोऊपट ओटकरि
भोजन बनाइ खात कोऊखाइ अचवत चौकहीमें तातहे। कोउ
तनु भूतिलाइ बसन विहीन डोले कोऊ माला तिलक रंगत
निजगातहे ॥ कोऊ मारि पक्षी पशु कहत विहिश्त जात कोउ
बडो जैनी माँस मदिरा न खातहे। हिन्दू औ मुसल्मान आप
आपराकसाने मंगल कहत सब भ्रमही कि बातहे १५७ बेद
वेद अंग इतिहास के विवाद सुने गुने चित्त आपने कथान के
विधानको सारासार बूझिमन बोधे बहुभाति नित्य सत्य ज्ञान
आमवास रहत सुजानको ॥ वेदको बनायो औ चलायो कासुहार
तात चलत को ताकी चाहि मानत प्रमान को। मंगल महान

भूठ कौनी भांति दूरि होइ गुरू सत्यबादी कौनशिष्य ज्ञान मानको १५८ परम प्रधान बेद गावत कितेव जाहि कहैं शिर ताज सब लोगन में एकहै। रविसित भानु जहां करत प्रकाश नाहीं रोशन सों आपकीधौं सूरज अनेक है॥ अजशिव आदि काल होतजाके क्षणहि मे ऐसा करतार सदा अनव्यतिरेक है। सींक ओट मंगल पहाड जैसे भाषियत तैसे जीव पारब्रह्म बिबुध बिबेकहै १५६ सात सुरबास सात नागलोक आदि धाम काल बश सकल नशात श्रुति साखीहै। नभपवमान शिखि नीर भूमि लोप होत माया अलगाय कीधौं कौनेथल राखी है॥ जीवन के पाप कृत दंड दानि कहां रहे ज्ञानिन के ज्ञान जाने कौनी गली नाखी है। मंगलत्रिदेव गुणतीनि एक भावहोवै दुविधा दुराशाको बिबेक अभिलाखी है १६० पुनि उपजावै चारिखानिजीव देवासुर जहां तहा बासदेत ऊंचनीच धामहै। काने पापकीन्हो कानेसुकृत कमायो तबजाके फल भोगरोग योग अप काम है॥ असुर बराकद्विज श्वपचकहायो काहे कर्मप्रताप जोपै जाना अभिराम है। मेरे मन मंगल न भूलैतू बिबेक पाय कीधौं नाशिजात होत काकोधौं बिराम है १६१ तारागण द्वीपकहैं नभके प्रवीणकोऊ कोऊक है लोकन को होवतप्रकासहै। कोऊकहै अचल चलायमान सूरचाँद कोऊ बडेदेवता प्रतापी तेजभासहै॥ जाहिचपदेखै ताकी बातनाहीलेखै फिरि कैसेचखरेखै हरिअतनु अबासहै। मगल बिबेकसो बिचारि देखुआपुमांझ इतउत चारिओर मायाको बिलासहै १६२ मात पितुसोदर कलत्र सूरमोहरूप डारतसमुद्र बिषयान नेहनातेहैं। आगे त्यागिजातकोऊ पाछेको बिचारुचित्त सकलसमाज हितकारीनदिखातेहैं॥ कायाआप प्यारीजाहि पालत सुभोजभोजि संगतासुअतकाल कौनजीवपातेहैं। मंगल समस्त झूठ कारोबार तीनलोक आपसाथ नेहलोरु नातेसबजाते हैं १६३ यरेमनमूढ़ तोहि अधिक डरातिरहौं जानिके प्रधानदेह ग्रामको सदाहीहौं।

सौतोभाव तेरेनेकपायो नपरीक्षाकाल चेटकौ वटौरनौच जानो सबमाहीहौं॥ अबन भूमावैबात अलिक अबूझभांति धकैमानु मेरोभूप तेरोदानि नाहीहौ। नातो पछितायमन मंगल यथा भांति जबैशुद्ध भावकहौ श्यामाश्याम पाहीहौं १६४ मनुजशरीरदौन्ह्यो सुखभोग हेतुनाथ सकलविभूति ताके संगदपजाईहै। जगदुखरूपी सबभांतिन विचारिचित्त परमसुजानप्रभुकीन्हीनि पुणाईहै॥ भोगभाग योगयाग लोगनके भागलाग भूलीमूलबात दूत प्रेरणा प्रभाईहै। मंगल सुजान जन मायामद ज्ञानहीन इतउत कायामनधाया दुहूंघाईहै १६५ सवैया॥शैविकहैं शिव बौधकहैं बुध जैनिकहैं प्रभु पारसनाथै। विष्णुकहैं कोउशक्ति वदै गणनाथ पुरातन भापतगाथै॥ ईसाकहैं कोउ मूसाभनैकोउ फौहरसूल मुहम्मदसाथै। मंगल सांचु नबैजन गावत खोजनहारके लागनहाथै १६६ तौरथन्हान करैब्रतसंयम दान अनेक न देजोश्रनाथै। औघड ध्यान पियोमदिरा शुचिदूरिकौ रुचिपाथ अवाथै॥ सूरतिपूजि बजावत घंटन दीप दिखाय सुनावतगाथै। मंगलकर्म अस्वारथ है नहिं खोजनहार के लागनहाथै १६७ ठाढ़रहे तनुदंग्ड सहे सुख मौनरहे पशुलौं बनिजावै। दूधपियै तजिअन्नभखे तृणधूमघुटे जलबाल लुभावै॥ नग्नरहे बहुज्ञान कथै नित ध्यानधरै नसुनै नसुनावै। मंगल कर्म अस्वारथहैनहिं खोजनहारकेहाथन आवै १६८ कीजिन बेगिदया जनपै हरिये दुखरोग सबै यदुनायक। औषधमूल प्रतापतुम्हार धन्वंतरि रूपधरे गदघायक॥ शूलनमूल नशायकृपानिधि राखियदास कहौलिब लायक। मंगलटेक तुम्हारिगहै नितआनके द्वारसुहात न पायक १६९ शूरगभस्ति नशावत नीरन जो नृपको तपता तनतापै। उकौलप्रकाश बुझाय समीरन जोप्रकटावत झंझप्रतापै॥ कादरयुद्ध डरावतबीरन जो बहुसंगरके गुणथापै। मंगल धर्म मिटावत धीरज जोदिथुनखड प्रसिद्धप्रदापै १७० दारिदनिन्दतहैं धनवानिको जानतयें अदया जगमाहीं। दीननकोधनवान

कहैं लघुतुच्छ कुवर्ण सदा भ्रम नाहीं ॥ एक भुलान महामद लोभमें दूसरके विन धावत जाही । मंगलसोइवडो दुहुंभांतिन जासुहिये हरिभक्ति लखाही १७१ ॥ दंडक ॥ मनवश कीन्हे भोग चाहत न चित्त नेक कटुरस अरस कि नाही पहिचानहै। भोगन किवात सुनि जिय अकुलात तात धाता सुरत्राता स्वाद काग बीटमानहै ॥ शीतकाल ग्रीषम समान भाव धारे रहै अमित उदास रूप हरिरस सानहै। मंगल सुजान वदै सोई भूमि भागवान सुरुचि विराग जाके ऐसो ज्ञान गानहै १७२ विषयी समाज विषरूपी जानि भागै दूरि हाटकादि सम्पति विचारैमोह दानीहै । नारी जग अखिल समान मातुजाके चित्त चरिता हिताई दुरि धोई द्रोह सानीहै ॥ देखत तमाशे सो धरातल अमोह रूप हँसत ठठाइ कहुँ रोयत अमानीहै। मंगल विरागी सोई वेदभाव भावियत रहत उदासी ज्ञान धाम अनुमानीहै १७३ वासना न व्यापै जाके जीव काहूभांति और कामना सतावैनाहि काजनमें जाहीहै । वसन विहीन जैसे बालित नहानतैसे सेज अनसेज सोवै शोकताप दाहीहै ॥ दीन हितकारी धनवान कोन नेह चित्त जोईभाव मानै ताकी सुमति सराहीहै। मंगल महीप कोनु दीन भूमिहीन रावताके एकभाव रागत्यागी त्रिविधाहीहै १७४ कामज्वाल दाहतन शुद्धचित्त शीतलको क्रोध नाग काटत न वेकामन जाकोहै। मदकी मदाई तट जात न सजान जानि लोभसिन्धु वोहित विचारो ज्ञान वाकोहै ॥ मोह तम बुद्धिमणि रूपीदेखि नाशिजात माया दाया हेरि जासु द्वारहून झाकोहै। मंगल विरागी ऐसो विदित त्रिलोक सत्य गावत प्रमाणसाधुवेदजाकोयाकोहै १७५ गुफाको निवासी वनवासीकहै पर्णकुटी नातो नेह सांचो जाके नामकोअधारहै । काहूसों न नेह वैर जात काहूद्वार नाहिं राति-दिन भासकिधौं एकही प्रकारहै ॥ देवता सिहात रागहीन देहधारि देखि यम अकुलात वाकेनाम को पुकारहै । मगल विरागरूप गावत सुजान ऐसो नातो दम्भ

मायामोह प्रेरेसगकारहै १७६॥सवैया॥वा प्रभुके कछु जाति न पांति न आश्रम वर्ण विचार न कोई। देव अदेव न मानुष नाग बिहायस औ पशु कीट न सोई॥ पांचहुतत्त्व परेगुण तीनिते चौदहलोक निवास करोई। मंगल बुद्धि वितर्कनेते परमोपरमातमवेद वदोई १७७ जीवनमेनित आपु बिराजत जीव सचेतन तासु सदाहीं। भाषतयो मुनि पण्डित आगम है अनकाय अलिंग सदाहीं॥ कूरमहा सबतेअति पासहि है प्रतिठाम न औ युत्ति नाहीं। मंगलके दुविधा सुनिलागत द्वैत अद्वैत दुवौ यकठाहीं १७८ बारारसें निशि देखिपरै नहिं औ रजनीसहँ द्यौस न भाई। आगम एक निरागम दूसर वर्ण अवर्ण अकथ्य कथाई॥ चेतन औ जड़ एकस्वरूप नहै थिर अथिर की निपुणाई। मंगलके न संदेह रहा गहिएक द्वितीय कथा बिसराई १७९ जो गुणखानि तोहै कवि कोविद जो गुणहीन तो मूढ़ महाना। औ तत्त्वहीनतौ शून्य बताइय जो तत्वधारि तो थूल समाना॥ जो विधि और निषेध बतावत सो वपु सत्य धरै अनज्ञाना। मंगल देखु विचारि रावै विधि सत्य असत्य न जाति बखाना १८० छन्द॥ सातद्वीप नवखण्ड धरातल भर्योजीव बहुकाया है। सात पताल जीव बहुबासी अस्मृतिवेद लखायाहै॥ सातहुस्वर्ग बसत सबजीवहि आगम ज्ञानिन गायाहै। मंगल पांचतत्त्वहू जीवहि जीवबिना भ्रममायाहै १८१ वाण और निरवाण बखानै रामधाम दरशायाहै। उत्तम पुरुष प्रकृतिकृत तिहुंपुर प्रकट जीवपद पायाहै॥ जीवविहाय मृतक जड़रूपी कोअैं काहिबनायाहै। मंगल जीव अमर अविनाशी जल थल आपु समाया है १८२ जीव ईशयुत ब्रह्म बखानै सामवेद शुतिवानीहै। आनहुवेद भणेयह जीवहि पूरण पुरुष अमानी है॥ जोकोइ जीवभावको जानै सो परिपूरण ज्ञानीहै। मंगल जिन आतम निज खोज्यो माया तिनहि डेरानीहै १८३ दाता मुक्ति बसत को काथल मुक्तिदेत पुनि काकोहै। फूटो पणव स्वरपर बंधन

जीवअलख जग थाकोहै ॥ दुखीसुखी नहि अथ बाधिरो चलै न अचला थाकोहै। मंगलस्वयंसिद्धि नितआतम बंधनमोक्ष न वाकोहै १८४ जितै देखिये तितभरि पूरो कोईदिशा न खालीहै। लीलाआपुलखैया आपुहि कहुँपुरुष कहुँआलीहै ॥ जडचैतन्य भाव भवभारी मालाको कृत मालीहै। मंगल मालधारिहूमाली कर्त्ताकर्मगरख्यालीहै १८५ ॥ सवैया ॥ सम्पतिके हित दम्भ दिखावत सम्पतिकेहित जीवसतावै। सम्पतिकारण बेषबनावत सम्पति कारण देह जगवै ॥ सम्पति कारण सेवक साहिब सम्पति कारण मौन लखावै। मंगल सम्पतिके बमडोलत बोलत शब्द मनोहर भावै १८६ आपनही मगशुद्ध प्रचारत आपनहीं मगबक्र सिधारै। आपनही उपदेश बतावत आपनही उपदेश बिचारै ॥ आपनहीं अघि आतम ध्यावत आपनही मतिहीन पुकारै। मगल आपनही वडज्ञानन आपतो दूसर कौनप्रसारै १८७ आपन जानत ब्रह्मवखानत आगमबेद पुराण बिचारी। भूलवडीभवजाल भ्रमैनित दम्भकि पद्धति दीन्हप्रचारी ॥ सत्य असत्य नमानत तूमन अग्र न आव न जातपछारी। मगलशुद्ध स्वरूपन ध्यावत बंधनमुक्त कि बाणि निवारी १८८ बंधनहैसुख इन्द्रिनको भवमोक्षहै नीरस शोकुल जोई। भावस्वभाव प्रभाव नजानत सेवत देवन स्वारथहोई ॥ जो दुविधा अपनी बिभरी त्यहि त्यागत जीव कृतारथ कोई। मंगल ब्रह्मविचारन भाविय भापत दूसर रूप कथोई १८९ जोप्रभु ज्योतिस्वरूप धरे मन तौनहि तत्त्वशिखीकरि मानिय। शक्तिअनंत न जानिसकै बुधि ज्ञान बिवेक विधान प्रमानिय ॥ संतकहैं प्रभु दृष्टिनआवत मूढ़नकेसँग रक्षकमानिय। मंगल भूलमिटै न बिनागुरु कोटिक ग्रंथ सुनोजो बखानिय १९० देहधरे मनुजाई बिषय रस देह धरे मनमोह दुरावै। देहधरे दुविधा अघ भ्रामिक देहधरे शुचि आतम पावै॥देहधरे खलरूप कहावत देहधरे मुनि पद्धतिभावै। मंगल देहबिना सिगरोभ्रम बंधन मोक्ष न मोमन आवै १९१

सार असार बिचारन आवत त्यागत देह किधौं अनुमानी। जानत कोउन मानतहै मन यातन हीन दुबुद्धि सुजानी ॥ काल कलेवर लोक दृढ़ावत हीन शरीर न जानतप्रानी। मंगलजीवन धन्य धरातल बंधन मुक्ति बतावत बानी १६२ आपन बोध भयो न अरेमन औरन को कल ज्ञान सिखावै। गाठरिया तककी उर मंदिर बाहिर उज्ज्वलवस्त्र दिखावै॥ ज्ञान विवेक के रंग रँगोनहि कातन में रज चन्दन लावै। मंगल सत्यवदै न सुनैमन ऐसे नहीं अपनो पद पावै १६३ आयुघटै प्रतिश्वासन सोचत मोहमयी मतवारु लगाहै। कोटिन मारग या भव में मनक्यों तिनको मत तू अवगाहै॥ अन्धकि दीपक राशि बिलोकत नैनन बारहिये उमगाहै। मंगल त्योंभव आतम ज्ञानहै जानतसंत असंत खगाहै १६४ पूरबके कृतदंड सभोग बतावतहैं सबलोग सुजाना। ब्रह्म प्रभाकिधौं ब्रह्म विभागको जन्मसमै कृतनाहि बखाना॥ जो प्रभु चाहत सोकृत जीवहि लागत है यह अद्भुत ज्ञाना। मंगल पूरब पश्चिम को तजि कीजिय ध्यानसदा भगवाना १६५ राम कथा सुनि नींद सतावत वामकथा श्रुतिदेत अभागा। पारसको तजि पाथरमानि गहेकर कांच सचिक्कन लागा॥ ज्ञानिन के ढिग भूल बतावत है व्यसनी सँगजी अनुरागा। मंगलजाति कुजाति सुमानिय ऊपरहंस जो अंतरकागा १६६ मान महाधन रूप गुमान सुवर्ण महामद जीव समानो। पौरुष मोह जो आश्रमगर्व स्वपथको पक्ष अहकृतभानो॥ फूलो फिरै खल लोभय बीथिन ज्ञानिनके तट जात लजानो। मंगल राम न ध्यावत जोनर सोइ महाजड़ जी अनुमानो १६७॥

झूलना॥ क्षर रूपको बिस्तारहै सो पुरुषप्रकृति बिचार है नव तत्वको पुनि सारहै जानिजो संज्जन काय है। माया जो अगम अपारहै बहुभांति त्रिपुर बिहार है करनी करम करतार है सोई जो प्रत्य भाय है। दश तीनि सुर अधिकार है नर नाग पशुनभ चारहै कृमि अमित रूप बिकार है भवसकल तनसोनिगाय है।

मगल बखानत सारहै अक्षर सबन के धार है सो आतमा नरि-
धार है यकभाव जोन द्विभाव हैं १९८ जो ज्ञान अक्षर भाय
को रसना बिना गुण गाय सो आतम प्रकट दरशाय जो
दृढ़ सुमति के आधीनहै। भूलै न माया जालसो देखैसबी
जग ख्याल सो करि योग विधिकछु काल सो निज आतमा मे
लीनहै॥ सबकोनयह उपदेशिये उरज्ञानदीपक लेसिये चीन्हिय
विदेशी देशिये तपजाप रत कि मलीनहै । मंगल चुपकि घर
बैठिये शुचिज्ञान मदिर पैठिये मति शुद्धबिनुनहिं होतयह कृत
परमहंस प्रवीनहै १९९॥सवैया ॥ श्रीमुनि व्यास पुराण किये
सब द्वापरमें कबिकोविदगावैं। सत्ययुगादिकमें न पुराण कथा
इतिहास मनुष्य बतावैं ॥ तौ द्विजराज पुराण बिना मृतकर्म
कहौ किमि लोग करावैं। मंगल अद्भुत दंतकथा नहिं बूझनहार
के वैनन भावैं २०० देखिय दृष्टि पसारि दशौ दिशि नश्वरही
सबु देतदिखाई। जो अविनाश स्वरूप न ताकर है नवमें गति
शब्द सुनाई ॥ मौन रहौ सब और कहौ जनिठौर न ठौरबडी
प्रभुताई। मगल आपन आपुन जानत खोजत ईश्वरहै अधमाई
२०१ब्रह्मविहाय न देखिय कारण कारण रूप विचारिय माया।
माया बिहीन न ब्रह्म विचारक जानत ज्ञानधनी शुचिकाया॥
दोउन में नहिं अन्तर भाषत कोविद ज्यों तरु औ तरुछाया।
मगल बूझिपरे न बिना गुरु सोउ मिलै न दुराय दुराया २०२
केतिक कल्पगये भवभ्रानिक आपन धाम न पाव सुखासन।
योनि कुयोनि सुयोनि फिर्‌यो अवऊरधकी पकरेमन आसन॥
जानि न जात गली निज ग्राम कि सत्य असत्य कि वाणि दुरा-
सन। मंगल राम कथा कछु जानत मानतहैं नहि पूरण वासन
२०३ पाखंडको तन वेर बनावत बातन में निजबोध करावै।
आपनि बुद्धिभस्यो न कबौं गुरु आमनको नितसीख सिखावै॥
मोह मयी मतिहै अपनी बहु लोगनको निरमोह जनावै। म-
गल ढोल समान कहौ तेहि शब्द बडो उर खोखलखावै २०४

जाकहँ नेकहुज्ञानप्रबोधहै सोन मिलै हितसों हितकारी। द्वैत कि बुद्धि लगी मनमूरख को निरबाण बिलास बिचारी॥ संभ्रम बोध दुवौ उरमें अपने चित कीन कहै विधिचारी। मंगल चोरन साधुनखानिय जो नहि जीवनलेत उबारी २०५ राम नही तबरामजपैं सबहै प्रहलाद कथा परमाना। जानियराम अनादि कृपानिधि वेदपुराण बिबेक बखाना॥ रामसुये तितराम रहे सब लोगनके शुचि आवत याना। मंगल बूझवडी लघुता हिन आगिल पाछिल होत समाना २०६ बिष्णु सतोगुण रूप बखानत होय त्रिविक्रम यज्ञ नशायो। नाहिं सतोगुण में छल चाहिय नारदको कपिरूप बनायो॥ बामे जलंधरको बतघालि वधो सुर भानु सुधा जब पायो। मंगल का कहिये रचिये चुप सत्य असत्य न जात गनायो २०७ शंकर रूप तमोगुण गावत योग समाधि घसैं बहुकाला। ज्ञानत ज्ञानसुधी समता अरु वेषबिबेक धरे गतजाला॥ देत अभिप्रियदान सबै भवदान दया बिनुको प्रतिपाला। मंगल मौनरहौ दुबिधा यह सम्यक तामस में कृतख्याला २०८ जो पुरुषोत्तम सो जनु भानु है घाम समान गुणौ त्यहि माया। घाम बिषेरबि देखि परै बिनु घाम न पूषण को लखिपाया॥ सूरज हीन न घाम बिलोकिय जो घन अभ्रतो दोउ छपाया। मंगल सो भ्रममोह कहैं त्यहि जीव सदृष्टि निरक्ष बनाया २०९ ज्योंजलमें बिकनाहट देखिय कोटि मथे नहि आवत हाथे। त्यों यहजीव बिहाय शरीरन नैन बिलोकिय ज्ञान कि गाथे॥ ब्रह्म अपूरबवस्तु न भाषियमानिय सांच न झूंठ न साथे। मंगलतू किमि मूढ़ बडो कयहिनाथ बखानत ज्ञानि अनाथे २१० ज्ञान कहै सबमें हरि मापत ज्ञान कहै सबही विधिन्यारा। शून्य समान हुई उपमा अवबोध भयो कि जबोध बिचारा॥ ताके अहै जड चेतन नाहिन हांजड ते तन चेतन धारा। मंगल ज्ञान गुणो उरमें भ्रम ज्ञान बिहीनमहा अंधियारा २११॥ कवित्त॥ मुसलमान बेचून

बतावैं हिन्दूकहैं अनूपाहै। दोनौंपके खोजते भाई किया किसी न निरूपाहै॥ चित्र विचित्र कहैं गूनागूं मध्य में छांह कि भूपा है। मंगल है कहने को नाहीं रूप बिना बहुरूपाहै २१२ घटैं कबीर कमलमें संपुटसत्य पुरुष अनमायाहै। सो विज्ञानरूपथौं तत्त्वद चतुरमहामति गायाहै॥ सत्यलोक में शुद्ध सतोगुण अलिपदलीन कहायाहै। जहँलगु रूपहोयनहि अलिपद मंगल रूप न थायाहै २१३ सत्यहिथल बसत हंसबहुतेरे दरशि परशि सुख पातेहैं। अमृतभपैं पुरुष अरु नारी डर अनुराग हढ़ातेहैं॥ सत्य नामै पाटक तहँसोहैं पापरूप नहि जातेहैं। मंगल तौन होय नहु अलिपद पक्षापक्ष लखातेहैं २१४ हंसहसिनी द्विविधि बनावैं निज निज सुख आनन्दैहैं। भिन्नभिन्न गृहसकल विलासी पुरुष चरण नितवन्देहैं॥ क्षुधाविवश अमृत आहारी माया मोह निकन्देहैं। मगल अक्षय वपुष जीवनको क्योंकरिकहत स्वछन्दे हैं २१५ कहत कबीर पाय अनुशासन हमैं जगजीव चितातेहैं। पलटिआय भवकथा मनोहर ताकहँ सुरुचिसुनातेहैं॥ विधि निषेधको दाता ठहरा सुखसागर सब मातेहैं। मंगल तत्पदही यहँ कहिये अलिपद कहा लखाते हैं २१६ जहँलगि सुख दुख रूप अनूपा ज्ञान विवेकबतावैजू। लोकअलोक हंस औ हंसिनि अमृत त्रिपदरझावैजू॥ तहँलगुमाया मोह बखानिय क्यों अपनेमन भावैजू। मंगल समुझिबूझि गहु सांची द्विविधा ध्यान न आवैजू २१७ सत्य असत्य लोक कोउ कहिये द्विविधा भ्रम विज्ञानीहै। सत्य लोकमें बसत हंस सब कास असत्य प्रमानीहै॥ जीवहि खात काल यमरूपी जो पुरुषोत्तम ज्ञानीहै। मंगल महा दुचितकी कथनी अपनी अपनी मानीहै २१८ शब्द मृदंग बांधि यमराजा तुरत नरक में डाराहै। सोग्रंत शब्द नर्क में बहुविधि पुरुष हुकुम बिस्ताराहै॥ तबकबीर करि महा परिश्रम प्रकटहि जाय उबाराहै। मगल सुजन विवेकीदेखैं सत्य असत्य विचाराहै २१९ एक निर्मत, रजतमके आगे शुद्धसतो-

२७७ शिष्यकरैं धनआयलगी मन मानकि पद्धतिचित्त निवासै॥ पंथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान गनावतहै अनयासै॥ लेख लखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरे मुनिसंत उदासै। मंगल लाखलखेरनके घर झूठनके मुखमें किधौंभासै २७८ वोहितपंथ भवार्णवमें बहुशिष्य चढ़ायलिये सुखमानी। आपुनहीं कनिहारमहा भ्रमपच प्रभूतभ्रम्यो अभिमानी॥ पारलहै किमिमध्यहि बूडत मोहबयारि उछालत पानी। मंगलभूल जहाज चढ़ौ जनि बैठिरहो अपने घरआनी २७९ जो कनिहारमिलै युतवोहित तौनतजौ करिके चतुराई। धाइनजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो पारते आवत लाग लुगाई॥ पूछितिन्हैं पुनि खेवट याचिकैहेरि रावेतन वोहितभाई। मङ्गलशुद्ध समाजचढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगौ उहिवाई २८० शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपनेभ्रम भारी। आननहू उपदेशतहैं जनुधर्म बिनाश कि मूरति धारी॥ एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतचारी। मङ्गलका कहिये हरिदासन दण्डप्रणाम करौ सुखकारी २८१ वेद सुचारिकहैं ऋग औ यजु साम अथर्वण धर्मपुराना। चारिकिताब ज़बूर इँजीलकहो तव रेतजु है फुरकाना॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जुशूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना। सैयद शेखजु मुगल पठानसो एकते चारि कि भूलकि ज्ञाना २८२ जाति न पांतिन वेद कितेबन पीर गुरू न मुरीद न चेला। होतभये मनुवौ किधौं आतम ताद्दिनको मन अद्भुत खेला॥ जाबिधि बाढ़िगये नर भूतल ता बिधि बन्धन मोक्ष प्रहेला। मंगलजाति कितावभयेसब सुलभ अनेक कि ठेलमठेला २८३ ज्योति दिखायके मोक्ष दृढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी। रेत पियाय बदैं गतिएक सो बारिकौ तत्त्व कि मोक्ष प्रसादी॥ मंत्रजपाय के मुक्तिवतावत अक्षर रूपन सो अविवादी। मंगल मौन भली नबकौ अब वस्तु अकथ्य न दूसर बादी २८४ जो श्रुतिके बिपरीत भन्यो कछु बोध स्वरूप गयो अवतारी। विप्रन निंदक कीन्ह अपूजित

को पुरुषोत्तम वाणिनिहारी॥ श्रीजगनाथ सर्वेयक ठामहिं भोज जिमावत बेद बिसारी। मगल निडक कोउन भाषत एकादशी जहँठाढ़ि पछारी २८५ छंद॥ सेतुबंध शिवदर्शन कीन्हे देहद्वारिका जारीहै। बद्री उदर कुंडजल पीकर सकल व्याधि निरवारी है। पुरुषोत्तम पुर भात खाइके काशी करवा धारी है। मंगल युक्तप्रयाग मडामा तदपिनि आशा हारी है २८६ मक्केजायकरी हज अकबर सबैगुनाह बखशाये हैं। करी जियारत जाइमदीने करबला फिरि आयेहैं॥ दवी कुरान बगलमें सेया हाफ़िज़बड़े कहाये हैं। मंगल कवनि जात जो दिलमें हिरसो हवा कुपाये हैं २८७॥ सवैया॥ श्रीजगदीश्वर तोहिं कोजानत आपनहीगति जानिनपाई। श्रावकहाँ क्यहिधाम निकेत को जावकहाँ तजि कायास्वभाई॥ क्यों ठहरे इतको ठहराइलि ज्ञान अज्ञान न किवाणि सुनाई। मंगल जानिसके अपनी गतितौजनआवन धामहिं जाई २८८ मारग भूलिगयो मतिमें भ्रम पथिभ्रमाय महा बिकलाई। ज्यों अपनो घरिमारग पावत जाननहार मिलेबिनु भाई॥ त्यों यह जीव विषयरसलम्पट जात जितैतितहीं भ्रमताई। मंगलसंत सुजान सुमारग जानतहैं अरु देतबताई २८९॥ विष्णुपद॥ हरिगति जानि सकत कोभारी। मायापति अज अकुर अनामय अलख देव अनुशारी। नरतनु धरै स्ववश करुणा करलखत न विधि त्रिपुरारी॥ मन भावित कृत करत जगत प्रभु श्रुति मर्याद विचारी। धर्म सेतु जनहेतु चारि फल देनित करत सुखारी॥ सुर मणि सुवन काक कायाधरि सिय पगचोंच प्रहारी। कीन्ह महा अगमहा अघवृत बाधि तरयो भौभारी॥ बालि धर्यो परनारि निरत लखिभस्यो इंद्र अफ़्वारी। मंगल कोजानत प्रभुकी गति तू भजु इयाम मुरारी २९०॥ मन भूल्यो क्यहि कौत चितावै। प्रथम तोहिं इंद्रीपति कहियत सेवकसम ह्वै धावै। विषमभोगविष तुल्य वदत श्रुति सोअमृत करिपावै॥ कुरुली इत उत धावत है लाज़नहीं धरचावै। मन कहनी

है २७७ शिष्यकरैं धनआथलगी मन मानकि पद्धतिचित्त निवासै॥ पथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान गुनावतहै अनयासै॥ वेश्नलखावत नैनसदा उपहिहेरि फिरे मुनिसंत उदासै। मंगल लाखलखेरनके घर झूठनके मुखमें किधौंभासै २७८ वोहितपंथ भैचार्णवमें बहुशिष्य चढ़ायलिये सुखमानी। आपुनहीं कनिहारमहा भ्रमपंच प्रभूतभ्रम्यो अभिमानी॥ पारलहै किसिमध्यहि बूडत मोहबयारि उछालत पानी॥ मंगलभूल जहाज चढ़ौ जनि बैठिरहो अपने घरआनी २७६ जो कनिहारमिले युतवोहित लौनतज्यौ करिकै चतुराई। धाइनजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो पारते आवत लोग लुगाई॥ पूछितिन्हैं पुनि खेवट यांचिकेहेरि रावैतन वोहितभाई। मङ्गलशुद्ध समाजचढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगौ उहिपाई २८० शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपनेभ्रम भारी। आननहू उपदेशतहैं जनुधर्म बिनाश कि मूरतिधारी॥ एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिले अपने मतवारी। मङ्गलका कहिये हरिदासत दण्डप्रणाम करौ सुखकारी २८१ बेद सुचारिकहैं ऋगऔ यजु साम अथर्वण धर्मपुराना। चारिकिताब जबूर इंजीलकहो तब रेतजु है फुरकाना॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जु शूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना। सैयद शेखजु मुगल पठानसो एकते चारि कि सूझकि ज्ञाना २८२ जाति न पांतिन वेद कितेबन पीरगुरू न मुरीद न चेला। होतभये मनुषौं किधौं आतम तादिनको मन अद्भुत खेला॥ जाविधि बाढ़िगये नर भूतल ताबिधि बन्धन मोक्ष प्रहेला। मंगलजाति कितावभयेसब सुदय अनेक कि ठेलमठेला २८३ ज्योति दिखायके मोक्ष दृढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी। रेत पियाय बदे गतिपक लखे बारिकोतत्त्व कि मोक्ष प्रसादी॥ मन्त्र जपाय के मुक्तिबतावत अक्षर रूपन सो अविवादी। मंगल मौन भली वस्तु अकथ्य न दूसर वादी २८४ जो श्रुतिके कछु बोध सरूप गया अवतारी। विप्रन निंदक कीन्ह

रुचिमानी॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी। तुतिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चितश्रानी॥ क्षणाक्षण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमिभृङ्गी अज्ञानी। थिरनहोत पलएक नीचतू विषय विवश छलतानी॥ करत विचार नीचवत इत उत लखितुहि लाज लजानी। मङ्गल बारबार कहतोतन भजु कित ब्रह्म अमानी २६५ मनसुनु सीखमनोहरमेरी। भ्रमतकि- मर्थ अनित्य जगतमहँ तजिदुविधा मतिफेरी। भजिले रामच- रण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी॥ अतसमय नातरु पछि- तैहै पायश्रास यमकेरी। मात पिता प्रियतात मीतहितु स- कै न कोउ निबेरी॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपक्षी देवदनुज बहुफे- री। कालबली सबहीको भषि है बदतवेद बुधटेरी॥ काम क्रोध मदलोभ मोहअरि रहेमहूंदिशिघेरी। मंगल ज्ञानखड्गसों बधुकिन करत कातुहितदेरी२६६ सुनुमन तोहिकहौं समुझा- ई। जो पूरणपदकी अभिलाषा तोभजिले सुरराई। मुक्तिल है अनयास वेद बुध वदत नआन उपाई॥ चारिखानि थावर चर प्राणीरचि विधि सृष्टि बनाई। तिनमहँ अतिउत्तम नरदेही सो लहि फत कदराई॥ वैभवसुख समाज जग जेतो अन्त सगनहिं जाई। कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै अहतेरी जडताई॥ ताते तजिदुविधा भ्रमसिगरे अनभव शुभ डरलाई। मंगल ध्याउ युग लपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २६७ हरितजि फिरि पाछे पछितैहै। कामक्रोध मद लोभ मोहवश तू कुपंथ चलिजैहै। अ- न्तसमय रविपूत दूतसुनु अतिही त्रासदिखैहै॥ सुतदारा आदि- क सम्पति सब कोऊ कामन ऐहै। तजि सुरधाम कर्मवश अपने बास नरकमेंपैहै॥ ताते मानुसीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै। सुयश ससौख्य रहैजीवनभरि यमको दण्ड नसैहै॥ मोते हितू अपरको तेरो जोलवेहि सुमग चलैहै। मंगल सुधा सीखपीलेतू पीव्रतमृत्यु बिलैहै २६८ यकदिन मरण अहैतनजिनको। हिरण्या कुश हिरण्याक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृततिनको। शूकरनरकेहरि

सुख खानि सकल विधि सो ल्वहिं नेकन भावै ॥ कामादिकसुत तोर प्रकट यह तिनके संगमजावै । लखि अनीति पथतजत सुमतिमति अबुध किधौं मदछावै ॥ लोकरीति परलोकमनोरथ दूनों स्वकर नशावै । मंगल अवतेमानि सीखमम हरि आतम किन ध्यावै २८१ मन अपने मनदेखु विचारी । तजिबेगता स्वंगता गतिको बैठोथिर गुणधारी । जेवल महा धनुसम घर्तत तिनहिं कहत हितकारी ॥ प्रीतम सुमति सुगति मुक्ति दायक त्यागत विषय प्रचारी । सूरज जातधाम अंतकेवश जाइ- हिं देखु निहारी ॥ तहँतुवहितूयत्र गति दाता लखीहोइ अगारी । महा मोह मयजानिधर्मविनुपमचरगहि करवधारी ॥ नरकमेलि बाधिहिंदैताड़न कोउनतह रखवारी । मंगल सोचि यहै भजिले किन श्रीराधिका विहारी २८२ यह संसार लखात असारा। केतिक धनी निधन सम विचरत अधन धनिक व्यवहारा ॥ वा संपति यहिकर दुख दारिद कितना करिय विचारा ॥ महाराजे गहि राउ बदिकिय दीनराजबैठारा। तासु विभव दीनतोयासुकी केहि दिशि करत विहारा ॥ पंडित थिर पिशाचिका लागी मूढ़ प- ढ्योगुणसारा। वापांडित्य मूढ़ता याकी मिटैन लेशप्रचारा ॥ सतन अतन विनुधाम गेहयुत होत सहजचहुंद्वारा । मंगल भजु श्रीरघुराज रामपद पावै सबसुख न्यारा २८३ आपु आपनीभूल भुलाना । ज्यों शाखामृग अन्नगहेकर बंदिपर्यो अनुमाना । तज त ताहि मोचैसो बँदिते नहिं आवत अलज्ञाना ॥ अरु जिमि श्वा- न दर्पणी मदिर निज प्रतिबिंब भ्रमाना । भूकि सर्यो हरिगि र्यो कूपजिमि गजरद बिनु पछिताना ॥ तिमि यह जीव विष- यमायावश मृषासत्यनहिं जाना । सर्वस खोइ दयो बैरिनकरअंत समय दुखसाना ॥ अबहिं सबेर चेत लखु आपुहिं मिटै सकल विषठाना । मंगल सुमति सतोगुण प्रकटै जेहिं मगलहु भगवाना २८४ लोगकहत मनतू बहुज्ञानी । मेरीज्ञान महामूरखतू वि षयफन्द अभिमानी । बेदपुराण विवर्जितजोपथ ताहिचलत

रुचिमानी ॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी। तू तिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चित आनी ॥ क्षणक्षण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमिभृङ्गी अज्ञानी। थिरनहोत पलएक नीचतू विषय विषयछलसानी ॥ करत विचार नीचवत इत उत लखितुहिं लाज लजानी। मङ्गल बारबार कहतो मन भजु कित ब्रह्म अमानी २८५ मनसुनु सीखमनोहरमेरी। भ्रमत किमर्थ अनित्य जगतमहँ तजिदु बिथा मतिकेरी। भजिले रामचरण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी ॥ अंतसमय नातरु पछितैहै पायत्रास यमकेरी ॥ मात पिता प्रियतात मीतहितु सकै न कोउ निबेरी ॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपक्षी देवदनुज बहुकेरी। कालबली सबहीको भषि है बदतवेद बुधटेरी ॥ काम क्रोध मदलोभ मोहअरि रहे महूँ दिशिघेरी। मंगल ज्ञानखड्गसों बधुकिन करत कासुहितदेरी २८६ सुनुमन तोहिं कहौं समुझाई। जो पूरणपदकी अभिलाषा तो भजिले सुरराई। मुक्तिल है अनयास बेद बुध बदत न आन उपाई ॥ चारिखानि थावर चर प्राणीरचि बिधि सृष्टि बनाई। तिनमहँ अतिउत्तम नरदेही सो लहि फल कदराई ॥ वैभवसुख समाज जग जेतो अन्त सगनहिं जाई। कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै बहुतेरी जडताई ॥ ताते तजिदु बिषय भ्रमतिगरे अतभव शुभ उरलाई। मंगल ध्याउ युगलपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २८७ हरितजि फिरि पाछे पछितैहै। कामक्रोध मद लोभ मोहवश तू कुपथ चलिजैहै। अन्तसमय रविपूत दूतसुनु अतिहो त्रासदिखैहै ॥ सुतदारा आदिक सम्पति सब कोऊ कामन ऐहै। तजि सुरधाम कर्मवश अपने घोर नरकमें पैहे॥ ताते मानु सीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै। सुयश सुसौख्य रहैजीवनभरि यमको दण्ड नसैहै॥ मोते हितू अपरको तेरो जोटवहिं सुमग चलैहै। मंगल सुधा सीखपीलेतू पीवतमृत्यु मिलैहै २८८ एकदिन मरण अहैतनजिनको। हिरणाकुश हिरण्याक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृत तिनको। शूकरनरकेहरि

शरीरधरि कीन्हनाश पापिनको ॥ रावण कुंभकरण कंसादिक आन असुर कोटिनको । रामकृष्णतनाविरचिकृपानिधिहत्योभार थापिनको ॥ रामलखण अलराम श्यामजू सुयश रुपातमवड़न को । तेतनु त्यागिगये निज धामहि गनैको नरनारिनको ॥ भीषम पाण्डव प्रबल धनुर्द्धर आरो अन्यबलिनको । रहोजतन सकल भुजिले हरिजीवन केतिकदिनको २९९ अलखगतिलखि नपरै भाई । अज जन्मा अनभुव सम्भवभा अतन शरीरसुहाई ॥ अमरसत्यो कर्तार अकर्ता दाताकृतरवताई ॥ एकअनेक रूपसों देखा जड़रथ मांझ समाई ॥ करणहीन जा बिनय सुनतहै अक्षर हित दर्शाई ॥ चरणहीन तीनोंपुर नापै करबिनु सृष्टि उपाई ॥ लिंगरहित नवलिंग बनायेकालबिना वयपाई ॥ सकलभांति बिपरीत देखियतपैवरणी नहिंजाई ॥ सकल नरकस्वर्ग देहीको दुबिधादूनोंठाई २०० तजुमनविषय असार असारा दुबिधाको मारग यहि जगमें छल प्रपञ्च व्यवहारा ॥ कोसुख तोहिंमिलै इनकेसँग मूरुख बुधि न बिचारा ॥ अबकी चूकहू कबहुँ उठिहै पहुँचत यमदरबारा । करणीफल तोहिंनरक मिलैगो बिनु आतम निरधारा ॥ जेसांचे मगके पगधारी करत ज्ञान व्यापारा । तिनसोंप्रीति रीतिकरु सांची करै सुमति निस्तारा ॥ नीचछोड़ौ सतसंग बिवर्जित परिहरु तिनको द्वारा । मगलै भजुआतम परमायाभुक्तिमुक्ति द्वौबारा २०१ सुनुमनतू बिपरीत बिचारी । जो बिनताहिं कहत लोचनहा अरितु देखु निहारी । काक बुद्धिचर विषय विष्ठनित मति बिनुहोत दुखारी ॥ ज्ञान पंथ जग जन्म नआवत तुहो निरय अधिकारी । दिनमणि उदय लखत जगरथ्या जानै उलूक अँध्यारी ॥ गौरी सकल भूत सुख सोवत चकइहि पतिदुखभारी । चारिप्रकार चारिविधि जानै चतुराश्रमिनरनारी ॥ प्रकट प्रताप दिखात ब्रह्मको चहुँदिशि ज्योति पसारी । मगलै मनतजि चालि विषय लखु ज्योतिहुँ होइ सुखारी २०२ कहत बनत नहिं काल कहानी । अकलसँग जन्म मरणमें दुबिधाघटतबेद

पवानी ।जासु प्रबलतावश्य पुरतीनों बुधअज गिरा भवानी॥ शोक सौख्य संयोग वियोगहि देत सबहि अनुमानी॥ कोतरमूढ़ामद्न सेयो कृष्ण तजी रजधानी॥ वायु अग्नि सम इन्द्र वरुण धियदि दपरे जगज्ञानी॥ जगजित शुम्भ निशुम्भ प्रभेर्या जोकुणी महरानी॥ मंगल दुखसुख काल विवश हौ पावत भव सब मानी॥ तूमनत्यागि भूलभजिले हरि जो कृत काल कि हानी॥२०३॥ कैसीरे मति है मन तेरी। बिनु स्वारथ भ्रमत भव बीथिन कुपथ चलत मगहेरी॥ कोतुव आतवन्त जगमें मन तजितु बिथा बुधि केरी॥ मात तात प्रिय बन्धु तनय युत काल न सकत निबेरी॥ यमपुर कष्टपाय पछितैहै मनु लीख शुचि मेरी॥ रामग्रामपद नलित होहु अति दिन निधि भूल गहेरी॥ मुक्ति पदारथ शुभ पद पागि लहु कुमति कुवानि मिटेरी॥ आनि उपाय जन्म कोटिहु लगि करु जगफेरा फेरी॥ मगल मोक्ष होइ नहिं कैसेहु यहत वेद बुध टेरी॥२०४॥ ऐसोह अज्ञ जीव भ्रम भाई। ज्यों यधिविम्ब प्रत्योज्जल भीतर जलहिल हलत लखाई॥ सूरज ज्योति जहँ तहँ धिखरन महँ पैन गही कर जाई॥ घटवहि अन्तर गगन विराजत कुम्भन ये न लखाई॥ जगतरंग विवरण किमि कीजिय अद्भुत कथा सुनाई॥ परिपूरण पुराण पुरुषोत्तम तन प्रति रहा समाई॥ दरपण यथा बिम्ब परिपूरित तू त्तरू रहे राई॥ तजि मरोर तिमि जीवन देखिय को दूसर दोउ ठाई॥ मंगल भजु अतिम सुखदायक तजि तु रुचानन्दा॥२०५॥ राम नाम तजि कास ने कोई। भूप रङ्क को हरिपुर सुनु मन फलो स्वर्ग बलोई॥ जे नद दण्ड करत पर मोडा दया शीलता खोई॥ ते यहि लोक सुखी बुध कहिये नरकवास ढां होई॥ पछितैहैं पापी अनयायी ते जे वेद मग जोई॥ कवि कोविद मुनिवर महभागत वेद पुराण लिखोई॥ राम भजें जिन पूत न ह्वै हौ बुध मूरख त्रिय सोई॥ जिमि बिन जल न जीव जीवन जल यह संक्षिप्त कहोई॥ मंगल तजि भ्रम भूल नाय हरि लेहु मुक्ति मग टोई॥२०६॥ तजि छल राम नाम भजि ले मन। राम भजे पूरण सुख पावे नाश लहे

कौन भगवानहै।मंगल बिवादै एकजीव आपु ब्रह्मरूप काको न्याय कौनकरै बैठो कौने थानहै ३४३ ॥ सवैया ॥ जीवभयो न अहै मन मूरुख औनहिंहोय सुजान अगारी। कर्मनके वश बद्धनहोवत नित्यअनित्यसकारअकारी ॥ ताहिअघोरध वासन भाषिय हे अधऊरध ज्योति पसारी। मंगलपाप ग्रसैनहिं आतप दोरकि सूरजकेतन भारी ३४४ तूपरमातमहै सबठामनकोटि-ननाम न लोगपुकारै। सोसुनि देत मनोरथहै नित शुद्ध अशुद्ध नचित्तविचारै॥कोउ न रूप न धर्म्म सुकर्म्म न जातिमतामनतो अनुसारै।मंगल यांचत तोहिं कृपानिधि सत्य मनोरथदे अविकारै ३४५ कासन जायकहौं अपनो दुख याभवमेंप्रभु तोहिं बिहा-ई। दूसरको न समर्थविलोकतमोमनमेंजडताद्दढ़ताई ॥ पालत लोक चतुर्दश आपुन क्योंममकाज धरी निठुराई। मंगलमांगत जोरि दुवोकर देहु मनोरथ भेउ नथाई ३४६जौलगि चित्तमनो-रथ चाहत तौलगि शुद्ध सतोगुण दूरी। जो भवआश्र बिवश्यरहै सुरलोक अलोक दुवोसुख भूरी ॥बंधनमोक्ष दुवो मनभूलमनो-रथहै न सजीवनसूरी।मंगल जोबिषयी बिषनाशत सोप्रभुसत्य रहाभरिपूरी ३४७ जानतहै सबके मनकी प्रभु सत्यअहै मनअं-तरयामी। तासन कौन मनोरथ भाषिय भापतही नर जानत कामी ॥ देउगोआपु क्षमानिधि तोकहँ क्यों बकवादकरै नितवा-मी।मंगल ध्याउसदा निजआतम जोसबमें सबते परधामी३४८ सुंदर मारगहू डरमानत तूमन क्यो भवपंथ चलैरे। देखिअथा दुबिधा उरलावत क्यों मृगनायक धाइदलैरे ॥ काम सक्रोधन जीतिसकै फिरि मोह किधौं निजहाथ मलैरे। मंगलसंतसमाज नभावत ज्ञानकहा किधौं कौन थलैरे ३४९ ज्ञान दिवाकर शुद्ध प्रकाश तहां न सकै निजवस्तु बिलोकी। तौफिरि भक्तिकि चंद द्वितीयको नेक विकाशत होत अलोकी ॥ मोहनिशा अँधियारकि मझत नैनपसारत दृष्टि सबोकी। मंगल खोजिले सत्य पदारथ जीव चराचर आकर चारिहु

भूमिघरे अपनेथिरभासै । भूमिहि शेषधरेथिर सोहतकच्छप पृष्ठ किशेष बिलासै ॥कच्छप वायु विमंडलमें नभमें पुनिवायु प्रवीशनिवासै । मंगल हैनभ शब्दकि शक्ति सुशक्ति सनातन ब्रह्मप्रकासै ३५१ शक्तिबिना कछुहोतनहीं ब्यवसाय उपाय न कारेण काजू । जौन अशक्ति सो कोकृत साधत मृत्यु किधौं जडलौतन साजू ॥शक्तिअनंत अपार भणेश्रुति शक्तितेदेव त्रिलोक समाजू । मंगल शक्तिहि चीन्हिलहै हरि कौन अशक्ति करैभवशाजू ३५२ सिद्धनकेतन सिद्धि न लागतवृद्धनकेमनवृद्धि न आवै। शूरशरीर न आतप ब्यापत ना हिमते हिमवान जडावै ॥ पावक तेज न पावकदाहत सर्पमुखै बिप ना मरिजावै । मंगलत्योमनबुद्धिअहं चितजीवहि क्योंहु न लावहुयावै ३५३ जाकरवृद्धि न हानि न ताकरजाकरहानि न वृद्धि न ताके ॥ मावस औपुणिमाकि कथा शशिक्षीण औवृद्धि न कतप्रभाके । वृद्धिऔ हानिदुवोदुखदायक आवत जावत को समता के ॥ मंगल त्यो अध ऊरधमें भ्रमजो रस एक तोको दुखवाके ३५४देखिसि काजो कहै सबमेप्रभुखोजिसि का जोकहै इतनाही । ब्याइसिका जोपै दृष्टिनआवबलाइसिका जो अकाय सदाही ॥ पाइसिका जोपै हाथ नलागतगाइसिका जो अकथ्य कथाहीं । मगल पूरणज्ञान उदय अपनेघर में न इतैउतजाहीं ३५५ पण्डितको नहि आतम चीन्हत कोक बिता मन ज्ञानन जाके ।संतकहा उर तोप क्षमा नहि भूपकहा भयसिद्ध नयाके ॥ योगकहा न समाधिहि धारत भोग कहा धन नारिबिनाके ॥मगल ज्ञानकहा ‹ दर्मे तिमि जोनरनैं मगमेंसमताके ३५६औरनको मनतुच्छ बिलोकत आपुहि तुच्छ न सोच तहेरे । आनन के गुण शामबडै नित औगुणको अपनेगृह ढेरे ॥ चाहति पद्धति आपनिही खल निंदतहै सबकोअव तेरे । मंगल दीन कहैं हम साहन साह भयो धन वातन केरे ३५७ कर्म प्रताप बिलासकरै सुरधाम परो दुविधा दुखदाई । स्वर्ग अधोरु अधोपुनि स्वर्गते आवत जात बडी भ्रमताई ॥ त्यागि शुभाशुभ

कर्मसबै मुनि संतरहे निज अंग समाई । मंगल स्वर्ग न नर्कग्रसै तिनको अपने पदमें ठहराई २५८ वाग्विलासन है निरबाणहु वाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला । सृष्टिबनायँ न पालत मारत है विपरीत कथा तरुमूला ॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ सकै कथनी प्रतिकूला । मगलको भव जाननहार अभाव किबात बकै लघु थूला २५६ वारिजपत्र रहै जलमेंनित वारि न व्यापत त्यों जगसाधू । औ जलजीव रहै जलराशिहि बूडतहैं नहिं नीर अगाधू ॥ सर्प समाज रहैं तरुचंदन शीतलहीन ग्रसैं विष बाधू । मंगल ज्ञानितथा भववीथिन डोलतनीर सहीकृत नाधू २६० गौरवमें गुरु लागिरहे अरु पीरनकेदिल लाग पिराई । ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल रसालतिकी चतुराई ॥ एकदु तीनि विचारकरै बनिसंत महतरचै कविताई । मंगल ब्रह्मबखानकरैनहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई २६१ वेद किताब बखान विचारिय आगम और हदीशकि बानी ॥ आपुहि न्यायकरै सब को नित शासित कारक जीव प्रमानी ॥ है सुनता सबकी निज कानन तौ तनुधारि परे अनुमानी । मंगल बुद्धिथकै न बकैअब जोकछुहैं सो सही न कहानी २६२ दीरघमें लघुजानिपरै अरु हैलघुमें परिनाहशरीरी । थावरमें चरदेखिय औचरमें पुनिथावर सोगति धीरी ॥ थूलनमें अति सूक्षम आवत लिंगनमें जनु थूलकिथीरी । मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति में मतिसीरी २६३ ज्यों शिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन ओमुख दंत गनावै । जीभ कहै पुनि कंठभुजा उर पेटसनाभि गुणी समुझावै ॥ लिंग गुदा पगत्यों नखते शिखलौं जिमिहैतन नाम कहावै । मंगल त्यों तिहुंलोक अलोकहु नाम सनातनब्रह्म बतावै २६४ जाहि कहै सबके शिरपै पुनि ताहिकहै सबकेतन वासी। भापि अजन्म अनादि बदै पुनिगावतहै रघुवंश प्रकासी॥ रूप न रेख न रंगभयो फिरिभापत शेषकेशीश विलासी । मंगल द्वैत कियौं यकभावन फूलत गालजो आवत हासी २६५ सीख-

कछू इमहीमन ज्ञानविचार, विवेक लहौ सुख जातैं। तेहमको पुनि ज्ञानबढ़ें गुणि छंदअनेक कथी कवितातैं॥ आपनमें नहि-भाव विलोकत नित्यसिखावत योगकि घातैं। मगल सांचकहावतहै यह नानिकेआगे ननौरेकि वातैं ३६६ जोप्रथमयपितु तौ पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई। वृक्ष बदे जिमि बीज बिना किमि बीजभयोबिनु वृक्ष न होई॥ कारणतौ विनुकारज नाहिन कारज कारण हीनकिकोई। मंगल शून्य न एकविना तिमि एकनशून्य विहाय वदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणघाते। मोहबिना बहुरोवत भ्रातहि लोभविना मुनिराज सुहाते॥ मानविना निजनारि तजीहित-कारक क्यों निज बंधुडुवाते। मंगलमित्रतजे सबवीचहि सेवक आप सधामन जाते ३६८ जासन भाषिय सत्यकथा अनखाय कहै वडनिंदक तूहै। ज्योतिषके मतमेंअटकौ नभकीसरणी नहिं जानतभूहै॥ बीजकि वाणि न बूझिसकैलपिटायअजानगहैमहि रूहै। मगलज्यों समुझैखगहोरिल पांवदवीलकडीगतकूहै३६९ गोमलते जिमिकीटभयो नहिमातपितानिजजानत सोहै। त्यों प्रथमैमनुभे कियौं आतम वुद्धिसमाने पितानिज जोहै॥ जान-तनाहिंवनावनहारहि कोटिकवेद किते बनिटोहै। मंगलपंखकवू तरहेरत कोकबितादुविधा न विमोहै३७० जादिनसेमनु नारि समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई। बाढ़ीजवैअतिसततिताक-र कीन तवै गुणि आगम सोई॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नहीं तवनीचकुलीन दुधामति खोई। मंगल एकहिवर्ण तहासव सों अब भातिअपार कथोई ३७१ठाकुर औ तुलसी यक भावहि ताहि धरे शिर कामिनिराते। बाद वृथा कृत साखि मृपा कहि लूप छले निज धर्म कहाते॥ माप तुला कृतकूटिसदा परनारि औ पातुरि के सँगमाते। मगल निंदक सोकिधौं सज्जन भक्त कहावत मूढ़महाते ३७२॥ कवित्त॥ तीरथते आइकहै हाथन लगतुमोप दुःख अति मारगमेंकहांलौ गनाइये। अमुक कुथान

कर्मलबै मुनि संतरहे निज अंग समाई। मंगल स्वर्ग न नर्कग्रसै तिनको अपने पदमें ठहराई २५८ वाणविलासन है निरवाणहु वाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला। सृष्टिबनायँ न पालत मारत है विपरीत कथा तरुमूला॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ सकै कथनी प्रतिकूला। मंगलको भव जाननहार अभाव किबात बकै लघु थूला २५९ वारिजपत्र रहै जलमेंनित बारि न व्यापत त्यों जगसाधू। औ जलजीव रहैं जलराशिहि बूडतहैं नहि नीर अगाधू॥ सर्प समाज रहैं तरुचंदन शीतलहीन ग्रसैं बिष बाधू। मंगल ज्ञानितथा भवबीथिन डोलतनीर सहीकृत नाधू २६० गौरवमें गुरु लागिरहे अरु पीरनकेदिल लाग पिराई। ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल ररालतिकी चतुराई॥ एकदु तीनि बिचारकरै बनिसंत महतरचै कविताई। मंगल ब्रह्मवखानकरैनहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई २६१ वेद कितेव बखान बिचारिय आगम और हदीशकि बानी॥ आपुहि न्यायकरै सब को नित शासित कारक जीव प्रमानी॥ हैसुनता सबकी निज कानन तौ तनुधारि परै अनुमानी। मंगल बुद्धिथकै न बकैअब जोकछुहैं सो सही न कहानी २६२ दीरघमे लघुजानिपरै अरु हैलघुमें परिनाहशरीरी। थावरमें चरदेखिय औचरमे पुनिथावर सोगति धीरी॥ थूलनमें अति सूक्षम आवत लिंगनमें जनु थूलकिथीरी। मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति मे मतितीरी २६३ ज्यों शिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन औमुख दंत गनावै। जीभ कहै पुनि कंठभुजा उर पेटसनाभि गुणी समुझावै॥ लिंग गुदा पगरोम नखते शिखलौं जिमिहैतन नाम कहावैं। मंगल त्यों तिहुंलोक अलोकहु नाम सनातनब्रह्म बतावै २६४ जाहि कहै सबके शिरपै पुनि ताहिकहै सबकेतन वासी।भाषि अजन्म अनादि बदे पुनिगावतहै रघुवंश प्रकासी। रूप न रेख न रंगभयो फिरिभाषत शेषकेशीश बिलासी। मंगल द्वैत किधौं यकभावन फूलत गालजो आवत हासी २६५ सोरठ

कहूं हमहीलन ज्ञानविचारे विवेक लहौ सुख जातैं। तेहमको पुनि ज्ञानबदैं गुणि छंदअनेक कथी कवितातैं॥ आपनमें नहिं भाव थिलोकत नित्यसिखावत योगकि घातैं। मंगल सांचकहावतहै यह नानिकेआगे ननौरेकि बातैं ३६६ जोप्रथमयपितु तौ पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई। वृक्ष बदे जिमि बीज विना किमि बीजभणेविनु वृक्ष न होई॥ कारणतौ बिनुकारज नाहिन कारज कारण हीनकिकोई। मंगल शून्य न एकविना तिमि एकनशून्य विहाय वदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणघाते। मोहविना बहुरोवत भ्रातहि लोभविना शुचिराज सुहाते॥ मानविना निजनारि तजीहितकारक क्यों निज बंधुडुबाते। मंगलमित्रतजे सबबीचहि सेवक आप सधामन जाते ३६८ जासन भाप्रिय सत्यकथा अनखाय कहै बडनिंदक तूहै। ज्योतिपके मतमेंअटको नभकीवरणी नहिं जानतभूहै॥ बीजकि बाणि न बूझिसकैलपिटायअजानगहैमहि रूहै। मंगलक्यों समुझैखगहोरिल पांवदबीलकडीगतकूहै३६६ गोमलते जिमिकीटभयो नहिंमातपितानिजजानत सोहै। त्यों प्रथमैमनुभे किधौं आतम बुद्धिसमाने पितानिज जोहै॥ जानतनाहिंवनावनहारहि कोटिकबेद फिते बनिटोहै। मंगलपंखकवू तरहेरत कोकबितादुबिधा न बिमोहै३७० जादिनभेमनु नारि समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई। बाढ़ीजबैअतिसततिताकर कीन तबै गुणि आगम सोई॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नहीं तबनीचकुलीन दुधामति खोई। मंगल एकहिवर्ण तहासब सों अब भातिअपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी यक भाखहि ताहि धरे शिर कामिनिराते। बाद वृथा कृत साखि मृषा [illegible] जूप छलै निज धर्म कहाते॥ माप तुला कृतकू[illegible] सौ पातुरि के सँगमाते। मंगल निंदक सोकिधौं कहावत मूढ़महाते ३७२ ॥ कवित्त॥ तीरथते लगतुमोप दुःख अति मारगमेंकहांलौ गनाइये।

जहां भोजन न लेशमिलै अमुक सुथानतहां बड़ो सुखपाइये ॥ प्रीतकी कहानी भूपमेह वादु भाषिकहै मंदिरादि महिमावतावै शुधिताइये । मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठग मीतकोमिलन गावै सुक्तिको न भाइये ३७३ माघमें सवार गंग डुबकीलगाइ खोजै जलमधिमोक्षन कृपालु निजपाइये । ठगनके मेलेमेंझमेले परि भाँति भाँति व्रसनादिखोइ खाय घूमिघर आइये ॥ पांच ओर आगिबारि ग्रीषममें देहजारि सुक्तिनदिखानि शमरामरट लाइये । मंगल भ्रमातजीव आपुआपु भूलवश सथिर न होत जाते दुविधा नधाइये ३७४ मूढ़ताको बासतन पंडित प्रसिद्ध भूमि गूढ़ता न जानैज्ञान भक्तिकाको नामहै । गणक कहावै न गणित बात बूझै कछु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै ॥ साध करि ख्यातज्ञानै साधना न एकजौन बाधक न मारैजीव सुमति सवामहै । मंगल तथाहि ज्ञानि विदित कुधाम देखु ढूंढ़तानज्ञान की न खतन विरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूडिमरत पिपीलि जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहीं । क्षणक उडात थकेम-सक विचारै चित्त गगन निरंत ताके अतलौ समाहिहीं ॥ आतप विलोकि जातपारद विलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम गाहिहौ । मंगलविमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ वस्तु गूढ़ देखिभ्रमित कहत पूछौं काहिहौ ३७६॥सवैया॥ व्यास पुराणकिये कितने इक भावनसों वहुभांति पुकारैं । ध्यावक सुक्ति वदैंयक ब्रह्मकहैं यक धकरे जीवहि तारैं ॥ विष्णुकहैं यकशक्तिभयो यकरामकथा किधौं श्याम बिचारै । मंगल भूलपरी मन पंडित आतमत्यागि फिरैं वहुद्वारैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु जंगमके मत चेतन घानी । जैन अनादि कहैं भवकर्म सन्यास स्वआतम धी निरभ्रानी॥ वादि निराश भयो दुरवेश पुजावत ब्राह्मण पावक प्रानी ।मंगल येंपटराग किधौं कहराइत राग न आन कहानी ३७८तीरथ वासि वदैं शुचि मंजन मूरति पूजक पूतरिध्याना । जापक मन्त्र विधान लिखावत पाठक पाठ मरांग प्रमाना ॥

ध्यानि स्वआतम ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना। मंगलधालि मुमुक्षु सबैयन पोषत ह्यांकहु क्षेत्रविधाना ३७६ ईश्वर अयसही यहजीवहै वेदपुराण कुरानवतावै। पै अवजाइ सकैढिग तासुन अगमें क्यों कर जाइ समावै॥ कोटिउपाय विधानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै। मंगल शोच तजो सिगरे अपने घरमें निजवस्तु लखावै ३८०॥ यथा॥ ज्यों तरुते महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहिं कोटिउपाई। ऊरध औ अध आवत जावत संधिसमीर भ्रमै बहुताई॥ रोवतहै बिललात दुगोदिधि क्यों निजखानि लहैदुचिताई। मंगल ब्रह्म नपावत जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिबाढ़ि घटैमन भूषणवस्त्र अवस्त्र अभूषण। जीवसदा परमानँद पूरण ताकहँ नाहिंविदूप विदूषण॥ ग्रीषम शीतयथा गतिआतप छीजत वृद्धतनेऊन पूषण। मंगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योंहुन मूरखके मनतूषण ३८२ एकदिशा विदिशा भरमैं यकऊरधओ अध खोजतडोलैं। एकउपायन में अटकै यककर्म प्रताप सदा गति बोलै॥ एकभयो हरिकी महिमा यक आपन में अपनी गढ़िखोलै। मंगल एकसबै भ्रमत्यागत हैथिरभावस्वभाव निचोलै ३८३ क्योंभटकै मनज्ञान विहाय बिभासित रूपअरूप नदोहै। ब्रह्मअनादि सहीवंदरज्जन ठामकुठाम दुधा किमिसोहै॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यवहै सुनिपंडित मोहै। मंगल क्योंन तजैदुविधा उतसोइ विराजि रहाइत जोहै ३८४ आवत काल जवैजस जाकहँ होततबै तसकाल वटाऊ। काल सभाव दुभांतिरच्यो प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ॥ कर्म कहावत धर्म विहाय न व्यापक रूप विहीन दुठाऊ। मंगलको समुझावत बालक अक्षर पाठकवेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक बीति गये युग आतम भूत सुरारि पुरारी। केते अकाश मही शिनशे सुरभानु दिनेश निशाचरधारी॥ वेदपुराणविलान अनेकन आगम कारक ज्ञानबिचारी। मंगल आदि अनादि नहीं यहि

जहां भोजन न लेशमिलै अमुक सुथानतहीं बड़ो सुखपाइये। प्रीतिकी कहानी भूपनेह ग्रादु भाषिकहै मंदिरादि महिमावतौं शुचिताइये। मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठग मीतकोमिल गावै मुक्तिको न भाइये ३७३ माघमें सवार गंग डुवकीलगाइ खोजै जलमविमोक्षन कृपालु निजपाइये। ठगनके मेलेमेंझमेरे परि भाँति भाँति बसनादिखोइ खाय घूमिघर आइये॥ पाच ओर आगिवारि ग्रीषममें देहजारि मुक्तिनदिखानि शामरामरट लाइये। मंगल भ्रमातजीव आपुआपु भूलबश सुथिर न होत जाते दुविधा नधाइये ३७४ मूढ़ताको वासतन पंडित प्रसिद्ध भूमि गूढ़ता न जानैज्ञान भक्तिकाको नामहै। गणक कहावै न गणित बात बूझै कछु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै॥ साध करि ख्यातज्ञाने साधना न एकजौन बाधक न मारैजीव सुमरि सवामहै। मंगल तथाहि ज्ञानि विदित कुधाम देखु दृढ़तानज्ञान की न खतन विरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूडिमरत पिपीलि जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहीं। क्षणक उडात थकैमं सक विचारै चित्त गगन निरंत ताके अंतलौ समाहिहीं॥ आतप त्रिलोकि जातपारद विलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम गाहिहीं। मंगलविमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ वस्तु गूढ़ देखिभूमित कहत पूछौं काहिहौ ३७६॥सवैया॥ व्यास पुराणकिये कितने इक भावनसों बहुभांति पुकारैं। दायक मुक्ति वदैंयक ब्रह्मकहै यक शंकर जीवहि तारैं॥ विष्णुकहैं यकशक्तिभणै यकरामकथा किधौं श्याम विचारै। मगल भूलपरो मन पंडित आतमत्यागि फिरैं वहुद्वारैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु जंगमके मत चेतन बानी। जैन अनादि कहै भवकर्म सन्यास स्वआतम धी निरबानी॥ चादि निराश भयो दुरमेश पुजावत ब्राह्मण शावक पानी। मंगल येपदराग किधौं कहराइत राग न ध्यान कहानी ३७८ तीरथ वासि बदैं शुचि मंजन मूरति पूजक पूतरिध्याना। जापक मंत्र विधान सिखावत पाठक पाठ प्रसंग प्रमाना॥

ध्यानि स्वआतम ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना। मगलआलि मुमुक्षु सवैयन पोपत ह्यांकहु क्षेत्रविधाना ३७८ ईश्वर-अचलही यहजीवहै बेदपुराण कुरानबतावै। पै अबजाइ सकैढिग तासुन,अगमें क्यों कर जाइ समावै॥ कोटिउपाय बिधानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै। मंगल शोच तजौ सिगरे अपने घरमें निजवस्तु लखावै ३८०॥ यथा॥ ज्यों तरुते महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहि कोटिउपाई। ऊरध औ अध आवत जावत संधिसमीर भ्रमै बहुताई॥ रोवतहै बिललात दशोदिशि क्यों निजखानि लहैदुचिताई। मंगल ब्रह्म नपावत जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिबाढ़ि घटैमन भूपणवस्त्र अवस्त्र अभूपण। जीवसदा परमानँद पूरण ताकहँ नाहिविदूप विदूपण॥ ग्रीपम शीतयथा गतिआतप छीजत वृद्धतनेकन पूपण। मगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योंहुन मूरुखके मनतूपण ३८२ एकदिशा बिदिशा भरमै यकऊरधओ अध खोजतडोलै। एकउपायन में अटके यककर्म प्रताप सदा गति बोलै॥ एकभगें हरिकी महिमा यक आपन मे अपनी गढ़िछोलै। मगल एकसबै भ्रमत्यागत हैथिरभावस्वभाव निचोलै ३८३ क्योंभटकै मनज्ञान बिहाय बिभासित रूपअरूप नदोहै। ब्रह्मअनादि सहीवदरञ्जन ठामकुठाम दुधा किमिसोहै॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यवहै सुनिपडित मोहै। मगल कर्मन तजैदुविधा उतसोइ बिराजि रहाइत जोहै ३८४ आवत काल जबैजस जाकह होततबै तसकाल बटाऊ। काल सभाव दुभातिरचो प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ॥ कर्म कहावत धर्म बिहाय न व्यापक रूप बिहीन दुठाऊ। मंगलको समुझावत बालक अक्षर पाठकवेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक बीति गये युग आतम भूत मुरारि पुरारी। केते अकाश मही बिनशे सुरभानु दिनेश निशाचरधारी॥ बेदपुराणबिलान अनेकन आगम कारक ज्ञानबिचारी। मगल आदि अनादि नही ध्यहि

गायसके न प्रवीण अनारी ३८६ शब्द स्वरूप बदै यकजीवहि नाहिँ परै सुनि कान लगाये। एक भणै परिपूरण ज्योतिनहाथ नरै भ्रमभूलगआये॥ आदि अनादि न जीवन गावत दूसरओर चलैं सुख्छाये। मंगल जन्म अपारन खोजत वीतिगये न घरै फिरिआये ३८७ कोटि विचारि विचारि मरै कवितापढ़िकोटि बनाय मरैरे। कोटिन तीरथ धाइफिरे ब्रतनेम अचार अपार करैरे॥ पावक तापि तपाइ मरै पगएक दुपाद खडो विचरैरे। मंगल बूझिपरैनबिनागुरु बातन साधनसों न सरैरे ३८८ वेद ऋचा बहु बूझि भ्रमै बहु आयत बूझिकुरान पढ़ैरे। ब्राह्मण होइ कि शेखबनै बहु पण्डित आलिम नाम बढ़ैरे॥ आनगढ़ी नित भापि रहै बहु चातुरिकै बहु आपु गढ़ैरे। मंगल जानेबिना निज आतम या भवतेकबहू न कढ़ैरे ३८९ साधनसाधिअनेक महीतल बैठिरहे उरज्ञान बिचारी। छंद कविच अपारबनाइ चुपाइ रहे विभुतान निहारी॥ योगनसाधि तजेजलअन्नहि पै न लगा कछुहाथअगारी। मंगलहि परमातम सत्य न देखिसके विषयी तन धारी ३९० जीवहि क्यों भरमावत तू जब ज्ञान कियान कथाकथि भारी। पारसको खलधाथर गावतकांच गहावत बुद्धि विसारी॥ बातन होत बिना दृढ़ता मति तर्क अनेककिये अविचारी। मंगल पूरिरहा सबही थल एकतुही न द्वितीय व्यकारी ३९१ जन्मजरा न तजे अपनी मति ज्ञानविवेक अपारनगाये। तीरथ न्हाय किये ब्रत संयम साधन साधि दशोंदिशिधाये॥ जौलगि आतम भाव गहै नहिं पथकुपंथ सुपंथ चलाये। मगल सन्त सबै निज गावत पै न बचै मृतु पाशहि आये ३९२ अन्त समयजस आशरहै ततयों मुनि आगम वेद बतावै। भाषिवहै बहुसाधन गावत क्यों दुबिधा अपनी मिटिजावै॥ कर्म किये बिनु कर्म किये यक भाव पयान मनैनहिंआवै। मंगल सिद्धि उपाय इतै जिमि पारस लोहछुये हरिभावै ३९३ त्यागि शुभाशुभ भव भाव उदासरहै चितधारे। काहुको बैर सनेहन

मानत मोहन मूरति चित्तधारे ॥ ऊपरके तजि स्वांगसबै शुचि अन्तर पूरण ज्ञान विचारे । मगल साधु सही महिते जनसादर अन्त स्वच्छन्द विहारे ३८४ आनँद रूप रहै निशि वासर त्यागि सबै सुखदुःख अकारण । मौन रहैकि भणै हरिकीरति अस्तुति सस्तुति जीवन मारण ॥ आपविवर्जित आशिर्वादनहीन समस्त विरश विधिधारण । मगल सन्त स्वतंत्र बिहारत सुंदर भाव जिवौं भवतारण ३८५ एक नदीतट सेतु रचावत बूझतएक कहाँ जलथाहा । पैरत एक न पावत पारइकूलहि एकरवडेदुखदाहा ॥ बांधि धंडा श्रुतिपारचलै यक बूमि कहै कि निरन्त प्रवाहा । मंगल श्रीगुरु,वोहित्त पायविनाश्रम एकतरै सरिनाहा ३८६ ऊमरि के फल वासि यथा नहिँ जानत दूसर देशबसैरे । त्योंयह जीव धरातल डोलत लोक अलोकन चित्त भसैरे ॥ लोकअपार किये करतार तहां बहु भाति गुणी विलसैरे । मगल पै नलखै यहि लोकहि जीअनुमानन एकलसैरे ३८७ केतिक ग्रन्थपुराण सुनेपढ़िकेतिक पुस्तकभौनअपीरे । केतिक तीरथन्हायथक्योवहु मंत्रगयत्री सुभाय जपीरे॥केतिक पूजनपाठकियोव्रत नेमअचार कुचालि छपीरे । मगल आसन साधन तापनहाथन झूठीखुलीन ढपीरे३८८ आपनसे करिये बहुते परदोषविवाद बढ़ै उर वाके। मौन भलीयहि कारण रेमन जीवनमृत्यु वृथानिततके॥ अक्षर पाठक ग्रन्थपढ़ै किमि दीख उलूकन कंत प्रभाके । मगल क्यों उपदेशतअद्भुत बाहिर हेरतअतर काके ३८६ ज्यो जग लोग वदै तसभाषिये अंतर आपनि वृत्ति बिराजै।कर्मसुधर्मअकर्म विमोह कहावत सोकहिये सुख साजै ॥ निंदक मूढ़न वादि कथै ज्यहि कारण सो शुचि शुद्ध समाजै । मगलसत्य छिपाय धरौ उरझूठ वदौ भव आदर काजै ४०० क्यो मन झूठ कहाँ भववीथिन आदरकौन निरादर कोरे । तू विषयी रसलपट रेमन संमत देत विषयरस भोरे॥ अंत विभोग विलोकिय संसृति दुष्टमहाभ्रमणा मनतोरे ।मगल सोनलगी अपने जलहाथ लगै न घिलाहि

निचोरे ४०१ लोक लिये, परलोकन, भावत मोह विबर्द्धि लहै मनमाहीं । जो परलोक गहै तोरहै, कित, लोकहिमें सबलोग सोहाहीं ॥ जीवनमें सबभांति सदासुख जीवनमें दुखकी परिछाहीं । मंगल ज्ञान बखानत टूटत है गुण बेद कितेव कहाहीं ४०२ संमत साधु सदा सुखदामति नीच अधोगति दानिकहावै । जोजन सत असंतन चीन्हत सोदुखभोग कबौं नहिं पावै ॥ आपनिवृत्ति समाधि रहीन द्वितीय बिलोकनि जीवहि आवै । मंगल सोजन जीवनमुक्त न जात अधोरध ब्रह्म समावै ४०३ त्यागि सबै भ्रम ध्याउ सदाहरि आन भरोस, बिहाय अरेमन । ज्ञानसमेति सुकीरति ताकर गायकरै शुभकाज लहेतन ॥ मुक्ति पदारथ हाथलगै फल आनहुं पाय गुणै सुखकोगन । मगलसत्य बिबेक लियेनहिं स्वारथ सतनको द्वितियेसन ४०४ मोहकुमारगमें भटकै सबिबेकन तूहरिको पदध्यावै । दानि अभिप्रिय दूसर नाहिन क्योंनहिँ तूदृढ़ता मनलावै ॥ नाम प्रताप दयो दिबि मंडित पंडित दान अजाकरवावै । मंगलभूल न जानत ईश्वरतू कस आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित होत महीतल संगते दुष्टशरीर बनैरे । संगतेमूढ़ कुकर्मबिमोहित संगतेनीचकुलीन गनैरे ॥ संगते बेद विधानं गुणोब्रत योग समाधि सुध्यानसनैरे । मंगल संग प्रकाशक ज्ञान कुसंगते उत्तम भ्रष्ट पनैरे ४०६ स्वांगनमें इत आयु गमावत रोगनको मनभोग बिचारै । संगति भावति मूढ़नकी सतसंगति में न घटीकुविहारै ॥ स्वाद विषय रस चित्त वस्यो अवक्यों शुचिज्ञान हियेमें प्रचारै । मगल चेति अजौं भजिले हरिजन्मद्वितीय व्यकारहि टारै ४०७ जीवनहैधृग याभवमें हरि त्यागि विषयरस जे लपटाने । कीट पतगपशूखग भूधर तेपि भलेरस इंद्रिय साने ॥ जेनर कायहिपाय नध्यावत आतम शुद्ध स्वभावप्रमाने । मगलतेजडतेजड जानिय क्योंकरतार तिन्हैं निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मनमूढ़न त्यागत आपनि चंचलताको । झूठविषयमेंप्रयुक्तरहै सतमारगपैन सजा-

नहिं ह्वाको ॥ कामकला मदकी मदता तजि लोभभजै किनकंत रमाको। मंगल सीख अपारदई नहिँ तूजड शुद्धभयो दुखकाको ४०८ आतमही परमातमहै तटही नहिँ दूरिफिरै दिग्गिचारी। वस्तुधरी अपने घरमे प्रतिद्वारकि खोजत ज्ञान बिसारी ॥पूछत आन बतावत दूसर जोपिवदै परधाम बिहारी । मगल आपनि नाकनटोवत मूरुख धावत काक पछारी४१०आतमवास शरीर सहीकबि सतन भापि बताय सकैरे । वाथल बुद्धिनहीं मन कीर्गात कोटि कुयोजन धाइथकैरे ॥ ज्योंप्रियभोगकराय बिना न बखानिराकै चहुंकोटि बकैरे । मंगल आपुहि जानत आपुहि ज्ञान द्वितीय न बुद्धिचकैरे४११ याजग फागुन फागलगै अपने गृह फागुकि बारहमासी ।.लोग निलज्जरहैं यकमास इतै नित काम करावत हासी ॥नारि इतै फगुवागहि मांगत ह्यां नितलोभ बधारि बिलासी। मंगल यातनते भवही भल जोमर्याद गहेन बिनासी ४१२ जेतिकलागुल गाउ रहेन बहू रसको अब छूटि गयोरे । शुद्ध सतोगुण चित्तबसो तम मोहनश्यो रविज्ञान उयो रे ॥ खोजत जाहि सोआपुमिलो भ्रम भूलकिपद्धतिको बितयो रे। मगल मौनकि रामजपै रसनीरस नाम बिवेकभयोरे ४१३ जोभ्रम आगिल पाछिलको अरु सर्गुण निर्गुण को व्यवहारू। सो अब एक प्रमाण लखो दुविधा निज अंग बिकल्प बिचारू ॥ निर्गुण नाहित्त सर्गुण कोपि वहै सब ठाम स्वछंद बिहारू । मगल; नागर ग्राम्यबनी त्रिपु पूरुष एक बिवेक निहारू ४१४ सौंपि स्वराज्यसबै निजमत्रिन भूपगयोबन ज्योंमृगयाको । ज्यों हरि आव इतै तनुधारि सुमोहन रूप भजै शुचियाको ॥ कानन राजहि जानत तेजन हैं जिन दीख कबौं नृपताको । मंगल संत तथा पहिचानत ब्रह्म स्वरूपहि श्याम प्रभाको ४१५ चाहिय आपन शुद्धस्वभावकहाच्युत अच्युतसों निजकाजू । ब्रह्महिश्यामजु श्यामहिंब्रह्म स्वभांति दुभातिन ज्ञानसमाजू ॥ दोविधितौ भल एकहितौ भलतू अपनीकहु त्यागिकुसाजू । मंगलहोइमही-

पतिकौनहुं दासकहाय न पाउव राजू ४१६ जाकरराज प्रजाहम ताकर जेहमहीतौ प्रजान नृपालू। कोअवतार धरैभवमें पुनि त्यागि कलेवर जात सख्यालू ॥ जानवहै अतिदुर्लभ चीन्हवदुस्तरभाव फँसा भवजालू। मगल आपुहिभूलि कहा फलदूसरको सवबूझि हवालू ४१७ ढूँढतकाहिफिरै मनमूरुखदेशविदेश सकष्टवटाऊ। सिंहपस्यो पिँजराजिमि दौडत तोडततहि न भूलप्रभाऊ ॥ त्योंभ्रमपाश परीगलमें नहित्यागत चचलता व्यवसाऊ। मंगलहैतो तुहीनहिं दूसर अंतर बाहिर एकस्वभाऊ ४१८ मुण्ड मुडायगहे करवा दुखभोजनके घरघेहिकेआवै। जौन गृहस्थसों बंधनमें सुतनारि प्रयोजन वित्तमतावै। जोनहिंसंत गृहस्थनहीं तिनकी कुदशा न कथेकथिजावै। मंगल कौनहुं भांतिनहै सुख संसृतमें दुखहू दुखपावै ४१६ संतनटेक तजैं अपनी भव व्याधि अपार सतायमरैरे। कोटिउपायकरे पितुज्यों प्रहलादसदा हरि नामररैरे ॥ जानिदुखी निजसेवक साहिव धाइसहाय प्रसिद्धकरैरे। मंगलक्यो खलदेखिडरैं नितआपनि वृत्तिहिमेंसचरैरे ४२० दृष्टिदिये जगराग विलोकत कर्मवशी निरवाण विवादो। रामरहीमवदैं बुधपारस तारसको कुछजाननस्वादो ॥ मोहमयी मति जासुन आवत ज्योंपशुपै शुचिचन्दन लादो। मंगलज्ञान वृथाहि वदै जडवानर जानत स्वादकि आदो ४२१ तालवजै न वजावनहारहै राग अलाप नगायककोई। देखनहार बिनाचपमूरति नृत्यकपाद विहीन लखोई ॥ शून्यगली तहँ आपुविराजत माम तहां जनएकनहोई। मगलसत्यन दन्तकथा गुरुगम्यलखै दुबिधासव खोई ४२२ मारगमें सवदेववसैं गणनाथ महेश रमापति देखे। शूरनिशाकर गंगतरंगिनि सूरसुता सगिरा त्रिपुलेखे ॥ दंड दुतीनि कुसाधनमें सब अद्भुत बातकि नैन निमेखे। मंगलयोग वदैसिधिसाधक अंधनबूझत चक्षुनपेखे ४२३ ॥कवित्त॥ कोटिसमुझावैगुरुमूरुखन बूझैबात यथाकाकश्वेतहोय धोवतनगंगमें। जोपै नस्वभावी गुणग्राहिरको रंगका च कछुकसोहाय जौलौंरहत सु-

संगमें ॥ छूटिजात कालपाय किधौं मदजातहोत सुबुधि कुसंग तजि नाफाज्योंकुरंगमें। मंगल न भूलैज्ञान सम्पति अपारपाय सत्यधाम पुरुष बिलोकै निजअगमें ४२४॥ सवैया ॥ को अब ज्ञानगुणैसनमें मतिशुद्ध प्रकाश विचारि चुरानी। मारणहारन पालनहार न सिर्जनहार त्रिभावकठानी ॥ एकस्वरूप अखंड बिराजत तीनिप्रकार कथै भवज्ञानी। मंगलसिंधु कथान पिपील बतायलकै भ्रमपथ भुलानी ४२५ वासरभानु उदोतकरै निशि मैं शशिखेचरहोत प्रकाशी। आदिअनादि दुऔ विधि आवत शुद्ध सभावलिये स्वविलाशी ॥ ईश्वरमय सबभासिपरै विनु ईश्वर अब प्रभाकितनाशी। मंगल धन्यअहै करतारसचोफिरि ताहिरचोन दुभाशी ४२६ सत्यदयानिधि तूमनबठामन रक्षतदास सदा हितुमानी। को तुव कीरति गायसकै मति विस्तर रूप नजात बखानी ॥ ज्ञानप्रकाश प्रभाकर मूरति मोह निशा भ्रम रूप तिरानी। मंगल जैति वदै करुणाकर देहुस्वभाविक वस्तु अमानी ४२७ शीशजटा न जडाउ बँध्यो नहिंमस्तकभूति न चन्दनरोरी। बासित अंग अवासित नाहिन तीरथ औ व्रतते मति भोरी ॥ मूढ़नमें गणना अपनी कविपंडित कौन कथा कछु मोरी। मंगलदीख दशौदिशिमें प्रभु आइपरो शरणागतितोरी ४२८ मोहन मूरतिहौ परमानँद सत्य चिदानँद वेद बखाना। याभवभूल सबै त्रिविधेविश्व काहि कहौंमनको अनुमाना ॥ एक महीतल एकवसै सुरधाम दुऔ किमि एकसमाना। मंगल दीख जहाँतहँ मायहि हौशरणागति तू भगवाना ४२९ कोटिन भाव कुभाव विचारिय कोटिन तीरथ धावतडोलै। कोटिन जाप जपैं अजपापुनि पाठरु कोटिन बाणिसुबोलै ॥ कोटिनपढित आलिमहैं अरु कोटिन वैद्यरसौषधि खोलै। मंगल ईश्वरकोकछुखोजन पावतहैं कितनी गढ़ि छोलै ४३० जेगुरु के पदकी रज सेवत तेपि सुजान कहैं कविताई। जे न गुरुगति जानत मूरख तेन सुजान भयें भ्रमताई ॥ जो गुरु सेवक नामइते शुचि भाव भये

दुविधा मिटिजाई। मंगल मौन रहौ न कहौ कछु सत्य समाज करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता अपनी मतिमें नहितौ व्रत नेम वृथा तनपीडा। सिद्धि उपाय स्वभाव वहै मतसंत समाजउठावत ब्रीड़ा॥ भोग बिलास विषय भ्रमरूपक सोलहिजीव प्रकाशक क्रीडा। मगल ब्रह्म बिधानको बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौं गहि मीडा ४३२ गावत होत प्रयोग, अहै ऋग् औ यजु अच्वर जाहि बतावै। सामभणे उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै॥ पुष्टि समोहन बश्य उचाटन मारण थंभन आदि गुणावै। मंगल वेदके धर्म सवाक्य बखानत सो उपनीषद माहै४३३ जाग्रतको यकसार विचारत स्वप्नबिधानगुणैं यकसारा। एक सुपुप्ति विवाद लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण बिचारा॥ पैनहि जानतकौनु विमोदतबाद विवाद अखंड पसारा। मगल बूझमलीनहिंआवत मूरुख खोजत सिंधुकरारा४३४ जंगमरूप कहै यकसाधु मतावत थावरहैं यकसंता। भेदनजानत बादिबखानत हैदुहुभाव प्रमाणनिरंता॥ आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराण भनंता। मंगलआतम शुद्धसतोगुण ताहि बिसारिभ्रमै मतिवंता ४३५ सूध चपानन देखिसकै दृग मूँदि लखै बरुनैन पसारी। ऊलटि दृष्टि बिलोकत रूपहि सत्यकथा मुनिराज बिचारी॥ देखतही निज रूप मनोहर मोहमयी भ्रमदेत बिसारी। मंगल सानँद मुक्तमहीतल दम्भ बिलास कि बात नियारी ४३६ ॥ छन्द ॥ सातौ आसमानके ऊपर अर्शमुअल्ला कुर्सीहै। आपी तहां बिराजतमालिक हरसायत गति उर्सीहै॥ जाननहारा दूजा नाहीं यों कह बाणी फुर्सीहै। मगल हद्दरही नहिं बेहद खाम खयाली पुर्सीहै ४३७ ऊपर को सबसैन बुझावैं नीचेकी सुधि नाहीं है। भटकत फिरै भूलिमायामें पूजा पाठन माहींहै॥ कहता सुनता तर्कअनेकन गूढ़ अगूढ़ कथाही है। मगल पै न बूझमें आवत है जैसा तैसाहीहै४३८ यकनासूत बतावैं सच्चा यकजब रूत लखातेहैं। एककहैं मलकूत देखिये यकलाहूत सुझातेहैं॥ यकचारोंसेन्यारे

होलैं घरंहाहूत बताते हैं। मंगल भूली भटकी गावै इतकी उत दरशाते हैं ४३६ जाग्रतसो ना सूलवताइय ख्वाबकथा ज़बरूती है। है मलकूत ख्वाब गफ़लतमें निज ज्ञाता लाहूतीहै ॥ जहतिआया तहासमाया सो आलम हाहूतीहै। मंगलपंचदशा येअपती आनकहे मति सूतीहै ४४० सूरजका प्रकाश ज़रीनानूर इलाही ऐसाहै। सर्दी गर्मी कुछनहिं उसमें मणि प्रकाशधौं जैसाहै ॥ बेनंज़ीर बेचून नामहै भया न होइ न वैसाहै। मंगल समुझिलीजियेदिलमें है वह जैसा तैसाहै ४४१ अद्भुतमूरति क्यों कहिजावै हियभावै जिय अविजू। जिह्वाकहत बनतनहिं कैसेहु फिरि क्यों करिसमुझावैजू ॥ सैनबुझावै बूझ न आवै कर्मकिये नहिं पावैजू। मंगल सत्य भणत मुनिसावू ज्योंगूँगागुडखावैजू ४४२ ॥ सवैया ॥ जेन हिंजानिसकैगुणको मनतेकिमि निर्गुणभेद विचारैं। वेचतनित्य वराटिकैजे नहिते मणि माणिकमोल उचारैं॥ कर्मधर्मी भवभूतजितैनहिं तेशुचि आतमज्ञान निहारैं। मंगल खेल खिलारिन केसँग मूरुखके सँग जीतत हारैं ४४३ कंदखनै इक मूलभखैं फल खायतमैं इकक्षीरअहारी। ग्रीषम पावक मध्यदहैं तनशीत रहैं जलमें दुखभारी ॥ पावसमें तजि छाहँ रहैं जप पाठकरैं भवयाग पसारी। मंगल चीन्हत आतम जोनहिं तौभ्रम मेटिसकैं न अनारी ४४४ ज्ञानगली न चले कबहू तिनको कस सिद्धि सती गुण होई। वाणिसुने निर्वाण विभासकि चकितचौंधि रहैं बुधि खोई ॥ चित्त गुणै यहवंतकथा जपपाठ विधान न पूजतिकोई। मंगल वर्तनिकारत मूंदत मूढ़कि दर्पणको कपि जोई ४४५ ब्राह्मणे पूज्य गृहस्थनके घर धायतवैजन पाइँपरैरे। वे अपने मदमें अटके कछु ब्रह्मविधान न चित्तधरैरे ॥ जानत वेदन भेदन मंत्र न भक्ति न ज्ञान न त्याग वरैरे। मंगल भेडियधसीन गहेपग पंचकरैं जस तैस करैरे ४४६ मानव तापमनारि कमीनिरहेवम ताकहँ दोष लगावैं॥ क्षत्रियते

दुविधा मिटिजाई। मंगल मौन रहौ न कहौ कछु सत्य समाज करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता अपनी मतिमे नहितौ व्रत नेम वृथा तनपीडा। सिद्धि उपाय स्वभाव वहै नतसंत समाज उठावत ब्रीड़ा॥ भोग बिलास विषय भ्रमरूपक लोलहिजीव प्रकाशक क्रीड़ा। मगल ब्रह्म बिज्ञानको बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौ गहि मीडा ४३२ गांवत होत प्रयोग अहे ऋग् औ यजु अंम्बर जाहि बतावै। सामभणै उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै॥ पुष्टि समोहन वश्य उचाटन मारण थंभन आदि गुणावै। मंगल बेदके धर्म सवाक्य बखानत सो उपनीपद भाखै४३३जाग्रतको यकसार बिचारत स्वप्न बिधानगुणैं यकसारा। एक सुषुप्ति विवाद लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण बिचारा॥ पैनहिं जानतकौनु विमोदतवादविवाद अखंड पसारा। मंगल बूझभलीनहिं आवत मूरुख खोजतसिंधुकरारा४३४जंगमरूप कहै यकसाधु बतावत थावरहैं यकसंता। भेदनजानत वादिबखानत हैदुहुंभाव प्रमाणनिरंता॥ आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराण भनंता। मंगलआतम शुद्धसतोगुण ताहि बिसारिभ्रमै मतिवंता ४३५ सूथ चपानन देखिसकै दृग मूँदि लखै वुनैन पसारी। ऊलटि दृष्टि बिलोकत रूपहि सत्यकथा मुनिराज बिचारी॥ देखतही निज रूप मनोहर मोहमयी भ्रमदेत बिसारी। मंगल सानँद सुकमहीतल दम्भ बिलास कि बात नियारी ४३६ ॥ छन्द ॥ सातो आसमानके ऊपर अर्शसुअल्ला कुर्सीहै। आपी तहां विराजतमालिक हरसायत गति उसीहै॥ जाननहारा दूजा नाहीं यों कह वाणी फ़ुर्सीहै। मंगल हदरही नहिं बेहद खाम खयाली पुर्सी है ४३७ ऊपर को सबसैन बुझावैं नीचेकी सुधि नाहीं है। भटकत फिरै भूलिमायामें पूजा पाठन माहींहै॥ कहता सुनता तर्कअनेकन गूढ़ अगूढ़ कथाही है। मगल पै न बूझमें आवत है जैसा तैसाहीह ४३८ यकनासूत वतावै सच्चा यकजब रूत लखातेहैं। एककहैं मलकूत देखिये यकलाहूत सुझातेहैं॥ यकचारोंसेन्यारे

डोलैं घरेंहाहूतं बताते है। मंगल मूली भटकी गावैं इतकी उत दरशातेहैं ४३६ जोग्रतसोनां सूतवर्ताइय ख्वाबकथा जबहती है। है मलकूत ख्वाब गफलतमे निज ज्ञाता लाहूतीहै ॥ जहांते आया तहांसमाया सोआलम हाहूतीहै । मंगलपंचदशा येअपनी आनकहे मति सूतीहै ४४० सूरजका प्रकाश जरोतनूर इलाही ऐसाहे । सर्दी गर्मी कुछनहिं उसमे मणि प्रकाशधौ जैसाहे ॥ बे नंजीर बेचून नामहै भया न होइ न वैसाहै । मंगल समुझिली जियेदिलमे है वह जैसा तैसाहै ४४१ अद्भुतमूरति क्यों कहिजावे हियेभावै जिये आवेजू । जिह्वाकेहत बनतनहिकैसेहु किरि क्यों करिसमुझावेजू ॥ सैनवुझावे वूझ न आवे कर्मकिये नहिपावेजू । मंगल सत्य भणत मुनिसाधु ज्योंगूँगागुडखावेजू४४२॥सवैया॥ जेनहिंजा निसकेगुणकोमनतेकिमिनिर्गुणभेद विचारैं। बेचतनित्य वराटिकजे नहिते मणि माणिकमोल उचारैं॥ कर्मवशी भवभूत जितेनहिं तेशुचि आतमज्ञान निहारें ।मगल खेल खिलारिन केसँग मूरखके सँग जीतत हारै ४४३ कदखनैं इक मूलभषैं फल खायतपै इकक्षीरअहारी।मीषम पावक मध्यदहैं तनशीत रहैं जलमें दुखभारी ॥पावसमें तजि छाहँ रहैं जप पाठकरैं भव याग प्रसारी। मगल चीन्हत आतम जोनहिं तौभ्रम मेटिसकैं न अनारी४४४ ज्ञानगली न चले कबहू तिनको कस सिद्धि सतोगुण होई । वाणिसुनेतनिबोध बिभासकि चक्रितचौंधि रहैं बुधि खोई ।चित्रगुणे महवतकथा जपपाठ विधान न पूजनकोई । मंगल वत्तनिकारत मुंदत मूढकि दर्पणको कपि जोई ४४५ ब्राह्मण पूज्य गृहस्थनके घर धायतवै जन पाइँपरैरे । वे यफ्ते मदमें अटके कछु ब्रह्म बिधान न चित्तधरैंरे॥ जानते वेदन भेदन मांचन भक्तित ज्ञानत याग करैरे । मगल भैंडिधसीन गहीपग पंत्रकरैं जस तैस करैरे४४६ वासव तापसनारि रम्यो निरहेवस ताकहँ दोष लगावै॥ कौशिकपातुरकिके सँग मिलित क्षत्रियते शुचिविप्र कहावै । विष्णु मलंधर नारिठगी सर्व संवृते कोउन

जीव लजावैं ॥ मंगल पंचकरै सोकरौ नत सत्यकहे जगनिन्दक गावैं ४४७दीख अनेकगुणी कवि कोविद जेकविता सव्रितासम गावैं।आलिम फ़ाज़िल येवरु आरिफ़ आयत जोन कुरानबतावैं॥बातनके निर्बाण लियेवहु ऊपर केर विचार लखावै।मंगल अंतरकी गति गावत आपुहि बूझत आपु लजावैं ४४८ जासन पूछिय मुक्तिगली सो बदै जप तीरथ पाठ अचारा। जोकरि कोटिन धाकिरहे फिरि क्यों भटके मन ज्ञान प्रचारा॥ हैतनमें सोमरै नतरै जोमरै औतरै सोशरीर व्यकारा। मंगलसिद्धसमाधिन साधत बूझत आतम ब्रह्म बिचारा ४४६ जोसबके थिर ऊपर सोहत तासुकथा किनिजात बखानी। जो नचहै तनहोत तबै इत बंधनमोक्षकथा न कहानी॥ जायपरै शरणागतताकर ताकिरनाम जपै मुनिज्ञानी। मंगलभूलमिटै सिगरी अपतीपदवी लहि होइ अमानी ४५० आपन बूझ बुझावत आनहिं सो किमि बूझिनकै मतिथूला।सूरज की द्युति होत नहीं सिकता चमकावतहै प्रतिकूला॥ दंभ किमानत ज्ञान विधानहिं जो सब भांति नशावत मूला।मङ्गलभेडि चरावनहार चुकावत क्योंगज मोल अभूला४५१ ईश्वरकी रचना लखिकै बुधि होतठगीसिन बूझतभेदै। कोटिप्रपंच करै व्यवसाउ यथा जल छेदत होतन छेदै॥ बीज विलोकि निहारत पादप चौंकिउठै लहिकै उरखेदै। मङ्गल क्यो करतागति जानत पंडित बैठि रहे तजिवेदै ४५२ जोकहैनेति कृपानिधिकी गति जानत सोमति ताहित बूझै। अंधकि सँवल आपन देखत तापग पांवड़िये मगसूझै॥नौमन सूत इतै अरुझो सुलझावतहौं नितनित्य अरूझै।मंगल सोकिमि तोहिं उबारिहि जोपहिले अपनैरण जूझै ४५३ पाहननाव न नीरतरै किमि पथिवढ़ाय लगावत पारा। क्योंभ्रमि मूरुखसों भटकै निधिचातर ध्याउ सदा करतारा॥पंथअनेक प्रपंच बखानतहैं कृत आनहिं आनबिचारा। मंगल सत्यकहे नवने इत भाविध लोगनके अनुसारा ४५४ क्योंसुख देखिलहैं मुदको

मन औदुख हेरिलहै अवभारो। देवनको शुचि आतम मानत दैत्यनके जडता व्यभिचारो॥ एकस्वभाव सुधीतमधीनहि ज्ञान किते केहियाम विहारो।॥ मङ्गल सत्यविवेक लिये निशिवासर नीरस एकप्रचारो ४५५ शुद्धसतोगुणज्ञान प्रकाशत बूझतही निरवाणकि बानी।पढ़ित शंखन घंट बजावत गावतहै अपनी मतिमानी॥याग विहाय सुश्रजिने डोलहि लोगकहैं जडतावश प्रानी। मगल जौलगि बूझन आवत तौलगि नेम अचार प्रमानी ४५६ निर्गुणवस्तु विचार भयेडर दंभ सबै तजिदेत सुज्ञाना। को निरखै दिशि पूरब पश्चिम आगम वेद पुराण कुराना॥ तीरथ मूरतिमन्दिर मसजिद धायमजारफिरै भ्रमजाना। मंगल जौलगि बूझ न आवत तौलगि जौनकरै सोप्रमाना ४५७ कण्ठ कि वाणि अशुद्ध विचारत शुद्ध बखानत बोलत तोता। यावत चित्त द्विभाव लग्यो मनतावत शुद्ध अशुद्ध समोता॥ बोधभये दुबिधा मिटिजाय विपय दधिमें पुनिखायनगोता। मगलदेखुतु ज्ञान कि आखिन जो इत सो उत क्योहु न होता ४५८ सत्य असत्य अपार न भाषत लोगनको ठगिके धनजोरै। बाहिर हंस स्वरूपकिये अरु अतर लोभ सुकर्मनितोरै॥ नीरस बाद वदैनित निर्गुण मोहमयी मतिधर्म न चोरै। मंगलयाजगरूपप्रपचकजाने विना दुविधा किमिछोरै ४५९ सिधुकि थाह पिपील न पावत थाहत आपनजीवगमावै। ज्योंनभ अत न मक्षिक जोवतकोटि उडान उडै फिरिआवै॥ लक्षप्रकाशकरै सिकताकण नाहिदिनेश प्रकाशहि पावै। मगल त्यों यह जीवन जानत ब्रह्म सनातन मूरति भावै ४६० क्यों मनबुद्धि गुणानिगुणै सुनि वेद पुराण कथा अनुमाना। मोहनिशा तजिदेखु दिवाकर आतमरूप अरूप प्रमाना॥हैसवमाहिंपरतु न दीसत या भ्रमको न कथा न पुराना। मंगल बूझत आपनरूपहि वैठिरहै तजिमान अमाना ४६१ देह विहाय न जीव विलोकिय जीव विहून रहै न शरीरा। जीवहि देहअहै तनजीवहि सूक्षमथूल दुधाकृतपीरा॥ बंधन मोक्षदुधी

ि तन बंधित जीव अबंध समीरा। मंगल ताहि न ज्ञानप्रले
जोन हिंजानत जीव प्रधीरा ४६२ संपुट पाठकरै यकपंडित
मृत्युंजय जापकरैरे ॥ गोशत दान दिवावत वाथल पर्वत
लुटाव धरै रे ॥ दान अजा मनि एक करावत गाय पुजावत
हरैरे । मंगल हंस चलै परधामहि काहुके कर्म कछूनसरैरे
३ एकहि लग्न नक्षत्र घरी तिथिवार ससंवतजाति विचारि-
द्वैजनजन्मलियो यकठामहिं एकहि योगकरन्न सम्हारिय॥
त भोगक मूढ़ द्वितीय धनीयक दूसर दीनभिखारिय मङ्गल
तिष बादसुथानहिं ईश्वरकी करणीकछु न्यारिय ४६४ दूरि
खत थूललगै लघु ऊंचचढ़े लघुनीचबसेरी नैनदियेचषमा
दीरघ हेरतहैदुविधा मतिघेरी ॥ भेदनहीं कछुअक्षबिलोकिय
हि दोषनहै बुधिमेरी । मंगल आपन बूझहिमेंभ्रम पंडितके
बुद्धिकिढेरी ४६५॥ छंद ॥ पंडितवेद अचादरपावै विविध
करि गावैजू । आलिम फ़ाज़िल बडामौलवी आयत बांचि
विजू ॥ जिनवह वेदकितेब बनाई तिनकीगति नहिंपावैजू
लसमुझि लीजिये दिलमें क्यों अवज्ञान सिखावैजू ४६६
पाठ जापतीरथव्रत वर्णाश्रम मदभुल्लूहै । मंयचिवाद दंभ
ाकी पियेवचन गतिझुल्लूहै ॥ विद्याधन नृपताकोआफूसूंदत
कहुं खुल्लूहै । मगलहै निर्गुणमत बिजया यकचुल्लूमेउल्लू
६७ बूझतहीं निर्गुण मतबानो सिगरीकथाभुलानीहै प्रश्न
उत्तरंकुछ आनैदेत सुमति बौरानीहै ॥ जिसको पहिलेदुष्ट
ानै अबकह पूरण ज्ञानीहै ॥ मङ्गल बूझ विना पारस मिल
त कीमति जानीहै ४६८ जो कुछ वेद किनेव न जाना
अब कौनुबतावैरे । बूझभये अपनेउर अंतर बाहिर क्योकरि
ारे ॥ जो कहने सुननेकी नाहीकोअस ताकहँ गावैरे ॥ मंगल
दिकी बीचोपरदा खुलैन पावैरे ४६९ ॥ सवैया ॥ सत्यकि
ेंट धीरज आवण ज्ञान जलोददया दिशि प्राची । वायु बि-
क्षमामहि वर्षत बुन्द विचारसुधी खगनाची॥ शालिविवेक

संतोप लहा सुख पाखंड अर्कअपर्थ कुराची ।संगलसंत किसान समोदित भापतहै ब्रपापहसांची ४७० आखिनसों सवको नि- रखैनहिं नैनन देखिसकै तेहिकोई। सूघत ग्रासु सबैनितनाकत वाकहँ बासित जातकहोई॥ शब्द अपारसुनै श्रुतिद्वार न ताहि सुनोश्रुति कोटि धरोई। मङ्गल आतममोह विवर्जितमोहन रूप वसैतत सोई ४७१ गावत ज्ञान कथाइतिहासहिवाणिसदा नहिं वाहिकथोई। स्वादसवै रसना विलसै नहिंनीरसस्वाद लखैकृत कोई॥ हाथनवस्तु अनेकगहैकबहू नहिवाहि प्रवीणगहोई। मं- गल आतममोह विवर्जित मोहनरूपवसै तनसोई ४७२ जोमन औचितको भरमावत शुद्ध अशुद्धगली मतिखोई। बुद्धिहिमोहि- त नित्यकरै यदिवोधतहै तदिबोध न होई॥ सर्वव्यकार शरीर लगावत आपुसकष्ट न देखिपरोई। मंगल आतम मोहविवर्जित मोहनरूपवसै तनसोई ४७३ जाहि विचारि थकी मनकी गति चित्तचवाउत्ते आपुचुपोई। ज्ञानकि मौन विवेकरहो इतजातन दूसर मारग कोई। बुद्धिमहा जड़ता चितधारत जाहि नबूझै सु- कोटिवदोई। मगल आतम मोह विवर्जित मोहन रूप वसै तन सोई४७४दमतिवादकिये कितने पढ़िवेद किताव चुपाइरहोई। बूझिफिरो बहुज्ञानिनेजो जेहियोग समाधि अपार भनोई॥ जासु कथासुनि बाहिर देखत भीतर खोजत वाहिरजोई। मंगलआ- तम मोहविवर्जित मोहनरूप वसैतनसोई ४७५ आतमजोनि- वसैतनमें तेहिनाहिं क्षुधा न तृषा कछु व्यापै। दुःखनताप जरा न ज्वरा नित आनँद रूप विराजत आपै॥ मोहनहीं सुत वित्त तिया धन आपुस्वछंद स्वमत्र सुजापै। मगल बूझत आतमभाव- हि ब्रह्म सनातन कौतुप्रलापै ४७६ दृष्टिविलोकत रूपसवैनहिं दृष्टिहि रूप विलोकत प्रानी। वाणि वखानत वेद पुराणन वा- णिहि गायसकै अनुमानी॥ श्रोत्र सुनैवहुशब्द यथा नहिं श्रोत्र सुनै द्वितिये गुणखानी। मंगल त्योंनिज आतम है मन बुद्धिसकै नहिं ताहि बखानी४७७ दृष्टिहि ब्रह्मजो देखतहै सवब्रह्मकिधौं

बखानि बताइय । कैश्रुतता जोसुनै सबवाद कि है मनब्रह्मसदा गति गाइय ॥ बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत ज्ञानहिपै भ्रम एक नहीं दृढ़ताइय । मङ्गलसर्व सुषुप्ति मिलैं यहिते जड भासत ब्रह्म न पाइय ४७८ ज्यों कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-महि पावै । मेघहिते जल नीरते मेघ धनी धनते औ धनी धन भावै ॥ वृक्षतेबीज त्रियाहिते पादपको निरधार सुजान बतावै । मंगलत्यों तनजीवकथा कहतेनबनै यदिचित्तहि आवै ४७९ जो महिनीर शिखीपवमान सभानुनिशेश नक्षत्रकहावै । लोकदिशा विदिशा चपलाघन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै ॥ वाणिसदृष्टि त्वचा श्रुततामन भास अभास जोशुक्र गनावै । मगलजीव विलोकजिते सबमें यक आतम आपुलखावै ४८० आतमवातविहूनन जीवन औदृढ़तानहिं देखिपरैरे । जातन आतमकोन निवाससोमृत्युयस्यो क्षणनाठहरैरें । कोटि उपायकरै व्यवसावहिबोलन डोल न सोनकरै रे । मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआतममें विचरैरे ४८१ लोक अलोक सबै नभमें नभहू अहँकारमें वासकियेहै । शक्तिमेंहै अहँकार जोशक्तिसो चेतनब्रह्मको बिम्ब लियेहै ॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानत वेदसदा अवियेहै । मङ्गल तासुप्रभा निज जीव सोआनँदरूप विलास हियेहै ४८२ तत्त्वनहीं महतत्त्वनहीं अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी । नित्य प्रकाशित पै नहि भानुबसै सबठामन पौन प्रभासी ॥ नैनन देखत वाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी । मङ्गलताहि न दूसर जानत एक स्वच्छंद सदा अविनासी ४८३ जाहि विचारि न भावत दूसर कोटिकथै कवि कोविद बानी । देखनहार विलोकतरूपहि औ रस्वरूप भनै अनुमानी ॥ दोउनमें यक भाव न आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी । मगल बूझब आन बताउब आनहिहै समुझै शुचि ज्ञानी ४८४ जानन आपन ज्ञान बखानिय सो अनखाय रिसाय परैरे । मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे दुविधा पसरैरे ॥ ज्यों बक हंस कहै लघु धीनहि हंस कहै बुध

लोगुलरैरे। मङ्गल दम्भलिये उरज्ञानन ऊपर स्वांग अनेककरैरे
४८५ आवतहै मन उत्तम पूरुर एक अनादि त्रिलोक सजैरे।
हर्षअपार तरंगउठै उरपैसर बाहिर कौन भजैरे॥ लोग कहैंहम
को समुझाउरे मङ्गल तू कस देव जजैरे। सोनहिं वाणिमें आवत
कैसहु संत विचारि विवादु तजैरे ४८६ कासमुझाइय रूपन रंग
न धाम न नाम न मातपिता है। ज्योति न तत्त्वअमेय अमान
अलिप्त अकथ्यपरे कविताहै॥ ऊच न नीच नथूलनसूक्षम आदि
न अंत सदारमिताहै। मगल बुद्धिनबूझिसकै तिहुलोक प्रकाश
नहीं सविताहै ४८७॥दण्डक॥सकल समाज चारिखानि जल
कृत देखुजलपवमान कृतसोतौ भूताकासहै। भूताकाश अंतरिक्ष
चन्द्रलोकसूर्यलोक सोऊतौनक्षत्र लोकपावत बिलासहै॥ भपुर
बनावदेवलोकहीते देवलोक लोकगन्धरबसोतौप्रजापतिवासहै।
प्रजापति लोकसो बनायोब्रह्मलोकपाय मङ्गल अलोकआगेब्रह्म
चिदाभासहै४८८देवकरि जानैताको देवसों विवेकहोत भूतकरि
जानैताके भूतरूप बासीहै। बायुसोविचारैताहि भासत समीर
समनाकरूपवादे ताको नभसो विभासीहै॥भानु अनुमाने ताहि
भावत दिनेशतुल्य सगुणप्रमाणै वाकेसतनविलासीहै। एकरूप
सोई न द्वितीयतात तीनिलोक मङ्गल विचारि देखा सत्यअवि
नासीहै ४८९ जडवत रहत न जानत विधानवेद हंसरूपकाग
होत अचरजवानीहै। जानिबूझि त्यागिभूल सत्यपंथ लेतजौन
तासुबात सबविधि सुजन प्रमानीहै॥ रतनको भावकोई जान-
तो जवाहिरी नजानत वणिक जौन बेचत भवानीहै। मंगलसम-
स्तवस्तु प्रथम विचारिदेखै फिरि परित्यागै सत्यभाव विलखानी
है ४९०जानेबिनु भापत लजात जीवआपमूढ़ पूछत निकारिदांत
अनहद बानीहै। ज्ञान यौविबेक किधौं वसत सुठामजाहिवदत्त
प्रमाणभापि कथाकि कहानीहै॥अलख बताय समुझावैसत्यभाव
कहांग्रंथनमें राजाजाके एकआंखि कानीहै। मङ्गल सरूपआपदू-
सरो कुरूपदेखै मूढ़ता किचातुरीवखानैकोई ज्ञानीहै ४९१ एक-

वरवानि.बताइय।कैश्रुतता जोलुनै सबवाद कि है मनब्रह्मसदा गति गाइय॥बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत ज्ञानहि पै भ्रम एक नहीं दृढ़ताइय। मङ्गलसर्व सुपुप्ति मिलै यहिते जड भासत ब्रह्म न पाइय १७८ ज्यो कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-महि पावै। मेघहिते जल नीरते मेघ धनी धनते औ धनी धन भावै॥वृक्षतेबीज बियाहिते पादपको निरधार सुजान बतावै। मंगलत्यों तनजीवकथा कहतेनबनै यदिचित्तहि आवै १७६ जो महिनीर बिखीपवमान स्वभानुनिशेश नक्षत्रकहावै। लोकदिशा विदिशा चपलाघन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै॥ वाणिसदृष्टि त्वचा श्रुततामन भास अभास जोशुक्र गनावै। मंगलजीव बिलोकजिते सबमें यक आतम आपुलखावै १८० आतमवासबिहूनन जीवन औदृढ़तानहिं देखिपरैरे। जातन आतमकोन निवासोमृत्युग्रस्यो क्षणनाठुहरैरे। कोटि उपायकरै व्यवसावहिबोल न डोल न सोनकरै रे। मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआतममें बिचरैरे १८१ लोकअलोक सबै नभमें नमहू अहँकारमें वासकियेहै। शक्तिमेंहै अहँकार जोशक्तिसो चेतनब्रह्मको बिम्ब लियेहै॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानत वेदसदा अवियेहै। मङ्गल तासुप्रभा निज जीव सोआनँदरूप विलास हियेहै १८२ तत्त्वनहीं महतत्त्वनहीं अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी। नित्यप्रकाशित पै नहि भानुबसै सबठामन पौन प्रभासी॥ नैनन देखत वाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी। मङ्गलताहि न दूसर जानत एक स्वच्छंद सदा अविनासी १८३ जाहि बिचारि न भावत दूसर कोटिकथै कवि कोविद वानी। देखनहार बिलोकत रूपहि अंयस्वरूप भनै अनुमानी॥ दोउनमें यकभाव न आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी। मंगल बूझब आन बताउब आनहिहै समुझै शुचि ज्ञानी १८४ जासन आपन ज्ञान बखानिय सो अनखाय रिसाय परैरे। मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे दुबिधा पसरैरे॥ ज्यों बक हंस कहै लघुधीनहिं हंस कहै बुध

जीभबखानै। नाकनसूंघ त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन ठानै॥ चिन्तहि चित्तनहीं अहँकारित औमनधावन बुद्धिप्रमानै। मंगल चेतन आतमहीन नशैसिगरे नहि आपुहिजानै ४९९ जागि खिलारिअलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सबैजन जागे। शब्द सुनै परसै अरु देखत चाखत सूंघतही अनुरागे॥ कर्म कि इंद्रिय काम करैं निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे। मंगल चेतनआतम आपुहि ताबिनहैं जडता सबपागे ५०० आपन तेपुर तीनि पसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै। नेकयटै नसमेटिबढ़ै तिमि अंतसबै हरिअग बिहारै॥ सत असंत गुणीअगुणी सुरदैत्य कथा उतकौन बिचारै। मगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनातन ज्योति निराकृति पावकभानु निशाकर नाही। रत्ननक्षत्र न वस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भाखि सकाही॥ देखत जीवलहै पदआपन ज्यों परमातमकी परछाहीं। मंगलकीउपमा जोअनूपम बैठिचुपाइरहौं घरमाहीं ५०२ छन्द॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर द्वितिय शिश्नके आगैहै। नाभि स्थल तीजा चौथाहिय पंचम कठनभागैहै॥ षष्ठम त्रिकुटीधाम अनाहद ध्वनि जहँसुनि सुखजागैहै। मंगल भगहोत नहिंकतहूं यकरसदश शिथिलागैहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै निजआतम अनुरागैहै। पुनि त्यहिनाहि अविद्याव्यापै विधवा लहत सुहागैहै॥ एकभाव चहुंखानि बिलोकै चीन्हत हस न कागैहै। मगल चिदानन्द महि बिचरै नहिंदाता नहि मागैहै ५०४ जेहिध्वनि सुनी अनाहदनाही हृदय कमलमेंडोलैहै। विविध भांति दुखसुख संसृतमें खोवत आयुअमोलैहै॥ मायामोह ग्रसै मनवाको दुर्मिधगिरा गतिबोलैहै। मंगल जौलगि आपुन जानत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५॥ दंडक॥ अमित विधानश्रुति आगम बखानदेखि बुधिथिर होतनाहीं दुबिधाके थानमें। जानत प्रकाशरूप मानत बिभासजाहि मोहतबिमोह आपुमनबुधि प्रानमे। तीनिदेह पंचकोष पाचप्राण भूलभाव एकआपु द्वितिय

ग्रंथ काहूविधि पाठकीन्ह अर्थ हीन ज्ञानिनसे वादकरै बोलि बोलि धनीहै । ज्ञानि औविचारकौन बूझतन शुद्धचित्त तारिचोर मोह मायातन लपिटानीहै ॥ आपुसम दूसरन मानत त्रिमूढ़ सन साधुताकि बातदूरि बड़ो अभिमानी है । मंगलतमाने राउ सांचीतो कहावतहै बिडियाके धामधरी जैसे कौंडी कानीहै ६६२ सवैया ॥ सूमन जानतहै अपनीगति तापर मारग वामरिधावै जो विभुताहिं प्रजासिम जानत कोअब तीकहं ज्ञानसिखावै ॥ पावकनीर बुझावतहै जोपैनीर जरैफिरिकौन बुझावै । मंगलमूरुखसंत सिखावतसंत भ्रमाय कहा बनिआवै ६६३ वेद विधान बतावत पंडित आपुदुचित्त विषय लपिटानो । बाहिर उज्ज्वल अंतर श्यामरंगे पगचोच हंसप्रमानो ॥ औरनको भ्रमकूपगिरावत आपुन मूरुख ज्ञानभुलानो । मंगलका कहिये छलबादिहि सत्यमिटाय असत्यहिआनो ६६४ एकनकोप्रणपाठविना जल पानकरै नहिंबासरकाहू । रोगग्रस्यो प्रणत्यागि पियोजल आनि परो उरअंतरदाहू ॥ बक्रितपाठ तृपाअति व्यापितजो जलमें नहिं पाठउछाहू । मंगलदम्भ परित्यजि जोकृतसो सतकर्म वदैबिबुधाहू ६६५ अंतरश्रीहरि ध्यानविराजत बाहिरकाज बिषयरत जोई । ताकहँसंत बखानत कोबिद पापिअपाप असै नहिंकोई ॥ जाबिधि भावरहै जगताविधि कर्मसुकर्म नजातवदोई । मंगल संतसमान सुरीनहिं भावद्वितोयधरै हियसोई ६६६ चीन्हत सूरज पायसबै दिनमें निशिचन्द्र प्रकाशहिपाई । अस्तभयेदुहुं अग्नि प्रकाशतो पावकु नाशत शब्दप्रभाई ॥ शब्दबिहून नषीन न्हिसकैतब आतमकी बुधिचेतनताई । ताबललोकतिहू पहिंचानत मंगल आपनिवस्तु पराई ६६७ शक्तिदशौतन इंद्रिय सोचिकै पांचहु प्राणसमेटि चलैरे । चित्त अहंकृतलैमन बुद्धिहि स्वप्नप्रदेश रचै सबलैरे ॥ जाग्रतको सबवस्तु दिखावत देखि प्रसन्नन सत्यकलैरे । मंगलथाकि सुषुप्तिगहे इनहूं सबको तमि तीन भलैरे ६६८ कोटिकरोनहिं नैनबिलोकहि कान सुनैनहिं

जीभवखानै। नाकनसूत्र त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन ठानै॥ चिन्तहि चित्तनहीं अहँकारित औमनधावन बुद्धिप्रमानै। मगल चेतन आतमहीन नथैंगिगरे नहिं आपुहिजानै ४९९ जागि खिलाखिलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सबैजन जागे। शब्द सुनै परसे अरु देखत चाखत सूंघतही अनुरागे॥ कर्म कि इन्द्रिय कामकरैं निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे। मंगल चेतनआतम आपुहि ताबिनहैं जडता सबपागे ५०० आपन तेपुर तीनि पसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै। नेकघटै नसमेटिबढ़ै तिमि अंतलवै हरिअग बिहारै॥ संत अनंत गुणीअगुणी सुरदैत्य कथा उतकौन बिचारै। मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनातन ज्योति निराकृति पावकभानु निशाकर नाही। रत्ननक्षत्र न वस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भासि सकाहीं॥ देखत जीवलहै पदआपन ज्यों परमातमकी परछाहीं। मंगलकीउपमा जोअनूपम वैठिचुपाइरहीं घरमाही५०२ छन्द॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर द्वितिय शिश्नके आगैहै। नाभि स्थल तीजा चौथाहिय पंचम कंठसभागैहै॥ षष्ठम त्रिकुटीधाम अनाहद ध्वनि जहँसुनि सुखजागैहै। मंगल भंगहोत नहिंकतहूं चकरसदश विधिलागैहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै निजआतम अनुरागैहै। पुनि त्यहिनाहिं अविद्याव्यापै विधवा लहत सुहागैहै॥ एकभाव चहुखानि त्रिलोकै चीन्हत हम न कागैहै। मंगल चिदानन्द महि विचरै नहिंदाता नहिं मागैहै ५०४ जेहिध्वनि सुनी अनाहदनाहीं हृदय कमलमेंडोलैहै। विविध भांति दुखसुख संसृतमे खोवत आयुअमोलैहै॥ मायामोह ग्रसै मनवाको दुबिधगिरा गतिबोलैहै। मगल जौलगि आपुन जानत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५॥ दंडक॥ अमित बिधानश्रुति आगम बखानदेखि बुधिथिर होतनाही दुबिधाके थानमें। जानत प्रकाशरूप मानत विश्रासजाहि मोहतविमोह आपुसनबुधि ध्यानमे। तीनिदेह पंचकोश पांचप्राण भूलभाव एकआपु

ज्ञानिनमें न बिलोकि परैरे। तर्कनमें न अतर्कनमें शुचिवक्रनमेंन
अवक्रचरैरे॥ मूढ़नमें न अमूढ़नमें गतिगूढ़नमें न निगूढ़ धरैरे।
मंगलयत्र विचारियतत्र न औ सबठामनमें बिहरैरे ५२०, जो
मनतोहिं सिखावतज्ञान अनादि अनन्त बिधान बतावै। ताकहँ
तूनहिं चीन्हत मूरुख कोटिन योजनलौं फिरिआवै॥ तीरथ
मूरतिमें हरिखोजत दोपअदोपनमें भ्रमखावै। मंगल लोग कहैं
यहिकारण मूरखहै मनतत्त्व न पावै ५२१ पांचहितत्त्वनते, उपजैं
सबजीव चराचर देखबिचारी। वृद्धिलहैंसुख दुःखसहैं, बहुज्ञान
बिधानकरैं व्यभिचारी॥ अन्तसमय मिलि जातसबै, यरतत्त्वहि
में मुनिवाणि पसारी। मंगलवाण अवाण विकल्पन भूलकि, प-
द्धति भूतलन्यारी ५२२ यद्यपिजीव वनस्पतिहूमहँ पैमनहैतिन
केउरनाहीं। पक्षिपतंग चतुष्पद नागमें जीवसही बुधिमा तिन-
माहीं॥ उत्तमकाय मनुष्य धरातल ज्ञामधिबुद्धि मनादिलखा-
हीं। मंगलताकहँ पायनध्यावत आतमहै जडता परछाहीं ५२३
तत्त्वरचे गुणदेवअदेव बनस्पति कीटपतंगबनाये। पक्षिसरीसृप
औ पशुखेचर आदिबिनाश्रम सर्वउपाये॥ पैन प्रमादित भोकर-
तातव बुद्धिस्वरूप किधौं मनुजाये। मंगल तादिन ते करतार
चराचर जीवनहीं निरमाये ५२४ स्वेद प्रसादते स्वेदज होवत
चीलढलीख जुआँ जगजानै। अण्डतेअण्डज कीटखगामि पिपी-
ल सरीसृप आदिप्रमानै॥ भू जल भानु प्रयोग वनस्पति उद्भिज
होतसदा निरमानै। योनिज मानवऔ पशुसम्भव सो नरनारि
प्रसग न आनै ५२५ जाग्रतमें मनआन; विचारत स्वप्न समय
कछु आनकरैरे। सो तजिदेत सुषुप्तिप्रचारत आपनहूं सुधिते वि-
सरैरे॥ तद्यपि ज्ञान न आवत है, चित क्यों भरमाय, भुलाय, म-
रैरे। मंगल सूरज तापनके वश क्यों कहिये कथनी, बिगरैरे ५२६
आपनि बुद्धि अदोचित, चाहिय ब्रह्मसनै, थलभापि, परैरे। जोदृढ़
ता बुधिमें, नहि तो अनुचित्रित पूतरि रंगभरैरे॥ मूढ़ बिलोकि
प्रणामकरै बुध देखिगुणी गुणकोपकरैरे। मंगल काकहिये गिरपा

निज बूझत भाव न आन धरैरे ५२७ दायक वृत्ति समर्थ्य कृपानिधि पण्डित सज्जन वेद बतावै। देतसवै अनन्नान सदानर जानि न तोष स्वचित्तहि लावै॥ नित्यभ्रमै प्रतिठाम विमोहित पालक भूलि न जीव लजावै। मंगल ध्याउ सदा परमातम जो सब ठामनमें छविछावै ५२८॥ दण्डक॥ शैवी शिव ब्रह्मवादै जैनी अरिहन्तकहैं बौधकहैं बुद्धत्रादिब्रह्म अवतारहे। कर्महीप्रधानभनै जगवद्धमीमांसा ज्ञानी न्यायीकहैं त्रिपुरको एककरतारहै॥ वदत वेदान्ती सत्यब्रह्म अजयोनि योनि सगुण उपासी गावैराम राम सारहे। शक्ति शुचिवादी भावै प्रणव प्रधानरूप मंगल असत्य नाही दुबिधा अपारहे ५२६ वेदकी न आनैं न किताबकी बखानैं कछुआन अनुमानै धन्य सन्तनकी बानीहे। सत्यन दृढावैं न असत्य मानलावैं गुणिआनहीं सुझावैं सुधीउलटी कहानीहै॥ जाहि बूझआवै ताहिमोहन सतावै आपुरग रूपपावै नाहिरंगति रंगानी है। मंगलप्रबोध होतचीन्हे सत्यनात मोतचढ़े धायज्ञान पोतपार बाट जानीहै ५३०॥ गोपालछन्द॥ एक उपदेशै लखैंनआप। प्रणवमन्त्र अजपाको जाप॥ योग बतावैकरै न सोय। मगलबुध अविवेक न होय ५३१ पण्डित आगमकरै विचार। ज्ञानी क्षरअक्षर विस्तार॥ पढ़ै मोलवी सुरुचि कुरान। मगल आपु नपावै जान ५३२ कायरबाना बीरबनाय। समरभूमिसों फिमिठहराय॥ त्यो पाखण्डी भवदरश्राय। मंगलसन्त छलोनहिं जाय ५३३ अग्निविनाशै जल बहुताय। बडवानल नहिसकै बुझाय॥ मूरख कोदम्भी छलिखाय। मंगलज्ञानी ठगो न जाय ५३४ ऊपरहंस अतरितकाग। मेड मेड बाणी भमनाग॥ माला तिलकबिभूति निचोल। उदर निमित्त बचन चढोल ५३५ वेदकिताब न जानै जाहि। पाखण्डी दरशावै ताहि॥ अलख बताय लखावै रूप। मंगलज्ञानी सूढ़ अनूप ५३६ बाणीमेंतहिंब्रह्मसमाय। कोटिपुराण कुरान कथाय॥ जोहैसो न कथा इतिहास। मिथ्या मायारूप विलास ५३७ कायातर पावककोवास। पवननीर करिसके न

नास॥ त्यों शरीरबिच जीवप्रवीण। कालगहे कछुपरै न क्षीण।३८
वेद उपनिषद आगमजैान। अवणकियो कबहू नहिंतैान॥पढ़एकै
हैभापा ग्रन्थ। मंगलबादी बिचरत पन्थ ५३९ ब्रह्म लखावैमोह
मलीन। शुद्ध सतोगुणगहे गलीन॥ निजविस्तार भेदनहिंपाव।
उपजत मरत स्वभाव अभाव५४० त्यागी भयो न त्यागे दम्भ।
रचि पचि मूढ़ बालुकृत थम्भ॥ गेहिनमें नितहीतगृ हीत। प-
वन उडावत बालूभीत ५४१ गुदडी अलफी जटा लँगोट। नग्न
अभूपण तरुवर ओट॥ आयुबिताई तनु दुखपाव। मंगलहाथ
कछूनहिंआव ५४२ जेते गुणगण ज्ञानबिलाश। जिह्वाग्रहितूकरत
प्रकाश॥ सोकित धरेरहैं तनुमाहि। जोसमुझावै बूझैताहि५४३
ब्रह्मज्ञानी जोजगआहि। बन्धन मुक्ति न व्यापत वाहि॥ जीवो-
द्धारण बोलै बैन। बैर प्रीति दुविधा मनहैन५४४ निर्वाणीनि-
र्गुण कृतवाद। जीभ चवाये लगत न स्वाद॥ जोपुरुपोत्तमध्या-
वतसत्य। मंगलमेटत जन्मत्रिपत्य५४५ इष्टदेवफल देतलमोट।
फल आशा बन्धन चहुंकोद॥ निष्फल वृक्षन सेवतकोइ। सेवत
जौन निराशा होइ ५४६ जादिन गुरु न शिष्यव्यवहार। क्रिया
कर्म जवनहिं कर्त्तार॥ तवधौं द्वैतकिब्रह्मअकेल। शून्यकिधौंयह
अद्भुतखेल ५४७ निराकार कोउभयो अकार। सवठांकोउ बैकुंठ
विहार॥शिवनारायणज्ञानविचार। मंगलहोतनहीं निरधार५४८
प्रथमैं ब्रह्मकि मायाहोय। बुधजन हमैं बतावैं सोय॥ जोपैब
ब्रह्महैआदि। मायाविपय रूपिणीवादि ५४९ तोबिज्ञान कह
दरशाय। समुझत दुबिधाकथी न जाय॥मायानश्वर बदैंप्रवीन
चेतन पुरुप अलिप्त अरीन५५० मायानाशि पुरुप मिलिजाय
चौदहभुवन बिभूतिनशाय। कौनबखानै जानैताहि। मंगलय
मन मताभ्न आहि ५५१ मारग एकचलै संसार। नहिं द्विती
कारणविस्तार॥वहैपन्थ मुनि धारणकीन। चीन्ह्यो आतम पर
प्रवीन५५२कथै त्रिपर्यय घाणीएक। मूरख क्योंकरिसकै बि
क॥ एकअनाहत बचनप्रकाश। मगलवाणी बुद्धिबिलाश ५

क्षुधापिपास विवर्शदिनरैन । प्रतिथल फिरतप्रचारतवेन॥ आप-
निमति थिरता गतिहीन। मंगल परमहंसपदलीन ५५४ जौन
पुरुष पदजानैआप । वृथाप्रणव अजपाकोजाप॥ अविवेकी सबके
घरखाय। स्वपचअहै तेहित्ते अधिकाय ५५५ यत्र तत्रकरि वृथा
बखान ।प्रतिकूलित वाणीनिर्वान ॥आपुविषय रसभोग प्रयुक्त।
मंगलसोजगजीवन मुक्त५५६पयघृत मिलित भोज्य मिष्टान ।
पावै सदाप्रकाशै ज्ञान॥ व्यापैकाम वैसकिनहोय । निजकर रेत
गिरावत कोय ५५७करै बडाई आपनि आप । प्रतिथल मिथ्या
वचनप्रलाप॥ जोसुगन्धिसो आपुबताय। गन्धीमुख चीन्होनहि
जाय ५५८ ॥सवैया॥ यातनवृक्ष सवैपरमातम जीव खगामि
सदा सुखदाई। भोगविलास किधौंफल रूपक जीवगहे मन बुद्धि
स्वभाई ॥ तावश जीवनमुक्ति लहै भवभूतल यों श्रुतिवाणि सु-
नाई । मगलहै परमातमशुद्ध भपैफल नाहिन जन्मत आई५५९
जोमतिदेखिय दृष्टिपसारि कै तामहँ पाखँड देत दिखाई। शुद्ध
सतोगुण कोउगहेनहिं आपनि आपनि चाहबडाई ॥ एकद्वितीय
को तुच्छबतावत कोबडछोट कहै भ्रमताई । मगल ठीकन आ-
वत चित्तहि ब्रह्मसनातन देतलखाई ५६० बेदवदै सबकेगिरपै
पुरुषोत्तमहै अबिनाश अकेला । बाथल दीनमता नरनारिन पं-
डित,आलिम औ गुरुचेला ॥ जानत वाकहँ दूसरनाहिनहै अनु-
मान महान अपेला । मंगलबुद्धि भसैनहि सूरति होतप्रकाश न
भातुनवेला ५६१ ॥ छन्द ॥ जिनप्रकाश प्रत्यक्षहीदेखो तिनकी
मति बौरानीहै । कोटिज्ञान पण्डित समुझावै कौनसुनै विषवा-
नीहै॥ गृहबाहिर अलमस्तविराजे आनँदमय विज्ञानीहै ।मग-
लकहा बुझावै औरहि अद्भुतकथा कहानीहै ५६२ ॥सवैया॥
नामनहीं फिरिकाकहि गाइय धामनहीं कितबास कहौरे । देह
नहीं केहि ध्यानबखानिय द्वैतनहींजप एकलहौरे ॥ चेष्टितनाहिं
जोनेह बताइय वस्तुनहीं करकाहि गहौरे । मंगल अद्भुतवाद
बडो इतहीं मनबैठि चुपाइरहौरे ५६३ तूमन जौनकहीसोकरी

हमयोजन केतिकधाय, चलेहैं ॥ शासन वेद किताबि लियेब्रतती रथमूरतिपूजि भूलेहैं॥ छंदकवित्त रचे नवभांति विषयरसभोगसु मत्रछलेहैं। मंगल वूझभये तजिपाखंड जानिवृथा निजहाथ मले हैं ५६४ मुक्तिकहूनहिं वन्धनहै मनतू अवही भ्रम पद्धतिधारे। बंधनमोक्ष कहावत नामहि नरकरुस्वर्ग वृथाहि विचारे॥ जीवन मुक्त स्वरूपतुही लखुज्ञानके अक्षसुदृष्टि पसारे। मंगल वूझ भये दुबिधागतहै अरुताहि दुचौभ्रमटारे ५६५ क्यों निरदोषरमे भव बीथिन पापकुदृष्टि दुराशवसेरा। कोटिन्यकार विधातनत्यापत मानतहै नहिंकाम कोचेरा। ज्ञाहिवुझाइय ज्ञानसुमारग सोसुनि जानत दुःखघनेरा। मगलआतम् कौनविचारत दंभ विवाद किये भटभेरा ५६६ मोह विलास विषय परिहास समोदित तूमन चित्तपधारे। आवइतै खलखांड खरीदन खारिखरीदत ज्ञान बिसारे॥ संतस्वभावन् भाषतहैउर दुष्टक्रिया हितसो कृत न्यारे। मंगलऊपर छापलिये स्वकमुक्तित होइवृथा उपचारे ५६७ कौन गृहस्थ जो इंद्रिनकेवश कौन प्रवीण जोवूझत ब्रानी। कौन गुरू जो बुझावत आतम शिष्य कोहै जो स्वभाव अमानी॥ ब्राह्मण कौन जो है समधी पुनिकौन महत्त स्वआतनथानी। मंगल सत को है जो अमान नहीं दुबिधा इयहिकी मतिभानी ५६८ जेतिक लोगअहैं मन भूतल ज्ञानविना नहिं देखि परेरे। जानन मूढ़ कहौ सो लडे उठिसाधुकहे हित सों बिचरैरे॥ त्यागत है नहिं मानकिपद्धति ज्ञानिनको सँगकौन करैरे। मंगलतूवड मूरखया जगमाने कुमारग पांवधरैरे ५६९ मानगहे भवबीथिन भ्रामिक आनहिये मुखआन कहैरे। वेदकिताबन अक्षरजानत आतमभाव हि धाम गहैरे॥ आलसकेवश होलपरिश्रम नाहिंन भिक्षुकभाव लहैरे। मंगलशिष्य कियेधनके हितदंभ धस्यो नहिं सत्य अहैरे ५७० शीतलसंत स्वभाव सदा नहिं क्रोधकिपावक चित्तप्रजारे। भोगविषय किन आश्रहृदयनहिं कामवतासु शरीर प्रचारे॥ बैर बिमोहन व्यापत जीवहि बुद्धि मनोहर शाखि उचारेन मंगल

होलततोर विमण्डित खण्डित दंभविवाद प्रकारै ५७१ वाद विपर्यनहि भावतहै नितज्ञाने विवेककथै शुचिज्ञानी। मौन्य रहे नतध्यान हृदयहरि शुद्ध सतोगुणश्री निरवानी॥ हंस दशा जड़ चेतन है विधिपण्डित बालक चालिनजानी। मंगल आतम ध्यान सदारति दूसरिबुद्धि न चित्तसमानी ५७२ सोहतनित्य स्वआतम तोषित शुद्धसमाधि लियेपटभांती। जो विचरै भवतो मुदसंयुत बूझत सुंदरजाति कुजाती॥ तीनि निशान वसैगृह काहु के वेद कि सीख सिखावत जाती। मंगल है तन एकगहे नहि निन्दक और प्रशंसक खाती ५७३ जायमिलै सतसंगति संतन धायगहै जनसाधु विचारी। आपनको सबते लघुजानत आनन को शुचि ज्ञानविहारी॥ मातप्रिया गणतात सबै नर ऐसहु एक गुणीन अनारी। मंगलसंत महीतलहै अस कोनु कथै महिमा बड़ि भा- री ५७४ संतनको नितमोर प्रणामहै संतनको नित नौमि सने- हा। संतनको तनसंततहौं मनसंतत के पदमो उरगेहा॥ संतन की महिमा चितभावत संतनके हित आपनिदेहा। मंगलदम्भिन ते गुरुदूरि हि राखिये मोहि अहैप्रणएहा ५७५ कारणब्रह्म अहैभव को उपजै तेहितेपुनि ताहिसमावै। कोउभयो जगकारण कालहै आपुरचै पुनिपालि मिटावै॥ होत स्वतंत्र वदैयक कोविद अन्त स्वच्छन्दनबै मनभावै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७६ एककहै जगकारण कर्महि एकजु मानहि तत्त्ववितावै। हैकरतार सहीयक भाषत पैनबनावनहार गुणावै॥ गावतएक कियो प्रकृती जगअंत समेटि स्वअंग मिलावै। मंगल भूलमिटायसकै नहिं कोटिपुरान कुरान सुनावै ५७७ कंचनगर्भ तेहै उपजो सबओ परिणामतही मिलिजावै। योग सबैकर एक कहै भवकारण मिश्रितवस्तु दृढावै॥ आपनिवाणि भलो सबही यदिगुंगुहुहै तदिदर्डन पावै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७८ योगियती तपसी बुधमौनि उदासि कवीश्वर ज्ञानप्रवीनो। देवअदेव मुनीश्वर मूरख भूपति रंकधना

मलहीनो ॥ संतगृहस्थ अधार्मिक धार्मिक, आतमज्ञानि, समाधि
हिभीनो । मंगल कोउ रहा, न महीतल कालबली सबको तन
छीनो ५७९ विष्णुभजै बहु ध्यावशिवै बहुशक्ति सनातन ब्रह्म
विचारै । जैन घनै बहुबौद्ध गुणै अपपंथ बलै किल पंथ विहारै ।
न्याय पढैबहु सांख्य गढै बहुदीन मुहम्मद को चितधारै । मंगल
कोउ बचै न महीतल कालबली सबको भखि डारै ५८० आतम
अर्थि स्वः ब्रह्म स्वरूप चितानंद मंगल राशि कहावै । ताकर दूत
बसै मनमोहन आखिसुभोजन रूपलखावै ॥ इष्टि सुमंत्र वै नित्य
क्रियाप्रिय पायक इंद्रिय कर्णगुणावै । मंगल जो अस जानि भजै
निज आतम सो परमानँद पावै ५८१ आपन भाव न जानत जे
बहु कर्म अपार पसार करैरे । है तिनको फलबंधन घोर, न जन्म
अनेकन बार धरैरे ॥ ज्यों कृतकीट कुशालि, स्वमविर आप
हि मूरख, बदि परैरे । मंगल कर्म अकाम करै, जगधर्म बढै तब जीव
तरैरे ५८२ दृष्टिविहून शरीर छुटै नहि वाणिबिना न कलेवर नाशै ।
हीनित ध्यावत जै तनक्यो कर्णेन्द्रियहीन न काय विनाशै ॥ हस्तपदा
दि विहाय रहै वपु नेक नहीं जो मलीन प्रकाशै । मंगल प्राण चले
तन नाशत साहित प्राण स्वतन्त्रित भाशै ५८३ जाग्र सुषुप्ति बसै
जब प्राण तबै सब इन्द्रिनकी गति नाशै । ज्ञान कि कर्म कि जे इस
भाँतिहैं जानिनहीं तन कोटि कुत्राशै । बुद्धि मनादि न भाँति परे
किन जाप किधौं दृढचित्त निवाशै । मंगल चेतन प्राण जगै सब
या हित प्राण स्वतन्त्रित भाशै ५८४ विष्णु विरञ्चि महेश गणेश
दिनेश निशेश फणेश सुरेशा । रामसख्यास बृहस्पति शुक्र पराश
रव्यास हली मिथिलेशा ॥ देत वशिष्ठ शुभी प्रहलाद महामुनि
आनहुजे शुचि भेशा । मंगल सर्वगृहस्थ सँवाम भजैनिज आतम
भाव सुदेशा ५८५ कौनु गृहस्थ दिगंबर को लौ पै आसम आन रु
है चित एका । बंधन मोष कि चाहन जीवहि आनँद मूरति शुद्ध वि
वेका ॥ पथिल आथल भाव द्वितीय न शुद्ध सतो गुण पूरण टेका ।
मंगल जीवनमुक्त वहै मत दर्शिनके तट भाव अनेका । ५८६ मुक्ति

कोदानि-वहैपरमातम-बंधनदानि वहै, करतारा । जन्मकोदानि अजन्मको दानिअधोरधदानि नशानविचारा ॥ आपनि भूलमिटायजुजे करुणाकर नानजो सांझ सवारा । मंगल जीवनमुक्त वहै शुचिज्ञान अभेद गहै श्रुतिद्वारा ५८७तू परमातम सत्यसदा परिपूरण और त्रिलोक असारा । तूसतता सतिभासत,नश्वरविन् कृतसर्व तुहै अविकारा ॥ कारण कारज एकन होवत यद्यपिवेद बदैयकतारा । मंगल धन्य अहै परमानँद जाकृत अद्भुत लोक पसारा ५८८ जाग्रतमें भवकाजकरै निजशक्तिसवै तनइन्द्रिय पेरी । स्वप्न विलोकत हैमनद्वारअलिप्तरहै सँघठामअहेरी । जाय सुषुप्तिमें साखिरहै जब इंद्रियसर्व अचेतन हेरी ॥ मंगलसोतन आतम जानिय जाकहँ वेदवदै हरिटेरी ५८९ जेतिकव्याधि विपयरस होवत सोनहिं ताहिलगै भवमाही । संसृतकेदुख औसुख बंधन कोटिविधान सतावत नाहीं ॥ मिश्रित इंद्रिनके सँग के खियमैनहिं लिप्त अलिप्त सदाहीं । मंगल सोतन आतमभाषिय बूझत जाहि सबै भ्रमजाही ५९० जानत तीनिहुंलोक विभूतिहि आपनथान रहैन चलैजू । चित्त अहंकृत धी मनका भरमावत है त्रिपथी कुथलैजू ॥ काहुसमय शुभज्ञान निरावत सार असार फलै सफलैजू । मंगल सोतन आतम जानिय जोनगहै अफलै सफलैजू ५९१ सूक्षम है मृतिकागतिते जल नीरतेसूक्षम पावकगाइय । अग्नितै सूक्षमवायु बिलोकिय मारुततेनभ सूक्षमपाइय । व्योमते सूक्षम शब्दसदा पुनिशब्दते सोअहंकार लखाइय । मंगल सूक्षमहै अहंकारते सोकिमि बुद्धिप्रत्यक्ष बताइय ५९२ देश विदेश दिशा विदिशा अध ऊरध में भरिपूरि निहारिय ॥ है सबमें नविचारत पंडित मूरुखको दुविधा चित धारिय । पैनमिले थलकाहु यथानभ कोटिउपायनसो निरधारिय ॥ मंगलक्यों करिगाइसके श्रुतिनेतिवदै त्यहिहेतु बिचारिय ५९३ जाहि विलोकिय याभवमें त्यहिके सुखचाह उरस्थल व्यापै । याजगको सुख भोग विनयकर जाहिलहै अघजात सदापै ॥ जानत गूढ़न बूझत

मूढ़ फिरे मतिहीन न पाठ न जापे। मंगल संत सदानँद मंदित आननहीं सुखमूरति थापे ॥८४॥ केतिक मारगमें भरम्यो मन बोधभयो न विना गुरुपाये। आपनि आपनि वाट चलावत दूसर पंथ निहारि लजाये॥ क्यों फिरि आवत सोच हिये जित दंभ तहां न विवेक सुहाये। मंगल मिश्रितकी गति बूझत सूलमिटै हरिकेगुण गाये ॥८५॥ जोमम श्रोतनमें नहिं लागत सो उपदेशत पंडितमोहीं। आपनभूमि अनेक ग्रन्थ भ्रम भूरिमयो नरहो मतद्रोहीं॥ क्यों हिमे मानत जानत जाहिन चेतनको जड़रूप सटोहीं। मंगल जानेविना गुचिआतम बोध न होत कथा न कथोहीं ॥८६॥ छंद ॥ माया जगत अपार देखियत जो सबको भरमातीहै ॥ काहुड सुथल सुचित नहिं हरी दुविधा ज्ञानन आतीहै ॥ संतसंगतिते न्यारे डोलें विपयके वानि सुहातीहै। मंगल जान ठगिनि ठग नाहिन अपनी बदन चुरातीहै ॥८७॥ सेवा करै अर्थकोपावै श्रद्धा धर्म बढ़ावैजू॥ तपफल सकल कामनापूजै भक्ति मोक्ष दरसावैजू। चारो क्रिया ज्ञानगत बुधजनशोभा सुथलनपावैजू॥ ज्यों मंगल सुन्दरी नाकबिनु सदा निरादर भावैजू ॥८८॥ ज्ञानी जिज्ञासु अर्थार्थी आरतनाम कहावैजू सुजनचारि ये प्रभुपद सेवक त्रिधावेद भरमावैजू॥ ज्ञान कर्म औ है उपासना जितलित जेहि तेहि भावैजू। मंगल आतमज्ञान विवर्जित निजपद कोक्यों पावैजू ॥८९॥ श्रुति विशिष्ट अद्वैत द्वैतवदि पुनि अद्वैत लखावैजू। मुक्त मुमुक्षु विषयरत त्रिविधि श्रोता सुनि हर्षावैजू॥ तीनोंकी यकभाव विलोकनि सो जेहिकेमन आवैजू। मंगलजीव न मुक्त भवस्थल सोइ स्वथल मिधावैजू ॥९०॥ सवैया ॥ आपनि भूल मिटाय सकैनहि औरनकी कस बुद्धि सुधारै। आपुहिसूरख सूमन देखिय रैनि दिवाकर कौनु निहारै। मानहि त्यागि मिटाय अहंपद क्यों निजआतम कौन विचारै। मंगल यों बहुलोगभ्रमे विनु ज्ञानन श्री हरिधाम बिहारै ९०१ आपनिबूझ भली मन भावत आनकिबूझ गुणी सउपावी। ज्ञान कथे न सुने द्वितियेकि

रहै विपरीत कुसाधन साधी॥ वाखिगहे निर्बाणकि सारंग धाइ चलै जो पंतालकि काधी। मंगल साँचु कहावत एकहै, आपनि औरजहानकि आंधी १०२ मैं सतमारगमें विचरों सव मेरेवहैं सतमारग धाई। तू अभिमान भरो जनि तोरहु जात कुराव लखे वहु धाई॥ मैंअरु मोर जोतै अरु तोर गुणै अनुतिरूप सोहै भ्रम ताई। मंगल याहि निवारत जो जन जीवनमुक्त सो भूतल भाई १०३ यागधौं कर्म मिनामिनि को भ्रम औमरु मालव की कुचिताई। भाष्य श्रीत्सल उत्तम धार्कर जीवन मृत्यु समीचित पाई॥ देव अदेव गुणी अगुणी गुनि शौच अशौच किभूल मिटाई। मंगल एकहिभाव विलोकत जीवनमुक्त महीतल भाई १०४ उत्तमज्ञानगहें प्रभुसेवत धंसकता न लगावल वेढ़ो। आत्मर्मे लवलीन सदातप साधन चौर कुकर्म न वेढ़ो॥ काहुके नेह सनेहन वंधित दम्भिकहै तिनको ढग डेढ़ो। मंगल साँचु कहावत है यह ताचितनि आवत आँगन टेढ़ो १०५ एकविमूढ़ कहैं हम पंडित धर्म निरेस्वरको दरशावै। एक अपार घरवानत कालहि उत्पत्ति इस्थिति नाश सभावै॥ दोउनमें नसुजान विलोकिय जो निरधारि सुवस्तु वतावै। मंगल सत्य सदा परमातम जो सवठाम नहूं छिहि आवै १०६ जानि परै न विना गुरु अद्भुत देखि सुनौ न कवौ निलं आखो। क्यों दृढ़ता मनिसों निवसै कुविधा वहुलोगन आधन भाखो॥ सारगहै तजि भूल प्रसारहि जाकरहै निगमागम साखो। मंगल शुद्ध सतोगुण आवत वुद्धि रहै परमानँद चाखो १०७ सिंधुकहेते अगाध लगै अरु विंदु वदे अतिही लघुताई। सिंधुन विंदु अहै जलसो अभि दोउनमें इमि प्राणि सुनाई॥ ताहि विचारि सुजान रहेतुपि ईश्वर जीव हुभाव मिटाई। मंगलको लघुसी रंघ वूझत आतको आन विलोकि लजाई १०८ सिंधु ज्यों अतिथूल कलेवर पैवहु लानँत हो लघुतेही। तुच्छ पिपील गहेमुख अन्न कि वूझंतहौं सव तेअधिकै हौ॥ ज्यों गजहेरि पिपील भई वड़औ कवि सो लघुते लघु तेही॥ मंगल जीव दुर्बोधक भावहि हैतलगो सुपि

आपुन एही द०८॥ त्रिणपद॥ प्रभुगति कहते नाहिं बनै। जौ
कहिये तो हृदय नहिं श्रावै ज्ञानी मूढ़ गिनै। हैमघमें अरु काहु
मैं नाहिं न ऐसो बेद भनै। अलखवत कहलगत चेतनता चेतनता
सनै। रूप बखानु अरूपहु आवित दुविधा रहत मनै। २ कहिय
अकर्त्ता हैपुनि कर्त्ता चौदह पुर अपनै। पालक लिखौ संहारक
सोई क्यों यकता न ठनै ३ यह निरधार करन हित संतौ मुनि
जनथके घनै। मंगल॥ किमि घरणी बतावै माया तोरि तिनै
द१० बहुमन बूझभरे भ्रम न्यग॥ तजि चिंगता। विषय मासा
को स्वाद भानमें लागै॥ जीपै जाय कतहुं विपथ ढिग तौन
कौ अनुरागै। दुष्टनके सँग वसै रैनि दिन पैन दुष्टता पागै॥मगल
निज आतम गनत ध्यावे चीन्है हंस न कागै द११ जनमनशुद्ध
सतोगुण आया। जो भ्रम रहे ब्रह्म मायाको लोके व बिषिरूपा॥
सो अब एक भावसों देखत सकल एकही काया १ त्रिगुणनाम
विधि हरि हर भाजत सर्ग स्थिति लय कर्मा॥ सो त्रिभांतिनहि
एकब्रह्म है तीनि नामसों गाया २ स्वर्ग नर्क अपवर्ग बासकी आश
सबै जग बांधा॥ बूझत जीव शुद्धचित आतम कौनु। त्रिभागति
धाया ३ आगम बेद उपनिषद देखौ कथा कहि जीवहि गावे॥
मंगल बोधभया गुरुपाये भ्रममत दूरि बहाया द१२॥सवैया॥
केतिक ज्ञान सिखाय थके भणि केतिक न्याय गुणी समुझावै॥
केतिकवस्तु प्रत्यक्ष बताय पदारथ ज्ञान कि सिद्धि लखावै॥ केति
कतीरथको चलिजाय नहाय कै मुक्ति सुपंथ बतावै मंगल ध्याय
विना निज आतम कोटि करे मन हाथ न आवै द१३ धामतके
सबकाम तजे प्रियबंधु सुता सुतनारि दुरावै निर्गनरहै तजि लाज
सबै जित भोजन हाथ लगै तित खावै॥ नित्य विवेक अचार लिये
रहै श्रौव्रतमें निज जीव दुखावै मंगल ध्याये विना निज आतम
कोटि करे मन हाथ न आवै द१४ जाय सुपंथमे मुण्ड मुंडाय अ-
नीय दयो दिवि वायुयसोसी॥ बौध कि जैन कि शैव कि न्याय कि
सांख्य कि बिष्णु विचारक जासी॥ मुक्ति पदारथ खोजि मरै व्रतरै

चक्रके भयडोरि फसोलो ।मंगल आतम बोध बिना अध ऊरधके लोकमें नित्र जोलो ॥८१५॥ बौधन जानत न्यायकथा अरु जैन न मानत, वैशेषिक माती ।सांख्य कहा दिलगे अपने मत दूसरमें नहिं बुद्धि समानी ।जो हठवादि कियद्धति जावत सो नि महामुनि ज्ञान अज्ञानी ।मंगल सार गहै सबको तब बूझत आतमकी गति प्रानी ॥८१६॥ एक रसूल बहूत रि मिल्लत चारि किताब कहैं मत चारी ।आपसमें बकवादु करैं यक दूसरको बद्रि काफिर भारी ।मानकि ओर्ग्नि, असै बिलमें निज पाकन पाके इसों मति धारी ।मंगल एक खुदाय सही कृतबादु इतेजु प्रवीण अनारी ॥८१७॥ दूसरको प्रसु आतम है तजि पावकतेज स्वरूप त्रिलोका ।जासु प्रताप तप्रै नभमें पृथिवी वि प्रभाज्य हिं यम बिलोका ।तेज प्रकाश जहांलगु है सबु केवल तास वदै कि अशोका । मंगल भूलय लीन सु नेहठ पथ्र गहे तेड अर्यो ।प्रथि कोक ॥८१८॥ व्योमहि ब्रह्म बिचारते सौ नहु तर्कअपार सुतिज द्वि दिखाई ।चौदहलोक, हरी हरिजू अग्नि भातु सुरासुर काल लखाई ॥ हैछिन आव अनादि अनंत अनीह अरूप अजन्म गनाई ।मंगल ब्रह्म द्वितीय न बूझत कूम त्रिके फल कीट किनाई ॥८१९॥ कोउ प्रभजनकी गति हेरि भुलाय महे त्यहिकी प्रभुताई ।प्रानहि ईश्वर जानत नाहि न खेचर भी नभ त्यागि न जाई ।आवत जीवन मोह उमिडित कूजत गूजत प्रेम बढ़ाई ।मंगल जौ तु बुझाय मनके विष और बुढ़े अहि दूध पिलाई ॥८२०॥ संभव सर्वं चराचरको जलयोग बिना नहिं ह्वैहि आवै ।नीर अपार अजड़ अखंडित रीति सतंत्र सुजीव बढावै ॥ पूजत है जलराशि सुनी दिन प्रानन सत्य नहीं लखि पावै ।मंगल स्वास न पथ्य हि चक्षो तप्त इ दि दिखे त्यहि जय मिनि जोवै ॥८२१॥ से वल भानु विचारि सौतं त्रितधा आनंद में नित सांझ प्रभाता ।ब्रह्म द्वितीय न सो नत कोश्रितु द्वीन बखानि बुझाई प्राता ।जानत तीनिहुलोक प्रकाशित हैं रवितेज हिं भान बिभाता ।मंगल सूर्य प्रकाशित जो प्रभु ताहि न बूझत क्यों अमगाता ॥८२२॥ जीवन है यक धाम मंगल

मिटाइय ६३७ को करतार जो सृष्टिनहीं अरु को भरतार जो दासस्वभावा। ठाकुरकौनु प्रजाबिनु भापत उज्ज्वल कौनु अनुज्ज्वल थावा॥ कोधनवान जो रंकनहीं अरु सौख्य कितैजो दुःख नआवा। मंगल चित्त बिचारु अरेमन ईशकितै बिन जीव कहावा ६३८॥ कवित्त॥मानकोन त्यागै मन दीनताको दूरिगन प्रीतिन प्रतीतिसन संत रूपधारेहै। लोभकोनिवास तन हिये नाहीं ज्ञान बनखोजै प्रतिद्वार धन कंतको बिसारेहै॥तोप नाहीं एकक्षण बेद औ पुराणभण बाधे आन नारिजन दतकृष्ण टारेहै। मंगल प्रवीणवन आननको तुच्छगन कुरथी बिनोदेरण अलबुरि डारेहै ६३९ब्रह्मको बखानै जाहि बेदहून जानै मानिहै निरबानै माह माया चिलवासीहै।ज्ञान गीत गानै औ प्रमाण कोटि आनै झूठीवात अनुमानै द्वैत कायामें बिलासीहै॥ ऊंच नीच जानै हरिदासन पिछानै जोन क्षारदेह सानै छोह छायाधौं विनासीहै। मंगल नठानै एकभावन समानै और दुःखसुखमानै तातै कैसो धौं उदासीहै ६४०जहांदेखो तहां एकरूपको बिलासहोत भांति भांति भापत प्रमाणज्ञान सानीहै। बिबिध किताब ग्रंथ एकभाव सत्यकहै द्वैतनाहीं शून्यबादै बौधजैन मानीहै॥ पंचनकीवात किप्रमाण भूमि स्वर्गलोक एकनर बात तात कौनै सत्यमानीहै। मंगलको भासैशून्य एककोन भाव दासै वडोभ्रम भासै जाकीक थान कहानीहै ६४१जाको बुद्धिगावै ताको बानिन बतावैजाहि बाधि समुझावै सोनबुद्धिहू प्रमानैहै। काननको काम कहांआंखि करपावै अरु नैननको काज कबै श्रवण बखानैहै॥जाको जौनकाज तौन करत स्वभाव नित्य दूसर न जानै व्यवसावै झूठ ठानैहै। मंगल सुजान संत जांचि देखें कोटिभांति शून्यको अभाव इहां एकही पधानैहै ६४२ एकतन सकल समाज भूमि देखियतनाकहूमें एकरूप तारागण भासैहै। देवगुरु दैत्य गुरु होतन खगेश शूर कीट औ पतंग एक कायामें निवासैहै॥एकभूमि नीरवायु पावक सव्योम हेरु द्वितियन होतयदि मिलित बिलासैहै। मंग

ल सुजान संग जांचिदेखें बार बार शून्यको अभाव इहां एकही प्रकासैहै ६४३देह बिनु जीवको निवास कौन भाषिसकै जीव हीन कायाकौन चलत उपायहै। आतप विहायन प्रकाश भानु भाषियत भानुहीन आतप न त्रिपुर लखायहै॥ पितुबिनु सूनुन प्रमाणै तन सूनुबिनु पितुहू कहावै ऐसो दुबिधाको भायहै। मंग ल सुजान सतजांचि देखे बारबार तैसे ब्रह्ममाया एकहू तमैंदढ़ा यहै ६४४॥ सवैया॥देवनमें मनसर्व समर्थ जो देवयजै सोलहै मनचीती। दुष्टनमें जडता अति देखिय जेनभजैं सुरमोह प्रतीती॥ दानि अभिप्रिय देवफली बिनु पालगये कहँद्रव्य चहीती॥ मंगलकाम कलानि लिये नित ध्यावत देव बिषय मति जीती ६४५ दीपसुगंधि लिये जलगंग सप्रेम स्वदेवनको मनमोदैं।पाय मनोरथ होत समोदित कोटिकज्ञान सुनैन बिनोदैं॥ ज्यौंरसनी रस एकन होवत त्यों इतकाम अकाम प्रमोदैं। मंगल एक गहे सुख होवत दोउनमें किमि जाय दुकोदैं ६४६मुक्तिदई प्रभुकोटिनको बिनु युक्ति बदैं कबि कोबिद ज्ञानी। स्वर्ग निवासअपारनको तुमदीन्ह कृपालु सबीजन जानी॥केतिक गोपुरमें बिलसेबहु सन्य सुलोक बसे बरप्रानी। मंगल कौनहिं नर्क बिहाय बसायसकौ कहुशारंगपानी ६४७ पुन्य प्रभाव तेरे कितने नर केतिक मोक्षभये ब्रतधारी।पूजन पाठनसों अघमेटि भयेबहुधा जन स्वर्ग बिहारी॥योग बियोग लियेभव केतिक जायसमीप बसे सुखकारी। मंगलकेशिर पातक गाठरि क्यौंतुम तारिसको गिरिधारी ६४८ जाकर पूरब पुण्य प्रकाश कृपाकर ताकहँतारि दयौहै। वाजेहि कर्मकिये भव उत्तम ताफल उच्च अवासलयो है॥ पूरब पुण्य नजीवतके कृत जन्म कुमारग में बितयो है। मगल कोकस तारिसकोप्रभु याभ्रम में जियशोच भयोहै ६४९ कौन दुराव अहै तुमसों प्रभु जानतहौ मनकी सब मेरी। आठहु यामन भावत हैजग पाप बिहाय बिषयमति घेरी॥ ज्ञान बिराग बिवेक नभावत कामकथा किउछाह घनेरी।मंगल कौनगलीजग

मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगतकेनिवा सके क्यों अब होउ सुधामवसेरी। निंदक पंथ गही निशिबास र त्यागि सुबाट जो मुक्तिकि ढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज विवाद किये वहु ज्ञान निवेरी। मंगल कोन गली जग मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५१ ज्ञात जिते तित मोह पयोनिधि काम समीर कुवीचि करेरी। मुक्ति उडो भरमैन रहेथिर खेवक ज्ञानथकों बुधि प्रेरी॥ कर्म शिवादे उडे पतवार सहाय नकोउ कहों जेहिटेरी। मंगल कोनगली जग मोपकि आनिपरो शरणा गत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत्त कर्म उपायनसों चितहेरी। जो समुझावत सोनगुणे मन ज्ञानकिशान अदैवहुते री॥ सत्य असत्य गुणानिकरे चुप ओकतहूं वरणे खल टेरी। मंग ल कोनगली जगमोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जोजन जानि दयाकरिके करशीश धरो पकरो भुजमेरी॥ तो श्रमहीन तजों भवसागर जाय नयांय अधोरध फेरी। नातरु योंहि भ्रमों भव वीथिन संसृत में दुखसों भटभेरी॥ मंगल कोन गली जग मोप किआनि परो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरैकरि तीरथसेव नकोउतरे व्रत साधन साधी। कोउतरै करिनेम अचारनि कोउ तरे मनकीहत व्याधी॥ कोउतरे पढ़ि वेदपुराणनि कोउतरेप्रभु नाम चराधी। मंगल कैसेतरे करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण आधी ६५५ ज्ञानगुणे तरिगे कितनेकरि योग समाधि तरेकितने हैं। तापसरूप बनायतरे वहु गायतरे वहुनाम सनेहैं॥ पाठकिये वहु मोचिगये करिजाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं। मंगल कैसे मुचे करुणाकर एकहुभांति न कर्म बनेहैं ६ [illegible] समाजहि तेइमुचे वहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं। मंत्र [illegible] वह [illegible]
गुणभ्रमरूप ह्वयेहैं [illegible] अवाश [illegible]
धिवै चितयेहैं। [illegible]
६५७ बंधनको [illegible]
विचारि वि [illegible]

एकन मूरति तीरथ मानत व्यापक जानि भलीगति पावै। मंग-
ल कैसे तरै करुणाकर एकहुभांतिन जीवदृढावै ६५८ पण्डितके
बल बुद्धि प्रसिद्ध कीहै कविकोबल बाणि सुहावनि। गौरवको
गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र लियेदृढ़ भावनि ॥ ज्ञानबली
धनवानबली बलवान बली पदउच्च प्रभावनि। मगल कौनुभरो
सकरै प्रभुदेहु बताय परीमत तावनि ६५६ विष्णुपद॥सबविधि
विपपक्ष मोमन स्वामी। यत्नअनेक किये याभ्रतल होहुंनाथ
अनुगामी ॥पैन सुदृढ़ मनभयो कृपानिधि हौतुम अंतरयामी१
कादुराव तुमसन करुणाकर मोहं मलिनहौं कामी। कियेअपार
कुकर्म देहधरि अजामीलको नामी २सोअब समुझि होत मन
बाचर भूतकाल गति वामी ॥ क्यों निबाह होइगो हरिजू कूर
भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान विज्ञान निरस रत बूझिधामपर
धामी। मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिय द्विजवर गामी ६६०
आन कौनकी शरण गहौंहौं ॥ देखिन परत द्वितिय दायानिधि
दीनपाल पुरतीनों। निज स्वारथ रत सकल देवबर फिरिकस
सुगम लहौंहौं १ केतिक जन्म बूझ विनु भटक्यो ते बतचरण
थकानों। हारिमानि तुवपदरजबन्दी अब अघओघ दहौंहौं २
जो भयरहे नरक सुरपुरको सोमनते बिलरायो॥बधन मुक्तिदुवौ
करुणानिधि तुवपद तजिन चहौंहौं ३ दुख सुखको व्यवहारदेह
धरि नरक स्वर्ग स्वइगायो॥मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कौमुद
शरणि कहौंहौं ६६१ जानिपरी तुमहीं जनतारण अबलगि रहे
महाभ्रम चितमें विविध ग्रंथ मतिलागी ॥ सोभ्रम मिट्यो भयो
तवपद रज नेह समोद अकारण १ दास विपति नायकनै द्वितिय
प्रभु त्यागि तुमहिं तिहुंलोकनि॥ बासवकोप जानि रक्ष्यो ब्रज
गिरिकीन्ह्यो नख धारण २ लक्षधाम सुतअंध विरचि तहँपांडुसुत
न दियबासा॥ पावक प्रबल अर्द्धनिशि प्रज्वलित तुवप्रभु कीन्ह
निवारण ३ द्रुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुमराख्यो बनवारी ॥
मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये-७८ २ आपन

मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगतकेनिव सके क्यो अब होउ सुधामवसेरी। निंदक पंथ गही ... र त्यागि सुबाट जो मुक्तिकि ढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज विवाद किये बहु ज्ञान निवेरी। मंगल को न गली जग मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी, ६५१ जात जिते तित मोह ... काम समीर कुवीचि करेरी। मुक्ति दुडो भरमैत रहैथिर खेवक ज्ञानथकी बुधि प्रेरी॥ कर्म विवाद उडे पतवार सहाय नकोउ कहौं जेहिटेरी। मंगल कोनगली जग मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत कर्म उपायनसों चितहेरी। जो समुझावत सोनगुणे मन ध्यानकि आन बदैवहुतेरी॥ सत्य असत्य गुणानिकरे चुप औकतहूं बरणे खल टेरी। मंगल कोनगली जगमोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जोजन जानि कृपाकरिके करशीश धरौ पकरौ भुजमेरी॥ तौ श्रमहीन तजौं भवसागर जाय नथाय अधोरध फेरी। नातरु योंहि भ्रमौं भव बीथिन संसृत में दुखसों भटभेरी॥ मंगल को न गली जग मोप किआनि परो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरैकरि तीरथसेव नकोउतरै व्रत साधन साधी। कोउतरै करिनेम अचारनि कोउ तरै मनकीहत व्याधी॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुराणनि कोउतरैप्रभु नाम अराधी। मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण आधी ६५५ ज्ञानगुणे तरिगे कितनेकरि योग समाधि तरेकितने हैं। तापसरूप बनायतरे बहु गायतरे बहुनाम सनेहैं॥ पाठकिये बहु मोचिगये करिजाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं। मंगल कैसे मुचै करुणाकर एकहुभांति न कर्म बनेहैं ६५६ संत समाजहि सेइमुचे बहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं। मंत्रप्रभाव लही बहु मुक्ति अगूढ़ गुणभ्रमरूप हयेहैं॥ वाणा अबाणा विवेकमुचे बहुध्यान अखंड शिवै चितयेहैं। मगल कैसेतरै करुणाकर एकहु अंगन शुद्ध भयेहैं ६५७ ग्रंथनको यक झूठबखानि स्वच्छन्द प्रमाणत शुद्धकहानै। शून्य विचारि विमोचत हैं यक आपन ग्रंथ प्रसिद्ध सुनावै॥

एकन मूरति तीरथ मानत व्यापक जानि भलीगति पावै। मंग-ल कैसे तरै करुणाकर एकहुभांतिन जीव दृढ़ावै ६५८ पंडितके बल बुद्धि प्रसिद्ध कोहै कविकोबल बाणि सुहावनि। गौरवको गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र लियेदृढ़ भावनि॥ ज्ञानबली धनवानबली बलवान बली पदउच्च प्रभावनि। मंगल कौनुभरो सकरै प्रभुदेहु बताय परीमन तावनि ६५९ विष्णुपद॥सबविधि विपयको मोमन स्वामी। यत्नअनेक किये याभवतल होहुंनाथ अनुगामी॥पैन सुदृढ़ मनभयो कृपानिधि होतुम अंतरयामी१ काहुराव तुमसन करुणाकर मोहें मलिनहीं कामी। कियेअपार कुकर्म देहधरि अजामीलको नामी २सोअब समुझि होत मन बावर भूतकाल गति वामी॥ क्यों निर्वाह होइगो हरिजू कूर भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान विज्ञान निरस रत बूझिधाम पर धामी। मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिय द्विजवर गामी ६६० आन कौनकी शरण गहौंहौं॥ देखिन परत द्वितिय दायानिधि दीनपाल पुरतीनों। निज स्वारथ रत सकल वेदवद फिरिकस सुगम लहौंहौं १ केतिक जन्म बूझ बिनु भटक्यो सें वतचरण थकानों। हारिमानि तुवपदरज बन्दी अब अघओघ दहौंहौं २ जो भयरहे नरक सुरपुरको सोमनते बिसरायो॥बंधन मुक्तिहुको करुणानिधि तुवपद तजिन चहौंहौं ३ दुख सुखको व्यवहारदेह धरि नरक स्वर्ग स्वइगायो॥मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कोसुख बरणि कहौंहौं ६६१ जानिपरी तुमहीं जनतारण अवलगि रहे महाभ्रम चितमें विविध ग्रंथ मतिलागी॥सोभ्रम मिट्यो भयो तवपद रजनेह सनेह अकारण १ दास विपति नाशकन द्वितिय प्रभु त्यागि तुमहिं तिहुंलोकनि॥ बासवकोप जानि रक्ष्यो ब्रज गिरिकीन्ह्यो नख धारण २ लक्षधाम सुतअघ विरचि तहँपांडुसुत न दियजाला॥पावक प्रबल अर्द्धनिशि प्रज्वलित तुवप्रभु कीन्ह निवारण ३ द्रुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुमराख्यो घनवोरी॥ मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये॰

मोह कहौं अब कारन ॥ वेदपुरान कुरान ग्रंथबहु
गुणिहीमें ॥टयहि मारग विचरत सुख भवसल होत
दासन १ जो विपरीत चलत निजपथते तजि मर्या
दयहि बिलोकि जगकरत बतकही यहजड़ धर्म बिन
तित अत्र निंवकमते देखिय गहत सकलजन होते
श्रुति कलिदिशि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्र
अचल सचलअब सचल अचल पहिचानो ॥ मंगल
ज़नि भाष्यो त्यागि नाम गरुडासन ६६३ निजमन
चुराई ॥गुप्त प्रकट इतहै मत देखिय दूनौंकी निपु
अंतर यक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बड़ाई १
सरगुणको गणन यथा अग्नि युगरूपा॥एकद्रव्य य
है क्योंबड छोट लखाई २ कष्टसहित यकमिलत सु
टगुप्त मिलिजाई ॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते
लाई ३ अगुण सगुण तनजीव कथाहै यकविनु द्वि
मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई
काहिन सेवक जानी ॥जिनहिं देखि थिव थलत
गोत्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्र
मानी १ भिक्षा द्वारदेत कोउनाहीं द्विज व्याकुलयुत
भरिभेंटि दई संपति त्यहि गिरान सकत बखानी
गृह भूमिपाल गणबन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमहीं
भवमय जरासन्ध खलभानी ३ यहि प्रकार अगणित
पाले पालत पालौ ॥मंगल दीन शरणतव मोहन
सुखदानी ६६५ अबको आन भजौं गिरिधारी ॥ ज
वल्लभ श्रीप्रभु बनौंमूढ़ अविचारी॥साहबत्यागिगहैं
नकहै भ्रमभारी १ तजिमदारगहौं बदरीतरु कामदुधे
गंगत्यागि पुष्करी पानजल ज्ञानकि बुद्धि व्यकारि
मदलोभ मोहबश रहौं सदा भ्रमनाहीं ॥ सुगति पं

स्वतंत्र सबलायक॥ मंगलके दुख दोष नाशिये समरथआपमुरारी ६६६ करि बहुदंभ थकी मति मेरी॥ काहूविधिन भयोथिर मनप्रभु विषयक खल अपकारी॥ प्रतिक्षण वामपंथ जडधावत निडर इन्द्रियन प्रेरी १, शास्त्रविहित मग गहतन जड़मतिकृत विपरीत पसारे॥ यद्यपि सीख दई सुन्दरहौं होतन स्वथलबसेरी २ मोह निशा सोवत सुख सपने जानि मोहिं बकवादी॥ विषयभोग सुनि उठत मुदितप्रभु किते ज्ञानकीढेरी २ व्रततीरथ संयम जपपूजन पाठध्यान यश्नाहीं। मंगल बिकल हरिय दुख मोहन परो शरण प्रभु तेरी ६६७॥ सवैया॥ काल अनन्त भ्रम्योबहु पंथविचार अनेकन भांति बिचारे। जोजस जानत सो तस भाषत अर्थ निरर्थ समर्थ बिसारे॥ बूझतहौं मनतोष नपावत आनकि आनक्रिया नितधारे। मंगल त्यागिसबै मग मोहन हौं शरणागत द्वार तुम्हारे ६६८ दृष्टि पसारि लखे सबमारग अंकित सर्व अशंकन कोई। क्यों भटकौं फिरि भूमि वृथा जित लाभ नहीं तित हानिहि होई॥ मुक्त गृहस्थ उदासिनमें मतकी दुविधा बुधि सत्य बिगोई। मंगल भाषि थको बहुज्ञान परो प्रभुद्वार हर्योमति खोई ६६९ पूजत देवन बैठिके एकखडे यक पूजत मोहग्रसी मति। बैठिउठै यक नाचत गावत धूप जलाय स्वछन्द कथैं प्रति॥ वैबलिभाग रिझावत एक करैं व्रतयोग सुयोग लगीरति। मंगल मौनित स्वांग बिलोकि चहौंसोकरौ प्रभुहौं शरणागति ६७० काहुको होइरहे भव आइकै मूढ़कहे कवि कोबिद गावै। सो मनबूझि बिवेक किआँखि लखे सबपै नहिंदृष्टि समावै॥ त्यागितुम्हैं करुणाकर नाथ द्वितीयन रक्षक मोमनभावै। मंगल भूल मिटायपरो तव द्वारकरौ जोतुम्हैं बनिआवै ६७१ कीरथा ललनी लटको कपि अन्नलिये करबन्दि परोहै। भूकत आनकि वर्षा मदिर मत्स्य किकांट सुलोभ धरोहै॥ त्यों इतधर्म लिये नर आमिक छूटन कोन उपाय करोहै। मंगल त्यागि तौ दुबिधा अब आपहि आपकेद्वार परोहै ६७२ ज्ञानि

मोह कहौं अब कासन ॥ वेदपुरान कुरान ग्रंथबहु रचेगुणिन गुणिहीमें ॥त्यहि मारग बिचरत सुख भवसल होत मोद गचि दासन १ जो बिपरीत चलत निजपथते तजि मर्याद पुरानी॥ त्यहि बिलोकि जगकरत बतकही यहजड धर्म बिनाशन२जित तित अत्र निवकमते देखिय गहत सकलजन हीते ॥ मिटीमेढ़ श्रुति कलिदिखि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्रथम मोरमन अचल सचलअब सचल अचल पहिचानो॥ मंगल चुपकि रहौ जनि भाष्यो त्यागि नाम गरुडासन ६६३ निजमतकी मनधरौ सुराई ॥गुप्त प्रकट इतहू मत देखिय दूनौंकी निपुणाई ॥ यक अंतर यक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बडाई १ तिमि निर्गुण सगुणकी गणना यथा अग्नि युगरूपा॥एकदृश्य यक काष्ठान्तर है क्योंबड़ छोट लखाई२ कष्टसहित यकमिलत सुलभही प्रकटगुप्त मिलिजाई॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते समुझैं चित लाई ३अगुण सगुण तनजीव कथाहै यकबिनु द्वितिय कोजानै। मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई ६६४ पारथ काहिन सेवक जानी ॥जिनहिं देखि शिव थलतजि भागे जानि गोब्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्रणत्याग्यो रुचि मानी १ भिक्षा द्वारदेत कोउनाहीं द्विज व्याकुलयुत नारी ॥भुभरिभेंटि दई संपति त्यहि गिरान सकत बखानी २ मगधनी गृह भूमिपाल गण बन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमहीं मोचे लखि अयमये जरासन्ध खलभानी ३यहि प्रकार अगणित जनभवत पाले पालत पालौ ॥मंगल दीन शरणतव मोहन हरिय बिपसुखदानी ६६५ अबको आन भजौं गिरिधारी ॥ जानिबूझि ज बल्लभ श्रीप्रभु बनौंमूढ़ अबिचारी॥ताहबत्यागिगहौं सेवकपद नकहे भ्रमभारी१तजिमदारगहौं बदरीतरु कामदुधा तजिआवै गंगत्यागि पुष्करी पानजल ज्ञानकि बुद्धि व्यकारी २ कामक्र मदलोभ मोहबश रहौं सदा भ्रमनाहीं ॥ ... आवत अबहीं शरण तुम्हारी ३ जो जौं रु...

देवदाता तुम्हीं वेदधाता तुम्हीं सर्वत्राता अवादी सवानी॥ तुम्हींकौतुकी योद्धयो एककाया तुम्हींदिग्गजो दैत्यमानापमानी। नहींदूसरो चारिपंठास हेरौं बंदौं श्याम श्रीश्याम ज्ञानानुमानी ६८० तुम्हें श्रोहमैंकोनु एकत्व भासे तुम्हें श्रोहमैं द्वैतकोमूढ़ गावै। तुम्हेंश्रोहमैं स्वामिश्रो भृत्यदेखै तुम्हें श्रो हसैदेवता पुंसभावै॥ तुम्हें श्रोहमैं कोश्रनीबोध जानैतुम्हें श्रोहमैंबूझि आपैसमावै। तुम्हें श्रोहमैं जोनजाने महाराज सोई महामूढ़ है पंथ धावै ६८१ तुम्हें श्रोहमैं गाइके बोधपावै तुम्हें श्रोहमैं ध्याय भेटेदुभावै। तुम्हें श्रोहमैं पूजिके जन्महारै तुम्हें श्रोहमैं यांचि दारिद्र दावै॥ तुम्हेंश्रोहमैं वंदि वंदैनश्रानै तुम्हें श्रोहमैंएकही चित्तलावै। तुम्हें श्रोहमैं जोनजाने महाराज सोई महामूढ़ हैपंथधावै ६८२ तुम्हें श्रोहमैं बूझते द्वैतनाशै तुम्हेंश्रो हमैंशोचते द्वैतश्रावै। तुम्हें श्रोहमैं सत्यश्रो झूंठजानै तुम्हें श्रोहमैं धन्य वाणीसुनावै॥ तुम्हें श्रोहमैं एकही रूपदेखै तुम्हेंस्वामिजूजो हमैं त्यागि गावै। वहैसंत ज्ञानी गुणी ब्रह्मध्यानी न तौमूढ़भूलो दुवौपंथ धावै ६८३ करै जोई तूनाथ सोईभलीगाथ कोई नहीं साथमाया वसेरो। परो द्वारतेरे नजानौं द्वयीभाव यांचौं न दूजो सदा दासतेरो॥ इहां श्रोउहां आश्रतेरी दयासिंधुपापी बडोहौं कियों मोहचेरो। वंदौं दीनवाणी सुनो श्यामश्यामा गहौ बांहमेरी रहैमान मेरो ६८४ श्रहोनाथतारे किते तारिहो सांचुमोकौंलखे क्योंगही मौनवानी। बडोभिक्षुहट्ठी टरौंगो न टारो सुभिक्षालहौं जोकितेश्रावखानी॥ नतौभी तजौं द्वाररैहौंपरो आरि बाढ़ी सुतैका करोगे अमानी। यहै शोचिके पोषियै सूनु श्रीश्याम दीजैवसेरो निजै राजधानी ६८५॥ दोहा॥ समरथ सबविधिनाथतुम आपतवेद किताब॥ मंगलको दुखदारिये अब न सहैनी ताब ६८६ जय श्रीगुरुजय श्यामजू जयतिसंत छलहीन ॥ जयतिसार वाणीकथन जय जन हरिपदलीन ६८७ उक्तियुक्तिकरि सप्तमत सारकहा चितलाय। मिलित सातहू विवुधजन बूझिहि वाणि सुभाय ६८८

नश्यान्ति वुझावत ध्यान नहींहै॥ तर्ककिये कब्रभासत चित्तकवि-
नसैवित्त प्रतिष्ठ महीहै ॥अंतसमेय जपपाठन पूजन केवलज्ञान
कि वृत्तिकहीहै॥ मंगल तौनबनै अपनी यहिते प्रभुकी शरणाइ
गहीहै ६७३ बालक नारि हितू पितुमातु महीधन धाम सबै अप
नोहै। त्यागि सुधा हरिनाम बिपथरत्त सेवत मृत्युकि ज्ञान घनो
है ॥ अंत जितो परिवार सकाथ विहाय स्वधर्म किधौं सपनोहै।
मंगल शोचियहै मनमोहन संतन रंक अरंकबनोहै ६७४ मोहमते
कुमतो सुमतो सबकाम मते तपसा सब फीकी। क्रोधमते श्रम
शांति स्वभावजु लोभमते कवितालघु हीकी ॥ गर्वमते सबकर्म
अकारथहै पचकूट फँसी मति जीकी। मंगल ताते इतैन बनैकछु
मोहनकी शरणागति नीकी ६७५ पक्षमते नहिंज्ञान विभातिअप-
क्षमते नहिंधर्म सोहावै। भोगमते नतजै मन आधि अभोगमते
वुधिकी रुचिजावै॥ आनमते अपनीमति नाशत आपुमते श्रुति
निंदकगावै। मंगल सत्यबनै तबहीं जबहीं प्रभुकी शरणागति
आवै ६७६ ॥महाभुजंगप्रयात ॥महामोहमें बुद्धिहै नित्यहीलीन
कैसेबनै श्यामको ध्यान जीमें। बँध्यो लोभके दामज्यों कीट
कैधाम मोचै यथा सोनहै ज्ञानहीमें॥ जरैक्रोधकी आँचनावैवृथा
नाक्ष ज्ञामेंबचै सांच नारत्यान थीमें। इतैकाम मात्सर्य धीकाल
कूटै कितेभागिये ठौरहै ज्ञानसीमें ६७७ कहीं काहि पाखंडकी
वृत्ति जीमें तिवासै नभासै कृपासिंधु ज्ञानै। कथौं काव्य विज्ञान
श्रद्धानहीं चित्तसंताप कामादिको सत्यध्यानै ॥ नहीं मोक्ष रथ्या
कहूं दृष्टिआवै जितेहौं चलाऊं सुधी शुद्ध जानै सबै आणकोत्यागि
हौं पाहिश्री श्याम मो रोगजो होइसो देहुथानै ६७८ कहाकीजि
येजाइ रे धाइको आश कोऊ नहीं मुक्तिको पंथ देखौं। वेदोदंभ
आचारहेरों निराधार अद्यापि निर्मोहनो ग्रंथलेखौं। बनैसोन मो
सोजुहै वेदगाये पुराणादि भाषा सुकर्मीविशेखौं। यहैशोचकैत्रा
हिहै पाहिश्री श्यामहौं दूसरो मुक्तिदाता नपेखौं ६७९ तुम्हीसत्य
संज्ञातुम्हीं सत्यवाणी तुम्हीं अव्ययी आदिअंतावसानी। तुम्हीं

देवदाता तुम्हीं वेदथाता तुम्हीं सर्वज्ञाता अवादी सवानी ॥ तु म्हींकौतुकी योद्धयो एककाया तुम्ही दिग्गजो दैत्यमानापमानी। नहींदूसरो चारिपंघास हेरौं बदौं श्याम श्रीश्याम ज्ञानानुमा नो ६८० तुम्हें औहमेंकोनु एकत्व भासे तुम्हें औहमें द्वैतकोमूढ़ गावे। तुम्हेंऔहमें स्वामिऔ भृत्यदेखे तुम्हे औ हमेंदेवता पुंसभा-वे॥ तुम्हें औहमे कोअनीशीश जानेतुम्हें औहमेंबूझि आपैसमा-वे तुम्हे औहमें जोनजाने महाराज सोई महामूढ़ द्वै पंथ धावे ६८१ तुम्हें औहमें गाइके बोधपावे तुम्हें औहमें ध्याय भेदेदु-भावे। तुम्हें औहमें पूजिके जन्महारे तुम्हें औहमें यांचि दारिद्र दावे ॥तुम्हेंऔहमें वंदि वंदेनआने तुम्हें औहमेंएकही चित्तलावे। तुम्हें औहमें जोनजाने महाराज सोई महामूढ़ द्वैपंथधावे ६८२ तुम्हें औहमें बूझते द्वैतनाशे तुम्हेंऔ हमेंशोचते द्वैतआवे। तुम्हें औहमें सत्यऔ झूठजाने तुम्हें औहमें धन्य वाणीसुनावे ॥ तुम्हे औहमें एकही रूपदेखे तुम्हेंस्वामिजूजो हमें त्यागि गावे। वहैसंत ज्ञानी गुणी ब्रह्मध्यानी न तौमूढ़भूलो दुवौपंथ धावे ६८३ करे जोई तूनाथ सोईभलीगाथ कोई नहीं साथमाया बसेरो। परो द्वारतेरे नजानौं द्वयीभाव याचौं न दूजो सदा दासतेरो ॥ इहां औउहां आसतेरी दयासिंधुपापी बडोहौं किधौ मोहचेरो। वदौं दीनवाणी सुनो श्यामश्यामा गहो बांहमेरी रहेमान मेरो ६८४ अहोनाथतारे कितेतारिहो सांचुमोकौंलखे क्योंगही सौनवानी घडोभिक्षुहटठी टरौंगो न टारो सुभिक्षालहौं जोकितेधाबसानी नतोभी तजौं द्वाररेहोंपरो आरि बाढ़ी सुतैका यहै शोचिके पोपिये सूनु श्रीश्याम दीजैवसेरो ६८५॥ दोहा॥ समरथ सब विधिनाथतुम मंगलको दुखदारिये अब न सहेनी ताव श्यामजू जयतिसत छलहीन ॥ जन हरिपदलीन ६८७ ठाकु ॥ तलाय। मिलित सातहू विवुधजन

निजमत परमते बहुमतो पक्षअपक्षवखान ॥ शिक्षामतसर्वांगचु-तकियेसात परमान ६८६ समुझि सप्तमत सतजन, बूझेसहित विवेक॥ बूझभये सर्वाङ्गकी तजै आदिनीटेक ६८७ मूढ़ पढ़ै समुझै नही निंदककरै विचार ॥ कौमति गुणजानेविना ज्यों मणितजै गवांर ६८१ आतमवादी ब्रह्मविद विज्ञानी जोप्रवीन ॥ सोसमुझेगो मुदितमन मणिजौहरि कवदीन ६८२ सत्यवस्तु औसत्य मत सत्यरूप सतकाय ॥ क्योंसमुझै मायाग्रसित कर्मबधी भव आय ६८३ गोपुरमें प्रभुशरणपरि जीवकृतारथ होत॥ इहांध्याय औश्यामपद पावत परम उदोत ६८४ अपनीकरणी सवतरे हरिकरणीसंसार ॥ मंगलअहजानेविना मायावंध यमद्वार ६८५ जोअपनीमति मोहमय औसतसंग विहीन॥ तौ नबोधनीगाइये रहैभवस्थल दीन ६८६ राजारामसुनामशुभ औवासी कायस्थ ॥ वसतग्राम सरहीसदा निजमतकायासुस्थ ६८७ सुभ गणेश तिनके तनय हरिसेवक श्रयकाख॥ तिनकेसुत निजमत मदढ़ भये विहारीलाल ६८८ महाशुद्धमति छलरहित तिनतन बकनीराम ॥ तिनको बालिक मूढ़ रति हौं मंगलमनराम ६८६ कियेकाव्य बहु हरिकथा ज्ञानमार्ग विस्तारि ॥ बोधभये यह सप्तमत वरनो सुमन विचारि ७००॥

सहिगुणमयखर्गभूमियुत संवतआश्विनमास ।
प्रतिपदशुक्लावाररवि पूरणग्रन्थनिवास

इतिश्रीमत्समस्तश्रीनीतमिरसुरप्रकाशिकामंगल
सप्तशतिकामंगलदासविरचितासमाप्ता ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापखाने मुकाम लखनऊमें छपी ॥

छोड़नेका फल, प्रीतिमान, बड़ाई के फल, अहंकार, भ्रम और छल के बुरेफल, त्यागकावर्णन, सन्तोष, भय, आशा, निर्धनता, वैराग्यविचार, प्रेम, नियम के फल ऐसेही अनेक विषय इसी मोक्षदायकपुस्तकमें है॥

बीजककबीरदाससटीक

जिसमें आदिमंगल, रमैनी, शब्द, ककहरा, बसन्त, चौतीसी, साखी इत्यादि अनेक दुःखी जीवोंके उपकारक योग और उपासनादि मतका प्रकाश और श्रीरामचन्द्रजी के स्वरूप का ज्ञानहै इसमें टीका महाराजाधिराज रीवा राज्याधिपति श्री १०८ विश्वनाथ वैकुण्ठवासी की है यह अपूर्व पुस्तक भी युगलानन्य शरणजीके स्थानापन्न उन्हीं के पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीजानकीवरशरणजी के द्वारा बड़े परिश्रम से प्राप्त हुई थी॥

ब्रह्मप्रकाश

भगवत्प्रसाद रचित जिसमें वैराग्य, पुरुषार्थ, त्रिगुण योग, उत्पत्ति चित्त त्रिपुटी पांचों अवस्था सद्रूपसे वर्णन कीगई हैं॥

आनन्दामृतवर्षिणी

आनन्दगिरि रचित यहपुस्तक मानों वेदांत का मूलहै इसमें सब वेदांतकी बातेंकिया लिखीहैं औरहरमन्त्रके समझनेके वास्ते कथायें भी साथ हैं॥

युगलस्वादबोधप्रकाश

मुन्शीयुगलकिशोरजी रचित जिसमें योगवाशिष्ठादि वेदांतके ग्रंथोंसे अध्यात्मविचार वेदांतरूप कथनपूर्वक आत्मस्वरूपब्रह्मको लखाया है॥

सुन्दरविलास

श्रीपरमहंस सुन्दरदासजी रचित जिसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य पूर्वक नानाप्रकार के विचार, तृष्णा छोड़ने के उपाय, धैर्य रखना, विश्वास, नारी की निन्दा, मनका जीतना, नीतिविवेकस्वरूप, विस्मरण की निषेधता, अद्वैत ज्ञान है॥

सत्यनामविहारवृन्दावन

महात्मा वृन्दावन जी आचार्यरचित जिसमे मनुष्यके उपकारक पद्य में उपदेश और उनकी टीका, छन्दों ॥

तिका आशय और उनमें अपनी मतिका प्राकट्य और उनके निर्णय के लिये दृष्टांतपूर्वक विचित्र कथा, वेदांतका परिपूर्ण आशय, नाद की उपासनाका परिणाम अंतमें चौपाई,छन्द, ककहरा, विनती,बारहमासा, होली, रेखता आदि रागों में श्रीमद्भगवद्यश है इसमें सबों का विशेष करके उपकार है ॥

भगवद्गीतानवलभाष्य

नाना सभाजनः निगम,पुराण, स्मृति, सांख्यादि का सारभूत परमरहस्य है जिसको फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीने गीता भाष्यानुसार सस्कृत से देशभाषा में रचना किया जिस मे भगवद्गीता का मूलश्लोक उसके नीचे सस्कृत शंकरभाष्य तत्पश्चात् आनंद गिरि और श्रीधरस्वामिकृत टीका और सबसे पीछे शंकरभाष्य का भाषानुवाद नवलभाष्य नाम से वर्णितहै इस पुस्तकको जिसने अवलोकन किया है अवश्यही उसने मोललीहै यह पुस्तक देखनेही के योग्य है ॥

इश्तिहार ॥